गुरुदत्त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब एक रंग

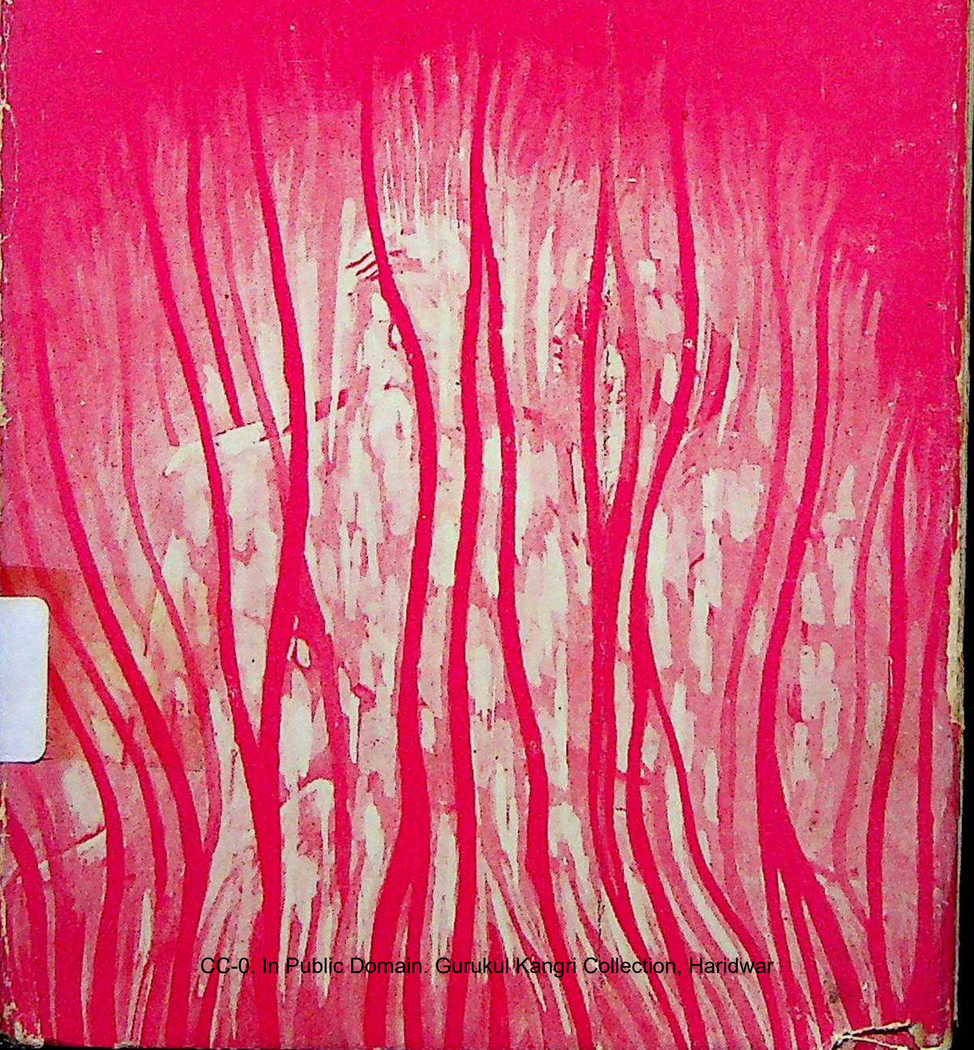

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

168008

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब एक रंग

Central Library
168008
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468

081
168008

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-S

© ईशान दत्त

मूल्य 60-

प्रकाशक हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी. डी. चैंबर्स,
10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग,
नयी दिल्ली- 110005

संस्करण 1999

मुद्रक संजीव आफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

प्रथम परिच्छेद

चौधरी मोटूराम एक बंदूक और एक पिस्तौल खरीदने नगर में आया हुआ था। उसके गांव झुनझुन टीकड़ी का एक अन्य किसान भी इस दिन अपनी फसल का दाम वसूल करने वहां पहुंचा हुआ था। किसान का नाम था गौरीशंकर। वह जाति का ब्राह्मण था और ज्वालामुखी कांगड़ा के पुजारियों के परिवार का होते हुए भी झुनझुन टीकड़ी में बीस बीघा भूमि जोत कर निर्वाह करता था।

मन्दिर की आय का भी एक भाग उसे मिलता था। वह भाग बहुत अधिक तो नहीं होता था। प्रायः वर्ष भर में पांच-छः सौ रुपये ही होते थे। इस पर भी, उस काल में एक कृषक को वर्ष में इतना कुछ मिल जाना भी एक जागीर के समान ही समझा जाता था।

गौरीशंकर ने अपने आढ़ती की दुकान से कुछ रुपये प्राप्त किये। फिर घर के लिए कपड़ा तथा कुछ अन्य सामान खरीद, गांव लौटने के लिए वह 'बस स्टैण्ड' की ओर जा रहा था कि चौधरी मोटूराम अपने तांगे में सवार सामने से आता मिल गया।

गांव नगर से दस मील के अन्तर पर था और चौधरी मोटूराम तांगे में ही नगर को आया था तथा तांगे में ही गांव को लौटना चाहता था।

गौरीशंकर ने चौधरी को देखा तो हाथ ऊंचा कर आशीर्वाद दे दिया। चौधरी ने तांगा खड़ा किया और पूछ लिया, "पण्डित, कहां घूम रहे हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लाला धन्नामल्ल से कुछ लेना बनता था। वह लेने आया था और बच्चों के लिए कुछ सामान खरीद कर ले जा रहा हूं।"

"तो अभी ठहरोगे या चलोगे ?"

"काम से तो निपट चुका हूं। यदि बस में स्थान मिल गया तो चल दूंगा।"

"तो हमारे ठेले में ही चले चलो।" चौधरी साहब ने प्रस्ताव रख दिया।

"ठेले में ?" सरल चित्त गौरीशंकर ने बात को समझते हुए पूछ लिया।

"हां, पण्डित ! बस के मुकाबिले में यह तांगा ठेला ही तो है।"

"ओह ! तो अपने तांगे में ले चलने के लिए कह रहे हैं।"

चौधरी ने मुस्कराते हुए कहा, "पण्डित ! बस पहुंचेगी पौन घंटे में और यह तांगा डेढ़ घंटे में जा पहुंचेगा। बस, इतनी ही अधिक प्रतीक्षा पण्डितायिन को करनी पड़ेगी।"

गौरीशंकर यही तो चाहता था। वास्तव में उसने हाथ उठा, आशीर्वाद भी इसी आशा में दिया था। अब चौधरी ने स्वयं ही उसे ले चलने को कहा तो पण्डितजी ने कह दिया, "यजमान की जय हो। भगवान् आपको शीघ्र पौत्रों-दुहितों से सुशोभित करे।"

"आओ, सामान आगे कोचवान के पास रख दो और मेरे पास ही बैठ जाओ।"

पण्डित गौरीशंकर के दिमाग में खुजली उठ रही थी। बीस दिन हुए चौधरी ने गांव में एक बहुत भारी उत्सव किया था। उस उत्सव में ज़िला हाकिम मिस्टर कार्टर स्मिथ, आई० सी० एस० भी आये थे। योरुप में जर्मनी से जंग आरम्भ हुए तीन महीने हो चुके थे और इंग्लैण्ड की सरकार की ओर से धन और जन की अपील हो चुकी थी। हिन्दुस्तान के वाइसराय ने भी हिन्दुस्तान सरकार की ओर से जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी, साथ ही देशवासियों को खुले दिल से धन देने और सेना में भरती होने की मांग की थी। इस युद्ध में कांग्रेस तब तक सहायता देने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्कार कर रही थी जब तक देश में स्वराज्य स्थापित नहीं हो जाता।

इस पर भी चौधरी मोटूराम युद्ध प्रयास में सरकार की सहायता कर रहा था।

डिप्टी कमिश्नर ने एक दिन चौधरी से, जब वह अदालत में किसी विषय पर गवाही पर हाजिर हुआ था, पूछा था, "चौधरी साहब! वायसराय बहादुर की अपील पर कुछ दे रहे हो न?"

चौधरी ने कह दिया, "मैं तो हुजूर को गांव की ओर से निमंत्रण देने का विचार कर रहा हूं। आप यदि आयें तो मैं आस-पास के गांवों में डुग्गी पिटवा दूंगा कि हुजूर युद्ध के लिए मदद मांगने आये हैं। स्वयं भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार दूंगा और अन्य ज़मींदारों से भी दिलवाने का यत्न करूंगा। साथ ही यदि आप कुछ समय वहां ठहरने की मंजूरी दें तो मैं आस-पड़ोस के गांवों के युवकों में कुश्तियों का दंगल करवा दूंगा, जिससे दस-बीस गांवों के युवक एकत्रित हो जायेंगे और फिर भरती के लिए भी अपील की जा सकती है।"

डिप्टी कमिश्नर इस प्रस्ताव पर फड़क उठा। उसने कहा, "तो चौधरी! करो, मैं आऊंगा।"

दिन निश्चित हुआ और जिस दिन चौधरी गौरीशंकर को नगर के बाजार में मिला था, उससे बीस दिन पूर्व उत्सव हुआ था।

उत्सव में दंगल हुआ। दंगल में जीतने वालों को बीस-बीस रुपये इनाम और जीतने-हारने वालों, दोनों को पगड़ियां दी गयीं।

युद्ध के लिए धन जमा हुआ। पचास हज़ार रुपये इकट्ठे हुए जिसमें पांच हजार चौधरी मोटूराम ने ही दिये थे।

भरती के लिए भी मांग की गयी और पचास के लगभग युवक तो उसी समय तैयार हो गये। वहां भरती का दफ्तर खोल दिया गया, और दस-बीस युवक नित्य भरती होने लगे।

यही बात थी जो गौरीशंकर के दिमाग में खुजली उत्पन्न कर रही थी। जब तांगा नगर से निकला तो गौरीशंकर ने मन की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दी।

"चौधरी साहब! डिप्टी कमिश्नर के आने पर जलसा तो बहुत शान का हुआ था।"

"हां! आसपास के गांव वालों ने बहुत सहायता दी थी। पचास हजार चन्दा हो गया था। ज़िलह भर में हमारे गांव के भरती दफ्तर में सबसे अधिक भरती हो रही है।"

"कितना रुपया आपने खर्च किया है?"

"बहुत कुछ नहीं। पांच हजार तो नकद चन्दे में दिया है और जलसे में भी इतना कुछ ही हो गया है।"

"पर आपको क्या मिला है? लोग कह रहे हैं, आपको रायबहादुर का ख़िताब मिलेगा।"

चौधरी हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "कहीं सरकार ने यह मूर्खता की तो मैं इन्कार कर दूंगा।"

"तो आपने इतना कुछ फोकट में ही खर्च कर दिया है?"

"पण्डित! तुम को भी तो कुछ न कुछ देता ही हूं।"

"हां, पूजा-पाठ चौधरायिन कराती रहती हैं।"

"परन्तु तुम तो शुद्ध मंत्र भी नहीं बोल सकते। इस पर भी मैं देता हूं।"

पण्डित की ज़बान बंद हो गयी। बात चौधरी ने ही कही, "आज से दस वर्ष पूर्व मेरी मां ने एक दिन कहा था कि पण्डित गौरीशंकर की पत्नी के पास एक ही धोती है। वह बेचारी उसी से नहाती है और उसी को सुखा कर पहनती है।

"बस, उसी दिन से तुमको मैंने अपना पुरोहित बना लिया था। प्रतिवर्ष पण्डितायिन और बच्चों के लिए दो-दो जोड़े वस्त्र भेजता रहता हूं।

"एक दिन मेरी पत्नी का भाई अश्विनीकुमार कहने लगा कि तुम्हारा मंत्रोच्चारण अशुद्ध होता है। इस पर भी मैंने तुमको ही पुरोहित माना है। मैंने अश्विनी से कहा था कि तुम्हारा उच्चारण शुद्ध करा दे। इसके प्रतिकार में उसको भी कुछ दूंगा।"

अब पण्डित नें कहा, "हां! अश्विनीकुमार एक दिन मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने धर्म की संस्कार-विधि में से कुछ बताने लगा था। मैंने उसे अपनी कर्मकाण्ड पद्धति, गोरखपुर में छपी दिखा दी और कहा कि इसमें से पढ़ाइये। इस पर वह नाराज़ हो गया था।"

"अच्छा, कभी मेरे सामने उससे मिलना तो मैं उसे तुम्हारी पूजा पद्धति में से ही उच्चारण सिखाने के लिए कह दूंगा।"

"परन्तु चौधरी! आप उस नास्तिक से यह क्यों करायेंगे?"

"बस, इसलिए जिसलिए मैंने मां के कहने पर पुरोहित की पत्नी की सहायता की थी।"

गौरीशंकर ने बात बदल दी। उसने अपने मन की बात कही, "आप युद्ध में सहायता किस लिए कर रहे हैं?"

"मैं भले लोगों की सहायता करना चाहता हूं।"

"परन्तु गांधीजी तो इसके खिलाफ हैं। और आज सारा देश गांधीजी के पीछे है।"

"होगा, मैं नहीं हूं। कम-से-कम इस युद्ध के विषय में नहीं हूं।"

"हमारा युद्ध से क्या सम्बन्ध है?"

"वही जो मेरी मां का आपकी पत्नी से था। दुर्बल और भले व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए। ये अंग्रेज जर्मनी के हिटलर से कम बुरे हैं। इसलिए मैं उनके जीतने की इच्छा करता हूं।"

"परन्तु अंग्रेज हमें स्वराज्य तो देते नहीं?"

"तो हिटलर ने स्वराज्य देने का वचन दिया है क्या?"

बस, यह गौरीशंकर के विचार करने की सीमा थी। वह चुप कर गया। इस पर भी उसे संतोष नहीं हुआ। उसने बात बदल कर पूछ लिया, "चौधरी! आज किस काम से नगर आये थे?"

"मैंने एक बंदूक और एक पिस्तौल के लाइसेंस की अर्जी की हुई थी। वह मंजूर हुई तो उनको खरीदने नगर में आया था। तीन सौ नब्बे रुपये की बंदूक और बरमिंघम का बना एक पिस्तौल एक सौ साठ रुपये का मिल गया है।"

पण्डित गौरीशंकर चौधरी का मुख देखता रह गया। बात चौधरी ने ही चलाई। उसने कहा, "तुम ब्राह्मण लोगों ने तो हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसानों को भी वैश्य कह रखा है और मेरे मन में एक क्षत्रिय बनने की लालसा बन रही है।"

"तो आप भी अपना नाम सेना में लिखायेंगे ?"

"नहीं। मैं भरती की आयु से ऊपर हो चुका हूं। इस समय मेरी आयु पैंतीस वर्ष की है। भरती पच्चीस से कम आयु की हो सकती है।"

"तो इस बंदूक से मुरगाबियों का शिकार किया करेंगे ?"

"नहीं ! यह बंदूक तो मनुष्यों का शिकार करने की है। मुरगाबियों के शिकार की बंदूकें दूसरी होती हैं।"

गौरीशंकर के मुख का रंग विवर्ण हो गया। चौधरी ने समाधान कर दिया। उसने कहा, "जिस दिन डिप्टी कमिश्नर बहादुर हमारे गांव में आये थे, रहीमबख्श का लड़का करीम कह रहा था कि चौधरी गांव में सबसे बड़ा शिकार बनेगा। जर्मनी की जीत होते ही चौधरी की हवेली लूट ली जायेगी।"

"वह जर्मनी का क्या लगता है ?"

"कर्मचन्द से वह कह रहा था कि जर्मनी मुसलमानों का दोस्त है। वह रूस का भी दोस्त है। इस कारण करीम हिन्दुओं का और अंग्रेजों का शत्रु है। जब जर्मनी जीतेगा तो वह हमारे घर को लूटने आयेगा।

"इसलिये मैंने यह विचार किया कि जिस दिन करीबख्श हमारी हवेली पर गुण्डों की सेना लेकर आयेगा मैं उसका शिकार करूंगा।

"मैं जानता हूं कि वह कम्युनिस्ट है। उसके गुरु रूसी हैं। ये रूसी हिटलर के दोस्त हैं। दोनों ने मिलकर पोलैण्ड को आधा-आधा बांट लिया है।"

गौरीशंकर को युद्ध की गतिविधि का इतना ज्ञान नहीं था। इस कारण उसने फिर बात बदल दी और कहा, "करीमबख्श का बाबा हिन्दू था। वह एक मुसलमान औरत के इश्क में मुसलमान हुआ तो उसका पोता हिन्दुओं के खून का प्यासा हो गया है।"

"हां ! अश्विनी कहता था कि इसमें दोष भी तुम ब्राह्मणों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। तुमने हिन्दुओं को कभी सिखाया ही नहीं कि औरत का अपना कोई धर्म नहीं होता। वह जिसकी बीवी बनती है, उसके ही धर्म की हो जाती है।"

"परन्तु चौधरी ! उसने गोमांस खाया हो तो ?"

"उसकी शुद्धि हो सकती है। जो कुछ खाया जाये, वह अगले दिन टट्टी में निकल जाता है।"

"परन्तु चौधरी ! खाने का सत तो शरीर में रह जाता है ?"

"वह भी तो, कहते हैं कि नित्य बदल रहा है और फिर तुम्हारे वेद-मंत्रों में इतना भी बल नहीं कि खाये-पिये का प्रभाव निकाल सकें ?"

गौरीशंकर ने केवल इतना कहा, "चौधरी ! धर्म की गति अति गहन है। यह आपके बस की बात नहीं।"

"तो किसके बस की बात है ?"

"परमात्मा के।"

"हां, और परमात्मा ने ही मुझे बताया है कि मैं बंदूक खरीद लूं और जब करीमबख्श मेरे मकान पर हमला करे तो निशाना बांधकर उसको नर्क में भेज दूं।"

"तो यह परमात्मा ने कहा है ?"

"हां ! उसकी प्रेरणा पर मैंने डिप्टी कमिश्नर को करीमबख्श की बात बताई तो उन्होंने एकदम मेहरबानी कर मुझे बंदूक और पिस्तौल के लाइसेंस की मंजूरी दे दी।"

रहीमबख्श का लड़का करीमबख्श और चौधरी मोटूराम का सबसे बड़ा लड़का कर्मचन्द, दोनों मित्र थे। करीमबख्श ने एक दिन हंसी-हंसी में ही यह कहा था। वैसे वह जानता था कि अंग्रेज के हार जाने के उपरान्त रूस, जो जर्मनी का मित्र है, हिन्दुस्तान पर अधिकार कर लेगा और तब ये चौधरी इत्यादि नहीं रहेंगे। सब ज़मींदारियां समाप्त हो जायेंगी।

वह समझता था कि यह सब तो सरकार ही करेगी। यहां तब कम्युनिस्ट सरकार बन जायेगी और उसे स्वयं ऐसा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस दिन कर्मचन्द ने करीमबख्श की बात अपने पिता को सुनायी थी, चौधरी ने उससे पूछा था, "तुम उसके घर में किसलिए घुसे रहते हो ?"

कर्मचन्द कुछ उत्तर नहीं दे सका था और अपने पिता का मुख देखता रह गया था।

चौधरी ने डांटकर पुनः पूछा था, "बताते क्यों नहीं ? वहां तुमको क्या मिलता है ?"

"पिताजी !" आखिर कर्मचन्द को बताना पड़ा, "करीमबख्श की बहन फातिमा है। वह मुझे बहुत प्यारी लगती है।"

"ओह ! कितनी उम्र है उसकी ?"

"अभी छठी जमायत में पढ़ती है।"

"मतलब यह है कि ग्यारह वर्ष की है ?"

"मैंने पूछा नहीं। मैं उसी से मिलने जाता हूं।"

"तो उससे विवाह करोगे ?"

"पिताजी ! यह कैसे हो सकेगा ?"

"इसका एक तरीका है।"

"क्या ?"

"पहले यह बताओ कि उससे विवाह करोगे ?"

"फातिमा तो यही कहती है। मगर करीमबख्श कहता है कि पांच वर्ष बाद उसका विवाह होगा, तब देखा जायेगा।"

"अच्छा ! उसे एक दिन यहां लाना। मैं भी देखूं कि तुम में कितनी अक्ल है।"

"किस बात की ? पिताजी !"

"अपनी पत्नी चुनने की।"

कर्मचन्द की आयु इस समय चौदह वर्ष की थी। फातिमा ग्यारह वर्ष की थी। फातिमा के भाई करीमबख्श की आयु बाईस वर्ष की थी। उसका विवाह हो चुका था और वह कम्युनिस्ट पार्टी की लपेट में आ चुका था।

जब से इंग्लैण्ड और जर्मनी में युद्ध शुरू हुआ था, प्रायः नित्य करीमबख्श कर्मचन्द को कम्यूनिज़्म की शिक्षा देने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीमबक्श देख रहा था कि फातिमा कर्मचन्द के आगे-पीछे घूमती रहती है। कर्मचन्द स्कूल की नवीं श्रेणी में पढ़ता था और फातिमा को उससे गणित सीखने में आनन्द आता था। कर्मचन्द भी बहुत लग्न से उसे सिखाता था।

चौधरी मोटूराम को जब पता चला कि उसका लड़का एक मुसलमान की बहन के प्रेम में फंस रहा है तो वह मन में करीम बख्श से भारी झगड़े की आशा करने लगा था। उसी दिन से वह इस झगड़े से पार पाने की योजना बनाने लगा था। इस योजना में बंदूक और पिस्तौल का लाइसेंस प्राप्त करना प्रथम पग था।

: २ :

चौधरी पण्डित गौरीशंकर को लिये हुए गांव में हवेली पर पहुंचा और तांगा हवेली के बाहर अहाते में जा खड़ा हुआ। उसने देखा कि अहाते में फूस के छाजन के नीचे कुर्सियों पर घर के प्राणी इकट्ठे हो रहे हैं। घर की स्त्रियां हवेली के भीतर थीं। स्त्रियों में उसका पत्नी सौभाग्यवती और उसकी बड़ी लड़की सन्तोष ही थीं।

फूस के छाजन के नीचे उसका पिता चौधरी छोटूराम, उसका बड़ा लड़का कर्मचन्द, उसका दूसरा लड़का रामचन्द और तीसरे लड़के की गोदी में सबसे छोटी लड़की शोभा थी। शोभा का जुड़वां भाई बाबा की टांगों में खड़ा था। करीम भी एक कुर्सी पर बैठा था।

मोटूराम हैरान था कि वे सब वहां क्यों एकत्रित हो रहे हैं। इस समय शाम के पांच बज रहे थे।

तांगा अहाते में एक ओर खड़ा हुआ तो गौरीशंकर लपककर उतरा और यजमान को आशीर्वाद देकर बोला, "तो अब मैं जाऊं?"

"हां, और पंडित देखो, मैं अश्विनीकुमार को समझा दूंगा कि वह तुम्हें गणेश पूजा और नवग्रह पूजा के मंत्रों का शुद्ध उच्चारण सिखा दे।"

"हां, कह दीजियेगा। बहुत कृपा होगी।"

इतना कह गौरीशंकर ने अपने सामान की गठरी उठाई और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहाते से बाहर को निकल गया। चौधरी का बड़ा लड़का कर्मचन्द छाजन से निकल तांगे की ओर आ गया।

तांगे के समीप खड़े हो उसने पिता को प्रणाम किया और कह दिया, "पिताजी ! करीमबख्श और उसकी बहन फातिमा आये हैं।"

"किसलिए ?"

"आपने कहा था न कि कभी उसको और उसकी बहन को चाय पर आमंत्रित करूं।"

"ओह, मैं भूल ही गया था। परन्तु उसकी बहन कहां है ?"

"वह माता जी तथा संतोष के साथ भीतर है।"

"तो चाय मंगवाई है ?"

"हां, रामी ला रही है। बाबा करीम से बात कर रहे हैं।"

"और तुम नहीं ?"

"पिताजी ! मैं तो उससे रोज बातें करता हूं।"

बातें करते हुए चौधरी मोटूराम ने तांगे से बंदूक, पिस्तौल तथा गोलियां, जो एक कपड़े के थैले में रखी थीं, उठा लीं। कर्मचन्द ने बंदूक पकड़ ली और कहा, "बहुत सुन्दर बनी है।"

"हां। एक पिस्तौल भी लाया हूं और इस थैले में दो सौ गोलियां भी हैं।"

"ओह ! बहुत रुपये खर्च कर आये हैं ?"

"नहीं, कुछ अधिक नहीं। साढ़े सात सौ रुपये ही खर्च हुए हैं।"

"और देखो," चौधरी ने आगे कहा, "बंदूक की नाली नीचे अथवा बाहर को रखते हैं। कहीं इसमें गोली हो तो चल भी सकती है।"

कर्मचन्द अभी बंदूक की नाली को अपनी तरफ कर उसे देख रहा था। उसने तुरन्त बंदूक का मुट्ठा अपनी तरफ कर, नालियां सामने को कर लीं।

छाजन की ओर चलते हुए मोटूराम ने पुत्र को कहा, "मैं तो लड़की को देखना चाहता हूं।"

"वह अभी जाने से पूर्व बाहर आयेगी ही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटूराम हंस पड़ा और हंसते हुए बोला, "मैं उसकी बुद्धि की परीक्षा करना चाहता हूं।"

"तो आप उससे बात करेंगे ?"

"हां, मैं देखना चाहता हूं कि उसकी बुद्धि मेरी भांति मोटी है अथवा लूमड़ी की भांति सूक्ष्म।"

कर्मचन्द मुस्कराकर चुप हो रहा। वे छाजन में जा पहुंचे।

अब करीमबख्श ने पूछ लिया, "चौधरी साहब। यह किसलिए खरीद लाये हैं ?" उसने बंदूक की ओर संकेत कर दिया।

मोटूराम ने कहा, "गांव में कुछ पागल कुत्ते दिखाई देने लगे थे। यह उनके लिए है। उनके काटने से पहले दूर से ही उनको गोली का निशाना बनाने के लिए।"

"पर पागल कुत्ते यहां हैं क्या ? क्यों कर्मचन्द ! तुमने भी देखे हैं ?"

"नहीं, भाईजान ! मैंने तो नहीं देखे।"

उत्तर मोटूराम ने दिया, "कभी दिखाऊंगा। मैंने एक-दो देखे हैं।"

करीमबख्श ने बात बदल दी, "मैं हैरान होता हूं कि आप बाप-बेटे के नाम किसी शायर ने रखे हैं अथवा ये इत्तफाकिया हैं।"

वहां बैठे सब हंसने लगे। केवल दो छोटे—सदाराम और शोभा सबको हंसते हुए देख विस्मय में चुप थे।

उत्तर बाबा ने दिया। उसने कहा, "देखो करीम ! ये नाम न तो किसी शायर ने दिये हैं, न ही ये इत्तफाकिया हैं। मैं अपने पिता की पांच सन्तानों में अकेला लड़का था और सबसे छोटा था। इस कारण मैं छोटू बन गया। मेरा असली नाम जो मेरी मां ने रखा था, वह रामरखामल्ल था। परन्तु सब मुझे छोटू कहकर पुकारते थे। इस कारण मेरा नाम सबसे छोटा होने के कारण है।

"और मेरा यह लड़का मेरी सबसे बड़ी सन्तान है। यह पैदा होते ही कुछ जरूरत से अधिक मोटा था। इस कारण मैंने इसका नाम मोटू रख दिया।

"वैसे यह अब भी शरीर से कुछ मोटा है। बुद्धि से भी मोटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस कारण इसका नाम भी सार्थक ही है। जैसा गुण, वैसा नाम।"

इस समय घर की नौकरानी रामी एक बहुत बड़े थाल में प्याले, प्लेटें ले ग्रायी। सब कुर्सियों पर, बीच में रखी मेज के चारों ग्रोर बैठे थे। सदाराम ग्रभी भी रामचन्द की गोदी में था ग्रौर लड़की शोभारानी बाबा की गोदी में थी।

सब ने प्लेटें ग्रौर प्याले ग्रपने-ग्रपने सामने रख लिये। तब तक रामी एक बड़ी-सी चायदानी में चाय, चीनी का बर्तन ग्रौर एक गिलास में दूध ले ग्रायी।

करीमबख्श ने कहा, "चौधरी! ग्राप बंदूकें तो खरीद लाये हैं। बढ़िया बर्तन भी चाय के लिए लाये होते तो चाय का मजा ग्रा जाता।"

मोटूराम ने पूछा, "चाय का मज़ा ग्राता ग्रथवा टी-सेट देखने का?"

सब हंसने लगे।

करीमबख्श ने ग्रपने कथन का ग्रर्थ समझा दिया, "चौधरी जी! बीवी का स्वाद उसके सुन्दर होने से बढ़ जाता है या नहीं?"

मोटूराम ने मोटी बुद्धि की बात कर दी, "तो तुम्हारी बीवी बहुत खूबसूरत है?"

"हां! मगर वह पर्दे में रहती है।"

"तो वह टी-सेट नहीं है?"

पुनः सब हंसने लगे। करीमबख्श ने ही इस व्यंग का उत्तर दिया, "जी हां! टी-सेट में कोई भी चाय पी सकता है, परन्तु वह तो मेरे ग्रकेले की बीवी है।"

"मतलब यह कि उसमें तुम ही चाय पीते हो। तो उसका सौन्दर्य किस काम का जो किसी दूसरे के देखने में नहीं ग्राता?"

"तो ग्रापके यहां बीवियां सबके काम की होती हैं।"

चौधरी मोटूराम ने कह दिया, "तो तुम भी बारीक बुद्धि के ग्रादमी हो। यह बात तो मोटी बुद्धि वाला ही समझ सकता है कि सौन्दर्य देखने की वस्तु है। बच्चे सौन्दर्य से पैदा नहीं होते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपनी पत्नी से बच्चे तुम पैदा करो और दूसरों को उसके सौन्दर्य को देखने दो तो इससे उसकी और तुम्हारी क्या हानि होगी ?"

करीमबख्श अभी भी निरुत्तर नहीं हुआ था। वह बोला, "चौधरी साहब ! औरत के सौन्दर्य को देख उससे बच्चा पैदा करने की ख्वाहिश होने लगती है। इसी वास्ते हमारे बानी-उल-इस्लाम ने यह फतवा दिया है कि औरत को पर्दे में रखना चाहिए।"

"तो क्या हज़रत साहब का मन किसी पर कभी भटक गया था ?"

इस पर चौधरी छोटूराम और कर्मचन्द हंस पड़े। छोटूराम ने मोटी बुद्धि के मोटूराम की बात करीमबख्श के नाराज़ हो जाने के डर से बदल दी। उसने पूछ लिया, "यह लड़की, जो भीतर गयी है, क्या तुम्हारी बहन है ? यह तो तुम से बहुत छोटी उम्र की मालूम होती है ?"

"हां, बाबा !" करीमबख्श ने भी हज़रत सुल्लह-उल्-इस्लाम के विषय में बात चलने से रोकने के लिए बाबा की बात का उत्तर देना ठीक समझा।

उसने चाय की एक सरुकी लेते हुए कहा, "मेरे अब्बाजान की चार बीवियां थीं। यह फातिमा मेरी सबसे छोटी अम्मी की लड़की है। यह अभी ग्यारह साल की है। इसके पैदा होने के कुछ महीने बाद ही मेरी छोटी अम्मी का इन्तकाल हो गया था। मेरी अम्मी ने ही इसकी परवरिश की है।

"अब्बाजान के फौत होने के बाद मेरी दूसरी अम्मियों ने दूसरी शादियां कर लीं। वे अपने बच्चे भी अपने नये खाविन्दों के पास ले गयी हैं। मेरी अम्मी काफी बड़ी उम्र की है और वह नयी शादी करना नहीं चाहती थी। इस वास्ते वह इस फातिमा के साथ मेरे घर पर रहती है।"

"वैसे," चौधरी छोटूराम ने पूछ लिया, "तुम भाई-बहन कितने हो ?"

"मेरी उन दो अम्मियों के, जिन्होंने दूसरी शादियां की हैं, नये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाविन्दों से एक-एक बच्चा भी है। अगर उनको न गिनूं तो मेरे अब्बाजान की पांच औलाद हैं।

"वैसे, हम सब सात हैं और अभी उन दोनों अम्मियों की उम्र ज्यादा नहीं है।"

"और फातिमा की अम्मी अगर जिन्दा होती तो उसकी उम्र क्या होती ?"

"फातिमा की अम्मी और मेरी तीसरी अम्मी जुड़वा बहनें थीं। उनकी शादियां दस-दस साल की उम्र में हो गयी थीं। फातिमा की अम्मी उसी उम्र में हमल ले बैठी और इसी वजह से फौत हो गयी।"

मोटूराम को यह कहानी रुचिकर नहीं थी। इस कारण वह कर्मचन्द से बात करने लगा। कर्मचन्द ने कहा, "पिताजी ! अगले साल मैं दसवीं पास कर शहर कॉलेज में दाखिला लेने जाऊंगा।"

"ठीक है। मुझे करीमबख्श अच्छा आदमी मालूम नहीं होता।"

"पर पिताजी ! इसकी बहन तो बहुत अच्छी है। जब वह चली जायेगी तो मां से पता करियेगा।"

"हां, यदि उसने पसन्द कर लिया तो मैं भी पसन्द कर लूंगा। वह और मैं एक ही विचार के प्राणी हैं।"

"आप डिप्टी कमिश्नर साहब से भी मिले थे ?"

"नहीं। मैंने इसकी आवश्यकता नहीं समझी। मैंने अपना पांच हजार रुपया उनके पेशकार के पास जमा करा कर रसीद ले ली है।"

चाय समाप्त होने से पहले ही कर्मचन्द की छोटी बहन संतोष के साथ फातिमा बाहर आ गयी। आते ही उसने करीमबख्श से कहा, "भाईजान ! अब चलना चाहिए।"

"तो कर्मचन्द की मां ने प्यार नहीं दिया ?" करीमबख्श ने पूछ लिया।

"उन्होंने तो बहुत कुछ दिया है। वह देखिये।"

फातिमा ने पीछे आ रही सेविका रामी की ओर संकेत कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। रामी एक टोकरी में कुछ उठाये हुए थी।

"क्या है इसमें ?"

"घर चलकर अम्मी के सामने दिखाऊंगी।"

इस पर रामी ने छोटे चौधरी से कह दिया, "मांजी ने कहा है कि इनको तांगे में इनके घर भेज दीजिए।"

"ठीक है।" मोटूराम ने कह दिया, "ओ भगवती !" चौधरी ने कोचवान को आवाज़ दे दी।

अब करीमबख्श भी उठ खड़ा हुआ और कर्मचन्द से बोला, "अब मैं तुम को और तुम्हारी बहन को चाय पर निमंत्रण दूंगा।"

"दे सकते हो। मैं तो आऊंगा, पर सन्तोष उस निमंत्रण को स्वीकार करेगी अथवा नहीं, यह वह ही बतायेगी।"

संतोष अभी आठ वर्ष की लड़की थी। उसने कह दिया, "फातिमा बहन निमंत्रण देगी तो मान जाऊंगी।"

"हां, मैं ही निमंत्रण दूंगी।" फातिमा ने कहा, "अपनी अम्मी को भी साथ लाना।"

"आपकी अम्मी कहेंगी तो मां भी मान लेगी।"

करीमबख्श समझ रहा था कि यह चौधरी अपने को मोटी बुद्धि का आदमी कहता है और इसके सब बच्चे तो बहुत ही तेज अक्ल रखते हैं।

भगवती कोचवान आया तो करीमबख्श और फातिमा तांगे की ओर चल पड़े। रामी उनके पीछे टोकरी पकड़े हुए कुछ ढांपे हुए ले गयी।

जब तांगा चला गया तो बाबा ने बच्चों को कहा, "अब सब जाओ और खेलो।"

बाबा की आवाज सुन चौधरी मोटूराम के अतिरिक्त सब उठ खड़े हुए। रामचन्द अपना गुल्ली-डण्डा लेने चला गया। वह सदाराम तथा शोभा को भी ले गया। कर्मचन्द भी जाने लगा तो बाबा ने उसे रोक लिया, "कर्मचन्द ! तुम ठहरो।"

कर्मचन्द ठहर गया। अब चौधरी मोटूराम और कर्मचन्द ही वहां रह गये थे। बाबा ने कर्मचन्द से पूछ लिया, "तुमने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की में क्या देखा है ?"

"बाबा ! यह बात करने में चुस्त है और अपनी अम्मी तथा भाई को अक्ल की बात बताती रहती है।"

"अच्छा, तो जाओ अपनी मां को बुला लाओ। देखें, उसने आधे घंटे में इसमें क्या विशेष बात देखी है जो टोकरी भर इनाम दे दिया है।"

कर्मचन्द भीतर चला गया तो बाबा मोटूराम से बंदूक की बाबत पूछने लगा, "कितना दाम खर्च कर आये हो इन पर ?"

"सात सौ रुपये से ऊपर खर्च हुए हैं। बाबा, तीन सौ नब्बे रुपये की तो बंदूक है।

"और यह देखो।" उसने थैले में से पिस्तौल निकालकर दिखाई, "डेढ़ सौ रुपये की यह है।

"एक ऐयरगन भी है। वह बीस रुपये की है और शेष चार सौ रुपये की तीनों के लिए गोलियां खरीद लाया हूं।"

"बहुत खर्च कर आये हो !"

"अधिक धन तो गोलियों पर खर्च किया है। वह खर्च, निशाना बांधना सीखने के लिए मैंने किया है।"

"सब व्यर्थ है !"

"नहीं बाबा ! मैं चौधरी पद से ऊपर उठना चाहता हूं। मैं ठाकुर बनूंगा।"

"क्या लाभ होगा ?"

"सूअरों का शिकार किया करूंगा।"

"तुम सदा मोटी बुद्धि के ही रहे हो। पहले इन जानवरों का पालन करोगे और फिर उनका शिकार करोगे।"

"बाबा ! पालन कोई और कर रहा है। मैं तो शिकार ही खेलूंगा।"

इस समय सौभाग्यवती कर्मचन्द के साथ बाहर आ गयी। सदाराम भी कर्मचन्द की गोदी में था।

"बैठो भाग्यवान !" छोटूराम ने कह दिया।

सौभाग्यवती बैठी तो बाबा ने पूछा, "इस लड़की से क्या बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-S
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती रही हो ?"

"मैं इससे इसकी मां, इसके भाई-बहनों की बातें पूछती रही हूं।"

"तो इसने क्या बताया है ?"

"बहुत मजेदार बात बताई है। इसने अपनी मां को नहीं देखा। जब यह दो महीने की थी तो वह मर गयी थी।

"इसकी तीन अम्मियां और भी हैं। यह एक के पास रहती है। दूसरी दो अम्मियों ने दोबारा शादी करा ली है। करीमबख्श के अतिरिक्त इसके तीन भाई और हैं। वे अपनी-अपनी अम्मियों के पास रहते हैं।"

"यह कर्मचन्द कह रहा है कि इस लड़की से शादी करना चाहता है।"

"वह लड़की भी इससे शादी करना चाहती है।"

"तो यह उसने कहा है ?"

"हां, वह कहती थी कि कर्मचन्द ने उसे कहा है उसके पिता उसको देखना चाहते हैं। इस कारण वह अपने बनने वाले श्वसुर को देखने चली आयी थी।"

"ओह ! क्यों कर्मू ! तुमने उससे विवाह की बात की है ?"

"हां, बाबा ! इसके भाई के सामने ही की थी।"

"तो उसने क्या कहा है ?"

"किसने बाबा ? फातिमा ने अथवा करीम ने ?"

मोटूराम ने बातों का सूत्र अपने हाथों में लेते हुए पूछा, "तो यह बहन का भाई ही सब कुछ कर रहा है ?"

"हां, पिताजी ! इस पर भी बात पहले फातिमा ने ही की थी। आज से दो वर्ष पहले की बात है। मैं एक दिन अकेला बैठा था और करीम की एक पुस्तक पढ़ रहा था कि यह मेरे पास आकर कहने लगी, 'भाईजान ! मैं आपसे शादी करूंगी।'

"मैं इसको एकाएक विवाह की बात करते सुन विस्मय में इसका मुख देखता रह गया। इस पर वह बोली, 'तो समझे नहीं, मैंने क्या कहा है ?'

Central Library
168008
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२५१५.०४०१
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कहा, 'समझा हूं, परन्तु भाईजान से कोई लड़की शादी नहीं करती। मैं तो भाईजान हूं।'

"इसका कहना था, 'हमारे मुसलमानों में तो होती है। मेरी एक अम्मी ने अपने चाचा के लड़के से शादी की है। पहले वह उसका भाईजान था और अब उसका खाविन्द है।'

"मैंने कहा, 'मगर मैं हिन्दू हूं। मैं बहन से शादी नहीं कर सकता।'

"इसने कह दिया, 'तो मैं आपको भाईजान कहना छोड़ दूंगी। आप न तो मुसलमान हैं, न ही मेरी अम्मी के लड़के।'

"मैंने कहा, 'पर बहन तो बिना मां की लड़की के भी हो सकती है।'

"इस पर फातिमा ने कहा, "तो आज से हमारी 'कुट्टी'। मैं आपकी बहन नहीं रही।'

"मेरी हंसी निकल गयी और मैंने पूछा, 'पर विवाह किसलिए करना चाहती हो?'

"इस पर उसने कहा, 'नहीं बताऊंगी।' और वह उठकर भाग गयी।

"मैं समझा कि करीम की बीवी ने इसको कुछ बताया है। इस कारण बात दिमाग से निकाल, मैं पुनः पुस्तक पढ़ने लगा।

"इसके एक साल बाद, मेरा मतलब है, पिछले वर्ष इसने अपने भाई के सामने ही मुझको कहा, 'भाईजान! इनसे कहो कि मुझसे शादी के लिए मान जायें।'

"करीम ने इससे पूछा, 'शादी कर क्या करोगी?'

"इस पर वह फिर हंसी और भागकर कमरे से निकल गई। मैंने करीम से कहा, 'मालूम होता है तुम अपनी बीवी से बात करते समय यह ख्याल नहीं रखते कि यह तुमको देख रही है अथवा नहीं। यह अपनी उम्र से कुछ ज्यादा जान गयी है?'

"करीम का कहना था, 'नरगिस ने बताया है कि यह शादी का मतलब सिर्फ मुख चूमना ही समझती है और यह नरगिस को कहती थी कि इसका जी चाहता है कि करीम के दोस्त का मुख चूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले।'

"मैंने करीम को बताया कि मैं इसको वहन मानता हूं। इस पर वह हंस कर बोला, 'आज से तुम मेरे भाई नहीं रहे। इससे तुम उसके भाई भी नहीं रहोगे। तब शादी हो सकेगी।'

"अब मैंने मन में विचार किया है कि अगर शादी करनी है तो वह अच्छी, सुन्दर और बुद्धिशील लड़की है। इस कारण मैं एक दिन करीमबख्श के सामने मान गया कि मैं इससे विवाह करूंगा। इस पर तो यह कूद कर मेरी ओर लपकी और मेरा मुख चूम कर बोली, 'कब होगी शादी?'

"मैंने इसे और इसके भाई को कह रखा है कि मैं एम० ए० तक पढ़ूंगा और शादी पीछे करूंगा।"

"तो इसने क्या कहा है?" चौधरी मोटूराम ने पूछा।

"यह तो भागकर अपनी भाभी को उस दिन की वारदात बताने चली गयी। मगर करीम ने कहा, 'शादी अभी सात-आठ साल बाद होगी।'

"इसके उपरान्त मैंने मां और पिताजी को यह बात बतादी।"

"पर यह तुमको मुसलमान होने के लिए कहेगी?" बाबा ने कहा।

"कैसे मुसलमान बना लेगी?"

उत्तर बाबा ने ही दिया, "सुन्नत करवाकर।"

"वह क्या होती है?" कर्मचन्द ने पूछा।

इस पर पुनः चौधरी मोटूराम ने कहा, "बाबा! यह सुन्नत नहीं करायेगा।"

"यह लड़की के प्रेम में ज़मीन पर नाक रगड़ेगा।" बाबा ने कह दिया।

"नहीं बाबा!" उत्तर कर्मचन्द की मां सौभाग्यवती ने दिया, "मेरा बेटा इतना मूर्ख नहीं है।"

"सौभाग्य! यह तुम्हारा बेटा है क्या? मैं तो समझता हूं कि तुम्हारे मोटी बुद्धि वाले मोटूराम का बेटा है।"

सौभाग्यवती ने कहा, "पर भूमि तो मैं ही हूं। अक्ल तो मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही इसमें है।"

बात समाप्त हो गयी।

: ३ :

सौभाग्यवती गुरुकुल के स्नातक अश्विनीकुमार की बहन थी। जब मोटूराम होशियारपुर डी० ए० वी० स्कूल में दाखिल हुआ था, उसके पिता ने उसे बोर्डिंग हाउस में दाखिल करवा दिया था। तब वह तीसरी श्रेणी में पढ़ता था।

डिप्टी कमिश्नर के पेशकार लाला रलाराम का लड़का सीताराम भी उसकी श्रेणी में पढ़ता था। वह अपने माता-पिता के घर पर रहता था। मोटूराम नाम सीताराम को बहुत पसन्द आया और दोनों घनिष्ट मित्र हो गये। परिणामस्वरूप मोटूराम सीताराम के घर आने-जाने लगा।

सौभाग्यवती उस समय पांच वर्ष की थी। वह भी अपने भाई के मित्र को देखा करती थी। एक वर्ष तक सीताराम मोटूराम के साथ पढ़ता रहा। पीछे सीताराम के पिता ने उसे गुरुकुल कांगड़ी में भरती करवा दिया। वहां सीताराम का नाम बदलकर अश्विनीकुमार हो गया। सीताराम की मां रामप्यारी लड़के के मित्र मोटूराम को घर पर बुलाती रहती थी।

परन्तु जब मोटूराम दसवीं श्रेणी में तीन वर्ष तक फेल होता रहा तो रलाराम की पत्नी ने लड़के को मन से उतार दिया। इस पर भी मोटूराम उनके घर आता-जाता रहा। सौभाग्यवती तो आठवीं श्रेणी तक ही पढ़ सकी थी। इससे ऊपर लड़कियों का स्कूल वहां नहीं था।

तीसरी बार जब मोटूराम दसवीं श्रेणी में फेल हुआ तो पिता चौधरी छोटूराम को समझ आया कि लड़का आवारा हो गया है। उस समय वह अट्ठारह वर्ष का हो चुका था। इस कारण परीक्षा का परिणाम पता चलते ही छोटूराम ने पुत्र से कहा, "अब तुम पढ़ने नहीं जाओगे।"

"हां, बाबा! मुझे ऐलजैबरा, जियोमैट्री नहीं आती।"

"क्यों नहीं आती?" छोटूराम तो केवल आठवीं श्रेणी तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ा था, परन्तु उर्दू भाषा का अच्छा-खासा अभ्यास रखता था। वह जीवन के आरम्भ में उर्दू में कानून की किताब पढ़कर मुख्तार का काम कर चुका था।

"बाबा! तुम पढ़ो तो पता चले। बड़े-बड़े फामूले होते हैं।"

"क्या होते हैं?"

"बाबा! 'ए माइनस बी' का 'स्क्वेयर' बराबर है 'ए स्क्वेयर, माइनस बी स्क्वेयर प्लस टू ए बी।' यह मुझे समझ नहीं आता। इसी में मैं फेल होता हूं और इसमें पास हुए बिना सारी परीक्षा में पास नहीं हो सकता।"

"तो फिर अब क्या करोगे?"

"बाबा! खेतों में काम करूंगा और…?"

"और क्या?"

"विवाह करूंगा।"

"ओह! तो यह बात है। अच्छा, तुम्हारी मां से कहूंगा कि तुम्हारे लिए कोई लड़की ढूंढ़ लाये।"

मोटूराम के मन में सीताराम की बहन बसी हुई थी। परन्तु वह शर्म के मारे पिता को कह नहीं सका। परन्तु जब मां इधर-उधर गांव में लड़कियां देखने लगी तो पुत्र ने मां से कहा, "मां! होशियारपुर में डिप्टी कमिश्नर के पेशकार लाला रलाराम की पत्नी से मिल लो। कदाचित्, वह तुम्हें कोई लड़की बता सके।"

"उसको कैसे जानते हो? मेरा मतलब है इतने बड़े आदमी की बीबी को।"

"वह मेरे एक मित्र की मां है। मेरा मित्र तो अब गुरुकुल में पढ़ने गया हुआ है। मगर लालाजी और मित्र की माताजी मुझे घर पर बुलाते रहते थे।"

"किसलिए?"

"लालाजी कहते थे कि मुझे अपना लड़का मानते हैं।"

मोटूराम की मां को तो कोई लड़की टीकड़ी में पसन्द नहीं आयी थी। इस कारण वह एक दिन बस में सवार हो अपने पति के साथ नगर में जा पहुंची। वहां पेशकार साहब के मकान पर पहुंच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब द्वार खटखटाया तो द्वार सौभाग्यवती ने ही खोला। लड़की ने प्रश्नभरी दृष्टि में आने वालों की ओर देखा तो मोटूराम की मां ने पूछ लिया, "यहां कोई रामप्यारी रहती हैं?"

"हां! आप कहां से आये हैं?"

सौभाग्यवती उस समय पन्द्रह वर्ष की लड़की थी। छोटूराम ने बताया, "हम टीकड़ी से लाला रलाराम और उनकी पत्नी से मिलने आये हैं।"

"ठहरिये! पिताजी घर पर हैं। मैं पूछ कर बताती हूं।"

सौभाग्यवती ने भीतर जा, मां को कहा, "भैया के मित्र के माता-पिता आपसे मिलने आये हैं।"

"कौन?"

"टीकड़ी से।"

"तो मोटू भी साथ है?"

"नहीं।"

रामप्यारी ने सौभाग्यवती के पिता को उसके कमरे में जाकर कहा, "मोटू के माता-पिता आये हैं।"

वह लपक कर उठा और बैठक का द्वार खोल, दोनों अतिथियों को भीतर बैठाकर आने का कारण पूछने लगा।

नौकरानी दोनों के लिए दूध की लस्सी बनाकर ले आयी। मोटूराम की मां सावनी ने पेशकार की पत्नी से पृथक् में जाकर अपने आने का प्रयोजन बताया तो रामप्यारी ने कह दिया, "लड़का तीन बार दसवीं श्रेणी में फेल हो चुका है। इस कारण लड़की के पिता से पूछना पड़ेगा। मैं तो उसे दामाद बनाने की इच्छा करती हूं। परन्तु उसके पिता सरकारी नौकर हैं और वह अपने दामाद को एक सरकारी नौकर देखना चाहेंगे।"

सावनी ने कह दिया, "तो बहनजी! यह आप राय कर लीजिए। मैं तो इसलिए आयी थी कि आप लड़के को जानती हैं। इस कारण कोई शहर की लड़की बता सकें तो लड़के का उद्धार हो जाएगा।"

"वह अब क्या करेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"घर की दस एकड़ भूमि पर काम करेगा।"

"तो ऐसा करिये," रामप्यारी ने कह दिया, "आप अब जाइए। पीछे मैं आराम से पेशकार साहब से बात करूंगी। यदि किसी लड़की के विषय में विचार बना तो हम आपसे मिलने गांव में आयेंगे। मेरे देवर की तीन लड़कियां हैं और भी आस-पड़ोस में कई हैं। कहीं काम बन जायेगा।"

यह सूचना ले छोटूराम सावनी के साथ गांव को लौट गया। उसका विचार था कि बात टाल दी गयी है।

परन्तु बात इससे उलट निकली। इससे अगले रविवार को ही रलाराम और रामप्यारी गांव टीकड़ी में आ पहुंचे और सवा रुपया, नारियल तथा चौदह छुआरे शकुन के रूप में दे गये।

इस प्रकार मोटूराम का विवाह हुआ और ईश्वर कृपा से सौभाग्यवती ने बच्चों की लहर-बहर लगा दी।

छोटूराम की पत्नी के देहान्त के बाद तो सौभाग्यवती सर्वेसर्वा हो गयी और उसने घर का प्रबन्ध सुचारु रूप से करना आरम्भ कर दिया।

विवाह के समय पांच दिन की छुट्टी ले अश्विनी भी बहन के विवाह पर आया था। वह मोटूराम के गांव को देख बहुत प्रसन्न हुआ था। उसने गुरुकुल को लौटने से पूर्व अपने पिता से कहा था, "पिताजी ! गुरुकुल की पढ़ाई समाप्त करने पर मुझे सरकारी नौकरी तो मिलेगी नहीं। इस कारण यदि आप एक छोटा-सा खेत इस देहात में ले दें तो मैं उस भूमि से निर्वाह योग्य पैदा करता हुआ अपने पठन-पाठन का कार्य करूंगा।"

रलाराम पहले ही विचार कर रहा था कि गुरुकुल में शिक्षित कहीं नौकरी तो कर नहीं सकेगा। अब अपने लड़के को भी वही बात कहते सुन, सौभाग्यवती के गांव में ही उसके श्वसुर की सहायता से दो एकड़ भूमि लेने में वह सफल हो गया।

यह थी पृष्ठभूमि अश्विनी के गांव में रहते हुए पण्डित गौरी-शंकर से बातचीत की।

एक दिन गौरीशंकर मोटूराम के घर में पूजन करा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दिन कर्मचन्द के छोटे भाई रामचन्द का यज्ञोपवीत हुआ था। अश्विनीकुमार गौरीशंकर का स्तोत्र पाठ सुन हंस पड़ा। पीछे उसने अपने जीजा से कहा, "यह आपका पुरोहित तो सर्वथा अनपढ़ है।"

"हां ! यह स्कूल में नहीं पढ़ा।"

"जीजा जी ! वह कहीं भी नहीं पढ़ा। इसका उच्चारण सर्वथा अशुद्ध है।"

"तुम तो बहुत पढ़े हो। इस बेचारे को पूजन करना सिखा दो। इसका भी कल्याण होगा और हमारा भी कल्याण होगा।"

"तो इसे मेरे घर पर भेज दीजिए। मैं इसे संस्कार कराना सिखा दूंगा।"

इस प्रबन्ध के अनुसार गौरीशंकर अपनी गीता प्रेस की छपी संस्कार पद्धति लेकर अश्विनीकुमार के घर पर जा पहुंचा।

गौरीशंकर ने अश्विनीकुमार को आशीर्वाद देते हुए कहा, "यजमान की जय हो। मुझे चौधरी ने आपके पास कुछ पढ़ने के लिए भेजा है।"

"ठीक है। मैंने ही उनको एक दिन कहा था कि यदि आप आ जायें तो मैं आपको संस्कार कराने सिखा दूंगा।"

"इसीलिए तो आपकी सेवा में आया हूं।"

अश्विनीकुमार ने अपनी अलमारी में से स्वामी दयानन्द रचित संस्कार विधि की एक नयी प्रति निकाल पण्डित जी को देते हुए कहा, "इसको पढ़ियेगा तो हिन्दू सन्तान के सोलह संस्कार कराने सीख जायेंगे।"

गौरीशंकर ने पुस्तक पर श्री दयानन्द का नाम पढ़ा तो उसने थैले में से नवग्रह पूजा पद्धति निकाल सामने कर कहा, "अश्विनीजी ! मैं यजमानों के पास इसके अनुसार संस्कार कराता हूं। इस कारण इसमें से पढ़ाइये और समझाइये।"

"परन्तु यह तो अवैदिक है।"

"परन्तु मेरे यजमानों के घर में यही चलती है।"

"यह मैं नहीं पढ़ाऊंगा। यह तो पाप हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर गौरीशंकर परेशानी में मुख देखता रह गया। अश्विनीकुमार ने कहा, "यह ग्रन्थ मैं नहीं पढ़ाऊंगा।"

"तो मैं जाऊं ?"

"हां।"

इसी बात का उल्लेख गौरीशंकर ने उस दिन तांगे में आते हुए चौधरी मोटूराम से किया था और चौधरी ने कहा था कि वह अश्विनी को समझा देगा।

बात अगले दिन ही हो गयी। गांव में बात फैल गयी कि करीमबख्श बहन को लेकर चौधरी के घर चाय लेने गया है। यह बात अश्विनी ने अपने खेत के एक कामे से सुनी तो वह बहन के घर पर जा पहुंचा।

उस समय चौधरी खेत पर गया हुआ था। कर्मचन्द और रामचन्द स्कूल गये हुए थे। अन्य बच्चे तो घर पर ही थे। परमानन्द स्कूल में भरती तो हो गया था, परन्तु उसका चित्त पढ़ाई से अधिक गांव के लड़कों से खेलने में लगता था। इस कारण वह स्कूल नहीं गया था।

अश्विनी आया तो बहन ने बैठक घर में उसे आसन दे बैठाया और जलपान पूछा। अश्विनी ने कह दिया, "बहन ! घर से दूध पीकर चला था। इस कारण अभी कुछ इच्छा नहीं हो रही।"

"तुम्हारे जीजाजी तो अभी खेतों से आये नहीं। आजकल सिचाई का ज़ोर है। इस कारण बारह बजे से पहले नहीं आयेंगे।"

"पर बहन ! मैं तो तुमसे मिलने आया हूं।"

"अच्छा, बताओ।"

"गांव में चर्चा हो रही है कि करीम और उसकी बहन कल यहां चाय-पानी के लिए आये थे।"

"हां।"

"वह तो कट्टर मुसलमान है।"

"पर भैया ! हमारे घर की चाय तो हिन्दुओं के घर की भांति मीठी ही थी।"

"यही तो कहने आया हूं। उसको मीठी चाय पिलाओगी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उसे भी गंदी कर देगा।"

सौभाग्यवती ने वास्तविक बात भाई से करने के लिए कह दिया, "मुझे उसकी बहन पूर्वजन्म की हिन्दू दिखाई दी है।"

"ओह! तो तुम भी पौराणिकों की सी बातें करने लगी हो? कैसे कहती हो कि वह हिन्दू की सन्तान अब एक चार बीवियों वाले मियां के घर में पहुंच गयी है।"

"उसने कोई पाप किया होगा। तभी उसे इनके घर में जन्म मिला है। वैसे देखने में वह एक हिन्दू लड़की प्रतीत हुई थी।"

"उसमें कौन-सी बात हिन्दूपन की देखी थी?"

"मैंने उससे पूछा था—खुदा को मानती हो? वह बोली, 'कैसे इन्कार कर सकती हूं! मां पैदा होते ही मर गयी तो एक दूसरी मां मिल गयी। वालिद गुजरे तो अब एक दूसरे वालिद दिखाई देने लगे हैं। भाईजान के दोस्त के अब्बाजान वालिद ही समझ आ रहे हैं।'

"मैंने उससे पूछा, 'गोमांस खाती हो?'

"उसने नाक चढ़ा कर कहा, 'मैं तो मांस भी नहीं खाती।'

"मैंने पूछा, 'घर के दूसरे लोग तो खाते होंगे?'

"उसने कहा, 'मेरी अम्मी अब नहीं खातीं। भाईजान और भाभी खाते हैं, मगर हम मां-बेटी नहीं खातीं।'

"इससे वह लड़की मुझे बहुत भली प्रतीत हुई है। करीम कर्मचन्द का दोस्त है और वह उसे घर ले जाया करता है। कर्मचन्द ने लड़की की प्रशंसा की थी और तुम्हारे जीजाजी ने बहन-भाई को यहां चाय पर दावत दी थी।"

इस समाचार से तो अश्विनीकुमार परेशानी अनुभव करने लगा। कुछ देर तक बहन का मुख देखते हुए वह बैठा रहा। फिर पूछने लगा, "तो कर्मचन्द उससे विवाह करेगा?"

"अभी नहीं। विवाह उसके एम० ए० पास करने के बाद होगा।"

"तब ठीक है। मगर बहन! अगर वह उसके घर जाता रहा तो बिना विवाह के भी उनमें सम्बन्ध बन सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कर्मचन्द को इस बात से सावधान कर दिया है। रात उसके पिता ने उसे एक समाचार पत्र में छपे कार्टून का चित्र दिखाया था और उसका मतलब समझाया था।"

"क्या कार्टून था ?"

"एक चतुर आदमी गधे पर सवार था। उस आदमी ने एक छड़ी से एक गाजर बांध गधे के सामने लटका रखी थी। गधा गाजर के पीछे भाग रहा था। मगर सवार की छड़ी के साथ बंधी गाजर आगे ही आगे चलती जाती थी और गधा भागता हुआ चतुर व्यक्ति को उसके लक्ष्य स्थान पर ले गया था।

"कर्मचन्द के पिता ने कहा है कि यदि तुम इस मुतास्सब मुसलमान और कम्युनिस्ट की बहन से शादी करना चाहते हो तो गाजर को उसकी दृष्टि के सामने बनाये रखना और अपने लक्ष्य स्थान पर पहुंचने पर ही गाजर उसे खाने को देना।"

"तो यह कर्मचन्द कर सकेगा ?"

"यह तुम कर्मचन्द और उसके पिता से पूछना। मुझे योजना पसन्द आयी है, परन्तु योजना चलानी तो कर्मचन्द ने ही है।"

"वह स्कूल से किस समय आता है ?"

"बारह बजे घर पहुंच जाता है।"

अश्विनी ने हाथ में बंधी घड़ी देखी। उस समय ग्यारह बजे थे।

सौभाग्यवती ने भी समय देखा और कह दिया, "बाबा अपने कमरे में हैं। उनसे मिल लो। तब तक कर्मचन्द के पिता भी आ जाएंगे और कर्मचन्द भी आ जाएगा।"

अश्विनीकुमार उठकर बाबा के कमरे में चला गया। चौधरी छोटूराम हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। अश्विनीकुमार ने नमस्ते कही तो छोटूराम ने आंखें ऊपर कर अश्विनी को आते देखा। हुक्के की नाल एक तरफ फेरकर उसने कहा, "आओ अश्विनी! बच्चे कैसे हैं ?"

अश्विनीकुमार अपने परिवार सहित गांव में एक मकान में रहता था। उसके दो ही लड़के थे। एक इस समय होशियारपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल में पढ़ता था और दूसरा गांव के प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था। होशियारपुर में पढ़नेवाला बोर्डिंग हाउस में रहता था। वैसे उसकी मित्र-मण्डली शहर में ही थी। इससे वह कभी-कभी पिता के पास एक-दो दिन रहने के लिए आया तो करता था, परन्तु रहता नगर में ही था।

छोटूराम के कमरे में हुक्के का धुआं भर रहा था। अश्विनी भीतर आया तो उसे खांसी आ गयी। छोटूराम ने कहा, "ओह अश्विनी! चलो बाहर बैठक में। यहां तो मेरे हुक्के का साम्राज्य है। तुमको वह पसन्द नहीं।"

दोनों उठकर बाहर बैठक में आ गये। बैठक में सौभाग्यवती सबसे छोटी लड़की शोभा को सुलाने आयी हुई थी। बाबा और अश्विनी आये तो सौभाग्यवती बाबा को बताने लगी कि भैया किस-लिए आए हैं। बाबा मुस्कराता हुआ सुनता रहा। जब सौभाग्यवती बता चुकी तो बाबा ने अश्विनीकुमार की ओर देखकर पूछ लिया "तो 'कृणवन्तु विश्वमार्यम्' का क्या होगा?"

"बाबा! उसके लिए अभी वातावरण बना नहीं। पहले समाज को तैयार करना होगा। समाज अभी तैयार नहीं है।"

"कैसे तैयार करोगे? देखो बेटा! हम जाट हैं। हमें बहुत बारीक बातें नहीं आतीं। मैं तो कहूंगा कि सब हिन्दू युवक मुसल-मान लड़कियों से विवाह कर लें। उनमें से कुछ भाग जाएंगी, जितनी बच जाएंगी उतना ही अपने को लाभ होगा।

"तुम गांव में आये हो। एक पाठशाला खोल लो और यह सिखाओ कि किस प्रकार मुसलमान लड़कियों से विवाह कर उनको हिन्दू बनाना चाहिए।"

"बाबा! यह हो नहीं सकेगा।"

"तो गुरुकुल में क्या पढ़ते रहे हो, अगर तुम यह भी नहीं सीख सके कि बीवी को कैसे अपने अधीन करना चाहिए।

"देखो! तुम्हारी बहन यहां आयी थी तो वह भी शहरी हिन्दुओं की भांति बातें बनाती थी और असल बात नहीं करती थी। हमने उसे सिखाया है कि पति को कैसे अपने अधीन किया जाता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम कर्मचन्द को सिखा रहे हैं कि पत्नी को कैसे वश में रखना चाहिए।"

"कैसे रखना चाहिए ? बाबा ! मुझे भी सिखा दीजिए।"

"सिखा सकता हूं। यदि तुमने एक दूसरा विवाह करना हो तो और वह भी किसी मुसलमान लड़की से।"

"नहीं बाबा ! मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूं।"

"तो प्रेम इतनी छोटी वस्तु है कि लोटे के पानी की भांति अधिक भरने से बाहर गिरने लगता है।"

अश्विनी इस बूढ़े की बात का रस ले रहा था, परन्तु वह उससे अपने मन की भावनाओं को बताना नहीं चाहता था।

बात छोटूराम ने ही कही। उसने कहा, "देखो ! मैंने एक ही विवाह किया है। मैंने कभी दूसरी औरत से विवाह की इच्छा नहीं की। मगर जिस किसी भी औरत को मुझसे मिलने का अवसर मिला है, वह मुझ पर लट्टू हो जाती रही है। हिन्दू औरतें तो बेचारी धर्म बन्धन में बंधी हुई मन की बात कहती नहीं थीं, परन्तु मुसलमान औरतें तो दूसरा विवाह करने के लिए मेरी मिन्नत करने लगती थीं।"

"पर बाबा ! यह कैसे हो सका था ?"

"इसके लिए वीर्य संचय करो। बताओ, पत्नी के पास महीने में कितनी बार जाते हो ?"

अश्विनीकुमार को अपनी अन्तरंग बात बताते हुए लज्जा लगने लगी। वह बात बदलकर बोला, "छोटे चौधरी कब तक आने वाले हैं ?"

छोटूराम हंस पड़ा और अश्विनीकुमार के मन की बात समझ बोला, "बस आने ही वाला है। तुमको उससे कुछ काम है ?"

"यही कर्मचन्द के विषय में कुछ बात करने आया हूं।"

"तो ठहरो।"

समीप बैठी सौभाग्यवती को छोटूराम ने कहा, भाई को बादाम का हलुवा खिलाओ जो तुमने कल बनाया था ?"

"भैया, लाऊं ?" सौभाग्यवती ने भाई से पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठहरो ! जीजा जी को ग्राने दो। दोनों इकट्ठे ही खायेंगे।"

इस समय रामचन्द ग्रा गया। वह ग्रपनी पुस्तकों का थैला कंधे से लटकाए हुए था। उसने मामा को बैठे देखा तो हाथ जोड़ नमस्ते कहकर बोला, "मामाजी ! पानी लाऊं?"

"ग्ररे, केवल पानी ?" बाबा ने पूछा।

"साथ में हलुवा भी ला सकता हूं।"

"नहीं, तुम पानी पियो। तुम्हारा मुख सूख रहा दिखाई देता है।" बाबा ने कहा।

"मैं तो ग्रब रोटी खाऊंगा।" रामचन्द ने मुस्कराते हुए कह दिया।

"वह तुम्हारी मां खिलायेगी।" ग्रश्विनी ने कहा।

"मामा जी ! मां तो खायेगी, रामी खिलायेगी।"

रामचन्द बैठा ही था कि कर्मचन्द ग्रौर परमानन्द भी ग्रा गए। साथ ही उनके पीछे-पीछे उनका पिता, मोटूराम भी ग्रा पहुंचा।

"ग्रोह ! ग्रश्विनी भैया ! ग्राज तो बहुत कृपा की है जो बहन से मिलने ग्राये हो ?"

"जीजा जी महाराज ! बहन से नहीं, ग्रपने पुराने मित्र मोटूराम से मिलने ग्राया हूं।"

"तो ठहरो, मैं स्नान कर लूं। फिर खाना खाते हुए बात करेंगे।"

इस कारण ग्रश्विनीकुमार को दस मिनट तक बैठना पड़ा। हवेली के प्रांगण में कुग्रां था। वहां बाल्टी ग्रौर रस्सी रखी थी। दस मिनट में ही मोटूराम स्नान कर, वस्त्र पहनकर ग्राया तो सब भोजनालय में जा पहुंचे। वहां रामी सबके लिए चौकियां लगाये हुए बैठी थी। सिवाय दो छोटे बच्चों के सब चौकियों पर बैठ गए। ग्राज एक चौकी ग्रश्विनी के लिए भी लगी थी। सबके बैठते ही सब के ग्रागे तिपाईयां रख दी गईं ग्रौर उन पर थाली में रोटी, मक्खन, साग-भाजी, चटनी, ग्रचार इत्यादि डाल दिया गया।

खाते-खाते ग्रश्विनी ने बात ग्रारम्भ कर दी। उसने कहा, "कल सायंकाल खेतों पर काम करने वाले एक कामे ने बताया था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौधरी मोटूराम के घर करीमबख्श अपनी बहन के साथ आया था। उसे वहां से लाल कपड़े से ढकी हुई एक डलिया मिली है। इस से मुझे चिन्ता लग रही थी क्योंकि करीमबख्श एक कट्टर मुसलमान है।"

"तो फिर क्या हुआ? मैंने कल कर्मचन्द को एक योजना बताई है और अगर वह उसको पूरी कर सका तो एक कट्टर मुसलमान की बहन एक नवग्रह पूजा करनेवाले हिन्दू की पत्नी बन जाएगी।"

"और सब गांव के हिन्दू उससे नफरत करने लगेंगे।"

"भैया!" मोटूराम ने कहा, "ये गांव वाले मेरा मान क्या इसलिए करते हैं क्योंकि मैंने गुरुकुल कांगड़ी के पढ़े एक साथी की बहन से विवाह किया है?

"मेरी मां मेरे इसी काम के लिए मेरी पीठ ठोकती थी, परन्तु गांव वाले तो मेरा मान इस कारण करते हैं कि मैं सबका मुख मीठा कराता रहता हूं।

"और हां, एक बात और बता दूं।"

"क्या?"

"आज मैं करीम के घर गया था और उसकी अम्मी से मिला हूं। वह बुर्का पहने मिलने आयी थी, परन्तु आधा घंटा की बात करने के उपरान्त वह बोली, 'आप तो बहुत ही अच्छे आदमी हैं। आप मेरे भाई ही लग रहे हैं।' इतना कहकर वह बुर्का हटा बातें करने लगी।"

"यह कैसे हुआ?"

"इसका कारण है। मैं और मेरे बाबा को यह सदा प्रिय रहा है। यह हमारे 'ब्रह्मचर्य' का व्यवहार करने से ही है।

"कोई भी स्त्री मुझे देख मुझसे मुहब्बत करने की इच्छा करने लगती है। कोई भले विचार की हुई तो भाई कह मुहब्बत प्रकट करती है और कोई उल्टे विचार की हुई तो मुझसे विवाह करने की बात करने लगती है। परन्तु मैं गधों के सामने लटकी गाजर की भांति लटका रहता हूं और आकर्षण बनाये हुए सबसे प्यार किये जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं।"

"यह सर्वथा असम्भव है।"

"नहीं भैया! कुछ अभ्यास की बात है। मैं कर्मचन्द को इसी प्रकार तैयार कर रहा हूं। वैसे ही जैसे मेरे बाबा ने मुझ को तैयार किया था।

"हम मोटी बुद्धि के लोग ब्रह्मचर्य का अर्थ समझते हैं—भरपूर कोष परन्तु बाहर सुदृढ़ ताला।"

: ४ :

फातिमा के चौधरी के घर जाने के कारण करीमबख्श के घर पर भी हलचल मची थी। जब फातिमा टोकरी में लाल कपड़े से ढका हुआ सामान लेकर भाई के साथ आई तो करीम की अम्मी सोहनी और पत्नी नरगिस दोनों उत्सुकता से देखने बैठकघर में आ गयीं।

फातिमा ने टोकरी पर से कपड़ा उठाते हुए दिखाया, "अम्मी! यह उनकी मां ने मुझे दिया है।"

टोकरी में सबसे ऊपर सोने का एक लाकेट था। दो-अढ़ाई तोले का मालूम होता था। लाकेट के नीचे लाल रंग का एक पेण्डेण्ट लटक रहा था। फातिमा ने उठा अपने गले में पहन भाभी को दिखाते हुए पूछा, "कैसा लगता है?"

नरगिस टोकरी का सामान देख रही थी। उसमें सलवार और कुरते के लिए रेशमी कपड़ा था। साथ ही पीतल के एक डिब्बे में घर की बनी मिठाई थी।

एक छोटी-सी डिबिया हाथी दांत की बनी रखी थी। उसे नरगिस ने खोलकर देखा तो उसमें माथे पर बिन्दी लगाने का सिन्दूर और बिन्दी लगाने की सींक थी। नरगिस के मुख से निकल गया, "चौधरायिन ने शादी की मंजूरी के लिए यह दिया है।"

"तब तो बहुत मजा रहेगा।" फातिमा के मुख से निकल गया।

"क्या मज़ा रहेगा?" करीमबख्श ने पूछ लिया।

"जो भैया को भाभी से मिलता है।"

"क्या मिलता है?"

"बताओ भाभी! शादी से तुमको क्या मिल रहा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर तो करीम की अम्मी हंस पड़ी। उसने कह दिया, "इसकी मां तो इस उम्र में मां बनकर मर भी चुकी थी।"

"मगर," करीम ने कहा, "अम्मी! अब जमाना बदल गया है। कर्मचन्द कहता है कि वह शादी एम० ए० पास करने के बाद करेगा। इसमें अभी सात साल हैं।"

"तो फिर क्या हुआ?" फातिमा ने कहा, "मैं भी तो आज ही शादी के लिए नहीं कह रही।"

"मैं चौधरी का शुक्रिया अदा करना चाहती हूं।" करीम की मां ने कहा।

"ठीक है। मैं उसे कह दूंगा।"

"पर सुना है कि उसका साला आर्य समाजी है। वह बीच में टांग अड़ायेगा। इसलिए हमें उससे जाति ताल्लुकात पैदा करने चाहिएं।"

"हां! मैं चौधरी के साले से मिला हूं। वह सुबह खेत पर जाता है और बकाया वक्त घर पर रहता है। एक दिन मुझे देखते ही वह पूछने लगा कि मैं रूस का मददगार क्यों हूं?

"मैंने बताया था कि मैं रूस का नहीं, कम्यूनिज़्म को मानने वाला हूं। रूस हमारी मदद कर रहा है।

"यह जंग शुरू होने से पहले की बात है। अब चौधरी तो अंग्रेज का हिमायती बन गया है और रूस जर्मनी का साथी है। इसलिए हम दोनों में जंग की-सी हालत है।

"मगर अम्मी! यह कर्मचन्द एक खूबसूरत और बहुत ही ज़हीन लड़का है। हमेशा जमायत में अव्वल रहता है और फिर दौड़-धूप में भी दिलचस्पी रखता है। मैं उसे मुसलमान बनाना चाहता हूं।"

"पर तुम तो कहते थे कि रूस वाले मजहब को पागलपन समझते हैं?"

"हां!"

"तो फिर वह मुसलमान क्यों बनेगा?"

"इस्लाम तो रास्ता है कम्यूनिज़्म का। वह पहले मुसलमान बनेगा और पीछे कम्यूनिस्ट।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फातिमा को बातों का विषय पसन्द नहीं था। इस कारण वह उठी और अपने कमरे में चली गई।

उसके चले जाने के बाद करीम की अम्मी सोहनी ने कहा, "चौधरायिन को कभी यहां दावत दो। उसे हमारे घर में चाय लेने में इतराज़ नहीं होना चाहिए। हम तो मांस भी नहीं खाते।"

"अगर ऐतराज़ होगा तो मैं अपने एक हिन्दू दोस्त की बीवी के घर चाय का इन्तज़ाम करा दूंगा।"

"यह भी ठीक है। तो करो।" सोहनी ने कह दिया।

परन्तु बात कुछ और ही हुई। अगले दिन प्रातः ग्यारह बजे के करीब करीम अपने एक दोस्त के घर जा रहा था कि उसे चौधरी मोटूराम खेत से आता मिल गया। करीमबख्श ने सलाम-आलेकुम कही तो चौधरी ने कह दिया, "जीते रहो बेटा!"

अकस्मात करीमबख्श के मुख से निकल गया, "कर्मचन्द की मां ने जो फातिमा को दिया है, उसे अम्मी और मेरी बीवी ने बहुत पसन्द किया है। वे आपका शुक्रिया अदा करना चाहती हैं।"

"तो कर दें। कब करेंगी?" चौधरी मोटूराम ने मुस्कराकर कहा।

"जिस दिन आप हमारे घर चलेंगे।"

"मैं तो अभी तैयार हूं।"

"कर्मचन्द की मां भी तो साथ होनी चाहिए।"

"उसकी बात वह जाने। मैं तो अपनी बात समझा था।"

"हां, हो सकता है। वे दोनों पर्दे में से ही आपका शुक्रिया अदा कर सकेंगी।"

"मुझे उनको आदाब-अर्ज करते हुए खुशी अनुभव होगी। तुम्हारी अम्मी हमारी समधिन होंगी। यह बहुत ही खुशी की बात है।"

"तो आइये। हमारे घर पर तो चाय के बर्तन सब चीनी के हैं। आपको पता चलेगा कि अच्छे बर्तनों में चाय लेने का लुत्फ बढ़ जाता है।"

करीमबख्श बिना इत्तला के चौधरी को अपने घर ले गया। घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सेहन में करीम की अम्मी बैठी कपड़े धो रही थी। करीम चौधरी को लिये हुए मकान में दाखिल हुआ तो अम्मी कपड़ों को एक पत्थर की सिल पर रख डण्डे से पीट रही थी।

सोहनी ने चौधरी को देखा तो था। वह एक-आध बार बुर्का पहनकर गांव में घूमती हुई उसे देख चुकी थी। इस कारण उसे करीम के साथ आते देख डरकर वह घर के भीतर भाग गयी। करीम हंस पड़ा। वह चौधरी से बोला, "मुझे मालूम नहीं था कि धोबी घाट खुला हुआ है।"

"कुछ हरज़ नहीं हुआ।"

दोनों घर की बैठक में गये तो फातिमा आ गयी। उसकी अम्मी ने यह कहकर भेजा था, जाओ, पूछ आओ चाय लेंगे या कॉफी?

फातिमा आयी और आदाब अर्ज कर पूछने लगी, "अब्बाजान! अम्मी पूछ रही हैं कि चाय लेंगे या कॉफी?"

"जो तुम्हारी अम्मी पिलाएगी, वह ही लूंगा। उसे कहो कि मैं उसका शुक्रिया लेने आया हूं।"

"शुक्रिया लेने?"

"हां! तुम्हारे भाईजान कह रहे हैं कि वह मेरा शुक्रिया अदा करना चाहती हैं।"

फातिमा समझ गयी और बोली, "तब तो आपको कॉफी पीनी चाहिए।"

"तो तुम लोग कॉफी घर पर बनाते हो?"

"हां, अब्बाजान! बहुत ज़ायकेदार होती है।"

इस समय घर की दोनों औरतें बुर्का पहने हुए आ गयीं। बैठकघर में चौधरी के बैठक घर से भिन्न सोफा और कुर्सियां थीं।

फातिमा अम्मी को यह कहकर कि वह सबके लिए कॉफी बनाने जा रही है, बैठकघर से निकल गयी।

उसके जाते ही मोटूराम ने कह दिया, "कल कर्मचन्द की मां ने डरते-डरते फातिमा को एक-दो चीज़ें ही दी थीं। वह नहीं जानती थी कि आप उनको पसन्द करेंगी या नहीं। मगर करीम ने बताया है कि आपने पसन्द किया है। इससे मुझे खुशी हासिल हुई है। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बेसबरी से उस दिन की इन्तज़ार करूंगा जब कर्मचन्द इस लड़की को बाजे-गाजे के साथ घर लायेगा।"

बात करीम की अम्मी सोहनी ने ही की। उसने कहा, "जब से करीम के अब्बाजान फौत हुए हैं, हमारे घर में किसी किस्म का गोश्त बनाना बंद कर दिया है। इससे दिल में गोश्त से नफरत हो गयी है। इससे हम पूरे नहीं, कुछ तो हिन्दू हो ही गये हैं।"

"मगर बहनजी," चौधरी ने कह दिया, "हम हिन्दुओं में भी तो मांस खाने वाले लोग हैं।"

इस पर करीमबख्श ने गोश्त न खाने की वजह बता दी। उसने कहा, "जिस दिन अब्बाजान का इन्तकाल हुआ था, उससे पहली रात हमारे घर में मोटा मांस बना था। अब्बाजान ने खाया तो उनको उल्टी हो गई और फिर पेट में दर्द होने लगा। रात को ही हकीम को बुलाया गया। वह दवाई दे गये, मगर कुछ फायदा नहीं हुआ। दिन निकलते ही मैं डॉक्टर को बुला लाया। उसने बताया कि कोई ज़हरीली चीज़ खाई गयी है। वह इन्ज़ेक्शन दे गया। दिन के बारह बजे फिर आया और उसके देखते-देखते ही अब्बाजान की रूह उन्हें छोड़ गयी। डॉक्टर साहब का कहना था कि गोश्त में कुछ खराबी थी।

"बस, इससे अम्मी ने पहले मोटा मांस छोड़ा। फिर सब किस्म के गोश्त छोड़ दिये। किसी ने इनको बताया है कि गोश्त बासी हो तो उसमें एक किस्म की ज़हर पैदा हो जाती है।

"अब हमारे घर में गोश्त नहीं बनता। कभी मेरी तबीयत करती है तो मैं शहर किसी होटल में खाने चला जाता हूं।"

चौधरी ने कहा, "हमारे घर में भी मांस नहीं बनता। कर्मचन्द की मां एक आर्य समाजी की लड़की है और उसको बचपन से ही मांस से घृणा है।"

"मगर," करीमबख्श ने मन की बात कह दी, "कर्मचन्द के मामा तो कर्मचन्द की फातिमा से शादी पसन्द नहीं करेंगे।"

"तो न करें। अगर कर्मचन्द पसन्द करेगा तो मामा क्या करेगा और मामा का बहनोई क्या करेगा? शादी के मसलह में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम आज़ाद हैं।"

इस प्रकार एक घंटाभर बातें होती रहीं। फिर कॉफी पीकर मोटूराम घर जाने को तैयार हो गया।

जब चौधरी ने हाथ जोड़ कहा, "बहनजी! आदाब अर्ज़ है।"

सोहनी ने मुख से एकदम बुर्का हटाकर कहा, "भाईसाहब! आपने मुझे बहन कहा है तो बहन को अच्छी तरह पहिचान लीजिए। कभी भाई को बहन की हिफाज़त की जरूरत पड़ जाये।"

सोहनी उतनी सुन्दर नहीं थी, जितनी फातिमा थी। इस पर भी एक अच्छी खूबसूरत प्रौढ़ावस्था की औरत थी। आयु सैंतीस-अड़तीस साल की मालूम होती थी। रंग उज्ज्वल गंदमी था, परन्तु रूपरेखा बहुत अच्छी थी।

मोटूराम ने हाथ जोड़ आदाब कही और घर से निकल आया।

चौधरी घर पर आया तो अश्विनीकुमार कर्मचन्द के रिश्ते की चर्चा कर रहा था।

खाना खाने के बाद बाबा, छोटे चौधरी, सौभाग्यवती और अश्विनीकुमार बाहर बैठक में आ गये और बच्चे अपने-अपने काम में लग गये।

अश्विनी ने कहा, "आपके घर में महामूर्ख पुरोहित गौरीशंकर आता-जाता है और वह ही आपकी निन्दा करेगा कि आप मुसलमान हो रहे हैं। पुरोहित को धर्म का ज्ञान होना चाहिए और मैं देखता हूं कि आपका पुरोहित तो धर्म की बात समझता तक नहीं।"

"और अश्विनी भैया! मैंने उसे तुम्हारे पास भेजा था कि उसको कोई अक्ल की बात सिखा दो। परन्तु तुमने उसे डरा दिया।"

"नहीं भैया! डराया नहीं था। वह गणेश पूजन के और नवग्रह पूजन के स्तोत्र पढ़ना चाहता था। मैंने उसे कहा था कि यह पोपलीला है। इसे मैं नहीं सिखाऊंगा। वह मेरी बात पर नाराज़ हो चल दिया। इसे दो वर्ष होने जा रहे हैं। इसके उपरान्त वह नहीं आया।"

"उसमें पोपलीला क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आटे से चौखण्डी-सी बना, उस पर जल, चावल छिड़कना पोपलीला ही तो है।"

"और भैया ! आग में सामग्री और घी डालना क्या है ? हमारे यहां तो दोनों चलती हैं। हम दोनों को ही ईश्वर पूजन समझते हैं। वह क्या कहता है, यह तो मैं जानता नहीं। हां, गणेश पूजन और हवन में मुझे अन्तर समझ आया नहीं।"

"हवन से वायु शुद्ध होती है।"

"तो क्या गणेश-पूजन से वायु गंदी होती है ? उसमें भी तो धूप-दीप, अगरबत्ती जला लेते हैं।"

अश्विनीकुमार समझ नहीं सका कि किस प्रकार अपने जीजा को समझावे। वह जानता था कि उसकी मोटी बुद्धि में बात सुगमता से बैठती नहीं।

वह अभी विचार ही कर रहा था कि बात कहां से आरम्भ करे कि सौभाग्यवती ने कहा, "भैया ! यह ठीक कहते हैं। मन में नवग्रह पूजा के समय भी और हवन यज्ञ के समय भी यह परमात्मा का चिन्तन करते रहते हैं। न इन्हें नवग्रह पूजा के स्तोत्रों का अर्थ आता है, न हवन में कहे वेदमंत्रों का। यह तो आप और गौरीशंकर जानें। हमारे लिए तो आप दोनों भगवान् के दूत हैं। हम आप दोनों के सेवक हैं।"

"क्यों दादा ! कुछ समझे ? मेरी बुद्धि में आता है कि बाहर ढोल बजे या शहनाई, जब तक मेरे मन में भगवान् हैं, दोनों ठीक हैं।" मोटूराम ने कहा।

अश्विनी समझ गया कि जो कुछ मोटूराम की बुद्धि में बैठ गया है उसे कोई बदल नहीं सकता। इस कारण वह चुप कर गया।

अश्विनी खिन्न मन से घर चलने को तैयार हुआ तो छोटे चौधरी ने कहा, "देखो भैया ! गौरीशंकर अब के आवे तो उसे गणेश के स्तोत्र और नवग्रह पूजा के स्तोत्र भली प्रकार पढ़ना सिखा दो। मैं इसके प्रतिकार में धन्यवाद करूंगा।"

"कैसे करोगे ?" अश्विनीकुमार ने मुस्कराते हुए पूछा।

उत्तर सौभाग्यवती ने दिया, "छोटे भाई का बड़े भाई के प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रादर ग्रौर स्नेह।"

ग्रश्विनीकुमार हंसता हुग्रा हवेली से बाहर निकल गया। उसके जाने पर बाबा ने पूछा, "तो तुमने करीम की ग्रम्मी के दर्शन किये हैं ?"

"हां, बाबा! बहुत ही भली ग्रौरत है। मैं यह समझा हूं कि जिस दिन फातिमा कर्मचन्द के घर ग्रायेगी, वह भी उसके साथ यहां रहने चली ग्रायेगी।"

"तो उससे तुम विवाह करोगे ?" बाबा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"बाबा! वह मुझसे बड़ी ग्रायु की प्रतीत होती है। मेरे विचार में उसकी ग्रायु चालीस वर्ष से ऊपर है। हां, ग्रापके साथ उसका विवाह हो सकता है। मुझे तो वह बड़ी बहन-सी लगी है।"

"तब ठीक है। तुम्हारी बहन, मेरी बीवी नहीं हो सकती।"

बाप-बेटा दोनों हंसी-मज़ाक पहले भी किया करते थे। सौभाग्यवती इसमें रस लेती रहती थी। मोटूराम ने बात बदल दी, "मैं कर्मचन्द को ग्रभी से नगर के डी० ए० वी० स्कूल में भरती करा देना चाहता हूं। वह मेरी भांति बोर्डिंग हाउस में रह सकेगा।"

इस पर सौभाग्यवती ने कह दिया, "मैं समझती हूं उसे पिताजी के घर में ठहरा दीजिए। वह वहां नाना-नानी की सेवा कर दिया करेगा तो उनके ग्राशीर्वाद से शीघ्र पढ़ाई समाप्त कर सकेगा। ग्रश्विनी का लड़का तो हठकर के बोर्डिंग हाउस में भरती हुग्रा है। उसका ग्रपने दादी-बाबा से स्नेह नहीं है। कर्मचन्द उससे उलट प्रकृति रखता है।"

"तब तो पहले माताजी से पूछना पड़ेगा।"

"ग्राप उसे कब वहां ले जाना चाहते हैं ?"

"जल्दी ही। वह लड़की सगाई से पहले ही ग्रपने होने वाले खाविन्द का मुख चूमती फिरती है ग्रौर ग्रब सगाई के उपरान्त तो उसके लिए सेज सजाने लगेगी।"

"ठीक है। परन्तु ग्रापको कर्मचन्द से मिलते रहना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाट की बुद्धि मोटी होने पर भी ठीक ही काम करती है और अश्विनी को देखा है कि सब पढ़ा-लिखा गोबर कर रहा है।"

"क्या गोबर कर दिया है उसने ?" बाबा ने पूछा।

"वह अपने जीजा के कहने का समाधान नहीं कर सका कि नवग्रह पूजन में और हवन में क्या अन्तर है।"

"कर्म की मां !" बाबा ने ही उत्तर दिया, "कुछ अन्तर नहीं। अपनी-अपनी बुद्धि का अन्तर है। जाट की बुद्धि में तो पूजन होता है परमात्मा का। स्वास्तिक और नवग्रह तो प्रतीक हैं, वैसे ही जैसे अग्नि और घी हैं।

"आजकल गृह की शुद्धि फिनाइल से की जाती है। हवन-सामग्री बेचारी उसके सामने फीकी पड़ गयी है।"

सौभाग्यवती ने बात कर्मचन्द की ओर घुमा दी। उसने कहा, "मैं भी साथ चलूंगी और कर्मचन्द को वहां मां के घर में रहने का अभ्यास डाल आऊंगी।"

कर्मचन्द को उसी वक्त बुलाया गया। वह अपने कमरे में बैठा अंग्रेजी का काम कर रहा था।

"कर्मचन्द," मोटूराम ने पुत्र के आते ही कहा, "मैं समझता हूं कि यदि तुमको कॉलेज की पढ़ाई के लिए नगर में भेजना है तो स्कूल की शेष पढ़ाई भी वहां ही करनी चाहिए।

"तुम्हारी मां कहती है कि तुम्हारी नानी अकेली है और तुम उनकी सेवा कर सकोगे।"

कर्मचन्द ने आंखें मूंद एक क्षण तक ही विचार किया और पूछ लिया, "तो कब चलना होगा ?" तुरन्त निर्णय करना कर्म-चन्द ने जाट परिवार में पैदा होने के कारण सीखा था। आंखें मूंद विचार करने का स्वभाव उसे नाना के परिवार की देन थी।

मोटूराम ने कह दिया, "कल स्कूल जाना और यहां से 'स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट' ले आना और परसों मैं और तुम्हारी मां तुम्हें नगर के स्कूल में भरती कराने ले जायेंगे।

"वहां तुम्हारे नानाजी की सहायता लेनी पड़ेगी और तुम्हारी नानी से भी तुमको उनके घर में रहने की इजाजत लेकर देनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी।

"और देखो, कल फातिमा से भी मिलो। उससे छुट्टी लेकर आना। उससे उसकी मां के सामने ही मिलना चाहिए। नहीं तो वह तुम्हारा मुख चूमने लगेगी।"

कर्मचन्द मुस्कराकर चुप रहा। अर्थात् उसने पिता की आज्ञा का पालन करने का वचन दे दिया।

फातिमा ने जब सुना कि उसके महबूब को नगर में पढ़ाने के लिए भेजा जा रहा है तो उसके माथे पर त्यौरी चढ़ गयी। उसने पूछ लिया, "यह क्यों है?"

"मैं नहीं जानता। पिताजी ने बताया नहीं। मैंने भी वज़ह नहीं पूछी।" कर्मचन्द ने कह दिया।

"पर मैं पूछूंगी। यह मुझसे नाराज़ होकर किया जा रहा है क्या?"

"हां, पूछ लेना। मैं समझता हूं वह नाराज़ नहीं हैं। तुम्हारे हित में यह किया जा रहा है।"

"वह क्या होता है?"

"तुम्हारे फायदे के लिए।"

"आपके यहां रहने से मेरा क्या हर्ज हो रहा था?"

"माताजी से मिलकर पूछ लेना। मैं उनकी मां के घर में ही रहने जा रहा हूं।"

"अपनी नानी के घर में?"

"हां।"

फातिमा चुप हो गयी।

: ५ :

कर्मचन्द आशा करता था कि उसी दिन करीमबख्श अथवा उनके घर का कोई व्यक्ति उसके माता-पिता से पता करने आयेगा कि उसे नगर में डेढ़ वर्ष पहले ही क्यों भेजा जा रहा है, परन्तु सायंकाल तक कोई नहीं आया तो कर्मचन्द समझ गया कि उसके जाने की बात करीम के घरवालों को समझ आ गयी है।

अगले दिन बहुत प्रातःकाल मोटूराम अपनी पत्नी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचन्द को तांगे में साथ ले नगर को चल पड़ा। वहां वह साढ़े नौ बजे के लगभग पहुंचा और जब उसने अपने श्वसुर लाला रलाराम को कर्मचन्द के वहां स्कूल में भरती कराने की बात कही तो रलाराम और उसकी पत्नी रामप्यारी बहुत प्रसन्न हुए।

"क्यों कर्मचन्द !" लाला रलारम ने पूछ लिया, "यहां हमारे साथ रहोगे ?"

"जी ! पिताजी की आज्ञा है कि नित्य रात के समय आपके पांव दबाया करूं, तो आप आशीर्वाद दिया करेंगे।"

"हां ! तब तो आशीर्वाद देना ही पड़ेगा। परन्तु जानते हो, क्या आशीर्वाद दिया करूंगा ?"

"जी ! आपकी जो इच्छा हो दीजियेगा, आशीर्वाद आलू-टमाटर नहीं जो खरीदे जाते हैं। यह तो पुरस्कार होता है और पुरस्कार देने वाले की इच्छा पर होना है। जो भी आप देंगे, वह धन्यवाद सहित स्वीकार कर लूंगा।"

रलाराम जीवन के तीस वर्ष डिप्टी कमिश्नर की अदालत में बैठे-बैठे वकीलों की बहस सुनता रहा था। इस कारण वह अपने दुहिते की बात सुन फड़क उठा और अपने दामाद से बोला, "यह तो विलक्षण है। इसकी बुद्धि बहुत सूक्ष्म है। तुम्हारे भांति मोटी नहीं है।"

"पिताजी ! यही तो भय है। इसी कारण इसे गांव से यहां लाया हूं। यह अपनी सूक्ष्म बुद्धि से किसी के घर में सेंध लगाने लगा था।"

"ओह ! परन्तु सेंध तो तुमने भी अपनी मोटी बुद्धि से हमारे घर में लगायी थी और इस सौभाग्यवती को चुराकर ले गये थे।"

"नहीं पिताजी ! मैंने न तो सेंध लगाई है, न ही चोरी की है। मैं तो अपनी मोटी बुद्धि से सीधे दरवाजे से ही यहां आया था और आपकी स्वीकृति से ही यहां का यह रत्न मांग कर ले गया था। आपने कृपा कर वह दे दिया। परन्तु यह तो सेंध लगा, किसी के घर में पिछले द्वार से घुस, कुछ उठा लाने का यत्न करने लगा है।"

"तो यह बात है ? अच्छा, ऐसा करो। पहले भोजन करो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर इसको मेरे साथ भेज दो। मैं इसे डी० ए० वी० स्कूल में भरती करवा आऊंगा। यह आज से ही स्कूल में जाने लगेगा।

"तुम सायंकाल इसके स्कूल से लौट आने पर इसके यहां रहने का प्रबन्ध देखकर गांव जाना। स्कूल साथ चलने की तुम्हें आवश्यकता नहीं।"

खाना खाने के उपरान्त दस बजे के लगभग रलाराम कर्मचन्द को लेकर डी० ए० वी० स्कूल चला गया। सौभाग्यवती मां के पास कर्मचन्द के एकाएक नगर में ले आने का कारण बताने पृथक् कमरे में जा बैठी और मोटूराम नगर में घूमने और अपने परिचितों से मिलने चला गया।

मोटूराम दो बजे मध्याह्नोत्तर लौटा तो बैठक घर में करीमबख्श की अम्मी और बहन को बैठे, सौभाग्यवती और रामप्यारी से बातें करते देख, चकित रह गया।

लाला रलाराम घर पर नहीं थे। चारों चाय पी रही थीं और हंस-हंस कर बातें कर रही थीं।

दामाद को आया देख रामप्यारी ने कहा, "कर्मचन्द की सब करतूत सुन ली है। वह तो गधा ही है। यह लड़की उससे बहुत चतुर है। मुझे भय है कि यह उसे बेच खा जायेगी।"

"परन्तु माताजी! कर्मचन्द कोई गाजर-मूली नहीं जो यह उसे बेच सकेगी।" मोटूराम का कहना था।

"कर्मचन्द तो गाजर-मूली ही है। हां, यह उसे बेच खायेगी अथवा नहीं, यही देखना है।" रामप्यारी ने अपने विचार बताते हुए कहा, "अभी तक तो इतना ही पता चला है कि यह उसे बेच खाने की सामर्थ्य रखती है। इसकी बुद्धि इस योग्य है। मैं इसे बता रही हूं कि यदि यह कर्मचन्द से विवाह करना चाहती है तो इसको क्या करना चाहिये।"

"क्या करने को बताया है?" मोटूराम ने पूछ लिया।

पूर्व इसके कि रामप्यारी उत्तर दे, फातिमा बोल उठी, "माताजी! मत बताइयेगा। पिताजी बहुत ही मोटी बुद्धि के इन्सान हैं और यह सब भाईजान के सामने कह देंगे। तब मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी बात मानने में कठिनाई होगी।"

मोटूराम टुकुर-टुकुर फातिमा का मुख देखता रह गया। वह इस बात का सिर-पैर नहीं समझा।

"मैंने इसे," रामप्यारी ने आगे कहा, "अश्विनीकुमार से मिलने के लिए कहा है जिससे यह अपने घर के तौर-तरीके जान सके।

"इसकी अम्मी इसमें कठिनाई बता रही है। वह कहती है कि पण्डित अश्विनीकुमार इसके लड़के से नफरत करता है।

"मैं अब गांव में आऊंगी तो उसका इसके लड़के के साथ मेल-जोल पैदा करा दूंगी। बस, अभी तक यही फैसला हुआ है।"

मोटूराम ने कहा, "तब ठीक है। मेरी बुद्धि योजना नहीं बना सकती। मैं तो करने योग्य काम को ही देखता हूं और फिर हथौड़े से कील ठोकने की भांति काम कर देता हूं।"

"देखिये माताजी!" अब मोटूराम ने अपनी सास को कहा, "मुझे पता है कि इसका भाई कम्यूनिस्ट है और वह किसी दूसरे के कहने पर अपना जीवन चला रहा है। मैं जानता हूं कि वह दूसरा कहने वाला ग़लत है परन्तु क्यों ग़लत है, यह नहीं बता सकता। इस पर भी कहीं उसने बिना समझाये कुछ ज़बरदस्ती करनी चाही तो हानि उसकी ही होगी। आठ दिन हुए मैं यहां से बंदूक ले गया हूं और नित्य निशाना लगाने का अभ्यास स्वयं भी कर रहा हूं और कर्मचन्द की मां को भी करा रहा हूं।"

फातिमा की मां सोहनी चौधरी की बात सुन कांप उठी, परन्तु फातिमा मुस्कराती हुई, चौधरी का मुख देखती रही।

"यह तो आप ठीक नहीं करेंगे।" सोहनी ने कह दिया।

उत्तर फातिमा ने दिया, "अम्मी! यह तो तब है कि जब भाई-जान ज़बरदस्ती कुछ करना चाहेंगे।"

"हां।" चौधरी ने कहा, "वैसे तो मुझे घर की चुहिया मारने से भी डर लगता है। मगर ज़बरदस्ती करने वाले से तो ज़बरदस्ती की ही जाती है। वैसे करीम कर्मचन्द का मित्र है और मेरे लड़के के समान है। मगर बहनजी! मेरा लड़का भी तो मुझ से ज़बरदस्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कर सकता। मैं मिट्टी का माधो नहीं हूं जो मुझे कोई उठाकर जेब में डालकर ले जाये। यदि कोई करेगा तो मेरी मोटी बुद्धि यह कहती है कि बंदूक, पिस्तौल पर पांच सौ रुपये सार्थक करने चाहिएं।

सोहनी चुप कर रही। वह घर लौटकर अपने लड़के से पूछना चाहती थी कि किस बात में झगड़े की उम्मीद है।

मोटूराम कुछ और बताने लगा था कि लाला रलाराम आ गया। बैठक में दो औरतों को बुर्का पहने परन्तु मोटूराम के सामने बुर्का उठाये बैठे देख वह प्रश्नभरी दृष्टि में अपनी पत्नी का मुख देखने लगा। बात रामप्यारी ने की। उसने कहा—"बैठिये। यह लड़की है फातिमा और कर्मचन्द इससे शादी करने का फैसला किये हुए हैं। सौभाग्यवती ने इसे मंजूर कर लिया है। मगर वह इन दोनों का इकट्ठे एक ही गांव में रहने को पसन्द नहीं करती। इस कारण यह कर्मचन्द को यहां स्कूल में भरती कराने ले आयी है और यह लड़की यह समझकर कि इससे अथवा इसके भाई से कुछ ग़लती हो गयी है जिससे नाराज़ हो कर्मचन्द को गांव से बाहर भेज दिया गया है, अपनी मां को साथ लेकर यहां पता करने आयी है।

"अब आपके दामाद बता रहे हैं कि इस लड़की का भाई कम्यूनिस्ट है और यह उसके खराबी करने पर उसे गोली से उड़ा देने के लिए लाइसेंस वाली बंदूक और पिस्तौल खरीद ले गये हैं।

"इस पर लड़की की मां भयभीत प्रतीत होती है।"

रलाराम इस लम्बी कहानी को सुन इसका अर्थ समझने के लिए मां-बेटी का मुख देखने लगा।

लालाजी को चुप देख फातिमा ने अपने मन की बात कह दी, "मगर पिताजी! यह तो तब होगा जब भाईजान कुछ ज़बरदस्ती करना चाहेंगे। मैं उनको कह दूंगी कि ज़बरदस्ती वहां की जाती है, जहां कोई अक्ल की बात न माने। वह ज़बरदस्ती करेंगे ही नहीं तो गोली चलाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।"

रलाराम ने कह दिया, "हां, यदि चौधरी कोई बात न माने तो पंच डालकर फैसला कर लिया जाएगा। झगड़ने की जरूरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। सरकार ने पंच नियत किये हुए हैं। वे जज कहाते हैं। उनके सामने मुकद्दमा ले जाना चाहिए।"

"देखो बेटी," रलाराम ने फातिमा को समझाते हुए कहा, "जहां कोई बात खुद समझ न आये वहां अपने से अधिक बुद्धिमान की बात मान लेनी चाहिए।"

लालाजी की बात का सोहनी के मन पर बहुत असर हुआ।

अब रामप्यारी ने घर की नौकरानी को लालाजी के लिए भी चाय लाने के लिए कह दिया।

लालाजी ने बताया, "मैं पांच हजार की एक सैकेण्ड हैण्ड अमेरिकन गाड़ी मोल ले आया हूं। अभी एक घंटे में ड्राईवर गाड़ी लेकर आयेगा। उसे अभी घर के प्रांगण में रख लूंगा। पीछे उसके लिए मोटर गैराज बनवा लूंगा।"

"और ड्राईवर?"

"अभी सवा सौ रुपये महीने पर एक रख लिया है। वह अपनी बीवी के साथ यहीं मकान में रहेगा।

"ड्राईवर की ज़मानत मोटर कम्पनी के मालिक ने दी है और वह चौबीसों घंटे यहां रहेगा। जब कभी भोजन के समय काम पर जाना होगा तो एक रुपया खाने का देना पड़ेगा।"

अब चौधरी ने पूछ लिया, "मोटर कैसी है?"

"अमेरिकन डॉज गाड़ी है। अभी केवल बीस हजार मील चली है। चलने में तो मज़ेदार मालूम होती है। बस से तेज भागती है।"

"तो आज हमें गांव छोड़ने जा सकेगी क्या?" मोटूराम का प्रश्न था।

सौभाग्यवती ने पूछ लिया, "और तांगे का क्या होगा?"

"वह कोचवान ले आयेगा।"

रामप्यारी हंस पड़ी और बोली, 'इन बहनजी और इनकी लड़की को भी साथ लेते जाना।"

"हां! ये चलेंगी तो इनको भी साथ ले चलूंगा।"

तीसरे प्रहर कर्मचन्द स्कूल से आया तो फातिमा और उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्मी को बैठे देख चकित रह गया। उसने सोहनी से ही पूछा, "अम्मी ! आप नगर में किसी काम से आयी हैं ?"

सोहनी कुछ कहने का विचार ही कर रही थी कि फातिमा बोल उठी, "आये तो थे आपको गांव वापस ले चलने के लिए, मगर यहां माताजी ने समझाया है कि इन्तज़ार करने में मज़ा आता है। मज़ा लेने के लिए हम लौटे जा रही हैं।"

रलाराम अपने कमरे में जा कुछ अपना काम देखने लगा और बैठकघर में फातिमा, उसकी अम्मी, सौभाग्यवती और उसकी मां रामप्यारी बैठीं बातें करने लगीं। चौधरी मोटूराम गांव में अपने साथ ले जाने के लिए बाज़ार से मिठाई इत्यादि खरीदने निकल गया।

मोटूराम के लौटने पर फातिमा और उसकी अम्मी भी लाला रलाराम की नयी कार पर सवार हो गांव को चल दिये। मोटूराम आगे ड्राईवर के पास बैठ। और सौभाग्यवती, फातिमा तथा उसकी अम्मी सोहनी पीछे की सीट पर बैठी थीं। मार्ग में सौभाग्यवती ने बताया, "देखो बहन ! आप मुसलमान हैं और हम हिन्दू हैं। मगर ऐसा क्यों है ? केवल इसलिए कि आप अपने पैगम्बर पर ईमान रखती हैं और हम अपनी एक किताब में कही बातों पर विश्वास रखते हैं। दोनों के कहने में कुछ फरक है। इसी कारण आप और हम अपने में फरक मानती हैं। इस्लाम में यह माना जाता है कि हज़रत मुहम्मद पर ईमान न लाने वाले काफिर हैं और उनको दीनदार बना लेना चाहिए। यदि न बनें तो वे मार देने के लायक हैं।

"मगर हमारी उस किताब में कहा है कि कुछ भी मानने से कोई अच्छा-बुरा नहीं होता, जब तक उसके अमाल अच्छे-बुरे नहीं होते।

"ख्यालात और अमाल दो अलहदा-अलहदा बातें हैं। खुदा को मानने वाले और हज़रत मुहम्मद साहब को अपना पैगम्बर मानने वाले भी तो चोरी करते देखे जाते हैं, झूठ बोलते हुए पकड़े जाते हैं अथवा अकारण दूसरों की औरतों पर ज़बरदस्ती करते देखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं। इस कारण ही हम यह मानते हैं कि जब तक अमाल ठीक न हों तब तक अपने को और अपने साथियों को किसी किस्म का सुख नहीं मिल सकता।"

"पर माताजी," फातिमा ने सौभाग्यवती को सम्बोधित कर पूछ लिया, "किसी नेक व्यक्ति को अपना पीर-पैगम्बर मान लेने से अमाल अच्छे नहीं हो जाते क्या ?"

"देखो फातिमा! अच्छे-बुरे की पहिचान का कोई पैमाना होना चाहिए। हज़रत सब बातों में अपनी राय तो बता नहीं गये। जब वह जीवित थे तब अरब में कोई हिन्दू था ही नहीं। उनको यह भी मालूम नहीं था कि हिन्दू क्या कहते हैं और क्या करते हैं। तब भला वह हिन्दुओं के बारे में कैसे कुछ कह सकते थे ?

"हमारी किताब किसी के कहने और मानने की बात नहीं कहती। वह करने लायक कामों का ज़िकर करती है और वह बहुत मोटी बात है। हम मानते हैं कि दूसरे की बात को सब्र से सुनना चाहिए, कोई कसूर करे और मुआफी मांगे तो उसे मुआफ कर देना चाहिए, अपनी ख्वाइशात को हद के भीतर रखना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिये, जिस्म से, बोलने में और अपने कामों में पाक साफ रहना चाहिए, अपनी इन्द्रियों, मतलब यह कि कामों को अपने अधीन रखना चाहिए जिससे जो कुछ तुम नहीं करना चाहते, जिस्मानी स्वाद वह तुमसे करवा न दें। ज्ञान सीखना चाहिए। जहां से भी मिले, उसे हासिल करना चाहिए। अपनी अक्ल को तेज करना चाहिए। सच बोलना चाहिये और गुस्सा नहीं करना चाहिए।

"ऐसी दस बातें हैं और जिन्दगी के सब कामों में इन दस का ही इस्तेमाल होता है। ये करते रहने से इन्सान तरक्की करता है और सुखी रहता है।"

सोहनी को बहुत कुछ पूछने के लिए था, मगर मां के कुछ पूछने से पहले फातिमा ने ही प्रश्न कर दिया, "माताजी! आपने कहा है कि अक्ल को तेज करना चाहिए। यह कैसे हो सकती है ?"

"वैसे तो," सौभाग्यवती ने बताया, "हैवानों से इन्सान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्ल तेज होती है और फिर कुछ इन्सानों की अक्ल बहुत तेज होती है और कुछ की कम होती है। मगर एक तरीका है जिससे इसको और भी तेज किया जा सकता है।

"इसी के लिए मेरी माताजी ने कहा है कि कर्मचन्द के मामा से पढ़ना चाहिए। वह ऐसा शास्त्र पढ़ा है जिसमें अक्ल को तेज करने का ढंग बताया है।"

"वह खुद भी इसमें कोशिश करता रहता है और तुमको भी वह किताब पढ़ा देगा।"

"मगर भाईजान इज़ाज़त देंगे, तब ही तो पढ़ सकूंगी।"

"तुम्हारी अम्मी उसे समझा देंगी तो वह मान जायेंगे।"

इस प्रकार की बात होते-होते आधे घंटे में मोटर गांव में जा पहुँची। सौभाग्यवती के कहने पर वे करीमबख्श के घर गये। पूरा गांव गुजर कर करीमबख्श का मकान आता था। इस कारण गांव में मोटर आने पर छोटे-बड़े सब देखने के लिए करीम के मकान के बाहर आ खड़े हुए।

सोहनी ने तो पर्दा किया हुआ था, मगर फातिमा ने बुर्का ऊपर उठा रखा था। वह पहले भी बिना बुर्का के गांव में घूमती रहती थी।

मोटर की आवाज़ सुन करीम मकान से निकल आया और उसमें से अपनी अम्मी तथा फातिमा को उतरते देख हंस पड़ा। हंसते हुए उसने चौधरी से, जो अभी भी ड्राईवर के पास बैठा था, पूछ लिया, "चौधरी जी! यह भी मोल ले ली है?"

"नहीं भैया! यह कर्मचन्द के नाना की है। हमें उसने गांव तक पहुंचाने के लिये दी है।"

"अच्छा करीम! फिर मिलेंगे। घर पहुंचकर गाड़ी वापस भेजनी है।"

: ६ :

करीमबख्श ने अम्मी और फातिमा को मकान के भीतर ले जाते हुए पूछना आरम्भ कर दिया, "तो पकड़ लायी हो कर्मचन्द को?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम उसे पकड़ने नहीं गयी थीं। यह पता करने गयी थीं कि वह गांव से क्यों चला गया है? पता चला है कि वह फातिमा से नाराज़ नहीं है। वहां कर्मचन्द की नानी ने हमारी बहुत खातिरदारी की है।"

"तो वह तुम्हें पहिचानती थी?"

"नहीं, वहां कर्मचन्द की अम्मी भी थीं। उसने हमारा तआरूफ कराया तो वह हमें चाय-पानी पूछने लगीं।"

"क्या तआरूफ कराया था?" इस समय वे घर की बैठक में जा पहुंचे। वहां बैठते हुए सोहनी ने कहा, "यही कि यह फातिमा गांव के एक करीमबख्श की बहन है और कर्मचन्द इससे शादी करना चाहता है।

"इस पर कर्मचन्द की नानी फातिमा को बताने लगीं कि कर्मचन्द यहां कॉलेज की आखिरी जमायत तक पढ़ने आया है और अगर तुम अनपढ़ रहीं तो वह तुम्हें मुहब्बत करता हुआ भी तुम्हारी इज्ज़त नहीं कर सकेगा।

"उसने फातिमा को मुहब्बत और इज्ज़त करने में फरक बताया और फिर कहा कि मुहब्बत से इज्ज़त हासिल करनी बहुत बड़ी बात है।

"फातिमा ने बताया कि वह ज्यादा पढ़ नहीं सकती क्योंकि गांव में सातवीं जमायत से ऊंची पढ़ाई का स्कूल नहीं है। इस पर उसने कहा कि वह और कर्मचन्द की माताजी स्कूल-कॉलेज में नहीं पढ़ीं। इस पर भी वह कर्मचन्द के नाना से अधिक पढ़ी हैं और कर्म की मां, कर्म के वालिद से ज्यादा पढ़ी हैं।

"उनका कहना था कि कर्मचन्द भी घर पर पढ़ सकता था। मगर वह पैसा कमाने का इल्म सीखने आया है। हम औरतों को कमाई करने की जरूरत नहीं। इसलिए हम पैसा कमाने के अलावा इल्म घर पर ही सीखती रही हैं। यही फातिमा को करना चाहिए।

"कर्मचन्द की नानी ने यह भी बताया है कि अगर फातिमा चाहे तो वह कर्मचन्द के मामा से इल्म हासिल कर सकती है।

"एक बात कर्मचन्द की मां ने हमें बताई है कि अमाल ऐतकाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बड़े नहीं होते हैं। ऐतकाद ठीक होने पर भी अमाल ठीक न हों तो ऐतकाद की कुछ कीमत नहीं।"

"यही तो मैं भी कहा करता हूँ।" करीम का कहना था, "मगर खुदा की बनाई इस दुनिया पर कुछ एक ने कब्जा कर रखा है और बकाया लोग खून-पसीना एक कर भी सूखी रोटी ही खा सकते हैं। इस कारण सबमें बांटकर खाना चाहिए।"

"यह तुम कहते तो हो, मगर तुम करते नहीं।" सोहनी ने पुत्र को समझाया, "तुम कुछ काम-धन्धा नहीं करते और रोज कॉफी और चाय, केक, पेस्टरी खाते रहते हो। तुम भी तो कहते हो, पर अम्ल नहीं करते।"

"पर मैं इन कस्बे के गरीबों को एक बात का इल्म दे रहा हूं।"

"किस बात का?"

"कि सब को मिलकर अमीर आदमियों का जो कुछ है, छीन लेना चाहिए और गरीबों में बांट देना चाहिए।"

इस पर फातिमा ने पूछ लिया, "और हमारा, मेरा मतलब है, अम्मी का भी सब कुछ छीन लें?"

इस बात का उत्तर करीमबख्श विचार कर रहा था कि नरगिस, जो समीप ही इनकी बातें सुनने आ बैठी थी, बोल उठी, "मैं तो सोच रही हूं कि अपना सब कुछ बटोर कर नगर में अपनी अम्मी के घर चली जाऊं। न यहां रहूंगी, न आपके मुरीदों से लूटी जाऊंगी।"

"मगर लूट तो वहां नगर में भी मचेगी।"

"तो फिर हम क्या करेंगी?" फातिमा ने पूछ लिया।

"तुम भी सब की तरह काम करोगी। देखती हो, जैसे मेहर की बीवी और लड़कियां भी चौधरी के खेत में काम करने जाती हैं, तुम को भी यही करना होगा।

"अगर कुछ लिख-पढ़ गयीं तो दफ्तर में काम मिल जायेगा। नहीं तो खेत या कारखाने में काम मिलेगा।"

"मगर यह लूट कब मचेगी?" नरगिस ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो बेगम ! युरोप में एक वहुत बड़ी जंग हो रही है। उस जंग में जर्मनी व रूस एक तरफ हैं और अंग्रेज व फ्रांसीसी दूसरी तरफ। जीत जर्मनी की होगी। तब रूस अपनी फौजें लेकर हिन्दुस्तान में आ जायेगा और यहां लूट मचेगी।"

"खुदा गंजों को नाखून न दे। तुम तो अपने घर को ही लूटने की बात कर रहे हो।" सोहनी ने कह दिया।

"देखो अम्मी ! मैं नहीं चाहता कि फातिमा कर्मचन्द के मामा से पढ़ने जाये।"

"क्यों ?" फातिमा का प्रश्न था।

"वह काफिर है।"

"और जो हमारे स्कूल की हेड-मिस्ट्रेस है, वह भी तो ईसाई है। वह काफिर नहीं क्या ? ईसाईयों की बाबत तो बानी-उल्इस्लाम ने बहुत कुछ बुरा-भला कहा है।"

"नहीं, तुम नहीं जानतीं।"

फातिमा चुप कर रही। करीमबख्श घर से बाहर गया तो सोहनी और नरगिस अपने-अपने कमरे में चली गईं।

करीमबख्श का बाप तहसीलदार था और कई जगह पर तहसीलदारी करता रहा था। अपनी तीस साल की नौकरी में उसने एक लाख रुपये के लगभग कमाये थे। वह उसने अपनी बेगमों में बांट दिये थे। पच्चीस हजार के करीब सोहनी को मिला था। करीमबख्श का भाग सोहनी के हिस्से में ही था। इसी तरह अन्य बीवियों के बच्चों का भाग भी उनकी अम्मियों के हिस्से में था।

इसका नतीजा यह हुआ था कि फातिमा की अम्मी का पच्चीस हजार भी सोहनी के पास था। सोहनी साठ हजार के लगभग की इस वक्त मालिक थी।

फातिमा के बाप को मरे हुए पांच वर्ष हो चुके थे और तब से सोहनी का और फातिमा का पचास हजार बढ़कर साठ हजार के करीब हो गया था। यह सब सोहनी के अधिकार में था। उसने यह होशियारपुर के एक बैंक में जमा कर रखा था। वह स्वयं उसकी आय से तथा गांव में भूमि की आय से घर का खर्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत मज़े से चला रही थी। प्रतिवर्ष उसमें से भी कुछ बच ही जाता था।

करीम की बीवी नरगिस एक मामूली दुकानदार की लड़की थी। उसके पास कुछ नहीं था। जो कुछ भूषण वह मां के घर से लायी थी और जो कुछ सोहनी ने अपनी पतोहू को बनवा दिये थे, बस, वही कुछ उसकी जायदाद थी। हां, करीमबख्श को एक सौ रुपये महीना पार्टी फण्ड में से मिलता था। यह धन वह नियम-पूर्वक नरगिस को दे दिया करता था। पिछले पांच वर्ष से तीन-चार हजार के लगभग उसमें से नरगिस के पास जमा हो गया था। खाने-पीने और कपड़े इत्यादि का खर्च तो सोहनी ही करती थी।

नरगिस के पास नकद नोटों में रुपया था और सोहनी के पास भूषण थे तथा नकद के अतिरिक्त बैंक के कागज़ थे। सोहनी ने कमरे में अपने बैंक के कागज़ देखने शुरू कर दिये। फातिमा अम्मी को कागज़-पत्र समेटते देख रही थी। जब सब कुछ वह एक गठरी में बांधने लगी तो फातिमा ने पूछा, "अम्मी! क्या कर रही हो?"

"किसी महफ़ूज़ जगह पर रखने जा रही हूं। तुम्हारा भाई कुछ कमाता तो है नहीं और हमें ही लूटने की बात कहने लगा है।"

"तो कहां रखोगी?"

"मैं समझती हूं कि कर्मचन्द की मां के पास रख आऊं। वे तो बहुत अमीर लोग हैं और बेईमान मालूम नहीं होते।"

"मगर वहां माताजी इसे नहीं रखेंगी?"

"क्यों?"

"मेरा मन कहता है। चलकर पहले पूछ लो। पीछे इसे वहां ले जाना।"

"तो चलो। करीम के घर लौटने से पहले ही मैं यह सब इन्तज़ाम कर देना चाहती हूं।"

इस समय नरगिस कमरे में आ गयी। मां-बेटी दोनों उसका मुख देखने लगीं।

वह बोली, "मैं आपकी बात सुन रही थी और चाहती हूं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां आप अपनी जायदाद रखें, थोड़ा-सा रुपया मेरे पास भी है, उसे भी वहां ही रखवा दें।"

उत्तर सोहनी ने दिया, "हम चौधरी के घर पता करने जा रही हैं कि क्या करें। मुझे यह समझ में आ रहा है कि वह भी अपने घर में नहीं रखेंगी।"

"क्यों?"

"इस क्यों का जवाब मेरे पास नहीं। मेरा ऐसा ख्याल है।"

"तो अम्मी! जो भी बन्दोबस्त आप अपने जेवर वगैरह का करेंगी, वही, मेरा जो कुछ है, उसका भी कर देना।"

सोहनी और फातिमा ने बुर्का पहना और चौधरी के घर जा पहुंची। अब जाते हुए फातिमा ने बुर्का पहना हुआ था।

दीये जलने वाले थे। इस कारण सौभाग्यवती उनको उस समय आते देख हैरान रह गयी। उसे कुछ यह समझ आया था कि उनको करीम ने घर से निकाल दिया है। कदाचित् वह चौधरी के साथ मोटर में आने पर नाराज़ हो गया होगा।

बात सोहनी ने ही की। उसने कहा, "बहनजी! हम आप से एक राय करने आयी हैं।"

"इस समय?"

"तो यह कोई मुनासिब वक्त नहीं है?"

"यह वक्त की बात इसलिए कह रही हूं कि क्या यह राय कल तक रुक नहीं सकती थी?"

"रुक तो सकती थी, मगर जो काम कल करना है, वह आज ही करना ठीक समझ हम चली आयी हैं।"

"तो बैठो। बताओ, वहां बैठक में बैठोगी?"

मोटूराम अपने पिता के साथ बाहर अहाते में छाजन के नीचे कुर्सियां लगा बैठा था और वह लाला रलाराम से कर्मचन्द के विषय में हुई बातें बता रहा था।

सोहनी ने करीमबख्श की सारी बात बताकर, अपने मन की बात भी बता दी। उसने कहा, "मैं चाहती हूं कि हम अपना नकद और भूषण तथा बैंक के कागज़ चौधरी के पास जमा करा दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्यवती ने एक क्षण तक ही विचार किया और कह दिया, "कर्मचन्द के पिता यहां यह सब कुछ अपनी हवेली में नहीं रखेंगे। इस पर भी इसे और आपके सब कागज़-पत्र बैंक में रखवा देंगे। वहां ही सब कुछ रख उस जगह को ताला लगवा चाबी आपके पास रहेगी और जब आप चाहेंगी, उसको देख सकेंगी और जब चाहेंगी वहां से निकाल सकेंगी।

"चाबी आपके पास रहेगी। इस पर भी जब तक आप खुद वहां नहीं जायेंगी, वह कोई देख भी नहीं सकेगा।"

"सच ?"

"हां, उसको बैंक का 'लॉकर' कहते हैं। वहां न कोई लूट सकता है, न आग से जलने का भय रहता है। बैंक में लाखों रुपये रहते हैं। उनकी रक्षा के साथ आपके धन की भी हिफाज़त हो सकेगी। उस लॉकर का भाड़ा आपको कुछ देना पड़ेगा। वह बहुत ही मामूली होगा।"

"तो कब ले जा सकेंगे ?"

"यह मैं कर्मचन्द के पिता से पूछ कर ही बता सकती हूं।"

"तो पता करिये। वह सब कुछ मैं यहां देहात में रखना नहीं चाहती।"

इस प्रकार सौभाग्यवती से बात कर सोहनी और फातिमा घर लौट आयीं। करीमबख्श अभी लौटा नहीं था। सोहनी ने कर्मचन्द की मां की बात बताई तो दोनों सास-पतोहू ने अपनी बंधी गठरियां छुपा कर रख दीं।

करीमबख्श रात के खाने के वक्त लौटा। उसने आते ही अपनी अम्मी को बताया, "अम्मी ! मैं दस बारह दिन के लिए बाहर जा रहा हूं।"

ऐसा वह पहले भी किया करता था। उसकी पार्टी का काम बाहर भी था और वह घर से लापता रहता था।

नरगिस ने रात सोने से पूर्व पूछा, "कहां जा रहे हैं ?"

"तुम क्यों पूछ रही हो ?"

"मैं भी अपनी मां से मिलने जाना चाहती हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आऊंगा तो तुमको ले चलूंगा। तुम्हारे बापू की हालत देख मुझे उस पर रहम आता है। उसके घर में तो आराम से रात सोने की जगह भी नहीं है। बाप-बेटा दोनों रात को अपनी-अपनी बीवियों के साथ एक ही कमरे में सोते हैं।"

नरगिस मुस्कराई और बोली, "इस पर भी उनके घर पांच बच्चे हैं और आपके घर एक होकर खुदा की मेहर है।"

"तो तुम को और की जरूरत है?"

"न होती तो हर रात आपकी खिदमत किस लिए करतीं?"

"तो यह बच्चे के लिए करती हो?"

"तो आप यह किसलिए करते हैं?"

"बच्चा होने के अलावा और कुछ नहीं मिलता इससे?"

"बहुत बढ़िया मिठाई भी जब रोज खाने को मिले तो उससे जी ऊब जाता है।"

"तब ठीक है। तुम फर्श पर अपना बिस्तर कर लो। अब मैं कुछ दिन के लिए जा ही रहा हूं। तब तक तुम्हारे मुख की मिठास मिट जायेगी।"

इस पर भी नरगिस ने पति की खाट नहीं छोड़ी। नरगिस का लड़का तीन वर्ष का था। नाम था मजीद। वह इस समय समीप एक खटोले पर पड़ा गहरी नींद सो रहा था।

करीमबख्श मुस्लिम लीग की मीटिंग पर लाहौर गया। मुस्लिम लीग का इजलास इस बात पर विचार करने के लिए हो रहा था कि मुल्क का हिन्दू-मुसलमानों में बंटवारा हो। करीमबख्श को आज्ञा मिली थी कि वह वहां लीग के जलसे में शामिल हो और उसकी इन्तज़ामिया कमेटी में जगह लेने की कोशिश करे।

उत्तरी भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी का केन्द्र लाहौर में ही था और वहां यह समझा जा रहा था कि करीमबख्श इस योग्य है कि मुस्लिम लीग की इन्तज़ामिया कमेटी में सम्मिलित हो सकता है।

करीम के घर से चले जाने के बाद ही फातिमा को मौका मिला कि वह अश्विनीकुमार से अपनी पढ़ाई की बात करने जाये। वह अभी तक तो गांव में बिना बुर्के ओढ़े घूमती थी। घर का सौदा-सुल्फ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह ही लाती थी। मगर ग्राज वह ग्रम्मी के साथ बुर्का पहन ग्रश्विनी-कुमार के घर गयी।

ग्रश्विनी के पास भी दो एकड़ का खेत था। वह एक चौधरी रामलोक से साझेदारी में उस खेत को जोतता-बोता था।

टीकड़ी की भूमि पहाड़ की तराई में होने के कारण भरपूर वर्षा का पानी उपलब्ध हो जाता था ग्रौर सिंचाई की कभी-कभार ही ग्रावश्यकता होती थी। ग्रश्विनी ग्रौर रामलोक दोनों स्वयं दो ग्रन्य कामों की सहायता से खेत को जोतते-बोते थे ग्रौर ग्राधी-ग्राधी पैदावार के भागीदार थे।

रामलोक तो दूसरे प्रहर भी खेत में काम करने जाता था, मगर ग्रश्विनी दूसरे प्रहर घर पर पठन-पाठन का कार्य करता था।

उसके पास गांव के कुछ लड़के पढ़ने ग्राते थे। कुछ तो ग्रपने स्कूल के काम में ही सहायता लेने ग्राते थे। केवल दो थे जो ग्रश्विनी से ही पढ़ते थे ग्रौर संस्कृत का ग्रध्ययन कर रहे थे। इनके नाम थे राधे ग्रौर मोहन। मोहन पन्द्रह-सोलह वर्ष का कुमार था ग्रौर इस समय ग्रष्टाध्यायी पढ़ रहा था।

मध्याह्नोत्तर तीन बजे का समय था। ग्रश्विनीकुमार की पत्नी सरस्वती ने बैठक में ग्रा कहा, "ग्रापसे दो स्त्रियां मिलने ग्रायी हैं। दोनों बुर्का पहने हैं।"

ग्रश्विनी समझ गया। उसके जीजा मोटूराम ने उसे बता दिया था कि कर्मचन्द की होने वाली बीवी ग्रौर उसकी मां उसके पास फातिमा की पढ़ाई के विषय में मिलने ग्रायेंगी।

मोटूराम ने कर्मचन्द की मंगेतर के पढ़ने के विषय में ग्रश्विनी की माताजी की राय भी बताई थी। यह राय ग्रश्विनी को पसन्द नहीं थी। वास्तव में वह कर्मचन्द के फातिमा से सम्बन्ध को पसन्द नहीं करता था। वह इसमें कर्मचन्द के दुःखी जीवन की ही ग्राशा करता था।

इस सब बात की पृष्ठभूमि में ही जब उसने ग्रपनी पत्नी सरस्वती का संदेश सुना तो समझ गया कि मिलने के लिए कौन ग्रायी होंगी। इस कारण उसने एक क्षण तक विचार कर कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सरस्वती ! उनको अपने पास बैठाओ। चाय-पानी पूछो। मैं मोहन को पढ़ाकर पीछे ही उनसे मिलूंगा।"

जब सरस्वती घर के भीतर चली गयी तो मोहन ने कहा, "गुरुजी ! ये करीमबख्श के घर से मालूम होती हैं।"

"कैसे कहते हो यह ?"

"गांव में चर्चा है कि करीमबख्श के घर की औरतें चौधरी के घर आती-जाती हैं। उस दिन करीम की मां और लड़की चौधरी के साथ मोटर में कहीं गयी थीं और फिर सायंकाल दीपक जलने के समय दोनों चौधरी के घर भी गयी थीं। लोग यह कहते हैं कि दोनों औरतें रातभर चौधरी के घर रही हैं।"

"तुम चौधरी के घर की बहुत-सी बातों की टोह लेते रहते हो।"

"मैं नहीं गुरुजी ! गांव में चर्चा है। वैसे तो कर्मचन्द नगर को गया हुआ है। उसके स्कूल का एक साथी कहता था कि वह होशियारपुर पढ़ने चला गया है। मगर मेरे बाबा कह रहे थे कि चौधरी मोटूराम भी तो जवान है और करीम की अम्मी तथा बहन दोनों ही बहुत सुन्दर हैं।"

"अच्छा बस करो।" अश्विनीकुमार ने उसे डांट के भाव में कहा और पाठ देना आरम्भ कर दिया।

अश्विनीकुमार को चिन्ता लग गयी थी कि कहीं गांव के हिन्दू ही चौधरी के खिलाफ न हो जायें। गांव में मुसलमानों की आबादी बहुत कम थी और जो कुछ भी थे, वे प्रायः खेतों में काम करने वाले ही थे। उनको ही करीमबख्श हिन्दू जमींदारों के खिलाफ भड़काया करता था। वह उनमें यह विचार उत्पन्न किया करता था कि भूमि पर काम वे करते हैं और जमींदार फोकट में पैदावार का बहुत बड़ा भाग ले जाते हैं।

यह युक्ति मुसलमान कामों को तो समझ नहीं आ रही थी, पर हिन्दू छोटी जाति के लोग इस विचार पर चर्चा करने लगे थे।

इन दिनों युरोप का युद्ध चल रहा था। जर्मनी और रूस का युद्ध में सहयोग था। हिटलर का स्टालिन से समझौता हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर जर्मनी ने रूमानिया, बलगारिया तथा ग्राधे पोलैण्ड पर रूस का ग्रधिकार स्वीकार कर लिया था। दूसरी ग्रोर स्टालिन ने ग्रास्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लोवाकिया इत्यादि मध्य यूरोप के कुछ राज्यों पर जर्मनी का ग्रधिकार मान लिया था।

यह बात हिन्दुस्तान की कम्यूनिस्ट पार्टी को विदित थी। इस कारण सब कम्यूनिस्ट कार्यकर्त्ता लोगों में यह बात फैला रहे थे कि जर्मनी की युद्ध में जीत हो रही है ग्रौर युद्ध समाप्त होते ही रूस की सेनाएं काले बादलों की भांति ग्रफगानिस्तान के मार्ग से हिन्दुस्तान पर चढ़ ग्रायेंगी। तब यहां कम्यूनिस्ट राज्य होगा। यह निर्धनों का राज्य होगा ग्रौर धनियों की सब धन-दौलत गरीबों में बांट दी जायेगी।

यह बात जब हिन्दू-मुसलमान के परिवेश में देखी जाती थी तो निर्धन हिन्दू निश्चय नहीं कर पाते थे कि वे भी निर्धन मुसलमानों के साथ हैं ग्रथवा धनी हिन्दुग्रों के साथ।

करीम को फातिमा की ग्रन्तर्भावना का ज्ञान हुग्रा तो वह इसको एक सीमा तक बढ़ने देना चाहता था ग्रौर फिर इसे हिन्दू-मुसलमान का रंग देकर गांव में बलवा करवा कर सब समतल कर देना चाहता था। वह ग्राशा कर रहा था कि सन् १९४१ तक इंग्लैण्ड ग्रौर फ्रांस पराजित हो जायेंगे। तब समय होगा हिन्दुस्तान में कम्यूनिस्ट राज्य स्थापित करने का।

ग्रश्विनीकुमार ने ग्रपने शिष्य की पढ़ाई समाप्त की तो भीतर ग्रपनी पत्नी तथा फातिमा ग्रौर उसकी मां के पास जा पहुंचा।

ग्रश्विनी ने पहली ही बार फातिमा को देखा था ग्रौर कर्मचन्द के उस पर मुग्ध हो जाने की बात समझ गया। उसे फातिमा प्रज्वलित ग्रग्नि समझ ग्रायी ग्रौर कर्मचन्द का इस ग्रग्नि में झुलस जाना स्वाभाविक जान, उसके मन से कर्मचन्द के विपरीत रोष कम होने लगा था।

ग्रश्विनीकुमार की पत्नी सरस्वती ने फातिमा की मां की ग्रोर संकेत कर कहा, "ये कहती हैं कि इस लड़की की सगाई कर्मचन्द से हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ये माताजी से नगर में मिली हैं और उनके कहने पर ही इस लड़की की शिक्षा आपके अधीन करने आयी हैं। माताजी का यह विचार है कि आप इस लड़की को कर्मचन्द जैसे प्रतिभावान युवक की योग्य पत्नी बना देंगे।"

इस समय तक अश्विनीकुमार समझ गया जो उसकी बहन ने उस दिन प्रातःकाल उसे समझाया था कि उसकी माताजी का क्या विचार है। इस कारण उसने अपनी विचार की हुई बात बता दी। उसने कहा, "बहनजी! मुझे इसको पढ़ा-लिखा कर एक आलम-फाज़िल लड़की बनाने में ऐतराज नहीं है। मगर, आपका लड़का करीम, जैसा कि मैं उसके बारे में जानता हूं, इस पढ़ाई को पसन्द नहीं करेगा।"

अब सोहनी ने कहा, "आपकी माताजी ने कहा था कि उस तालीम का मज़हब से ताल्लुक नहीं होगा। वह तो एक इन्सान को सही मायनों में इन्सान बनाने के लिए होगी।"

"बहनजी! यही कह रहा हूं। करीमबख्श आजकल कुछ इन्सानियत के खिलाफ करने की बात गांव में कह रहा है। कोई सही दिमाग आदमी उसे मान नहीं सकता।

"मसलन, वह गांव के गरीबों में यह ख्वाहिश पैदा कर रहा है कि जिनके पास जरूरत से ज्यादा धन है, उनसे छीन लो। इसको मैं ठीक नहीं मानता। मेरे पास जो है, वह तो आपसे भी कम है। इसका मतलब है कि आपके पास जरूरत से ज्यादा है। पर इसका यह मतलब तो नहीं कि मुझे आपका फालतू धन छीन लेना चाहिए।"

फातिमा इस सब बात को बहुत गौर से सुन रही थी। कुछ इसी किस्म की बात उनके घर में भी कुछ दिन पहले हुई थी, जिस कारण उसकी अम्मी और भाभी ने अपनी सब सम्पत्ति समेट बैंक के लॉकर में रख दी थी। इस कारण उससे नहीं रहा गया। उसने बातों में हस्तक्षेप करते हुए पूछ लिया, "मामाजी! आप हमारे पास कितना कुछ समझते हैं?"

अश्विनीकुमार हंस पड़ा और बोला, "तो मैं तुम्हारा मामा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन गया हूं।"

"जब आप अम्मी को बहन कहते हैं तो मेरे मामा तो खुद ही हो गये। मैं यह जानना चाहती हूं कि आप हमारे पास कितना कुछ समझते हैं?"

"देखो बेटी! गांव में यह मशहूर है कि तुम्हारे मरहूम अब्बा-जान सरकारी अफसर थे। मुझे कर्मचन्द के बाबा ने बताया था कि नदी के किनारे वाली ज़मीन अपने नाम कराने के लिए उन्होंने उनको प्रति बीघा पचास रुपये नज़राना पेश किया था। ज़मीन का पट्टा हो चुका था, मगर उनके नाम दाखिल-खारिज तहसीलदार साहब होने नहीं देते थे। इस पर कर्मचन्द के बाबा ने जब उनके घर पर पहुंच कर कुछ रकम उनके सम्मुख रखी तो उन्होंने कह दिया, यह कम है। बीस बीघा भूमि थी। कर्मचन्द के बाबा ने दो सौ रुपये नज़राना तहसीलदार साहब को दिया था। उन्होंने कह दिया, तीन सौ और रख दो तो कल ज़मीन उनके नाम पर दाखिल-खारिज हो जायेगी। वह नज़र दी गयी और तब वह बीस बीघा भूमि उनके नाम हुई। उनका अनुमान था कि करीमबख्श के अब्बा मरते समय कम-से-कम दो लाख पीछे छोड़ गये हैं।"

सोहनी हंस पड़ी और बोली, "भाईसाहब! इतना नहीं। इस पर भी हमारे आराम से गुज़र करने के लिए काफी है। और मेरा नालायक लड़का मुझको भी धमकियां देता रहता है कि मेरा सब कुछ छीन लिया जायेगा।"

इस पर फातिमा ने पूछ लिया, "और मामाजी! आप इसे रिश्वत की रकम समझ छिन जाना ठीक समझते हैं?"

अश्विनीकुमार ने इस विषय पर कई बार पहले विचार किया था। उसके पिता भी तो डिप्टी कमिश्नर के पेशकार थे। इस कारण उनको भी पर्याप्त रिश्वत मिलती थी। उसने अपने मन की विचारित बात बता दी। उसने कहा, "हासिल करने वाले ने यह धन तो ना-वाजिब ढंग से वसूल किया था। उसके अमाल उसके साथ गये, मगर आपने तो कोई नाजायज़ बात नहीं की। तुम्हारी अम्मी को खाविन्द की वफादार बेगम होने से ही यह जायदाद मिली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इसे अपने पूर्वजन्म के अमालों की वज़ह से मिली है। इसलिए यह इनकी अपनी ही है।"

"कब के अमालों का मुआवजा है?"

"मौजूदा से पहले जन्म के। देखो बेटी! इस खुदा की दुनिया में कुछ भी बिना वज़ह नहीं होता। इसलिए जो कुछ तुम्हारे वालिद से तुमको मिला है, वह तुम्हारे अमालों का नतीजा है। तुम्हारे वालिद की करनी उनके साथ गयी।"

फातिमा हिन्दुओं की यह बात कई बार सुन चुकी थी कि वर्तमान से पूर्वजन्म के फल इस जन्म में मिलते हैं? एक बार कर्मचन्द ने भी उसे कहा था कि उसकी किस्मत बहुत अच्छी है।

इस पर उसने पूछा था कि किस्मत क्या होती है? कर्मचन्द ने बताया था कि मौजूदा से पहले की जिन्दगी के अमालों का फल ही किस्मत होती है। फातिमा जानती थी कि वह खुद इतनी खूबसूरत है जितनी उसकी अम्मी भी नहीं थी। तो क्या वह खूबसूरती अपने पहली जिन्दगी के अमालों की वजह से है?

आज यही बात कर्मचन्द के मामा को कहते सुन वह समझ गयी कि जरूर मौजूदा से पहले कोई जन्म रहा है और उसमें उसने कुछ अच्छे काम किये हैं, जिससे वह इस वक्त इस खूबसूरत जिस्म को पा गयी है और साथ ही तीस हजार के लगभग नकद धन की मालिक है।

अब सोहनी ने पूछा, "तो इसका मतलब यह हुआ कि मैं इस जायदाद की हकदार हूं?"

"खुदा बेइन्साफ नहीं है। जरूर आप हकदार हैं। तभी तो आपको एक नेक काम करते हुए यह मिली है।"

इस पर फातिमा हंस पड़ी और पूछने लगी, "मामाजी! अब्बाजान ने क्या नेक काम किया होगा जो दो बीवियां रखते हुए भी नाबालिग बहनों को शादी कर लाये थे?"

"कुछ तो यह उनकी पहली जिन्दगी का नतीजा कहा जा सकता है और कुछ मौजूदा जिन्दगी का। जो कुछ उन्होंने इस जिन्दगी में किया और यदि चाहते तो नहीं भी कर सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका नतीजा ही तो था कि वह साठ साल की आयु में ही चल बसे थे। एक इन्सान की आयु सौ साल है। इन्सान इसे अपने अच्छे और बुरे अमालों से लम्बी और छोटी करता है।"

"तो हम अपनी जिन्दगी को लम्बा भी कर सकते हैं?"

"हां, इसके तरीके हैं। हमारे आलमों ने बताये हैं। ये दवाईयां भी तो अमालों के नतीजे हैं।"

"बस, यही मैं आपसे सीखने आयी हूं। मेरे भाईजान कहते हैं कि मैं बहुत खूबसूरत हूं और ज़हीन हूं। इसलिए मैं इस जिन्दगी को लम्बा करना चाहती हूं।"

"हां, यह हो सकता है। कम-से-कम कोशिश तो की ही जा सकती है। अगर पहली जिन्दगी में कुछ बहुत बुरे अमाल नहीं किए हुए तो मौजूदा जिन्दगी को लम्बा और मुफीद किया जा सकता है।"

"तो मामाजी! मैं कल से आपसे पढ़ने आया करूंगी?"

अश्विनी हंस पड़ा। हंसकर कहने लगा, "देखो बेटी! इस तरह से नहीं। अपने सरपस्त की मंजूरी से ही यहां आ सकती हो। तुम अभी नाबालिग हो। तुम खुद फैसला नहीं कर सकतीं कि तुम मुझसे तालीम हासिल करो।"

"मैं अपने सरपरस्त को साथ लायी हूं। यह मेरी पालने वाली अम्मी हैं। एक दूसरी मां से पैदा हुआ भाई मेरा सरपरस्त नहीं हो सकता।"

अब सोहनी बोल उठी, "इसके मां-बाप दोनों मर चुके हैं। मैंने इसकी परवरिश की है। इसलिए मैं ही इसकी सरपरस्त हूं और मैं यह चाहती हूं कि आप इसकी तालीम का ऐसा बन्दोबस्त करें जिससे यह अपने खाविन्द की बहुत ही प्यारी बीवी बन सके।"

"और बस?" अश्विनी ने पूछ लिया।

"तो कुछ और भी है?" सोहनी का प्रश्न था।

"पहले जन्म का नतीजा तो यह अब वसूल कर रही है। यह खूबसूरत जिस्म, खाने-पीने के लिए धन और प्यार करने वाली मां, ये सब पहले जन्म के अमालों का नतीजा है। और कुछ अगले जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए भी जमा करना चाहिए।"

"तो वह भी इसे बताइयेगा। यह उसमें भी कोशिश कर सकती है।"

"मगर मैं करीमबख्श से डरता हूं।"

"अगर उसने कुछ झगड़ा किया तो मैं पुलिस में इत्तला कर दूंगी। वह मेरा लड़का जरूर है, मेरा मालिक नहीं। मैं खुद मुख्तार हूं और यह मेरी लड़की है।"

अश्विनी उत्तर नहीं दे सका। इस पर भी समझता था कि यह फसाद का बीज बन सकता है। वह अभी सोच ही रहा था कि किस प्रकार इस झगड़े से बचे कि फातिमा बोल उठी, "अम्मी! चलो! मैं कल से इनसे पढ़ने आऊंगी। यह मान गये हैं।"

"मान गया हूं? किसने कहा है?"

"मेरा मन कहता है। आप अम्मी की बात को सुन चुप रहे हैं न?"

"अब बताइये," बात फातिमा ने जारी रखी, "किताबों-कापियों का क्या इन्तज़ाम होगा। अगर खरीदनी हैं तो कितना दाम पेशगी लाऊं। लेना-देना पीछे अम्मी फैसला कर लेंगी।"

अश्विनी की पत्नी सरस्वती को फातिमा कर्मचन्द के लिए उचित पत्नी समझ आ रही थी। इस कारण उसने कह दिया, "आप इसे पढ़ाना मंजूर कर लें। इसका पढ़ने के लिए यहां आना और यहां से जाना इसका काम है। आप इसको न तो लेने इनके घर जाइयेगा, न ही इसकी उंगली पकड़कर इसे यहां लाइयेगा।

"यहां तो आप कहा करते हैं—ज्ञान का सागर भरा पड़ा है। जो भी आये, पीकर तृप्त होकर ही जाना चाहिए। प्यासों को यहां आने से मना कैसे कर सकते हैं?"

वास्तव में सरस्वती भी एक आर्यसमाजी की लड़की थी और इसमें वैदिक धर्म के विस्तार के लक्षण देख रही थी।

इस पर भी अश्विनी निश्चिन्त नहीं था। उसके घर के बग़ल में थाना था। वह उसी दिन सायंकाल थानेदार से मिलने चला गया। अश्विनी ने अपनी समस्या बताई तो थानेदार ने कहा, "जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ौजदारी करेगा मैं तो उसे घर दबाऊंगा। आप अपना व्यवहार ठीक रखिये।"

: ७ :

अश्विनीकुमार के उनकी सम्पत्ति के स्रोत के विषय में बताने ने सोहनी के मन में भय को और भी तीव्र कर दिया था। वह समझी थी कि गांव के अन्य लोगों को भी यह ज्ञात हो सकता है कि तहसीलदार साहब ने कैसे धन एकत्रित किया है। अतः कहीं लूट मची तो सब गांव वाले निःसंकोच हो, उनका धन लूट लेंगे।

इस पर भी अश्विनी का युक्ति से उसको स्वामी सिद्ध करने से उसके अपने मन में विश्वास और प्रसन्नता का संचार हुआ था।

मां-बेटी दोनों चलती हुईं चौधरी की हवेली में पहुंचीं तो बाबा अहाते में छाजन के नीचे तख्तपोश पर बैठा था। उसने दो बुर्कों को हवेली के फाटक से भीतर आते देखा तो समझ गया।

वहां सौभाग्यवती ने सोहनी के भीतर पहुंचने पर उनका स्वागत किया और जब जलपान पूछा तो सोहनी ने कहा, "हम आपके भाई के घर से आ रही हैं। वहां फातिमा की पढ़ाई का इन्तज़ाम कर आयी हैं। वहां चाय वगैरह ले ली थी।"

"तो अश्विनी दादा मान गये हैं?"

"हां, बहनजी! फातिमा कल दोपहर तीन बजे उनके घर जायेगी और पढ़ाई शुरू करेगी। भाईसाहब ने कहा है कि इसे अपनी कापी और कलम लेकर कल वहां पहुंच जाना चाहिए। किताबें वह अपने पास से दे देंगे।

"बहनजी!" सोहनी ने आगे कहा, "मैं चाहती थी कि उन की कुछ फीस पता चल जाती तो वह भी भेज देती। मैंने पूछा तो था, मगर उन्होंने कुछ बताया नहीं।"

सौभाग्यवती ने कहा, "वह पढ़ाई का कुछ नहीं लेंगे। इल्म अनमोल वस्तु है। इसका मूल्य लेकर वह इल्म को बेइज्जत नहीं कर सकते।"

"और फिर अगर फातिमा से हमारा रिश्ता बनना है तो यह दादा की लड़की ही तो हुई। इस कारण वह इससे कुछ भी नहीं ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते।"

फातिमा इस कथन से प्रसन्न थी। इसका मतलब यह था कि उसके कर्मचन्द से विवाह की बात पक्की और अधिक पक्की हो रही है।

सोहनी ने अगली बात कह दी, "चौधरीजी कब नगर जा रहे हैं? हम कर्मचन्द की खैर-खैरियत जानने की ख्वाहिश रखती हैं।"

सौभाग्यवती ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "करीमबख्श कब तक आने वाला है?"

"वह लाहौर गया हुआ है। कहता था कि वहां दस-पन्द्रह दिन लग सकते हैं। शायद कुछ ज्यादा दिन भी लग जायें।"

इस समय कर्मचन्द की सबसे छोटी बहन शोभा आ गयी और फातिमा की गोदी में बैठ गयी।

सौभाग्यवती ने कह दिया, "यह तुमको पहचान गयी है। कल तुमसे मिली थी और आज अपने आप ही तुम्हारी गोदी में आ बैठी है।"

"हां, मामाजी कहते थे कि यह मौजूदा से पहली जिन्दगी के असरात का नतीजा है कि हम इस जिन्दगी में मिल रहे हैं। क्या जाने, यह पहली जिन्दगी में मेरी कोई बहन रही हो?"

"हो सकता है। हम तो पहले जन्म की बात भूल गये हैं।"

चौधरी के आने मे देरी लग रही थी। इस कारण सौभाग्यवती ने दूध मिला गाजर का हलुवा खाने के लिए सामने रख दिया।

करीमबख्श दस दिन के बाद लौटा। वह लाहौर में मार्च के महीने में मुस्लिम लीग के अधिवेशन में डैलिगेट बनकर गया था और यत्न कर वह मुस्लिम लीग की इन्तज़ामिया कमेटी में चुन लिया गया था।

वह तीसरे प्रहर तीन बजे के लगभग बस स्टैण्ड से अपना बिस्तर कुली से उठवाकर घर पहुंचा तो उस वक्त फातिमा अश्विनीकुमार से पढ़ने गयी हुई थी। करीमबख्श ने समझा कि वह स्कूल गयी है। इस कारण उसने अम्मी से पूछ लिया, "फातिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी स्कूल से नहीं लौटी ?"

"उसने स्कूल छोड़ दिया है ?"

"क्यों ?"

"वह अब कर्मचन्द के मामा से पढ़ने लगी है।"

"कर्मचन्द के मामा से ?" करीमबख्श हैरानी में मां का मुख देखता रह गया।

"उसकी ससुराल वालों का कहना था कि उसे कुछ उनके मज़हब की बात भी सीख लेनी चाहिए ?"

"तो वह हिन्दू बनेगी ?"

"औरत का मज़हब तो उसके खाविन्द का मज़हब ही होता है।"

"मगर मुसलमान औरत का खाविन्द तो मुसलमान बना लिया जाता है।"

"यह कहां का कानून है ?"

"अम्मी ! बहुत कानून पढ़ गयी हो !" करीमबख्श ने आवेश में कहा।

"हां ! कर्मचन्द की मां डिप्टी कमिश्नर के पेशकार की लड़की है और वह मुझे बता रही थी कि मुसलमानी राज्य में यह होता था कि मुसलमान मर्द से शादी करने वाली औरत मुसलमान हो जाती थी। यह अंग्रेजी राज्य में भी चलता था। मगर एक मुसलमान मिस्टर कासमी साहब ने कौंसिल में यह पास करा लिया है कि शादी से मज़हब तबदील नहीं होता। इस वास्ते फातिमा का मज़हब शादी करने से नहीं बदलेगा। हां, तालीम से बदल सकता है। इसलिए उसने अपने भाई को फातिमा को पढ़ाने पर लगा दिया है। उसे वहां पढ़ते हुए आज एक हफ्ता से ज्यादा हो चुका है।"

"अम्मी ! मैं इसकी इजाजत नहीं दे सकता।" करीमबख्श ने कह दिया।

"मगर तुम्हारा उस पर क्या हक है ?"

"वह मेरे घर में रहती है। इसलिए यहां रहते मेरी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलेगी ?"

"तुम्हारा घर कहां है ? यह मकान तुम्हारे बाप ने बनवाया था और उन्होंने मकान की जमीन और मकान भी मेरे नाम पर ही बनवाया था।"

करीम को समझ आ गया कि उसकी मां किसी कानूनदान की सिखाई है। उसे तुरन्त सन्देह हुआ कि चौधरी छोटूराम ने ये सब बातें इसे बतायी होंगी।

छोटूराम ने अपनी जिन्दगी एक मुख्तार के काम से शुरू की थी। उसी की आय से वह जमींदार बना था। जब जमींदारी की आय होने लगी तो उसने मुख्तार का काम छोड़ दिया था।

बैठकघर में बैठे हुए करीम मां का मुख देखता रहा था कि उसकी बीवी नरगिस उसके लिए चाय बना लायी।

सोहनी ने कह दिया, "लो ! जरा चाय पीकर थकावट दूर कर लो तो तुम बात समझने लगोगे। हड़बड़ी में कुछ समझ नहीं आ सकता।"

"अम्मी ! न तो मैं थका हुआ हूं, न ही मैं हड़बड़ी में हूं। तुम, मालूम होता है कि चौधरी के घर में बहुत आती-जाती रही हो, जो आज कानून की बातें करती हो।

"देखो ! मैं ही इस घर में एक शख्स बालिग हूं। इसलिए शरअ के मुताबिक इस घर में मेरी चलेगी। मैं कहता हूं कि फातिमा उस काफिर के घर नहीं जायेगी। न ही उसकी शादी उनके घर होगी।"

"मगर क्या आज भी शरअ चलती है ?"

"हां, मुसलमानी खानदानों में यह चलेगी ?"

"तो मैं मुसलमान नहीं रहूंगी। फिर क्या करोगे ?"

"कैसे इस्लाम छोड़ दोगी ?"

"यह नहीं बताऊंगी। तुम जबरदस्ती क्यों करोगे ?"

"और तुम मजहब तब्दील कर मेरी जबरदस्ती से बच सकोगी क्या ?"

"मैं तुम्हारी मां हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस्लाम में मां का हक-हकूक नहीं होता।"

"तो किसका होता है ?"

"जो घर में मर्द हो, उसका।"

"मैं इसे ग़लत समझती हूं।"

"तो समझा करो। यह शरग्र है।"

सोहनी की अक्ल की यह सीमा थी। आगे वह सोच नहीं सकी। इस कारण चुप हो गयी। करीमबख्श चाय पीने लगा तो सोहनी ने भी एक प्याला अपने लिए बनाया और दिल ठीक करने के लिए पीने लगी।

करीम को अपनी बीवी का मुख भी कुछ फीका-फीका समझ आया। वह इसका कारण समझने का यत्न करने लगा। एकाएक उसको समझ आया कि उसके कान की बालियां और टॉप्स कानों में नहीं हैं। उसने प्याला मेज पर रखते हुए कहा, "और बेगम ! तुमने कान और नाक के जेवर क्यों उतार रखे हैं ?"

"मैंने वे संदूकची में रख छोड़े हैं।"

"क्यों ?"

"मुझे डर लग रहा था कि आपकी गैर-हाजिरी में आपके चेले-चांटे ही यहां लूट न मचा दें।"

"मगर वे लूट मचायेंगे तो तुम्हारी संदूकची उनकी लूट को रोक देगी क्या ?"

"मैं कल फातिमा के साथ उसकी सास से मिलने गयी थी और मुझे डर लग गया था कि रास्ते में कहीं लूट न ली जाऊं। इसलिए उतार दिये थे।"

"अभी लूट नहीं मचेगी। इस वास्ते खौफ करने की कोई वजह नहीं है।"

इस पर सोहनी ने पूछा, "तो कब मचेगी ?"

"जब जंग खत्म होगी। देखो अम्मी ! मैं जिस इजलास में गया था, उसमें मुल्क का सबसे लायक मुसलमान वकील मिस्टर एम० ए० जिन्ना आया हुआ था। वह इजलास का सदर था। वह ही कहता था कि फ्रांस तो अगले महीने तक फतेह हो जायेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अंग्रेज़ अगले साल तक अपना मुल्क छोड़ अमरीका को भाग जायेंगे। तब इस मुल्क में मुसलमान रूस की मदद से हुकूमत करेंगे। तब हिन्दू लुटेंगे, दीनदार नहीं।"

"तब तो ठीक है।"

इस पर नरगिस ने कह दिया, "तो जिन्ना साहब की हुकूमत होने पर मैं अपने जेवर निकाल लूंगी। अभी तो उनकी हुकूमत नहीं है।"

"और तब तक अंग्रेज की हुकूमत है।"

"मगर हज़रत ! आप तो कह रहे हैं कि उनकी हार हो रही है ?"

"वह हार अभी यूरोप में है। यहां तो उनका राज है। रेलगाड़ियां चलती हैं, बसें चलती हैं। पुलिस भी है और ···।"

एकाएक करीम उठा और बोला, "मैं फातिमा को लेने जा रहा हूं।"

"वह आने ही वाली है। साढ़े चार बज रहे हैं। पांच बजे वह आ जाया करती है।"

"नहीं, मैं उसका कान पकड़कर लाना चाहता हूं। गांव वालों को बताना चाहता हूं कि इस घर में मेरी हुकूमत है।"

सोहनी समझ नहीं सकी थी कि क्या करे। करीम ने खुद ही कर्मचन्द को बहनोई बनाने की तज़वीज़ की थी और अब वह खुद ही उलट बात कह रहा था।

करीमबख्श घर से निकल गया। उसके जाने के बाद सोहनी ने नरगिस से पूछा, "अब क्या करोगी ?"

"अम्मी ! मेरी राय है कि मकान का दरवाजा भीतर से बंद कर भाई-बहन दोनों को ही घर से बाहर निकाल दें।"

"फातिमा को क्यों ? उसने क्या कसूर किया है ?"

"उसकी करनी का ही तो यह सब नतीजा है। भाई-बहन दोनों को कह दें कि यदि यहां पुलिस लेकर आयेंगे। तो दरवाजा खुलेगा।"

सोहनी की इतनी हिम्मत नहीं थी। मगर वह चाहती थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांव में शोर मच जाये तो पुलिस आयेगी ही। तब कोई-न-कोई फैसला कराने वाला आ जायेगा।"

नरगिस शहर की रहने वाली थी। वहां पुलिस की चलती थी। इसलिए वह स्वभाववश पुलिस की बात कहती थी।

सोहनी आधे मन से उठी और सेहन का दरवाजा भीतर से बंद कर आयी। नरगिस विचार कर रही थी कि सब जेवरों के घर से गायब होने की बात ज़ाहिर होने से पहले ही झगड़ा हो जाये और मामला पुलिस में चला जाये तो ठीक है।

वह डरती थी कि कहीं रात को उसकी पिटाई न हो जाये। उसके चार वर्ष के वैवाहिक जीवन में कई बार हो चुकी थी।

नरगिस ने कहा, "अम्मी! तुम कह देना कि तुमने इनको घर से निकाल दिया है और वह ज़बरदस्ती घर में घुसना चाहता है।"

बाहर का दरवाजा बंद किया तो नरगिस ने ताला लगा दिया। फिर घर को भी भीतर से ताला लगा लिया और औरतें तथा नरगिस का लड़का मकान में रह गये।

बहुत देर इन्तजार नहीं करनी पड़ी। पांच बजते-बजते बाहर का दरवाजा ज़ोर से खटखटाया जाने लगा।

इसके बाद करीम ने ज़ोर-ज़ोर से गुस्से में अम्मी-अम्मी कहकर पुकारना आरम्भ किया। सोहनी मकान की छत पर चढ़कर देखने लगी कि बाहर कौन-कौन खड़ा है।

करीमबख्श था। फातिमा सिर से नंगी खड़ी थी और उसकी चोटी करीम के हाथ में पकड़ी हुई थी। फातिमा भागना चाहती थी, मगर करीम ने उसको बालों से पकड़ा हुआ था। इसे देख सोहनी दरवाजा खोलने के लिए जाने लगी तो नरगिस ने अपनी सास की बांह पकड़ ली और कहा, "अम्मी! ज़रा ठहरो। देखो, गांव के लोग इकट्ठे हो रहे हैं। कुछ वह करेंगे।"

सोहनी बेमन मकान की छत पर बैठ गयी। इस समय नरगिस ने देखा कि थानेदार अपने साथ दस-बारह पुलिस सिपाही लेकर आ गया है। उसके साथ फातिमा का उस्ताद अश्विनीकुमार भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था।

जब सोहनी नरगिस का मुख देखने लगी। नरगिस ने ही कहा, "अम्मी ! अब ठीक है। मामला पुलिस में चला गया है। अब हम चौधरी की मदद ले सकेंगी।"

मकान के बाहर थानेदार ने करीम से पूछा, "इस लड़की को इस तरह से किसलिए पकड़े हुए हो ?"

"यह बदकारी कर रही थी।"

"तो पुलिस में रिपोर्ट करनी थी। इस तरह कानून अपने हाथ में नहीं ले सकते। इसके बालों को छोड़ दो, नहीं तो मैं तुम्हें हथकड़ी लगाने का हुक्म दे दूंगा।"

विवश करीम ने फातिमा को छोड़ा तो फातिमा ने अम्मी को पुकारा, "अम्मी ! दरवाजा खोलो। मेरी ओढ़नी वहीं रास्ते में गिर गयी है।"

इस पर सोहनी नीचे को भागी और उसने दरवाजा खोल दिया। करीम भीतर जाने लगा तो थानेदार ने बांह पकड़ ली और कहा, "तुम मेरी हिरासत में हो।"

"क्यों ?"

"यह कल मैं मजिस्ट्रेट को बताऊंगा।"

थानेदार ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, "इसे हवालात में ले चलो। मैं इसके लिए हुक्म थाने में चलकर लिखा दूंगा।"

इस वक्त तक आधा गांव वहां करीम के मकान के बाहर इकट्ठा हो गया था। भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें होने लगी थीं।

अश्विनी ने सबको समझाया, "यह अपनी बहन को चोटी से पकड़कर घसीटता हुआ जब घर को लाने लगा तो मैंने थाने में रिपोर्ट लिखाई कि वह लड़की की हत्या करने ले जा रहा है।

"थानेदार ने करीम को बहन को चोटी पकड़ घसीटते हुए देखा तो उसे मेरी बात का प्रमाण मिल गया है और उसने इसे पकड़ लिया है।"

सोहनी ने फातिमा को घर में किया और भीतर से कुण्डा चढ़ा दिया। बैठक में बैठ नरगिस ने पूछा, "फातिमा ! वहां क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था ?"

"मैं पढ़ाई खत्म कर घर को आने वाली थी कि भाईजान आ पहुंचे। उन्होंने मेरी किताब और कापी छीनकर ज़मीन पर पटकी तो मैं समझ गयी कि वह लड़ने आये हैं। मैं वहीं जहां खड़ी थी, बैठ गयी। इस पर भाईजान ने मेरी कमर में दो लातें लगायीं तो गुरुजी भागकर बग़ल के थाने में जा पहुंचे।

"इतने में भाईजान ने मुझे चोटी से पकड़ा और घसीटते हुए अपने मकान की तरफ लाने लगे। मैं शोर मचाने लगी, बचाओ, बचाओ।

"लोग इकट्ठे होने लगे। गांव के चौक में लोगों ने भाईजान को और मुझको रोक लिया। लोगों को समझ आया कि यह मुझे मार देंगे। इसलिए लोग भी बचाव करते रहे। मगर एकाएक उनको पता नहीं क्या सूझी कि वे खामोश हो गये। खुदा का शुक्र है कि ऐन मौके पर पुलिस आ गयी।

"यह गुरुजी की मेहरबानी का नतीजा ही है। वरना मैं समझ गयी थी कि आज मैं मार डाली जाऊंगी।"

नरगिस पुनः चाय बनाकर लायी और फातिमा को पीने के लिए देकर बोली, "पहले दिल को ठीक करो। फिर गौर करेंगे कि करें।"

"हमें अपनी मदद के लिए चौधरी को बुलाना चाहिए।" क्या सोहनी का सुझाव था।

अश्विनी पुलिस के साथ ही थाने को चला गया था। वहां उसने फातिमा की उससे पढ़ने की बात लिखाई और फिर वहां से मोटूराम के घर को चल दिया। वह उससे भी राय करना चाहता था।

मगर मोटूराम घर पर नहीं था। बाबा छोटूराम वहां आंगन में छाजन के नीचे बैठा था।

छोटूराम ने बताया, "गांव का बनिया रामनिवास आया था और मोटूराम को साथ लेकर चला गया है।"

अश्विनी ने फातिमा की पूर्ण कहानी बताई तो बाबा ने कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया, "तुम भी इस झगड़े की लपेट में आ गये हो। मैंने मोटूराम को कहा था कि यह लड़की हिन्दू-मुसलमान फसाद करा देगी। मोटू कहने लगा, हम जाट नहीं रहे। क्षत्रिय हो गये हैं। इस कारण हमें झगड़े से डरना नहीं चाहिए। हम इन्साफ की तरफ हैं। इसलिए जीत हमारी होगी। मैं चुप था और कुछ इसी बात की आशा करता था।

"रामनिवास कहता था कि मामला पुलिस में चला गया है। इससे मुकद्दमा चलेगा और मुझे डर है कि पण्डित लेखराज, महाशय राजपाल तथा स्वामी श्रद्धानन्द वाली बात न हो जाये?"

अश्विनी को इन आर्य शहीदों के नाम सुन जोश आ गया। उसने कहा, "बाबा! फिक्र न करो। सब ठीक होगा। थानेदार की गवाही कि करीम कानून को अपने हाथ में ले फातिमा की हत्या करने वाला था, उसे सात साल की कैद करा देगी।"

छोटूराम हंस पड़ा। वह एक उर्दू का अखबार "प्रताप" जो लाहौर से निकला करता था, पढ़ा करता था और उसको समझ आ रहा था कि सरकार अंग्रेजी और मुसलमान एक पक्ष में हो रहे हैं। दोनों हिन्दूओं के खिलाफ हो रहे हैं।

अश्विनी पुनः थाने में जा पहुंचा। वहां उसका बहनोई मोटूराम अपनी मोटी बुद्धि की बात कर रहा था। उसका कहना था, "करीमबख्श ने अपनी बहन की सगाई खुद उसके लड़के कर्मचन्द से की है। वह खुद उसे लेकर हमारे घर आया था और मान गया था कि लड़की की शादी कर्मचन्द से होगी। कर्मचन्द इस वक्त होशियारपुर में पढ़ता है और तबतक हमने लड़की को कर्मचन्द के लायक बनने के लिए उसकी पढ़ाई का इन्तज़ाम उसकी मां की मर्जी से किया है।

"हमने उसका मजहब तब्दील नहीं किया।"

: ८ :

थानेदार एक जाट जाति का सिक्ख था जसवन्तसिंह। उसकी दिली हमदर्दी कर्मचन्द और उसके परिवार के साथ थी। मामला होशियारपुर में जिला मजिस्ट्रेट की अदालत में दर्ज करा पुलिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने करीमबख्श को हिरासत में रखने की 'रिमाण्ड' ले ली। थानेदार अभी मुकद्दमा तैयार ही कर रहा था और करीम के खिलाफ गांव और गांव के बाहर की गवाहियां इकट्ठी कर रहा था कि सरकारी डिटेन्शन ऐक्ट के अधीन देशभर के कम्यूनिस्टों को पकड़ने का हुक्म जारी हो गया। पूर्ण हिन्दुस्तान में कई सहस्र कम्यूनिस्ट पकड़े गये और जेलों में बंद कर लिये गये।

यह इस कारण किया गया था कि सरकार को पता चला था कि कम्यूनिस्ट जंग की तैयारी में और भरती के काम में बाधा डाल रहे हैं।

इस हुक्म के अधीन करीमबख्श होशियारपुर जेल में बंद कर दिया गया और उस पर बहन की हत्या की कोशिश का मुकद्दमा अभी रोक दिया गया।

करीमबख्श इस बात की आशा नहीं करता था। वह समझ रहा था कि वह मुस्लिम लीग में शामिल हो गया है, इस कारण सरकारी डण्डा उसपर नहीं चलेगा।

उसने जेल के भीतर से अर्जी की कि वह मुस्लिम लीग में है। मगर सरकार के पास उसके कम्यूनिस्ट पार्टी का टिकट होल्डर होने के प्रमाण थे। इस कारण उसकी पिटीशन रद्द कर दी गयी।

परन्तु सन् १९४१ में यूरोप के जंग की सूरत बदल गयी। फ्रांस पर जर्मनी का पूर्ण अधिकार हो चुका था। फ्रांस के एक जनरल डी गाल ने फ्रांस से भागकर मोराको में आजाद फ्रांसीसी सरकार स्थापित कर अंग्रेजों के साथ सहयोग करना आरम्भ कर दिया था। साथ ही हिटलर ने रूस पर आक्रमण कर दिया और रूस भी अंग्रेज के पक्ष में हो गया। इसके साथ ही एक और परिवर्तन हुआ। जापान ने अमेरिका पर आक्रमण कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि अमेरिका भी जर्मनी के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गया। अब कम्यूनिस्टों ने अंग्रेजी पक्ष की जय के नारे लगाने आरम्भ कर दिये।

परन्तु झुनझुन टीकड़ी में एक अन्य आन्दोलन आरम्भ हो गया था। इसमें सबसे आगे था चौधरी परिवार का पुरोहित गौरीशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर उसकी सहायता कर रहा था गांव का बनिया रामनिवास। रामनिवास का एक छोटा भाई था—श्रीनिवास। वह गौरीशंकर का साथ देने लगा। गौरीशंकर गांव के हिन्दू घरों में जा सब में यह प्रचार कर रहा था कि चौधरी परिवार पतित हो गया है। इनके घर में करीमबख्श की मां ग्रौर बीवी ग्राती-जाती हैं ग्रौर खाती-पीती हैं।

कानों-कान यह भी कहा जाने लगा था कि करीमबख्श की बीवी नरगिस से छोटूराम का सम्बन्ध है।

इन दिनों कर्मचन्द दसवीं श्रेणी की परीक्षा दे गांव में माता-पिता के पास रहने के लिए ग्रा गया। सोहनी प्रायः नित्य चौधरी के घर जाती थी। ग्रतः चौधरी की हवेली में ही कर्मचन्द की फातिमा ग्रौर उसकी ग्रम्मी से भेंट हो गयी।

फातिमा ने कर्मचन्द को हवेली की बैठक में बैठे देखा तो उसने हाथ जोड़ कह दिया, "श्रीमान् जी ! नमस्ते।"

कर्मचन्द इस सम्बोधन पर चकित रह गया। वह देखने लगा कि किस को श्रीमान् कहकर फातिमा ने सम्बोधित किया है। उस समय बैठक में कर्मचन्द की माता सौभाग्यवती के ग्रतिरिक्त ग्रन्य कोई नहीं था ग्रौर फातिमा ग्रपनी भाभी तथा ग्रम्मी के साथ ग्रायी थी।

एकाएक उसे समझ ग्राया कि श्रीमान् का सम्बोधन उसके लिए ही है। उस विचार के ग्राते ही बरबस उसकी हंसी निकल गयी।

उसके मुख से निकल गया, "तो श्रीमतीजी मुझको नमस्ते कर रही हैं ?"

"तो ग्रौर कौन श्रीमान् यहां है ?" इतना कह फातिमा सौभाग्यवती के पास बैठ गयी। नरगिस भी बैठ पूछने लगी, "इम्तिहान कैसा हुग्रा है ?"

"मैं बहुत ग्रच्छे नम्बरों से पास होने की ग्राशा कर रहा हूं।"

नरगिस ने ग्रागे कह दिया, "फातिमा ग्रापके एम० ए० पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की इन्तजार कर रही है ?"

"भाभी ! इन्तजार में ही जिन्दगी का लुत्फ है।"

"वह तो मैं ले ही रही हूं।" फातिमा ने कहा, "परन्तु आपको कैसा अनुभव हो रहा है ?"

"फातिमा !" कर्मचन्द ने बहुत ध्यान से फातिमा की ओर देखते हुए कहा, "तुम तो बहुत बदल गयी हो। एक-सवा साल में ही "महसूस" की जगह पर "अनुभव" कहने लगी हो ?"

"यह सब मामाजी की कृपा का फल है। मुझे उनसे पढ़ते हुए एक वर्ष और दो महीने हो चुके हैं। मैं अब संस्कृत की पुस्तक हितोपदेश पढ़ती हूं।"

"ओह ! पर मैंने तो कॉलिज में विज्ञान पढ़ने का विचार बनाया है और वह पढ़ते हुए संस्कृत भाषा नहीं पढ़ी जायेगी।"

"आपके मामा जी ने बताया है और कहा है कि इसमें बहुत लुत्फ रहेगा। जैसे डिब्बे में जूता रखते समय उसके दोनों पांवों को उलट कर रखा जाता है, एक की ऐडी दूसरे के पंजे की तरफ की जाती है और वे डिब्बे में समा जाते हैं, वैसे ही हम एक परिवार में समा जायेंगे। आपकी विज्ञान को पढ़ाई मेरी शास्त्र की पढ़ाई पर फिट बैठ जायेगी।"

"यह मामाजी ने कहा है ?"

"हां, और वह कहते थे कि जब तक आप एम० ए० पास करेंगे मैं आपकी परम पवित्र पुस्तक वेद पढ़ने और समझने लगूंगी। तब हम दोनों एक स्थान पर बैठकर उन ग्रन्थों के अर्थ लगाया करेंगे।"

"मैं मामाजी से मिलकर पता करूंगा कि यह कैसे होगा ?"

नरगिस ने कहा, "छोटे चौधरी कहते हैं कि आप पढ़-लिखकर अमरीका जायेंगे और वहां अपनी पढ़ाई जारी रखेंगे।"

"हां, मुझे भी उन्होंने कहा है कि घर पर दूध, घी, खाने के लिए अन्न पर्याप्त है, इसलिये नौकरी करने की जरूरत नहीं। बस, एम० ए० पास कर अमरीका चले जाना और वहां की विद्या सीख हिन्दुस्तान में आकर लोगों को सिखाना।"

"और मैं भी," फातिमा ने कहा, "आपके साथ चलूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर सौभाग्यवती ने कह दिया, "ठीक है। अभी तो जर्मनी से युद्ध हो रहा है। युद्ध में किस की जीत होती है, इस पर निर्भर करता है कि तुम अमरीका जाओगे अथवा जर्मनी।"

"जीत तो अंग्रेजों की ही होगी।" कर्मचन्द का कहना था।

"कैसे कहते हो ? अखबारों में तो इससे उलट खबरें आ रही हैं।"

"माताजी ! जर्मनी का बल क्षीण हो रहा है। पिछले तीन मास से जर्मनी एक इंच भर भी आगे नहीं बढ़ सका। युद्ध-विद्या के जानकार यह कह रहे हैं कि अंग्रेज की युद्ध की तैयारी तो युद्ध के उपरान्त ही आरम्भ हुई थी। वह दिन-प्रतिदिन तेज हो रही है। इस समय दोनों की शक्ति का सन्तुलन हो गया है और यदि यह इसी प्रकार चलता रहा तो कुछ ही समय में जर्मनी का पग पीछे हटने लगेगा।"

इस समय कर्मचन्द का पिता मोटूराम बैठक में आया और बोला, "बहन सोहनी ! एक और समाचार है।"

कर्मचन्द और फातिमा की बात बंद हो गयी और सब चौधरी का मुख देखने लगे। मोटूराम ने कहा, "अश्विनी भैया बाहर बाबा के पास बैठे बता रहे हैं कि आस-पास के दस-बीस गांवों के पंचों की बैठक रामनिवास के घर पर हो रही है और उसे वहां बुलाकर यह आज्ञा दी गयी है कि वह देव भाषा फातिमा को पढ़ाना छोड़ दे, नहीं तो गांव में उसका बहिष्कार किया जायेगा और उसका हुक्कापानी बंद कर दिया जायेगा।"

सौभाग्यवती हंस पड़ी और पूछने लगी, "अश्विनी हुक्का कब से पीने लगा है ?"

इस पर सब हंसने लगे।

मोटूराम ने बात स्पष्ट कर दी, "हुक्का-पानी का अभिप्राय है कि उसको गांव में जीने नहीं दिया जायेगा।"

"तो उसकी हत्या कर देंगे ?" अब सौभाग्यवती ने गम्भीर हो पूछा।

"इसकी रिपोर्ट थाने में कर दी गयी है। परन्तु थानेदार कहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि सरकार मुल्क में किसी प्रकार की गड़बड़ नहीं चाहती। इस कारण हम पढ़े-लिखे लोगों का यह काम है कि अनपढ़ों को प्यार-मुहब्बत से समझावें।"

"कैसे समझावें?" सौभाग्यवती का प्रश्न था।

"अश्विनी दादा इन पंचों की मीटिंग में गया था और वहां उनको समझा रहा है, परन्तु वे समझे नहीं।

"अभी तो वे रामनिवास के घर पर खीर-पूरी खा रहे हैं और खा-पीकर पंचों के प्रतिनिधि बाबा से मिलने आवेंगे और पंचायत का फैसला सुनाकर उसका उत्तर मांगेंगे।"

"तो अब क्या होगा?" सोहनी ने पूछ लिया।

"सोहनी बहन! तुम चिन्ता न करो। अभी तुम यहीं ठहरो। मैं थानेदार से तुम्हारी रक्षा के विषय में बात करने जा रहा हूं।

"मैं समझता हूं कि तुम्हारे घर के द्वार पर दो कान्स्टेबल खड़े कर दिये जायें तो ये बनिया कुछ नहीं कर सकेंगे।

"शेष रही हमारी और अश्विनी दादा की बात। यह मैं पंचों के साथ निश्चय कर लूंगा।"

"यही तो पूछ रही हूं," सौभाग्यवती ने पूछ लिया, "कि क्या प्रबन्ध करेंगे। फौजदारी मैं नहीं चाहती?"

"श्रीमती जी! ये गांव के बनिये फौजदारी नहीं करेंगे। इस कारण इनके उत्तर में फौजदारी की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

इतना कह मोटूराम बाहर आया और अश्विनी को साथ लेकर थाने को चल दिया।

अश्विनी और मोटूराम अभी थाने से नहीं लौटे थे कि रामनिवास दो अन्य, किसी बाहर के गांव के पंचों के साथ बाबा छोटूराम के पास आ पहुंचा। बाबा अभी भी छाजन के नीचे बैठा अपना हुक्का गुड़-गुड़ा रहा था।

रामनिवास ने बाबा को 'पायलागू' की और फिर सब उसके पास बैठ गये। रामनिवास ने कहा, "ये गढ़ही और ताली गांव के पंच हैं, पण्डित गिरधारी लाल और पण्डित गोपीचन्द।"

"हमारे घर में बीस के लगभग गांवों के पंचों की बैठक हो रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और उन्होंने अपनी बैठक में कुछ फैसला किया है। हम लोग वह फैसला आपको बताने के लिए नियुक्त हुए हैं। साथ ही उस फैसले पर आपका उत्तर जानने के लिये आये हैं।"

छोटूराम ने हुक्के की नाल मुख से एक ओर कर कहा, "हां, बताओ ! क्या हुक्म है पंचों का ?"

रामनिवास ने कहा, "पंचों ने यह फैसला किया है कि एक तो अश्विनीकुमार करीम की बहन को देव भाषा न पढ़ाये। वह उसे वेद मंत्र भी याद करा रहा है। यह महापाप है।

"नम्बर दो, करीमबख्श के परिवार की औरतें आपके घर में घुसी रहती हैं और गांव वालों का यह विश्वास है कि आप उनके साथ खाते-पीते भी हैं। आप उनको अपने घर में मत आने दें। आपका भी कोई प्राणी उनके घर न जाये। उन औरतों से मेल-जोल, खाना-पीना बंद कर दिया जाये।

"नम्बर तीन, आपका पूर्ण परिवार प्रायश्चित करे। इक्कीस दिन का व्रत रखे। उन दिनों एक समय फलाहार और दूध पियें और दिनभर घर में पूजा-पाठ कराया जाये।

"नम्बर चार, इक्कीस दिन के व्रत के उपरान्त आप पूर्ण परिवार के साथ गंगा स्नान करें। तत्पश्चात्, यहां गांवों के ब्राह्मणों को ब्रह्म भोज दें।"

"बस, ये चार बातें ही पंचों ने निश्चय की हैं।"

बाबा ने मुस्कराते हुए कहा, "और अगर ये बातें हम न मानें तो ?"

"तो," रामनिवास कहता-कहता रुक गया और हवेली के फाटक की ओर देखने लगा।

मोटूराम, अश्विनी कुमार और दो कान्स्टेबल वर्दी पहने हुए दाखिल हुए थे। रामनिवास उनकी ओर देख चुप कर गया।

बाबा की पीठ हवेली के फाटक की ओर थी। इस कारण उसने लाला को चुप करते देख पूछा, "चुप क्यों कर गये हो ?"

रामनिवास ने फाटक की ओर उंगली कर दी। अश्विनीकुमार सब से आगे था। कान्स्टेबल चौधरी मोटूराम के साथ बात करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए पीछे आ रहे थे।

छाजन के नीचे बैठे शेष लोग भी उनकी ओर देखने लगे थ।

अश्विनीकुमार आया तो छोटूराम ने नौकर को आवाज दे दी, "ओ झींगुर! यहां और दो कुर्सियां लाओ।"

इस समय मोटूराम भी वहां आ गया और रामनिवास की ओर प्रश्नभरी दृष्टि में देखने लगा।

रामनिवास ने पूछा, "इनको किसलिए लाये हो?" रामनिवास ने पुलिस कान्स्टेबलों की ओर देख पूछ लिया। सिपाही छाजन के बाहर ही खड़े हो गये थे।

मोटूराम ने मुस्कराते हुए कहा, "इनको आपके पकड़ने के लिए नहीं लाया। इनको करीम के घर की औरतों की रक्षा के लिए लाया हूं। वे इस वक्त यहां हैं और अभी अपने घर जा रही हैं। उनकी रक्षा के लिए थानेदार साहब ने इनको तैनात किया है।"

"और मैं पंचों का फैसला सुन आया हूं। जो बात हमारे साथ सम्बन्ध रखती है, वह मैं मान आया हूं।"

"क्या मान आये हैं?" गोपीचन्द ने पूछा।

"यही कि हम सब मुसलमान औरतों के साथ खाना-पीना करने से भ्रष्ट हो गये हैं। इस कारण प्रायश्चित करना चाहिये।"

"हम प्रायश्चित करेंगे। गौरीशंकर सायंकाल पांच ब्राह्मणों के साथ आयेगा और प्रायश्चित का पूर्ण विधि-विधान बता जाएगा।

"एक बात मैं कह आया हूं कि पण्डित मदनमोहन मालवीयजी की अध्यक्षता में बनारस के पण्डितों ने यह व्यवस्था दी है कि जन्म का मुसलमान भी चाहे तो प्रायश्चित कर हिन्दू हो सकता है।

"मैं गौरीशंकर को जब वह सायंकाल आयेगा, तो यह समाचार छपा दिखाऊंगा। यदि इन ब्राह्मणों को इससे समाधान हो गया तो फातिमा आदि भी प्रायश्चित करेंगी।"

इस पर गोपीचन्द ने पूछा, "और वे हिन्दू हो जायेंगी?"

"हां! यदि आप नहीं मानेंगे तो मैं प्रायश्चित के लिए बनारस के पण्डितों को बुला लूंगा।"

"और उनसे विवाह करोगे?" गिरधारी लाल ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह प्रायश्चित्त और आपकी पंचायत की शर्त नहीं है ?"

गिरिधारी लाल हंस पड़ा और बोला, "चौधरी ! मैं तो आपके लाभ की बात कह रहा हूं।"

"धन्यवाद पण्डितजी ! आपको मेरी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। आप अपनी चिन्ता करिये।

"देखिये, मैं इन लालाजी के घर से आ रहा हूं और मैं यही बात वहां कह रहा था कि करीमबख्श के बाबा हिन्दू थे। वैसे ही जैसे मैं हिन्दू हूं। करीमबख्श के बाबा ने एक मुसलमान औरत से शादी की थी और वह अपने आपको मुसलमान बना बैठा था। जैसे आप कहते हैं कि एक मुसलमान औरत की सन्तान के साथ खाने-पीने से मैं मुसलमान हो गया हूं। जब आप प्रायश्चित्त से मेरी शुद्धि कर रहे हैं तो करीम के घरवालों की क्यों नहीं कर सकते ?

"मैंने जब उनको कहा था कि मैं बनारस के पण्डितों को बुलाकर शुद्धि करा लूंगा तो सब पंच विचार करने लगे हैं।

"आप भी जाइये और फिर विचार कर बताइयेगा कि शुद्धि आप करेंगे या बनारस के पण्डित करेंगे।

"एक बात मैं उनको और बता आया हूं कि आप देहात के पण्डितों की विद्वत्ता की परीक्षा उन बनारस के पण्डितों से कराऊंगा। तब आपकी व्यवस्था की पोल खुल जायेगी।

"मेरे इस कहने पर पण्डितों की पंचायत से पृथक् सभा हो रही है। आप भी जाइये और फिर सायंकाल गौरीशंकर के हाथ अपना निर्णय भेज दीजियेगा। वह ही हमारा पुरोहित है।"

रामनिवास उठ खड़ा हुआ और बोला, "पण्डित गोपीचन्द-जी ! चलिये। शेष बात घर चल कर पंचायत में होगी।"

पंचों का आयोग लौट गया।

इनके जाने के उपरान्त अश्विनीकुमार खिलखिलाकर हंस पड़ा। मोटूराम भीतर सोहनी इत्यादि को बाहर हुई बात बताने चला गया। अश्विनीकुमार ने बाबा को बताया, "थानेदार जसवन्त सिंह ने कहा है कि सरकारी आज्ञा आई है कि किसी भी प्रकार का झगड़ा प्रजा में नहीं होना चाहिये। इससे युद्ध कार्य में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाधा पड़ सकती है। इस कारण हमें भी इस झगड़े का शान्ति से फैसला कर लेना चाहिये। यदि किसी प्रकार का झगड़ा हुआ तो गांव के लालाओं को कम्यूनिस्टों की भांति डिटेन्शन एक्ट के अधीन पकड़ कर जेल में डाल दिया जायेगा।

"इस पर चौधरी मोटूराम ने कह दिया कि वह पंचों के साथ फैसला कर लेगा।

"इस कारण हम थाने से इन कान्स्टेबलों को साथ लेकर पंचायत में पहुंचे और वहां अपने विषय में पारित व्यवस्था को सुन जीजाजी ने कहा, देखो पंचो! मैं आपकी बात ठीक नहीं समझता। इस पर भी मैं पंचायत के निर्णय के सामने माथा टेकता हूं और आपकी सब शर्तें मानता हूं। थानेदार साहब ने करीमबख्श के परिवार की रक्षा के लिये दिन-रात दो बंदूकची नियुक्त कर दिये हैं। अगर आपने कुछ भी गड़बड़ की तो वे गोली से उड़ा देंगे, ऐसा इनको हुक्म है।

"जहां तक हमारी शुद्धि का प्रश्न है, इसमें मैं सरकार का हस्तक्षेप नहीं चाहता। यह हिन्दू धर्म का मामला है। ठीक या गलत, मैं इसे मानता हूं। जो भी शुद्धि करने के लिये आयेंगे, वे पढ़े-लिखे शास्त्रानुसार हमारी शुद्धि करेंगे। हम व्रत रखेंगे और फिर हरिद्वार भी जायेंगे। परन्तु यदि करीम की बहन और मां भी चाहेंगी, तो उनकी भी शुद्धि करनी होगी और उनको हिन्दू नाम देना पड़ेगा। बनारस के पण्डितों की ऐसी व्यवस्था है। यदि आप नहीं करेंगे तो मैं बनारस से ब्राह्मण बुला कर शुद्धि करवा लूंगा।

"इस पर ब्राह्मण मण्डली पृथक् में बैठ विचार करने लगी।

"हमने रामनिवास के भाई श्रीनिवास को कहा है कि गौरीशंकर हमारे पुरोहित हैं, उसे सायंकाल तक सब योजना बना कर बता दें। श्रीनिवास वहां चौधरी बना हुआ है।"

छोटूराम मुस्कराता हुआ बोला, "मोटू है तो मोटी बुद्धि का, परन्तु विद्वानों से भी ऊपर ज्ञान की बात करता है।

"इससे तो कर्मचन्द के विवाह का झगड़ा ही समाप्त हो जायेगा। फातिमा पद्मिनी बन जायेगी तो झगड़ा ही मिट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगा।"

अश्विनीकुमार अभी पंचायत की बात बता ही रही था कि मोटूराम और कर्मचन्द भीतर से बाहर आ गये। उनके साथ नरगिस, सोहनी और फातिमा भी थीं। वे बुर्का पहने हुए थीं। पुलिस के सिपाही उनके पीछे-पीछे कंधों पर बंदूकें रखे हुए चले गये।

छोटूराम ने कहा, "मोटू! तुमने बहुत ठीक किया है। मैं यही चाहता था। हिन्दुओं को अक्ल सिखानी चाहिये, परन्तु डण्डे के बल से नहीं, वरन् प्यार मुहब्बत से।"

"हां, बाबा!" छोटे चौधरी ने कह दिया, "मूर्खों से बच कर ही चलना चाहिये। इस सब झगड़े में दो ही मुख्य व्यक्ति हैं। एक है गौरीशंकर। ज्वालामुखी के पांडे के परिवार से उसके सम्बन्ध के कारण देहात में उसकी प्रतिष्ठा है और दूसरा है रामनिवास का भाई श्रीनिवास। धनवान होने से उसकी बहुत महिमा है।"

"मैं इन दोनों को सन्मार्ग दिखाने की योजना बना आया हूं।"

"क्या बना आये हो?" बाबा ने पूछ लिया।

"गौरीशंकर को तो अपना पुरोहित मान प्रायश्चित्त-यज्ञ का ब्रह्मा बनाने का संकेत दे आया हूं और लाला श्रीनिवास को कह आया हूं कि वह थानेदार से मिल ले।"

"थानेदार उसका क्या करेगा?"

"मैं थानेदार को समझा आया हूं कि यह मोटी आसामी है। कुछ जेब गरम की जा सकती है।"

छोटूराम हंस पड़ा।

सायंकाल गौरीशंकर और गिरिधारी लाल इकट्ठे दो ही प्रतिनिधि आये। इनको घर के भीतर बैठक में बैठा दूध और मिठाई दी गयी तो दोनों ब्राह्मण देवता एक-दूसरे का मुख देखने लगे।

छोटे चौधरी ने कह दिया, "यह दूध और यह खोआ की मिठाई तो कभी अपवित्र हो सकती ही नहीं। गौ माता के दूध की ही तो बनी है।"

"मगर," गिरिधारी लाल ने कहा, "यह आपके घर में बनी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी कारण तो अपवित्र हो रही है।"

"परन्तु हम कब से अपवित्र हुए हैं ? बताइये पण्डित जी ! यह फातिमा हमारे घर पर कब से आती है ?"

गौरीशंकर ने कुछ स्मरण किया और फिर कह दिया, "जहां तक मुझे स्मरण है करीम और यह लड़की उस दिन भी आपके घर में थे, जिस दिन आप बंदूक लेकर आये थे और मुझे नगर से अपने तांगे में लाये थे।"

"यह कब की बात है ?"

"दो वर्ष के लगभग होने जा रहे हैं।"

"मतलब यह कि हम तब से भ्रष्ट हैं। पण्डितजी महाराज ! आप तो पिछले मास पूर्णिमा पर सत्य नारायण की कथा करने यहां आये थे और खीर-पूरी, साग और फिर हमारे बर्तनों में जल पी गये थे। तो क्या आपको भी प्रायश्चित्त करना होगा ?"

गिरिधारी लाल ने अपने मन की बात कह दी। उसने कहा, "चौधरी ! हम तो इस सब में, जो आज हुआ है, श्रीनिवास का हाथ देखते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आपका उससे किसी प्रकार का द्वेष है।"

"क्यों ? उसने क्या किया है ?"

"यह पंचायत उसने ही बुलाई है। पिछले तीन महीने से वह गांव-गांव में घूम-घूम कर पंचों को भड़काता रहा है। मैं तो पहले ही इस पंचायत के विरुद्ध था, परन्तु पंचों में अधिक बनिये हैं और वे सब के सब श्रीनिवास के पीछे चल रहे हैं।"

"देखिये पण्डितजी !" मोटूराम ने कह दिया, "मैं न तो अपने को अपवित्र हुआ मानता हूं और न ही इन मुसलमान औरतों को किसी प्रकार अशुद्ध मानता हूं। वे बेचारी गो-मांस तो दूर रहा, मांस भी नहीं खातीं। दिन में दो वक्त परमात्मा की अबादत करती हैं।"

गिरिधारी लाल की आंखों में चांदी का वर्क लगी कलाकन्द चांदी की तश्तरी चमकती हुई में चुभ रही थी और मुंह में पानी ला रही थी। साथ ही चांदी के गिलास में दूध भी था, जिसमें छिले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बादाम तैर रहे थे।

गौरीशंकर को तो यह चिन्ता लग रही थी कि छोटू के घर से उसे बहुत दक्षिणा मिला करती थी और उसने ही उसके गांव में आने पर उसको संरक्षण दिया था। इससे वह कुछ नहीं कह रहा था। वह गिरिधारी लाल को ही बात करने के लिये आगे किये हुए था।

मोटूराम ने गौरीशंकर को कहा, "पण्डित ! तुम तो उतने ही अपवित्र हो जितने हम हैं। अब यहां गांव वाला कोई है नहीं। इसलिये दूध पान करो और फिर मतलब की बात करेंगे।"

गौरीशंकर ने गिलास उठाया तो गिरिधारी लाल ने भी कलाकन्द की टुकड़ी उठा मुख में डाल उसका स्वाद लेना आरम्भ कर दिया।

जब दोनों ब्राह्मण देवता खाने लगे तो मोटूराम ने पूछा, "हां, कार्यक्रम आप बनायेंगे अथवा हम बनायें ?"

गिरिधारीलाल ने कहा, "मैं तो आज ही गांव को लौट रहा हूं। ब्रह्मभोज के दिन ही आऊंगा और आपने कहा भी है कि पण्डित गौरीशंकर आपके पुरोहित हैं। इस कारण यह ही आपको पंचों की बात बतायेंगे।"

मोटूराम ने बात अपने हाथ में लेते हुए कहा, "देखिये पण्डित जी ! आप तो जानते ही हैं कि आपका मंत्रोच्चारण अत्यन्त अशुद्ध है। इस कारण पूर्ण प्रायश्चित्त तो अश्विनीकुमार करायेंगे। आप ब्रह्मा की भांति साक्षी रहेंगे।

"ब्रह्मा की दक्षिणा आपको मिलेगी। अश्विनी कुमार तो बहन के घर से दक्षिणा लेगा नहीं। इस कारण उसके हिस्से की भी दक्षिणा आपको ही मिलेगी। ठीक है न ?"

गौरीशंकर की आंखें चमकने लगीं। मोटूराम ने आगे कहा—

"इक्कीस दिन प्रातः सायं अश्विनी पूजा कराया करेगा और हमारा पूर्ण परिवार इसमें सम्मिलित होगा। हमारे साथ फातिमा और उसकी मां भी प्रायश्चित्त करेंगी। हमारी भांति वे भी दिन-भर फाका किया करेंगी और सायंकाल हमारे साथ फलाहार लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगी।

"इक्कीसवें दिन मैं पांच सौ ब्राह्मणों को ब्रह्मभोज दूंगा। उस दिन अन्तिम पूजा होगी। प्रत्येक ब्राह्मण को दो-दो रुपये दक्षिणा और पेटभर खीर-पूरी खाने को मिलेगी।

"आपकी दक्षिणा भी उसी दिन मिलेगी। अश्विनीकुमार भी अपनी दक्षिणा आपको दे देगा।

"और गिरिधारीलाल जी! आपको विशेष दक्षिणा दूंगा। वह अश्विनीकुमार जी से पूछकर निश्चय करूंगा।

"बाईसवें दिन हम हरिद्वार चले जायेंगे और वहां से लौट-कर पुन: आपको वहां का प्रसाद बाटेंगे।"

"तो यह कब से आरम्भ होगा?" गौरीशंकर ने पूछा लिया।

"मोटूराम ने कह दिया, "हम तो कल से ही पूजा आरम्भ करने वाले हैं। कल एकादशी है। बहुत शुभ दिन है। प्रातः पांच बजे स्नानादि कर आ जाया करिये। ब्रह्मभोज के लिए मैं आस-पास के गांवों के ब्राह्मणों को छपा हुआ निमंत्रण-पत्र भेजवा दूंगा।"

गिरिधारीलाल ने मिठाई तथा दूध से तृप्त हो चौधरी परि-वार को आशीर्वाद दिया और अपने गांव को लौटने के लिए वहां से चल पड़ा।

गौरीशंकर उसके साथ था। दोनों ब्राह्मण देवता हवेली से निकले तो एक-दूसरे का मुख देखने लगे। गिरिधारीलाल ने गौरी-शंकर को कहा, "गौरीशंकर! मूंछों में दूध की मलाई लगी है। उसे पोंछ लो। नहीं तो वहां सब लोग जान जायेंगे कि हम यहां खाते-पीते रहे हैं।"

गौरीशंकर एकदम खड़ा हो गया और धोती के छोर से मुख पोंछने लगा।

गिरिधारीलाल हंसकर बोला, "कोई मरे कोई जिये, सुथरा घोल प्याला पिये।"

दोनों देवता हंसते हुए चल पड़े।

रामनिवास के मकान पर मुर्दनी छायी हुई थी। प्रायः पंच और ब्राह्मण जा चुके थे। एक-दो जाने की तैयारी में थे, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनिवास शोकमुद्रा में मकान के बाहर तख्तपोश पर बैठा था और अन्य लोग मौन उसको देख रहे थे।

गौरीशंकर ने वहां खड़े पण्डित गोपीचन्द से ही पूछा, "क्या बात है? सब मौन किसलिये बैठे हो?"

"श्रीनिवास को थाने में रोक लिया गया है। उसकी पांच हजार रुपये की ज़मानत मांग ली गयी है।"

"यह क्यों?" गौरीशंकर ने विस्मय में पूछ लिया।

उत्तर गोपीचन्द ने ही दिया, "जिला-हाकिम का बज़मानत का वारण्ट है। उसमें कहा है कि देहात में बदअमनी फैलाने के जुरम में दफा एक सौ चवालीस के अधीन हुक्म है कि हाज़िर होकर बताओ कि क्यों न उससे पांच हजार की ज़मानत और पांच हजार का मुचलका देहात में अमनो-अमान रखने के लिए लिया जाये?"

इस पर रामनिवास ने कहा, "मैं श्रीनिवास से हवालात में मिलने गया था। वह एक अंधेरी कोठरी में बगैर चटाई के भूमि पर बैठा था।

"मैंने थानेदार की बहुत मिन्नत-समाजत की और उसकी तली गरम की तो उसे बाहर बरामदे में खाट दे दी गयी है।"

"यह तो बहुत अन्याय है!"

"वह तो पीछे विचार करूंगा। अभी तो मैं यह विचार कर रहा हूं कि यदि कल श्रीनिवास से पांच हजार की ज़मानत मांगी गयी तो फिर कौन ज़मानत देगा? हमारा तो कोई सम्बन्धी नहीं जो इतनी बड़ी ज़मानत दे सके।"

"तो मैं प्रबन्ध करूं?" गौरीशंकर ने पूछ लिया।

"तुम क्या प्रबन्ध करोगे?"

"चौधरी को ज़ामिन बनने के लिए तैयार कर दूं?"

"मोटूराम को?"

"नहीं, चौधरी छोटूराम को। वह बहुत दयालु है।"

"मैं समझता हूं कि वह नहीं मानेगा।"

"कहो तो पता करूं?"

रामनिवास मुख देखता रह गया। गौरीशंकर उलटे पांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौधरी की हवेली को चला गया।

आधा घंटे के उपरान्त गौरीशंकर लौटा और बोला, "मेरी बड़े चौधरी से बात हुई है। वह कहते हैं कि वह स्वयं तो ज़ामिन नहीं बनेंगे, मगर नगर में ही किसी व्यक्ति को ज़मानत के लिए तैयार कर देंगे।

"लालाजी! वह खुद इतनी ज़मानत दे सकते थे। मगर उन्होंने कहा कि वर्तमान झगड़े की उपस्थिति में उनका स्वयं ज़ामिन बनना ठीक नहीं होगा। इस पर भी वे कल नगर को जायेंगे और वहां ज़ामिन का प्रबन्ध कर देंगे।"

"कल से प्रायश्चित्त भी शुरू होने वाला था, मगर श्रीनिवास के झगड़े के कारण प्रायश्चित्त अब पूर्णिमा से आरम्भ होगा।

"कल मैं भी आपके साथ नगर को चलूंगा और बड़े चौधरी अपने तांगे में आठ बजे वहां पहुंच जायेंगे। छोटे चौधरी भी साथ जायेंगे। वह भी कहते थे कि वहां जिला हाकिम की अदालत में हाज़िर होकर बयान देंगे कि गांव में किसी प्रकार के झगड़े का खतरा नहीं। इस पर ज़मानत मंजूर हो जायेगी।"

"परन्तु हाकिम थानेदार की बात का ख्याल करेगा?" रामनिवास ने अभी भी चिन्ता में पूछा।

"वह कहता था कि कल अपने श्वसुर से राय कर वहां अदालत में बयान देगा।"

इस प्रबन्ध से रामनिवास की जान-में-जान आयी। उसे पंचायत के मामले पर अपने व्यवहार पर पश्चात्ताप लगने लगा था।

अगले दिन श्रीनिवास पुलिस की देख-रेख में होशियारपुर पहुंचा। रामनिवास बस में वहां जा पहुंचा। इधर गौरीशंकर, छोटूराम और मोटूराम चौधरी परिवार के तांगे में नगर में जा पहुंचे।

लाला रलाराम अपने दामाद की बात सुन खिलखिलाकर हंस पड़ा। वह बोला, "मैं आज समझा हूं कि मोटी बुद्धि और सूक्ष्म बुद्धि में क्या अन्तर होता है।"

"हां, पिताजी! मेरी दृष्टि में एक ही बात आती है कि मोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि वाला अपनी मोटी-मोटी उंगलियों से बिखरे अन्न को बटोर ले। ये मोटी उंगलियां सब नहीं उठा सकतीं। कुछ बिखरा रह जाता है। मैं उसको जाने देता हूं और जो कुछ पकड़ पाता हूं, उसे मजबूती से पकड़ता हूं। यही मैंने किया है।

"वास्तव में हमारी शुद्धि तो बहाना है। असल बात है फातिमा और उसकी मां की शुद्धि। उनका हिन्दू नामकरण संस्कार भी होगा। उनकी शुद्धि पर पांच सौ ब्राह्मणों का भोज होगा। बस, शुद्धि पक्की हो जायेगी।"

"तो एक बात करो। अन्तिम दिन लड़की का कर्मचन्द से विवाह करा दो।"

"यही मैंने विचार किया था, परन्तु सौभाग्यवती कहती है कि विवाह पच्चीस वर्ष की आयु में होना चाहिए।"

"गौना उस समय हो जायेगा। विवाह विख्यात हो जाना चाहिए।"

"फिर दोनों को रोकना बहुत कठिन हो जायेगा।"

"इसका मैं एक उपाय बताता हूं।"

"क्या?"

"कर्मचन्द पास तो हो ही जायेगा। मैं उसे दिल्ली अथवा कलकत्ता में पढ़ने के लिए भेज दूंगा और तुम लड़की की मां को देहात में रोक रखना।"

मोटूराम गम्भीर भाव में विचार करता रहा।

अदालत में श्रीनिवास के वकीलों ने उसे छोड़ देने के लिए बहस की। बताया कि जो झगड़ा चौधरी मोटूराम और पंचायत में था, उसका फैसला हो गया है और अब किसी प्रकार का अमन में खलल का खतरा नहीं।

मगर जिला हाकिम नहीं माना। उसने एक हजार की जमानत और मुचलका की मांग कर दी। जमानत मोटूराम के श्वसुर लाला रलाराम ने दी और श्रीनिवास पुलिस की देख-रेख से बाहर हो गया।

रलाराम ने रामनिवास, श्रीनिवास और छोटूराम इत्यादि को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घर चाय पर बुला लिया और वहां श्रीनिवास से पूछ लिया, "चौधरी नगर में आता है। होटलों में खाता-पीता है। वहां हिन्दू-मुसलमान सब खाते-पीते हैं। तो भला उनके घर में दो मुसलमान औरतों के आकर खाना खा लेने से क्या अन्तर हो गया था, जिससे हिन्दू धर्म की हानि हुई थी ?"

लाला रलाराम की बात पर रामनिवास ने कहा, "लालाजी ! यह श्रीनिवास की नालायकी है। असल बात यह है कि गौरीशंकर ने श्रीनिवास के मन में यह बात बैठा दी थी कि सोहनी और फातिमा, दोनों आवारा औरतें हैं और मोटूराम की रखेल हैं। इस पर श्रीनिवास के मुख में भी लार टपकने लगी थी। वह लड़की बहुत सुन्दर है और यह उसके पीछे लगा हुआ है।"

"मैं समझता हूं कि शीघ्र ही फातिमा की शुद्धि हो जायेगी और फिर उसका विवाह कर्मचन्द से हो जायेगा। तब तो वह एक हिन्दू लड़की होगी और मैं समझता हूं कि वह एक पतिव्रता औरत सिद्ध होगी।"

लालाजी की बात मोटूराम चौधरी सुन रहा था। उसने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "पिताजी ! यह अभी निश्चित नहीं कि कर्मचन्द का विवाह इस प्रायश्चित्त आयोजन में हो सकेगा।"

"क्यों ?"

"मेरी मोटी बुद्धि में अभी यह बात बैठी नहीं। इस विषय में मैं कर्मचन्द की मां से विचार कर निश्चय करूंगा।"

"लालाजी !" छोटूराम ने कहा, "यह आयोजन केवल शुद्धि-करण तक ही सीमित होगा। विवाह की बात औरतों से सम्बन्धित है। यह लड़के और लड़की की माताएं निश्चय करेंगीं।"

"मैं तो आपका खर्च बचाने की बात कर रहा था।" रलाराम का कहना था।

"इसकी चिन्ता न करें। धर्म-कर्म और दान-दक्षिणा में व्यय किया धन हम खर्च हुआ नहीं समझते। यह भविष्य के लिए तिजोरी में जमा रखना है।"

इसने बात समाप्त कर दी। रलाराम ने श्रीनिवास को कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया, 'देखो श्रीनिवास ! मैंने तुम्हारी ज़मानत दी है। इस कारण आशा करता हूं कि तुम अब देहात में किसी प्रकार की गड़बड़ नहीं मचाओगे।

"मुझे मोटूराम ने बताया है कि छः रुपये की उजरत पर कान्स्टेबल उन औरतों की रक्षा के लिए नियुक्त हुए हैं। यह बहुत बड़ा खर्च है। इससे तुम समझ जाओ। कि अब भी तुमने गड़बड़ की तो फिर तुम्हारा इस लोक में स्थान नहीं रहेगा।"

: १० :

जब प्रायश्चित्त का कार्यक्रम हो रहा था तो उसमें सोहनी और फातिमा सम्मिलित तो हुई थीं परन्तु उन्होंने मज़हब परिवर्तन स्वीकार नहीं किया था। नरगिस अपनी मां के घर चली गयी थी। वहां से उसने गांव में हुई पूर्ण घटना का वृत्तान्त लिखकर अपने पति करीमबख्श को भेज दिया।

करीमबख्श ने एक पत्र जिला हाकिम को और एक पत्र फातिमा को लिखा। फातिमा को उसने यह कहा कि शरअ की रूह से वह घर का पुरखा है। इस कारण जो कुछ भी वह उसकी मर्ज़ी के बिना करेगी, वह नाजायज़ है।

जिला हाकिम को उसने लिखा कि गांव झुनझुन टीकड़ी में दो मुसलमान औरतों का मज़हब ज़बरदस्ती तब्दील किया जा रहा है। यह नावाजिब और कानून के खिलाफ है। मैं उन औरतों का सरपरस्त हूं। इसलिए मेरी इजाजत के बिना जो कुछ भी वे करती हैं, नाजायज़ होगा।

फातिमा ने तो चिट्ठी पढ़ी और फाड़कर फेंक दी। परन्तु जिला-हाकिम ने तुरन्त जिला शहर से एक मजिस्ट्रेट और आधी दर्जन सिपाही गांव में जांच तथा मुनासिब कारवाई के लिए भेज दिये।

मजिस्ट्रेट गांव में आया तो थानेदार जसवन्तसिंह मजिस्ट्रेट को लेकर चौधरी की हवेली में जा पहुंचा। उस समय अश्विनी कुमार होशियारपुर की आर्यसमाज के उपदेशकों के साथ यजुर्वेद का पाठ कर रहा था। हवन हो चुका था। पाठ और उसका अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्विनीकुमार और उपदेशक कर रहे थे। वेदी के पश्चिम में एक उच्चासन पर गौरीशंकर रेशमी वस्त्र पहने गम्भीर भाव में बैठा था। वह पुलिस और मजिस्ट्रेट को आया देख घबराया और वहां से भाग जाने की बात विचार करने लगा, परन्तु मोटूराम और उसकी पत्नी ने मजिस्ट्रेट को देखा तो झींगुर सेवक को कह दिया, "बड़े साहब के लिए कुर्सियां लगा दो।"

यज्ञवेदी पर पूर्वोन्मुख छोटूराम, मोटूराम, सौभाग्यवती, कर्मचन्द, रामचन्द, परमानन्द और तीन छोटे बच्चे बैठे थे। उनके साथ सोहनी, फातिमा भी रेशमी वस्त्र पहने बैठी थीं। वेदी हवेली के बाहर एक प्रांगण में शामियाने के नीचे बनी हुई थी। इस समय गांव के कुछ लोग भी वहां थे। उनमें रामनिवास भी उपस्थित था।

थानेदार ने मजिस्ट्रेट को बताया, "यह परिवार ब्राह्मणों की व्यवस्था के अनुसार प्रायश्चित्त कर रहा है। आज पन्द्रह दिन हो चुके हैं। इक्कीसवें दिन यह पूजा समाप्त होगी। तब ये लोग हरिद्वार गंगास्नान के लिए जायेंगे और वहां से लौटकर इनका प्रायश्चित्त पूर्ण हो गया समझा जायेगा।

"तब ये आसपास के पांच-सौ ब्राह्मणों को ब्रह्मभोज देंगे और फिर ये शुद्ध पवित्र समझे जायेंगे।"

"आज यह कब तक चलेगा?"

थानेदार ने घड़ी में समय देख कह दिया, "बस, पन्द्रह मिनट में समाप्त होने वाला है। तब ये लोग उस ऊंची चौकी पर बैठे पुरोहित और दूसरे पण्डितों को भोजन करायेंगे और फिर ये खाली हो जायेंगे।"

"तब ठीक है। मैं सायंकाल से पूर्व नगर को लौट जाना चाहता हूं।"

"हुजूर! अभी आधे घंटे में ये लोग खाली हो जायेंगे।"

मोटूराम ने बाबा को तो ब्राह्मणों को भोज कराने भेज दिया और स्वयं मज़िस्ट्रेट के पास आकर पूछने लगा, "हुजूर! आज्ञा करिये।"

"मैं यह जानने आया हूं कि यह सब क्या और क्यों हो रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ?"

"हमारे गांव में एक मुसलमानों का परिवार है। उनकी एक लड़की मेरे लड़के से शादी करना चाहती है। मैंने यह मंजूर कर ली है। मगर शादी तब होगी, जब लड़की और लड़का बालिग होंगे।

"इस पर भी दोनों परिवारों में मेलजोल है। मैं तो हिन्दू-मुसलमान में कोई फरक नहीं करता। इसलिए दोनों घरों के लोग परस्पर मिलते और खाते-पीते हैं।

"हमारे हिन्दू पण्डितों ने कहा है कि हम भ्रष्ट हो गये हैं। मैंने उनको कहा कि हमें शुद्ध कर लें। इसपर उन्होंने हमारे परिवार के प्रायश्चित्त का यह आयोजन किया है।"

"इसमें आपने उस मुसलमान औरत और लड़की को भी शामिल किया है क्या ?"

"इस शुद्धि में वे अपनी मर्जी से सम्मिलित होती हैं, मगर शुद्ध होने के लिए नहीं क्योंकि वे स्वयं को अपवित्र हुआ नहीं मानतीं। वे हमसे सहानुभूति में आती हैं।"

"मगर उनके घर के पुरखा की इसमें मंजूरी नहीं है ?"

"तो हुजूर ! उनसे पूछ लिया जाये। वे औरतें तो कहती हैं कि वे खुद-मुख्तार हैं। एक लड़की है, जिसका विवाह होना है और उसकी मां है। विवाह तो लड़की के बालिग होने पर होगा। बकाया उसकी मां है। वह अपने को खुद-मुख्तार समझती है।

"आप खुद उनसे पूछ लीजिये। हमारा उनपर किसी किस्म का जोर नहीं है।"

इसपर सोहनी के बयान हुए। उसने अपने को बेवा लिखाया और अपने आपको अपने अमालों के लिए खुद-मुख्तार बताकर कहा कि उसका लड़का मुख्तार नहीं है। अगर कुछ है तो वह उसके मातहात है।

"और यह लड़की ?" मजिस्ट्रेट ने पूछा।

"यह उसकी लड़की नहीं है। वह इसका सगा भाई भी नहीं है। उसके बाप ने अपनी वसीयत में लड़के को घर का सरपरस्त नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माना। जायदाद में भी उसका हिस्सा नहीं है। सब लड़की के बाप की अपनी कमाई है। इसलिए उसका सम्बन्ध वसीयत से है, इस्लामी शरअ से नहीं।"

सोहनी ने यह भी बताया कि करीम के बाप ने उसे अपनी जायदाद का वारिस भी नहीं माना। उसने अपनी पूरी जायदाद अपनी चारों बीवियों के नाम अपनी जिन्दगी में ही कर दी थी।

"करीम के बाप ने," मजिस्ट्रेट ने पूछा, "करीम को अपनी जायदाद का हिस्सा क्यों नहीं दिया?"

"करीम के बाप ने उसे बी० ए० तक पढ़ाया है। वह समझता था कि उसकी तरफ उसने अपना फर्ज अदा कर दिया है।

"बाप का कहना था कि अगर वह तहसीलदारी का इम्तिहान पास कर ले तो उसे सरकारी नौकरी मिल सकती है। मगर वह सरकार के खिलाफ है। इसलिए सरकारी नौकरी करना नहीं चाहता। अब वह जंगी कानून के मातहत नजरबंद है।"

"तुम हिन्दू बन रही हो?"

"हिन्दू-मुसलमान इस तरह शोर-शराबे में नहीं बना जाता। यह तो लगातार सोच-विचार कर और समझने से होता है। मेरे मन में अभी कई शकूक हैं। जब तक ये दूर नहीं हो जाते, मैं जैसी हूँ वैसी ही रहूंगी।"

"तो तुम हज़रत मुहम्मद को खुदा का पैगम्बर मानती हो?"

"इसमें मेरे मानने-न-मानने की बात कहां से आ गयी? वह पैगम्बर था और अपने औसाफ़ की वजह से था।"

"तुम उसका कहा मानती हो?"

"जो मानने लायक बातें समझ में आती हैं, मानती हूं। जो समझ में नहीं आतीं, उनको जब तक समझ में न आये, नहीं मानती।"

मजिस्ट्रेट का दिमाग़ चक्कर खाने लगा। उसने एक सवाल और कर दिया, "तो तुम बेदीन हो?"

"जी नही! मैं दीनदार हूं। दिन में दो वक्त नमाज पढ़ती हूं। सच बोलती हूं और आजकल रोज़े रख रही हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजिस्ट्रेट ने मोटूराम और अश्विनीकुमार के बयान भी लिये।

अश्विनीकुमार ने कहा, "यह आयोजन तो चौधरी परिवार के प्रायश्चित्त का है। यहां की पंचायत ने यह फैसला किया था कि चौधरी परिवार को आत्मशुद्धि करनी चाहिए। इसकी योजना इस गांव के ब्राह्मणों ने बनायी थी। उसके अनुसार ही चौधरी परिवार का प्रायश्चित्त हो रहा है।"

"और उसमें यह मुसलमान औरतों को किसलिए बैठा लिया है?"

"इन्हें मैंने नहीं बैठाया। वे स्वयं ही आकर बैठती हैं। इस परमात्मा के घर में हम किसी को मना कैसे कर सकते हैं?"

"मगर हिन्दू तो ऐसा नहीं मानते?"

"मगर हिन्दुओं का एक बड़ा पण्डित ही यह सब करा रहा है। वह भी ऊंचे आसन पर बैठा था।"

मजिस्ट्रेट जांच-पड़ताल कर गांव से गया तो इसका कारण पता किया गया। थानेदार जसवन्तसिंह ने बताया, "जेल के भीतर से करीमबख्श ने शिकायत की है कि उसके परिवार की औरतों का मजहब ज़बरदस्ती तब्दील कराया जा रहा है। उसकी शिकायत पर सरकार की तरफ से यह जांच की गयी है।"

जब सोहनी से छोटे चौधरी की बात हुई तो उसने बताया कि फातिमा को भी करीम का एक पत्र आया था। उसने उस पत्र को फाड़कर फेंक दिया था।

अब तो गांव वालों को भी पता चल गया कि मजिस्ट्रेट ने भी इस आयोजन में और उसमें मुसलमान औरतों को बैठने को गैर-कानूनी नहीं समझा। इस कारण अब नित्य होने वाले कार्यक्रम में अधिक और अधिक लोग आने लगे।

इक्कीसवें दिन का समारोह बहुत बड़ा हो गया और उस दिन वहां एक सहस्र के लगभग लोग एकत्रित हो गये थे। उस दिन सब आने वालों में मिठाई बांटी गयी।

अगले दिन लाला रलाराम ने परिवार को हरिद्वार जाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए गांव से लाने अपनी मोटरगाड़ी भेज दी।

जब मोटर में सामान लादा जा रहा था तो सोहनी और फातिमा भी अपनी गठरियां उठाये हुए आ गयीं। परिणामस्वरूप मोटर ठसाठस लदी हुई होशियारपुर स्टेशन पर पहुँची।

रलाराम ने मोटूराम को बता दिया, "हरिद्वार में 'हरि की पैड़ी' पर स्नान करने न जाना। यदि जाना हो तो इनका नाम मुसलमानी मत बताना। वहां के मूर्ख पण्डे इसका विरोध करेंगे।"

"पिताजी! इसका इलाज इन्होंने स्वयं ही कर लिया है। ये समझ गयी हैं कि मूर्खों से चाहे, वे हिन्दू हों चाहे मुसलमान, झगड़ा नहीं करना चाहिए।"

"हां! सावधान रहना चाहिए। मूर्खों के देश में मूर्ख बनकर ही रहना ठीक होता है।"

हरिद्वार से लौटकर ब्रह्मभोज किया गया। आसपास के बीस-तीस गांवों के ब्राह्मणों को निमंत्रण था और सबके लिए खीर-पूरी, काशीफल की भाजी, चटनी और आम का अचार था। सबने पेट भरकर खाया और यजमान की जयजयकार करते हुए पूर्ण आयोजन की समाप्ति हुई।

कर्मचन्द की परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ और वह फर्स्ट डिविज़न में बहुत अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ। उसने लाहौर में सरकारी कॉलेज में प्रवेश ले लिया और वहीं होस्टल में रहने लगा।

कर्मचन्द अभी फर्स्ट ईयर में ही था कि यूरोप की जंग ने पासा पलटा।

जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया और जापान ने अमेरिका के "पर्ल हार्बर" पर छापा डाल अमरीकी बेड़े को भारी क्षति पहुंचाई। इससे यूरोप का युद्ध भूमण्डल का युद्ध बन गया।

भारत में राजनीतिक पण्डितों का यह कहना था कि गोरे लोगों का सितारा अस्ताचल को चल पड़ा है। ये परस्पर लड़कर एक-दूसरे को समाप्त कर देंगे।

जापान की विजय के समाचार दक्षिण में 'पैसेफिक' सागर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वीपों से आने लगे थे। नित्य नये स्थान जापान अधिकार में ले रहा था।

हिन्दुस्तान में अंग्रेज-पक्ष की हार से कांग्रेस क्षेत्रों में प्रसन्नता प्रकट की जा रही थी और कांग्रेस हिन्दुस्तान की सरकार को कह रही थी कि वह देश का प्रबन्ध कांग्रेस के हाथ में देकर देश छोड़ जाये, अन्यथा उनका देश में हलवा बन जायेगा।

मुसलमान जो अंग्रेजी सरकार का पक्ष ले रहे थे, सरकार पर जोर डाल रहे थे कि कांग्रेसियों को जेलों में डाल दे, अन्यथा ये देश में बगावत फैला देंगे, जो जापानी आक्रमण के समय भारी कठिनाई उत्पन्न कर देगी।

इसके साथ ही जेलों में बंद कम्यूनिस्टों के नेताओं ने घोषणा कर दी कि वे युद्ध-प्रयास में सरकार की हिमायत करेंगे। इसमें कारण यह था कि जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया था और रूस ने अंग्रेजों से सन्धि कर ली थी।

अंग्रेजी सरकार ने बंदी कम्यूनिस्टों से शर्तें लिखवा-लिखवा कर उनको छोड़ना आरम्भ कर दिया। कम्यूनिस्टों का एक दल जो एम० एन० राय के नेतृत्व में संगठित हो रहा था, पहले ही अंग्रेजी सरकार की सहायता कर रहा था। अन्य कम्यूनिस्टों के साथ करीमबख्श भी मौण्टोगुमरी जेल से छूटा तो सीधा अपने गांव जा पहुंचा।

उसका विचार था कि अब तक अम्मी मोटूराम की और फातिमा कर्मचन्द की बीवी बन चुकी होंगी और घर को ताला लगा हुआ होगा। वह अपने साथ अपनी बीवी नरगिस को भी उसके मायके से ले आया था।

परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने देखा कि घर भीतर से बंद है। उसने फाटक खटखटाया तो द्वार फातिमा ने खोला। फातिमा दो वर्ष में चार-पांच इंच ऊंची हो गयी थी और उसके मुख तथा शरीर पर कौमार्यावस्था के लक्षण प्रकट होने लगे थे।

फातिमा ने भाई और भाभी को द्वार के बाहर खड़े देखा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ जोड़ नमस्ते कहते-कहते रुक गयी।

"तो तुम यहां हो ?" करीम का प्रथम प्रश्न था।

"तो कहां होना चाहिए था भाईजान ?"

"चौधरी की हवेली में।"

"वहां हम तीसरे प्रहर जाती हैं।"

"और कर्मचन्द कहां है ?"

"तो भीतर नहीं आयेंगे ?" फातिमा ने पूछ लिया।

"भीतर जाने के लिए ही तो आये हैं। ख्याल था कि ताला तोड़कर मकान में जाना पड़ेगा। मगर इसकी अब जरूरत नहीं है।"

करीम ने अपना सूटकेस उठाया और नरगिस के साथ मकान में प्रविष्ट हो भीतर को चल पड़ा। नरगिस द्वार बंद करने पीछे रह गयी थी।

सोहनी मकान की बैठक में बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी।

"अम्मी ! आदाब अर्ज़ है।" करीम ने बैठक में दाखिल होते हुए कहा।

"आओ करीम ! बेटा ! तुम्हारे छूटने की खबर एक सप्ताह हुए मिली थी और मैं तुम्हारा इन्तजार कर रही थी।"

"सच ?"

"हां ! तुम्हारी सेहत की बाबत फिक्र थी। एक खबर थी थी कि तुम जेल के हस्पताल में थे।"

"यह किसने बताया है ?"

"किसी ने भी हो। बताओ, यह ठीक नहीं क्या ? क्या तकलीफ थी ?"

"अम्मी ! मैं बीमार नहीं था। जेल के हस्पताल में मैं डाक्टर की मदद करता था। इसलिए उसके साथ रहता था। इससे जेल की सब अच्छी चीजें मुयस्सिर हो जाती थीं। अण्डे, मक्खन, डबल रोटी, गोश्त और कभी-कभी मिठाई भी।"

"तब तो तुम्हें मुबारिकवाद देना चाहती हूं। क्यों नरगिस ! तुमको भी यह सब कुछ बाप के घर में मिलता था ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनी तो फर्श पर बैठी थी, परन्तु करीम और नरगिस कुर्सियों पर बैठ गये। फातिमा मां के पास फर्श पर बिछी दरी पर बैठ गयी।

"अम्मी ! तुम वहां फर्श पर किसलिए बैठी हो ?"

"मैं अबादत कर रही थी।"

"वह वहां जमीन पर बैठ कर होती है ?"

"हां, फातिमा के उस्ताद ने बैठने का एक तरीका बताया है जिससे अबादत में और ज्यादा लुत्फ आता है। खैर, तुम बताओ, तुम इस वक्त चाय लोगे या ...।"

"अम्मी ! घर में कॉफी है क्या ?"

सोहनी ने फातिमा के मुख पर देखा तो उसने कह दिया, "भाईजान ! है, मगर बनाने में दस मिनट लग जायेंगे।"

"कुछ हर्ज नहीं होगा।"

फातिमा रसोई घर को गयी तो करीमबख्श ने पूछा, "इसकी शादी कर दी है ?"

"नहीं, अभी नहीं ! कर्मचन्द के बाबा कहते हैं कि लड़की और लड़का बालिग होंगे तो शादी होगी।"

"और तुमने शादी कर ली है ?"

"हां ! मगर खुदा से।"

"मुझे तो खबर मिली थी कि छोटे चौधरी से शादी की है।"

"किसी बेवकूफ ने यह बात कही है। इस जिन्दगी में अब शादी की ख्वाहिश नहीं होती।"

"तुम हिन्दू हो गयी हो ?"

"और तुम क्या हो ?"

"एक दीनदार मुसलमान।"

"यह तो तुम्हारा मजहब है। तुम्हारा मुल्क कौन-सा है ? यह हिन्दुस्तान नहीं है क्या ? तुम हिन्दुस्तानी बाशिन्दा होने से हिन्दू ही हो।"

"नहीं, अम्मी ! मैं हिन्दू नहीं हूं हिन्दुस्तानी हूं।"

"यह ज़बान का फर्क है। दोनों का मतलब वही है। हम यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रहने वाले सब हिन्दुस्तान के बाशिन्दे हैं।"

"मगर हमने फैसला किया है कि हम अपना एक नया मुल्क बनायेंगे। उसका नाम पाकिस्तान होगा।"

"तब तुम पाकिस्तानी हो जाओगे। यही कह रहे हो न ?"

"हां !"

"तब तुम हिन्दू या हिन्दुस्तानी नहीं रहोगे।"

"और तुम ?"

"यह उस वक्त बताऊंगी। मेरे साथ और भी तो लाखों-करोड़ों हैं। जो जहां रहेंगे, वही होंगे। मैं पाकिस्तान में नहीं जाऊंगी।"

"मैं चाहता हूं कि हम सब दिल्ली चल कर रहने लगें।"

"किसलिए ?"

"राज बदलने वाला है और उसमें मुझे भी कुछ करने का हुक्म है।"

"किसका हुक्म है ?"

"मेरे ख्याल के नेताओं का।"

"कल चौधरी के घर में बातें हो रही थीं और छोटे चौधरी का साला अश्विनीकुमार बता रहा था कि अब जंग की हालत ऐसी हो गयी है कि जर्मनी के साथियों की हार यकीनी है।"

"वह बेवकूफ क्या जानता है ?"

"और तुम जेल के भीतर बैठे हुए सबकुछ जान गये हो ?"

करीम ने अपनी वाकफीयत का ज़रिया नहीं बताया। सिर्फ इतना कहा, "छः महीने में जापान दिल्ली पर कावज़ हो जायेगा। तब मैं वहां होना चाहता हूं।"

"मैं गांव से बाहर जाना नहीं चाहती।"

"इसी से तो कहता हूं कि मेरी खबर दुरुस्त है कि तुमने छोटे चौधरी से शादी कर ली है।"

"तो फिर क्या हुआ ? तुम्हारे वालिद की दूसरी बीवियों ने शादियां करी हैं तो मैं क्यों नहीं कर सकती ? मैंने शादी की है या कर रही हूं, इसमें तुमसे राय नहीं मांग रही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अम्मी ! तुम जब शादी करोगी तो तुम्हारी जायदाद का मैं मालिक बनूंगा।"

"तो बन जाओ। बताओ, कब दिल्ली जा रहे हो ?"

"आज चौधरियों से मिल लूं। तब फैसला करूंगा।"

यह विवाद अभी चल ही रहा था कि फातिमा कॉफी ले आयी। नरगिस ने सबके लिए बनाई और सब पीने लगे।

कॉफी पीने के बाद करीम ने कहा, "फातिमा ! मैं छोटे चौधरी से मिलने जा रहा हूं। चलोगी ?"

"भाईजान ! नहीं।"

"क्यों ?"

"यह नहीं बताऊंगी। इतना बता देना चाहती हूं कि मकान के दरवाजे पर दो बंदूकधारी सिपाही देखे हैं न ? आप किसी किस्म की ज़बरदस्ती करेंगे तो उनको हुक्म है कि ज़बरदस्ती करने वाले को गोली से उड़ा दें।"

"ये किसने बैठाये हैं ?"

"जिला हाकिम की मंजूरी से छोटे चौधरी ने बैठाये हैं। वे सरकार को इसका पौने दो सौ रुपये महीना देते हैं।"

इस पर करीमबख्श ने जूता पहना और मकान से निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

सन् १९४५ आ गया था। जर्मनी ने युद्ध में हथियार डाल दिये थे। हिटलर ने आत्महत्या कर ली थी। बर्लिन पर रूसी सेनाओं का अधिकार हो गया था और मित्र राष्ट्रों में बर्लिन के विषय में विचार-विमर्श हो रहा था। जापान पर दो ऐटम बम्ब छोड़े जा चुके थे और जापान ने भी घुटने टेक दिये थे।

इस समय तक हिन्दुस्तान में कांग्रेस आन्दोलन पूरे तौर पर दबाया जा चुका था।

जन्तर-मन्तर रोड के एक बंगले के एक कमरे में बैठा करीम अपने नेता से बातें कर रहा था। नेता ने सारी राजनीतिक हलचल का खुलासा करने के बाद अन्त में कहा, "हमें मित्र राष्ट्रों की विजय पर प्रसन्नता प्रकट करनी चाहिए। मित्र राष्ट्रों की विजय रूस के योगदान से ही सम्भव हो सकी है।

"इसके साथ ही हमें गांधी का विरोध नहीं करना चाहिए। गांधी हमारे पक्ष की ही सहायता कर रहा है।"

इस समय करीम के मुख से आवाज़ निकली, "कैसे?"

नेता का कहना था, "मुझे बात करने में रोको नहीं। सुनते जाओ—

"आपको मालूम होना चाहिए कि गांधी जवाहरलाल का हिमायती है और जवाहरलाल हमारे ही पक्ष की बात करता है। वह सोवियत सरकार का भक्त है।

"दूसरी ओर हमें पाकिस्तान बनने में मदद करनी चाहिए। इस हिन्दुस्तान के जितने छोटे-छोटे टुकड़े होंगे, उतना ही हमारे लिए अच्छा है।"

इस प्रकार अपनी बात कह नेताजी उठ खड़े हुए और कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे, "मैं ग्राज रात नागपुर जाने वाला हूं। कोई नई स्थिति उत्पन्न हो तो नागपुर से ग्राज्ञा मांगना।"

"ग्रौर बैंगलौर से नहीं ?"

"नहीं ! वहां के नेता को ग्रपदस्थ किया जा चुका है। वह ग्रंग्रेज़ों का पिट्ठू था।"

नेताजी गये तो करीम कुछ देर तक मन में विचार करता रहा कि वह इस नेता का सेवक है ग्रथवा सहयोगी। एकाएक उसके मन में ग्रनुशासन का ध्यान ग्राया ग्रौर वह उठकर ग्रपने रहने के कमरे में चला गया। उसे कार्यालय के बंगले में ही रहने के लिए दो कमरे मिले हुए थे। उनमें नरगिस ग्रपने दो बच्चों के साथ रहती थी। एक बच्चा ग्रब सात वर्ष का था ग्रौर दूसरा दो वर्ष का था।

करीम के कमरे में ग्राते ही नरगिस ने कहा, "मैं होशियारपुर जाना चाहती हूं।"

"क्यों ?"

"मैं देख रही हूं कि पार्टी का सैक्रेटरी सरकारी क्लर्क से भी बुरी हालत में है।"

"कैसे कहती हो यह ?"

"मैंने ग्रापके लीडर ग्रौर ग्रापमें हुई सब बातें सुनी हैं।"

"कैसे सुनी हैं ?"

"ग्रापके दफ्तर ग्रौर मेरे कमरे में एक दरवाजा है। दरवाज़े से कान लगाकर बैठ जायें तो जो कुछ ग्राप कहते-सुनते हैं, सब सुनाई दे जाता है।"

"ग्रोह !"

"हां। मैं जब गांव में चौधरी के घर जाया करती थी तो उनके घर या कर्मचन्द के मामा के घर कभी किसी को हुक्म देते नहीं सुना। उन्होंने कभी नहीं कहा इधर जाग्रो, उधर जाग्रो; यह करो, वह करो। यहां तो बात बात पर हुक्म चलता है। घर पर ग्राप मुझपर हुक्म चलाते हैं ग्रौर बाहर पार्टी के नेता ग्राप पर हुक्म चलाते हैं मानो सब खरीदे हुए गुलाम हों।"

"हां ! यह डिसिप्लिन है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वाह ! और अगर कल को यही कह देंगे कि रात बीवी को उनके पास भेज दो तो वह भी 'डिसिप्लिन' होगा क्या ?'

"यह मेरी ज़ाती बात है। इसमें वह हुक्म नहीं दे सकता।"

"मगर पाकिस्तान बनाने की बात आपकी ज़ाती है या आपकी पार्टी की ?"

"बेगम ! तुम नहीं समझतीं। यह कौमी बात है। इसमें ज़ाती या पार्टी का मसला नहीं।"

"मगर मैं तो पाकिस्तान पसन्द नहीं करती।"

"क्यों ?"

"हमें होशियारपुर छोड़ना पड़ेगा और आपको दिल्ली छोड़ लाहौर जाना पड़ेगा।"

"वाह ! यह कैसे कहती हो ?"

"जैसे हिन्दुओं को लाहौर छोड़ना पड़ेगा, वैसे मुसलमानों को दिल्ली क्यों नहीं छोड़ना पड़ेगा ? हम मुसलमान हैं। हम दिल्ली और होशियारपुर में नहीं रह सकेंगे।"

"नहीं ! ऐसा नहीं होगा। हिन्दू एक डरपोक कौम है। यह कौम यहां हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगी और हम इन बुज़दिलों को पाकिस्तान से धकेलकर बाहर कर देंगे।"

"वाह ! यह भी कोई इन्सानियत है ?"

"इन्सानियत वगैरह हम जानते नहीं। हम कुदरती कानून को समझते हैं। जिसकी लाठी, उसकी भैंस।"

"मगर वह जो आपको हुक्म दे रहा था, वह तो कमजोर था और अगर आप चाहते तो उसे धक्के दे देकर भगा सकते थे।"

"उसके पीछे एक बहुत बड़ी ताकत है। वह ताकत जिसने जर्मनी के भी दांत खट्टे कर दिये हैं।"

"जर्मनी के दांत तो खट्टे किये हैं अंग्रेज और अमरीका ने। जब अंग्रेज़ और अमरीका के जवान फ्रांस की ज़मीन पर उतरे तभी रूस आगे बढ़ सका था। नहीं तो डेढ़ साल से मोर्चा वहां ही लगा हुआ था।"

"अरे, तुम तो बहुत कुछ जानती हो !" करीम ने हैरान होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा।

"तो यह बात ग़लत है क्या ?"

"कौन तुमको बताया करता है ये बातें ?"

"कोई है, जिसका मुख आप देखना नहीं चाहते ?"

"फिर भी वह कौन है ?"

"कर्मचन्द।"

"तुम उससे कहां मिली हो ?"

"वह दिल्ली की सैर करने आया हुआ था। चार-पांच दिन हुए चांदनी चौक में मिल गया। मैं यहां पर्दे के बिना घूमती हूं। वह मुझे पहिचान सामने आ आदाब अर्ज करने लगा।

"फिर वह मुझे लक्ष्मी रैस्टोरां में ले गया और आपकी बाबत पूछने लगा। बातों-ही-बातों में उसने जंग की सब बात बता दी।

"उसका ख्याल यह था कि गांधी, जवाहरलाल वगैरह भी यह समझते थे कि जंग में जीत जापान व जर्मनी की होगी। मगर उनका बाबा छोटूराम आरम्भ से ही कह रहा था कि जीत अंग्रेज़ों की होगी।

"जब मैंने पूछा कि उनके बाबा ऐसा कैसे कहते थे तो वह बनाने लगा कि बाबा ईश्वर-भक्त हैं और इस जंग में हिटलर का पक्ष शैतान का था। इसलिए उसकी हार होनी ही थी।

"बाबा यह भी कहते थे कि मुसलमानों का पक्ष शैतान का है। भला, मुल्खराज का पोता कैसे कर्मचन्द का शत्रु हो सकता है जबकि दोनों एक कौम के हैं ?"

करीमबख्श ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा, "वह सठिया गया है। उसको पता नहीं कि मज़हब एक रहनुमा है। उस बेवकूफ का मज़हब और हमारा मज़हब एक नहीं है।"

"वाह! कैसे ? आपके बाबा मुल्खराज औरत के पीछे मुसलमान हो गये थे आपकी बहन एक नौजवान के पीछे हिन्दू हो रही है।"

"तो वह हिन्दू हो गयी है ?"

"मेरे ख्याल से नहीं। वह हिन्दू होगी, जब एक-दो हिन्दू बच्चे पैदा कर लेगी।"

करीम हंस पड़ा और बोला, "तो बच्चे पैदा करने से कोई हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान होता है ?"

"हिन्दू बच्चे पैदा करने से हिन्दू और मुसलमान बच्चे पैदा करने से मुसलमान। इसपर भी दोनों टीकड़ी में रह सकते हैं। टीकड़ी गांव का इससे कोई ताल्लुक नहीं।"

"मुझे वह कहीं मिल गया तो मैं उसके पेट में छुरा घोंप दूंगा। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।"

"तो ऐसा करिये। अपनी जेब में छुरा रखियेगा। वह अभी दिल्ली में ही है।

"और हां, एक बात और बता दूं।" नरगिस ने मुसकराकर कहा, "कर्मचन्द अब एक खूबसूरत जवान हो गया है और कहीं आपसे झगड़ा हो गया तो वह आपको पीट भी सकता है।"

"छोड़ो, इस बात को। तुम बताओ। तुम्हें यहां कुछ तकलीफ है ?"

"मैं मां से मिलने की ख्वाहिश कर रही हूं।"

"तो चलो। तुम्हें रात गाड़ी पर चढ़ा दूंगा। बताओ, कितनें दिन के लिए जाना चाहती हो ?"

"जब तक आप बेवकूफों की इस पार्टी को पकड़े हुए हैं। मैं अपने पढ़े-लिखे खाविन्द को हुक्म दिये जाते सुन, इनसे नफरत करने लगी हूं।"

करीमबख्श परेशानी में मुख देखता रह गया। फिर कुछ सोच-कर बोला, "देखो, मैं तुमको एक महीने की छुट्टी देता हूं और तुम जा सकती हो। आज की तारीख को अगले महीने आ जाना। नहीं तो मैं जाकर पकड़ लाऊंगा।"

नरगिस ने बात बदल कर कहा, "तो शाम फ्रन्टीयर मेल में मुझे चढ़ा दीजिये।"

सायंकाल करीमबख्श अपनी बीवी और बच्चों को रेल के स्टेशन पर छोड़ने गया तो उसी गाड़ी से जाता हुआ कर्मचन्द मिल गया।

कर्मचन्द अपने दो अन्य साथियों के साथ था। उन्होंने एक सैकेण्ड क्लास के डिब्बे पर कब्ज़ा किया हुआ था। उस डिब्बे में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीट खाली थी। कर्मचन्द ने करीम को बीवी और बच्चों के साथ प्लैटफार्म पर डिब्बों में जगह देखते हुए आते देखा तो आगे बढ़ उसका हाथ पकड़कर बोला, "करीम भाई! आदाब अर्ज है। भाभी पंजाब जा रही हैं क्या?"

"हां!"

"सीट रिज़र्व है?"

"नहीं! कोई बर्थ सेकेण्ड क्लास में देख रहा हूं।"

"तो आओ! मैं एक जगह दिखा सकता हूं।"

कर्मचन्द ने नरगिस के हाथ से सूटकेस लिया और करीमबख्श के साथ उस डिब्बे की ओर चलने लगा जिसमें वह और उसके साथी अधिकार किये हुए थे।

करीम ने नरगिस की ओर देखा तो उसने कह दिया, "अब ठीक है। मैं घर पहुंच जाऊंगी।"

नरगिस बच्चों के साथ गाड़ी में बैठी तो कर्मचन्द करीम से प्लैटफार्म पर खड़ा-खड़ा बातें करने लगा। उसने पूछा—"कभी अम्मी से मिलने गये हो?"

"नहीं!"

"क्यों?"

"वह हिन्दू हो गयी है।" करीम का कहना था।

"वह तो तुम भी हो। हिन्दुस्तान में रहने वाला हिन्दू ही तो हो सकता है।"

"छोड़ो इस बात को।" करीमबख्श ने कहा, "बताओ। अम्मी से कब मिले थे।"

"पिछली गर्मियों की छुट्टियों में मैं नानाजी के घर पर गया था और वहां अम्मी और उनकी बेटी मिलने आयी थीं। मेरे लिए गांव में जाना मना है।"

"किसने मना किया है?"

"आपकी हमशीरा ने। वह कहती थी कि अगर पर वहां रहने चला गया तो हमारी शादी हो जायेगी और उसकी अम्मी और मेरी माताजी यह पसन्द नहीं करतीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम तो बेवकूफ हो। देखो मैं बताता हूँ। नरगिस के बाप ने मुझे अपनी लड़की के लिए पसन्द किया था। जब उन्होंने शादी की तज़वीज़ की तो मैंने कहा कि लड़की दिखा दो तो मानूंगा।

"वह घर ले गये और हमें बातचीत करने का मौका देने के लिए हमें एक कमरे में छोड़ गये। मेरी शादी तो उसी वक्त हो गयी थी।"

"मगर आपकी बहन यह नहीं चाहती ?"

"क्यों ?"

"उनके गुरु मामाजी हैं। उनका यही कहना है कि बिना शादी की रस्म पूरी हुए हमें मिलना नहीं चाहिए।"

"तो बहुत तकलीफ होती होगी ?"

"नहीं भाई जान ! इसमें मजा आता है। हम दोनों उस दिन की इन्तजार में हैं, जब हमारी शादी होगी।"

"तुम बिल्कुल गधे हो !" इस समय गार्ड ने सीटी बजायी तो कर्मचन्द लपककर गाड़ी में चढ़ गया।

"सुनाओ भाभी ! कितने दिन की छुट्टी पर जा रही हो ?" कर्मचन्द ने सामने के बर्थ पर बैठते हुए पूछ लिया।

नरगिस ने अपने बड़े लड़के रफीक को कहा, "रफीक ! जीजा जी को सलाम करो।"

रफीक ने कर्मचन्द के मुख पर देखा और मुक्का तान छाती के सामने कर सलाम कर दिया।

कर्मचन्द हंस पड़ा। वह जानता था कि यह कम्यूनिस्ट अभिवादन का ढंग है। उसने नरगिस से पूछा, "तो यह भी अपने अब्बाजान की मजलिस में शामिल होने जा रहा है ?"

"यह इसे इसके बाप ने सिखाया है।"

"जैसे बन्दर को करतब करने सिखाये जाते हैं ?"

कर्मचन्द के साथी दोनों की बातें सुन रहे थे। वे बंदर के करतब की बात सुन हंस पड़े। नरगिस ने बात बदल दी। उसने पूछा, "भाईजान ! सीधे लाहौर जा रहे हैं या अपने गांव में चलेंगे ?"

"गांव तो नहीं, हां, होशियारपुर जाऊंगा। जालन्धर से गाड़ी बदलूंगा। वहां नानी के घर में रहूंगा। एक दिन रहकर अगले दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाहौर के लिए रवाना हो जाऊंगा। ये मेरे मित्र हैं। ये तो इसी गाड़ी से लाहौर जा रहे हैं।"

"वहां फातिमा तुमसे मिलने आयेगी क्या ?"

"उम्मीद तो है। मैंने एक चिट्ठी नानीजी को लिखी है कि मैं जनवरी की पहली तारीख को होशियारपुर आ रहा हूं और माता जी तथा रामचन्द वगैरह से मिलने को जी चाहता है। इससे उम्मीद है कि फातिमा और उसकी अम्मी भी मिलने आयेंगी। मेरे वनवास की मियाद खत्म नहीं हुई।"

"तब मैं फातिमा से मिलने आपकी नानी के घर आऊंगी। अम्मी की भी कदम-बोसी करने को दिल करता है।"

"ठीक है। हमारी गाड़ी होशियारपुर दिन के सात बजे पहुंचती है। मैं माताजी के वहां आने की उम्मीद नौ बजे तक करता हूं। तुम उस समय आ सकोगी तो ठीक रहेगा। मैं समझता हूं कि तीसरे प्रहर चार बजे के करीब वे सब गांव को लौट जायेंगे।"

"मैं आऊंगी। एक बात और बताऊं ?" नरगिस ने आगे कहा, "मैं पाकिस्तान में रहने नहीं जाऊंगी।"

"और पाकिस्तान बन भी रहा है क्या ? पंजाब के हिन्दू इसका विरोध कर रहे हैं। पंजाब सरकार भी यह पसन्द नहीं करती।"

"रफीक के अब्बाजान कह रहे हैं कि यह बनेगा। अभी-अभी गांधी और जिनहा की बम्बई में बातचीत हुई है और उसमें गांधी जी मान गये हैं कि भाई-भाई की तरह बंटवारा होगा।"

कर्मचन्द और उसके साथी हंस पड़े। सब सोने की तैयारी कर रहे थे। कर्मचन्द का बिस्तर ऊपर की एक बर्थ पर लगा था। नरगिस और उसके बच्चों को नीचे का बर्थ दिया गया था।

: २ :

जालन्धर से गाड़ी बदल कर्मचन्द और नरगिस इत्यादि सात बजे प्रातःकाल होशियारपुर पहुंचे तो रलाराम, उसकी पत्नी राम-प्यारी तथा टीकड़ी से आये सौभाग्यवती, मोटूराम, छोटूराम, कर्मचन्द के बहन-भाई और सोहनी तथा फातिमा भी स्टेशन पर कर्मचन्द को लेने आये हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे जहां नरगिस को विस्मय हुआ, वहां सौभाग्यवती इत्यादि को भी नरगिस का कर्मचन्द के साथ आना विचित्र प्रतीत हुआ।

जब सब लोग स्टेशन के प्लैटफार्म पर मिल रहे थे तो सौभाग्यवती ने ही पूछा, "यह नरगिस तुमको कहां मिल गयी है ?"

"यह दिल्ली से ही हमारे साथ गाड़ी में आई है। करीमबख्श इसे स्टेशन पर छोड़ने आया था।"

"तो करीम भी तुमसे मिला है ?"

"हां ! वह इसे गाड़ी पर चढ़ाने आया था।"

"कुछ कहता था ?"

"किस विषय में ?"

"अपनी बहन फातिमा के विषय में।"

"हां, कहता था कि अब तो वह सज्ञान हो गयी है। उसका विवाह हो जाना चाहिए।"

"और तुमने क्या कहा है ?"

"मैंने कह दिया कि मुझे पढ़ाई से अभी अवकाश नहीं। साथ ही उसकी अम्मी कहती है कि वह अठारह वर्ष की होगी तो विवाह होगा। करीम अपनी अम्मी को मूर्ख समझता है।"

"और तुम क्या समझते हो ?" सौभाग्यवती का प्रश्न था।

"मुझे तो मां-बेटी में पूर्वजन्म की कोई श्रेष्ठ आत्मा प्रतीत होती है।"

"हां ! हम सब भी ऐसा ही समझते हैं। किसी अनजाने में पापकर्म के फलस्वरूप बेचारी मुसलमान रहीम खां के घर पहुंच गयी हैं।"

सब स्टेशन से बाहर को चल पड़े थे। इस वक्त फातिमा साथ-साथ चलती हुई पूछने लगी, "आप होशियारपुर में कितने दिन रहने आये हैं ?"

"मैं आज रात की गाड़ी से चल कल प्रातःकाल लाहौर पहुंच जाऊंगा। मुझे कल कॉलेज में हाज़िर होना है।"

"अम्मी और आपकी माताजी सायंकाल ही गांव को लौट जायेंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मामाजी नहीं आये ?"

"नहीं ! मामी के लाहौर बच्चा हुआ है। वहां रावी रोड वाले हस्पताल में वह दाखिल है।"

"तो आजकल पढ़ाई नहीं होती ?"

"वह तो हो रही है। मामाजी ने ऐसी पटड़ी पर चढ़ा दिया है कि अब थोड़े से प्रयत्न से ही मैं स्वाध्याय करने लगी हूं। आजकल मैं वाल्मीकि रामायण पढ़ रही हूं।"

"मैं बहुत प्रसन्न हूं। दो वर्ष बाद मैं भी पढ़ाई समाप्त कर काम के विषय में विचार करूंगा।"

"मामाजी कहते थे कि जंग के कारण अनाज और खेतों की उपज का दाम इतना बढ़ गया है कि आपको नौकरी करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। आपके पिताजी भी कहते थे कि आपके विषय में विचार करना होगा कि आप क्या करें ?"

"परन्तु मैं ऐसी विद्या पढ़ा हूं जिसका उपयोग गांव में हो सकता ही नहीं।" कर्मचन्द का कहना था।

"आप लाहौर में मामा जी से मिलियेगा। वह आपको इस विषय पर एक योजना बतायेंगे। वह मुझे भी बता रहे थे, मगर मैं समझी नहीं।"

इस समय स्टेशन से कुछ सवारियां तो लाला रलाराम की मोटर में बैठ गयीं और अन्य दो तांगों में बैठ सब कर्मचन्द के नाना के घर में जाने लगे।

तांगे में बैठते हुए सोहनी ने नरगिस से पूछा, "तुम कहां जा रही हो ?"

"अम्मी ! अभी तो आपके साथ ही जाऊंगी। आपसे मिलकर अभी जी नहीं भरा। शाम के वक्त मैं अपनी अम्मी के घर जाऊंगी और वहां दो-चार दिन रह कर गांव में आपके पास रहने के लिए आऊंगी।"

"और करीम से कितने दिन की छुट्टी लेकर आयी हो ?"

"अपने मन से तो हमेशा के लिए। मगर इसमें आप से भी राय करनी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब ठीक है। जब गांव में आओगी तो इस मसला पर भी गौर कर लेंगे। गांव में भी कुछ तनाव दिखाई देने लगा है। वहां के मुसलमानों में हलचल है।"

"क्या हलचल है ?"

"हमारा उनसे मेल नहीं है। मगर सुनी-सुनाई बात कानों में यह पड़ रही है कि सारे पंजाब में मुसलमानों की हुकूमत होगी।"

फातिमा उस तांगे में बैठी थी, जिसमें मजीद और हमीद भी बैठे थे, साथ ही नरगिस बैठी थी।

"सुनाओ फातिमा ! आजकल क्या शुगल है ?" नरगिस ने पूछ लिया।

"भाभीजान ! दिनभर में छः घंटे सोने में तथा तीन घंटे दूसरी जरूरतों के लिए लग जाते हैं। बकाया बारह-तेरह घंटे पढ़ने में खर्च करती हूं।"

"और पढ़कर क्या करोगी ?"

"मामाजी कहते हैं कि वह मेरे और आपके दामाद के लिए काम पर गौर कर रहे हैं। छोटे चौधरी से उस काम के लिए बात-चीत होती है। उनके लिए भी गांव में ही काम तलाश किया जा रहा है।"

"ओह ! क्या काम होगा ?"

"मुझे सिर्फ इतना बताया गया है कि मैं भी उनके काम में बहुत बड़ी मददगार होऊंगी।"

नरगिस की समझ में कुछ नहीं आया। इस कारण उसने बात बदल दी, "तुम्हारी शादी करने की ख्वाहिश नहीं होती ?"

"भाभी, होती है। कभी रात नींद नहीं आती तो अपनी शादी की बात सोचती रहती हूं।"

"तुम्हारी उम्र अब पन्द्रह साल की हो रही है। मैं जब चौदह साल की थी तो शादी की ख्वाहिश करने लगी थी।"

"वह ठीक है भाभीजान ! पर तुम दिनभर क्या काम करती थीं ?"

"घर का काम-काज ही करना होता था। बकाया वक्त दोपहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी ग्रौर रात को भी मां-बेटी खाट तोड़ा करती थीं।"

"बस, यही फर्क है। मुझे तो चौबीस घंटे में शादी की बाबत सोचने की फुरसत ही नहीं रहती। रात ग्रक्सर बहुत गहरी नींद सोती हूं। कभी-कभार पेट की खराबी की वजह से नींद न ग्राये तो इनकी याद ग्राती है! बहुत ही मीठी याद ग्राती है। उस मीठी याद में पलक की झपक में रात गुजर जाती है। तब दिन में फिर ग्रपने रोज़भर के काम में लग जाती हूं।"

"क्या काम करती रहती हो?"

"पढ़ाई का ही काम करती हूं। उसी से फुरसत नहीं मिलती।"

"मैं तो इसे सब फिजूल समझती हूं।"

"तो भाभी! तुम दिन-भर क्या करती रहती हो?"

"नावल पढ़ती हूं। बहुत मज़ा रहता है।"

"पर मेरी तो जिन्दगी ही नावल बन रही है?"

"वह कैसे?"

"यह तो जो उसे पढ़ता है, उसे ही पता चल सकता है।"

इस समय तांगा लाला रलाराम के मकान के बाहर जा पहुंचा। मोटर ग्रौर दूसरा तांगा तो पहले ही पहुंच चुके थे।

परिणामस्वरूप फातिमा ग्रौर नरगिस की बातें बंद हो गयीं। वे भीतर गयीं तो सब के लिए चाय का प्रबन्ध था। इनको भी एक-एक प्याला मिल गया।

उसी दिन ग्रल्पाहार के उपरान्त मोटूराम ने कर्मचन्द से पृथक् में बात की। उसने पूछा, "तुम क्या पढ़ते हो? ग्रश्विनी तुम्हारी पढ़ाई की बहुत प्रशंसा करता है?"

"क्या प्रशंसा करते थे? चौबीस घंटों में दस घंटे से ऊपर कॉलेज ग्रौर प्रयोगशाला में रहना पड़ता है। प्रयोगशाला में बहुत काम रहता है। हमारे प्रोफेसर ने एक सौ से ऊपर परीक्षण करने की ग्राज्ञा दी है। कई-कई परीक्षणों में तो दो-दो ग्रौर तीन-तीन दिन लग जाते हैं।

"मैं ग्रपनी श्रेणी में पिछले तीन महीने से हूं ग्रौर इस काल में केवल पन्द्रह परीक्षण समाप्त कर सका हूँ। कभी-कभी करते-करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भूल हो जाती है तो उसे फिर करना पड़ता है और तब एक परीक्षण में ही पूरा सप्ताह व्यतीत हो जाता है।"

"तो तुमको वहां बहुत कष्ट है ?"

"इसे कष्ट नहीं कहते पिताजी ! काम में रुचि है। इस कारण अनुभव नहीं होता। हां, दुनिया भूलती जाती है। फिर पुस्तकालय से अपने विषय की पुस्तकें ला-लाकर पढ़ना और उसमें से नई-नई बातों को कापी पर नोट करना, तदनन्तर उन नोटों को क्रम के अनुसार लगाना। बस, समझ लें कि चौबीस घंटे पढ़ाई ही दिमाग पर छाई रहती है।

"इसीलिए इस बार क्रिसमस की छुट्टियों में दिल्ली की सैर का कार्यक्रम बनाया था। अब लाहौर पहुँचते ही फिर काम में जुट जाऊंगा।"

"यहां," पिता ने कहा, "तुम्हारी मां और सास तुम्हारे विवाह की योजनाएं बनाती रहती हैं।"

"क्या योजनाएं बनाती रहती हैं ?"

"तुम्हारे और तुम्हारी बहू के लिये कपड़े, भूषण, तुम्हारे कमरे की सजावट और शादी के परिणामस्वरूप तुम्हारे होने वाले बच्चों के नामों पर बहस करती रहती हैं।"

कर्मचन्द हंस पड़ा। वह बोला, "इसका कारण यह है कि घर पर उनके लिए कोई उपकारी काम नहीं है। खाली दिमाग शैतानी का कारखाना होता है। पिताजी ! माताजी के लिए कुछ अन्य काम घर पर न होने से वह इस व्यर्थ की बात पर समय व्यतीत करती रहती हैं।"

"हां ! मैं भी यही समझ रहा हूं। आजकल चौका-बासन एक कहार कर जाता है। रसोई एक ब्राह्मणी बनाती है। कपड़े सीने के लिए गांव में एक बहुत ही योग्य दर्जी आ गया है। उस दर्जी की पत्नी भी वही काम करती है और धनी-मानी लोगों के घरों में जा-जा कर सीने का काम ले आती है। शेष खाना और सोना ही तो रह गया है।"

"तो पिताजी ! नौकरों को घर से निकाल दीजिये। तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी को मेरे विवाह की बात पर विचार करने के लिए समय नहीं रहेगा।"

मोटूराम हंस पड़ा और बोला, "तुम भी मेरी भांति मोटी बुद्धि ग्रहण करते जाते हो।"

"नहीं, पिताजी! यह सूक्ष्म बुद्धि की बात है। मन को किसी काम पर लगाए रखना चाहिये। खाली मन ही व्यर्थ की बात विचार किया करता है।"

"अच्छा देखो। लाहौर जाओगे तो रावी रोड पर हस्पताल में मामी का समाचार लेने जरूर जाना।

"मैं तीन दिन हुए वहां गया था। उसके लड़का हुआ है। बच्चा पेट में टेढ़ा था। इस कारण 'ऑपरेशन' करना पड़ा है। अश्विनी वहां स्टैण्डर्ड होटल में रहता है।"

"फातिमा भी कह रही थी कि उनसे मिलना चाहिए। वह मेरे जीवन कार्य के विषय में कुछ कहेंगे।"

"हां! वह कहता था कि तुम जैसे धीमान् विद्यार्थी के लिए नौकरी की चक्की ठीक नहीं। नौकरी उनको करनी चाहिए जिनके पास जीवनयापन के लिए धन न हो।

"हमारी यहां जमींदारी बहुत लाभ देने लगी है। इसी पर उसने कहा था कि कर्मचन्द को किसी भी प्रकार की नौकरी नहीं करनी चाहिये।"

"तो क्या करना चाहिये?"

"यह उससे मिलकर पूछना। फातिमा कहती है कि वह समझ तो गयी है, परन्तु कैसे करेगी, बता नहीं सकी।"

दिनभर पारिवारिक विषयों पर विचार और बातें होती रहीं। बाबा छोटूराम ने बताया, "गांव वाली हवेली सन् १८८० में मेरे पिता ने बनवाई थी। उसको गिरवा कर नई बनवाना चाहता हूं। मैंने लाहौर में कई मकान देखे हैं और वैसी ही एक हवेली गांव में बनवाने की इच्छा है।"

कर्मचन्द देख रहा था कि परिवार के घटक प्रगति के पथ पर चल पड़े हैं। उसे इसका भास रामचन्द के कहने पर हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचन्द होशियारपुर डी० ए० वी० कॉलेज की एफ० ए० की प्रथम श्रेणी में पढ़ता था। वह उतना प्रखर बुद्धि नहीं था। इस पर भी वह सैकेण्ड डिविज़न में परीक्षाएं पास करता जाता था।

जब सब लोग गांव को लौटने पर तैयार हुए तो रामचन्द कॉलेज होस्टल के जाने के स्थान नगर में सिनेमा देखने जाने की तैयारी करने लगा। उसने कर्मचन्द से पूछ लिया, "दादा! तुम्हारी गाड़ी किस समय जायेगी?"

"रात के बारह बजे यहां से छूटती है।"

"तब चलो! तुम्हें सिनेमा दिखा लाऊं। आजकल सहगल की फिल्म लगी हुई है।"

कर्मचन्द लाहौर में रहता हुआ कभी सिनेमा देखने नहीं गया था। उसे इसका शौक भी नहीं था। इस कारण उसने पूछ लिया, "यह सहगल कौन है?"

"एक पंजाबी 'ऐक्टर' है। बहुत अच्छा गाता और अभिनय करता है। उसकी दस वर्ष पुरानी एक तस्वीर 'चण्डीदास' अभी तक चलती है।"

"तो फिर क्या हुआ? सहस्रों वर्ष पुरानी रामलीला भी प्रति वर्ष खेली जाती है। मुझे इस प्रकार की बातों में तथ्य प्रतीत नहीं होता।"

"तो तुम रामलीला भी नहीं देखते? उस दिन फातिमा कह रही थी कि रामकथा अद्वितीय है।"

कर्मचन्द हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "कथा अद्वितीय है न? इसमें बाल्मीकि कथाकार की महिमा है। मैं तो रामलीला जो गौरीशंकर और शारदाराम के लड़के खेलते हैं, से अरुचि की बात कह रहा हूं।"

रामचन्द इस अन्तर को समझ नहीं सका। इस कारण अपने बड़े भाई का मुख देखता रह गया।

कर्मचन्द के मन में उत्सुकता उत्पन्न हो गयी थी, यह जानने की कि उसके मामा ने उसका जीवन-कार्य क्या विचार किया है।

अभी तक विज्ञान के स्नातकों के लिये तो किसी सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉलेज अथवा किसी बड़े कारखाने में सलाहकार के रूप में नौकरी ही काम थे। अश्विनी ने गांव में उसके लिए काम ढूंढ़ा है। यह उसके लिए एक नवीन और आकर्षक सामाचार था।

लाहौर पहुंच वह पहले दिन ही कॉलेज के कार्य को समेट मामा से मिलने जाने की सोच ही रहा था कि अश्विनी स्वयं उसकी प्रयोगशाला में उससे मिलने चला आया।

"ओह ! मामाजी ! आप यहां ही आ गये ? मैं तो हस्पताल को जा रहा था।"

"तो चलो ! मैं वहां जाने के लिए तांगा लाया हूं।"

"तो चलिये !" कर्मचन्द ने अपना सामान समेटा और मामा के साथ चल पड़ा।

तांगे में बैठते ही कर्मचन्द ने मामी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो अश्विनी ने सब घटना का वृत्तान्त बता दिया—

"होशियारपुर में ज़नाना हस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने कहा कि बच्चा ऑपरेशन से होगा। इस कारण पिताजी ने लाहौर भेज दिया। यहां हस्पताल में प्रवेश होने के तीसरे दिन बच्चा हुआ। उसके लिये ऑपरेशन करना पड़ा है। डॉक्टर कह रहा था कि भविष्य में गर्भ-स्थिति की सम्भावना नहीं रही।"

"और मामीजी इससे प्रसन्न हैं ?"

"वह तो समझ रही है कि जान बची, लाखों पाये।"

कर्मचन्द ने बात बदल दी, "पिताजी कह रहे थे कि आपने मेरे लिए कुछ काम का विचार किया है ?"

"हां ! बात यह है कि पिताजी बता रहे थे कि उनके खेतों की आय कई गुणा हो गयी है। सेवकों और खेत पर काम करने वालों को अधिक वेतन देने पर भी तुम्हारे बाबा का बैंक में जमा द्रुतगति से बढ़ रहा है।

"बाबा बता रहे थे कि इस वर्ष नक़द धन जो वह बैंक में जमा करा सके हैं, वह चालीस हजार के लगभग है।

"मैंने विचार किया कि तुम अगर कहीं नौकरी पा गये तो अधिक-से-अधिक तीन-चार सौ रुपये महीना की नौकरी पा सकोगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो मोतियों को कंकरों के भाव बेचने के तुल्य है।

"इस कारण तुम्हें अपने ज्ञान के प्रयोग का कोई उपाय ढूंढना चाहिये। मैंने एक काम ढूंढ़ा है। एक अच्छा पुस्तकालय और छोटी-सी प्रयोगशाला गांव में बनाकर तुम अन्वेषण कार्य किया करो।

"मैंने जीजाजी से पूछा है कि वह कितना रुपया वार्षिक तुम्हारे लिए दे सकते हैं। उनका कहना है कि पांच सौ रुपये महीना और प्रारम्भिक खर्च के लिए बीस हजार देने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी।"

"बस, मैंने एक योजना बना दी है। मैं चाहता हूं कि तुम अपनी पढ़ाई समाप्त कर उसमें काम करने लगो।

"वास्तव में, जब मैं गुरुकुल से पढ़ कर आया था तो मेरे मन में इस योजना का बीज उपस्थित था और अब साधन सामने दिखाई देने पर वह बीज अंकुरित हो रहा है।"

कर्मचन्द अश्विनीकुमार की बात सुन मौन रहा। वे हस्पताल में गये। वहां सरस्वती का समाचार लिया और फिर वे लौट आये। जब दोनों होटल के नीचे पहुंचे तो तांगे से उतर अश्विनी ने पूछा, "अब क्या विचार है?"

"मामाजी! मैंने आपकी बात सुन ली है। अब इस पर विचार करूंगा। अभी मेरे कॉलेज की पढ़ाई समाप्त करने में दो वर्ष के लगभग हैं। तब तक मैं इसपर विचार करता रहूंगा।

"एक बात मुझे समझ आयी है कि आप लोगों से राय किये बिना कहीं सेवा का कार्य स्वीकार नहीं करना चाहिए।"

"ठीक है। मैं समझता हूं कि तुम्हारी मामी को हस्पताल से छुट्टी मिलने में अभी एक सप्ताह है। गांव लौटने ने पूर्व मैं पुनः मिलूंगा।"

: ३ :

नरगिस को दिल्ली से आये हुए डेढ़ मास से ऊपर हो चुका था। करीमबख्श ने उसे पत्र लिखा था कि वह आने की सूचना भेजे। नरगिस ने उत्तर नहीं दिया था। इससे चिढ़कर वह होशियारपुर आ गया। वह सीधा अपने श्वसुर की दुकान पर पहुंचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अपने श्वसुर सरदार खां से पूछने लगा, "अब्बाजान! मैंने नरगिस को चिट्ठी लिखी थी। उसका जवाब नहीं आया।"

"हां, तुम्हारी चिट्ठी आयी थी और हमने वह चिट्ठी पता बदलकर फिर डाक में डाल दी थी। वह आजकल झुनझुन टीकड़ी में है।"

"वहाँ क्या कर रही है?"

"बरखुरदार! वह जाते वक्त कह रही थी कि वह वहां पक्के तौर पर रहने का इन्तज़ाम करने जा रही है। हमने उससे पूछा था कि दिल्ली क्यों नहीं?

"उसका कहना था कि वहां तुम्हारा काम पक्का नहीं है। किसी भी दिन वहां से निकाले जा सकते हो। इसलिए मुस्तकिल इन्तज़ाम के लिए वह गांव जा रही है।

"उसने गांव से हमें कभी चिट्ठी नहीं लिखी। इसलिए हम कह नहीं सकते कि उसने वहां क्या इन्तज़ाम किया है और क्या नहीं किया?"

करीमबख्श उलटे पांव बस स्टैण्ड पर पहुंच बस में चढ़ एक घंटे में गांव जा पहुंचा। उस समय सोहनी और नरगिस चौधरी की हवेली में गयी हुई थीं। मकान को ताला लगा था। करीमबख्श समझ गया कि घर के प्राणी चौधरी की हवेली को गये हुए हैं। इस कारण वह भी वहां जा पहुंचा। हवेली के आंगन में बंदूक से निशाना लगाने का अभ्यास किया जा रहा है। यह देख करीमबख्श का जोश ठण्डा हो गया। उसने देखा कि मोटूराम छोटे लड़के परमानन्द को बंदूक से निशाना लगाने का अभ्यास करा रहा है।

मोटूराम ने भी करीमबख्श को आते देखा तो परमानन्द से बंदूक अपने हाथ में ले ली और बोला, "आओ करीम! रुक क्यों गये हो?"

"बात यह है," करीमबख्श ने समीप आते हुए कहा, "एक नाबालिग़ के हाथ में बंदूक देख डर गया था कि कहीं बंदूक की नाली का मुंह ग़लत तरफ न हो जाये।"

मोटूराम हंस पड़ा और बोला, "मगर वह ग़लत तरफ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। तुम तो लड़के की सुसरालवालों में हो न।"

"नहीं! आप भूल कर रहे हैं। मेरा उस लड़की से कोई ताल्लुक नहीं है?"

"पर तुम उसके पीछे-पीछे तो आये हो?"

"नहीं चौधरी साहब! मैं फातिमा के पीछे नहीं आया। उसे मैंने अपने मन से निकाल रखा है। मैं तो नरगिस को ढूंढता हुआ आया हूं।"

"हां! वह भीतर है। अभी-अभी तुम्हारी अम्मी के साथ आयी है। आओ, भीतर आ जाओ।"

"मगर आप इस खौफनाक हथियार को इस नाबालिग, बेसमझ के हाथ में किसलिए दे रहे हैं?"

"यही तो इसे समझा रहा था कि इसका मुख किस तरफ रखना चाहिए। इसे अभ्यास करते हुए चार-पांच दिन ही हुए हैं।

"मैं यहां शिकारियों की एक क्लब बना रहा हूं। उसमें यहां गांव के पन्द्रह के लगभग नौजवान सदस्य बन गए हैं। उन सबको बंदूक चलाने का ढंग और निशाना बांधने का तरीका सिखाया जा रहा है।"

"क्या फायदा होगा?"

"अभी लाहौर के मौलाना ज़फर अली का एक बयान छपा है कि हिन्दुस्तान में 'सिविल-वार' हो सकती है। अगर कांग्रेस ने उनका पाकिस्तान न माना तो यहां गांव-गांव में लड़ाई होगी।"

"मगर महात्मा गांधी ने तो कहा है कि मौलाना साहब का दिमाग़ खराब हो रहा है।"

"हां! यह भी मैंने पढ़ा है। मगर दिमाग़ के सही और खराब होने का फैसला तो वे दोनों खुद ही करेंगे। हमें तो अपनी हिफाज़त का इन्तज़ाम करना है।"

इस समय तीनों—मोटूराम, परमानन्द और करीम हवेली के बैठक घर की तरफ चल पड़े। करीम ने कुली को वहां ही खड़ा कर दिया था। वह उसका सामान उठाए हुए था।

बैठक घर में नरगिस और सोहनी सौभाग्यवती से चर्चा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थीं। ये लोग भीतर पहुंचे तो सोहनी ने कहा, "तो तुम आ गए हो ? यह नरगिस पिछले पन्द्रह दिन से तुम्हारी इन्तज़ार कर रही है।"

करीम ने औरतों के सामने बैठते हुए कहा, "और मैं इसकी इन्तज़ार दिल्ली में कर रहा था।"

इसपर सौभाग्यवती ने पूछा, "चाय लोगे या कॉफी ?"

"मैं तो कॉफी पीता हूं। चाय का दिल्ली में रिवाज नहीं रहा।"

"यह नरगिस से नहीं बताया। यह भी तो दो साल तक वहां रहती आयी है।" सोहनी ने कहा।

इसपर भी सौभाग्यवती ने आवाज़ दे दी, "ओ रामी !"

रामी आयी तो उसे सबके लिए कॉफी बना कर लाने की आज्ञा दे दी गयी।

"मैं तुम्हें लेने आया हूं।" करीम ने नरगिस को कहा।

"यहां रहते हुए अभी मेरा जी नहीं भरा। इसीलिए मैंने आपकी चिट्ठी का जवाब नहीं भेजा था। मैं फैसला नहीं कर सकी कि मेरा जी गांव से कब ऊबेगा।"

"मगर बेगम ! मैं तुम्हारा खाविन्द हूं और मेरा जी तुम से अलहदा रहते हुए ऊब गया है।"

"तो आप भी गांव में आ जाइए। अम्मी के घर में आजकल कमरा खाली पड़ा है।"

"मैं दिल्ली नहीं छोड़ सकता।"

"और मैं यह गांव नहीं छोड़ सकती।"

"तुम्हें मेरे साथ रहना पड़ेगा। एक मुसलमान की बीवी खाविन्द को छोड़ नहीं सकती।"

"तो मैं मुसलमान नहीं रहूंगी।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यही कि मैं यहां देहात में रहना चाहती हूं। यहां मुझसे मुहब्बत करने वाले रहते हैं और वहां दिल्ली में तो आपके मालिक रहते हैं। मैं उनके गुलाम की बीवी बन कर नहीं रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती। यहां आप अपनी अम्मी के खेतों का भी इन्तज़ाम करेंगे तो मालिक होंगे। मैं एक मालिक की बीवी बन कर रहना चाहती हूं।"

"ओह ! तो यह यहां आकर सीखी हो ?"

"नहीं जी ! यह तो मैं दिल्ली में ही सीख आयी थी।"

"उठो, चलो !" करीमबख्श ने उठते हुए क्रोध में कहा।

इसपर सोहनी ने कह दिया, "बेटा ! कॉफी पी लो ? फिर सब चलते हैं। सामान कहां रखा है ?"

"वह बाहर कुली के पास है। मैं मकान पर गया था। वहां ताला लगा देख यहां चला आया हूं।"

"और वहां के पुलिस के सिपाही भी तो यहां हमारे साथ आये हुए हैं।"

"कहीं दिखाई नहीं दिये।"

उत्तर मोटूराम ने दिया, "मगर वे तुमको देख रहे हैं। बंदूकची सिपाही पहले दो वर्ष तक रखकर हटा दिए थे। मगर जब खबर मिली कि तुम जेल से छूटकर आ रहे हो तो फिर रख लिए हैं। तब से आज तक रखे हुए हैं। वे इन औरतों की हिफाज़त के लिए हैं। दो सौ साठ रुपये महीना देना पड़ता है। मगर क्या करें, तुम्हारी बहन से रिश्ता जो बना है।"

इस सूचना से और बाहर आंगन में बंदूक चलाने का अभ्यास होता देख कर करीम परेशानी अनुभव करने लगा था। मोटूराम ने बात बदल दी, "भोजन किया है अथवा नहीं ?"

"मैं जालन्धर से बस में होशियारपुर पहुंचा था। वहां से नरगिस के बाप की दुकान से पता चला कि यह यहां है तो भूख गायब हो गयी और मैं सीधा यहां आ पहुंचा हूं।"

"तो कॉफी के साथ कुछ खाने को भी मंगवा देता हूं। और फिर खा-पीकर बीवी से फैसला करने के लिए अम्मी के घर चले जाना।"

करीमबख्श भी समझ गया था कि यहां इस हवेली में झगड़ा करेगा तो घाटे में रहेगा। इस कारण अपनी अम्मी के घर जाकर बात करने का निश्चय कर वह चुप कर गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनी ने ही बात की। उसने कहा, "अक्सर चार बजे के करीब फातिमा पढ़ाई कर यहां आया करती है। वह भी आ जाए तो सब इकट्ठे ही घर को चलेंगे।"

करीम ने घड़ी में वक्त देखा। साढ़े तीन बजे थे।

रामी कॉफी और साथ खाने को मिठाई लायी तो करीम ने सब से पहले खाना शुरू कर दिया। अभी सब खा-पी रहे थे कि फातिमा भी आ गयी। उसके हाथ में एक बड़ी-सी पुस्तक और उसके साथ एक कापी पकड़ी हुई थी।

उसने करीम को देखा तो हाथ जोड़ आदाब अर्ज कर दी।

"तो तुम आ गयी हो?"

"जी! मैं तो यहां पिछले पन्द्रह साल से आयी हुई हूं। आप कब आए हैं?"

"यह क्या बोझा उठाए हुए हो?"

"यह मैं आजकल पढ़ रही हूं।"

"देखें, क्या है?"

"देखिए कितनी बोझल है। वैसे आप इसे समझ नहीं सकेंगे?'

फातिमा अपनी अम्मी के पास बैठ गयी। पुस्तक करीम ने ले ली। वह खोलकर देखने लगा। किताब मूल बाल्मीकीय रामायण थी। केवल संस्कृत पाठ ही था। इस कारण वह दो-तीन स्थान से खोल कर देख बंद कर वापस करते हुए बोला, "यह मेरे लिए तौरेत और कुरान है।"

"इस पर भी भाईजान उनको मानते हैं?"

"बिल्कुल नहीं। मैं तो वही मानता हूं जो मैं पढ़ और समझ सकता हूं।"

सोहना ने फातिमा के लिए भी एक प्याला कॉफी बना दी और एक तश्तरी में मिठाई उसके सामने रख दी।

करीम तो खा-पीकर पेट भर चुका था। इस कारण उसने कहा, "मैं तुम्हारी भाभीजान को दिल्ली ले चलने के लिए आया हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें कुछ उत्तर देने को नहीं था। इस कारण सब चुप रहे। नरगिस इस विषय पर वहां बात करना नहीं चाहती थी।

करीम ने आगे कहा, "अगर तुम भी हमारे साथ चलो तो बहुत अच्छा रहे।"

"भाईजान ! मुझे कह रहे हैं ?" फातिमा ने पूछ लिया।

"हां !"

"मैं गांव से बाहर अभी नहीं जा सकती।"

"क्यों ?"

"मेरी किसी से दौड़ लगी हुई है। मैं उन्हें आगे निकल जाने नहीं देना चाहती। मैं बहुत देरी से दौड़ में शामिल हुई थी। इस पर भी मैंने कोशिश की है कि दौड़ में उनके साथ मिल जाऊं। उम्मीद है कि दौड़ खत्म होने तक मैं उनके साथ मिल जाऊंगी।"

"किनके साथ दौड़ लगा रखी है ?"

"आपके जीजाजी के साथ। मैं चाहती हूं कि उनके गांव में आने तक मैं उनसे आगे नहीं तो उनके शाने-बशाने हो सकूं।"

"यह कैसे हो सकता है ? तुम उससे चार साल उम्र में भी छोटी हो। साथ ही वह सूबे के एक सबसे आला कालेज में पढ़ता है।"

"इस पर भी मैं आगे निकल जाने की उम्मीद करती हूं।"

"तुम लोगों ने गांव को पागलखाना बना रखा है। मैं नरगिस को यहां रहने नहीं दूंगा।"

इसका उत्तर किसी ने नहीं दिया। उत्तर तो केवल नरगिस ही दे सकती थी। मगर उसने चुप रहना ही उचित समझा।

सब लोग हवेली से बाहर निकले तो करीम ने नरगिस की बांह पकड़ घर की ओर जाने के स्थान पर बस स्टैण्ड की ओर खींच ले जाने का यत्न किया। वह भूल गया था कि उनके पीछे बंदूकची सिपाही चले आ रहे हैं। ज्यों ही नरगिस के मुख से 'आ' की आवाज निकली कि एक पुलिसमैन ने करीम को गर्दन से पकड़ लिया और उसे नरगिस की बांह छोड़ने पर विवश कर दिया।

पुलिसमैन ने कहा, "मियां साहब ! यहां सड़क पर झगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होने देंगे। घर पर भी अगर इन औरतों ने मदद मांगी तो हम मकान में घुसकर भी मदद देंगे।

"अगर आपका किसी किस्म का दावा है तो थाने में जाकर रपट लिखा दीजिए। यहां ज़बरदस्ती नहीं चलने दी जाएगी।"

विवश उसको नरगिस का हाथ छोड़ना पड़ा। एकाएक उसके मन में ख्याल आया कि उसकी अम्मी उसे घर में घुसने नहीं देगी।

इस कारण वह चलता-चलता खड़ा हो गया। वे लोग गांव के चौराहे पर पहुंच गए थे। उसे खड़ा होते देख औरतें भी खड़ी हो उसका मुख देखने लगीं।

करीम ने अम्मी को कहा, "मैं थाने को जा रहा हूं और इन सिपाहियों के लिए वहां से हिदायत लेकर आता हूं। देखो, यह कुली आपके साथ जा रहा है। मेरा सामान भीतर रखवाकर इसको एक रुपया दे देना।"

सोहनी का सतर्क उत्तर था, "इस सामान को हम मकान के भीतर नहीं रखने देंगी। तुम सड़क पर ही फौजदारी करने लगे हो तो घर में आकर क्या करोगे ?

"यह सड़क पर ही पड़ा रहेगा। तुम आओगे तो इसे जहां चाहो ले जाना।"

"परन्तु मकान तो मेरा है।"

"उस पर कब्जा मेरा है। उसके लिए दावा करो।"

विवश करीम कुली सहित थाने में जा पहुंचा। थानेदार बदल चुका था। जसवंतसिंह के स्थान पर एक सैय्यद अमीर अली आया हुआ था। उसने करीमबख्श की तमाम बात सुनकर कह दिया, "एक नरगिस औरत ने रिपोर्ट लिखाई हुई है कि वह इस्लाम छोड़ चुकी है। इसलिए उस पर शरअ के कायदे-कानून लागू नहीं होते। वह मुसलमान शौहर के पास जाना नहीं चाहती।"

"मगर मैं तो मुसलमान हूं। मैं तो एक मुसलमान खाविन्द के हक-हकूक रखता हूं।"

"मगर एक मुसलमान बीवी पर। देखो करीम! यह मुआमिला कानून का है। मैं यहां कचहरी नहीं लगाए हुए। इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम तहसीलदार के पास चले जाम्रो और वहां से हुक्म ले आओ।"

तहसीलदार एक हिन्दू रघुवीरचन्द था। करीम उसके पास गया तो उसने राय दी कि वह डिप्टी कलैक्टर की अदालत में अर्जी करे। यहां कानून के विषय में फैसला नहीं हो सकता।

इसपर करीमबख्श को यही समझ आया कि गांव से आखिरी बस छः बजे जाती है और उसे उस बस से वापस चले जाना चाहिए।

होशियारपुर में अर्जी करने से पहले उसने अपने दिल्ली के साथियों से राय करनी आवश्यक समझी। इस कारण वह अकेला ही दिल्ली लौट गया।

दिल्ली में पार्टी ने मजदूरों के झगड़ों के लिए एक वकील नियुक्त किया हुआ था। करीम दिल्ली पहुंचते ही उसके चैम्बर में जा पहुंचा।

मियां फिरोजदीन बी० ए०, एल-एल० बी० चांदनी चौक में एक बैठक में रहता था। वहां ही वह अपनी वकालत का धंधा करता था। पार्टी के सैक्रेटरी को आया देख उसने आदर सहित उसे बैठाया, चाय-पानी पूछा और फिर आने का कारण पूछा। करीमबख्श ने बताया, "मेरी एक बीवी है। नाम है नरगिस। वह गांव में गयी हुई है और लौटकर नहीं आती।"

"क्या कहती है?"

"कहती है कि वह मेरी बीवी नहीं है।"

"यह कैसे?"

"वह कहती है कि उसने इस्लाम मज़हब छोड़ दिया है और अब मुल्क के कानून के मुताबिक वह मेरी बीवी बने रहना नहीं चाहती।"

"हां! वह ऐसा कर सकती है। शरअ तो सिर्फ मुसलमान औरत मर्द पर ही चल सकती है। मज़हब तब्दील होने पर कौन-सा कानून चले, यह फैसला अदालत करेगी। उस फैसले तक सैपरेशन की इजाजत हो सकती है।

"उसने कौनसा मज़हब इख्तयार कर लिया है, यह उसे अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बयान में बताना होगा और उसके हक-हकूक उसी मज़हब की बीवी जैसे हो जायेंगे।"

"मेरे हक-हकूक का क्या होगा?" करीम का प्रश्न था।

"यह कानून में एक 'लेक्यूना' है।"

"तो इसका क्या इलाज है?"

"इसका इलाज है कि आप दिल्ली में एक अर्जी कर दें कि आपकी बीवी, जो मुसलमान है, वह आपके पास आने से इनकार करती है। उसे शरअ के मुताबिक अपने खाविन्द के पास रहना चाहिए।"

"तो अर्जी आप तैयार कर दीजिए।"

"सवेरे नौ बजे आ जाइएगा और मैं आपको लेकर अदालत में चला जाऊंगा। वहां अर्जी पेश हो सकेगी।"

"वकील साहब! मैं बीवी के बिना बहुत परेशान हूं।"

"तो कोई अर्जी तौर पर भेज दूं।" वकील ने मुस्कराकर कहा, "दिल्ली में बहुत घूमती हैं। हां, उनका दाम शादी-शुदा से बहुत ज्यादा होता है?"

"नहीं! मुझे उसकी जरूरत नहीं है।"

अगले दिन अदालत में अर्जी की गयी तो नरगिस के नाम सम्मन जारी हो गए।

निश्चित तारीख को नरगिस अपने वकील और बंदूकची पुलिस वालों के साथ अदालत में आयी। वकील ने करीमबख्श के दावे का जवाब पेश कर दिया था।

उसमें नरगिस ने बताया था कि मैं इस्लाम मजहब को छोड़ चुकी हूं। इस कारण मैं खाविन्द से पृथक् रहना चाहती हूं।

मजिस्ट्रेट का प्रश्न था, "आपका मुवक्किल किस मज़हब को मानता है?"

वकील ने कहा "वह ला-मज़हब है और इन्सानी हक-हकूक 'नैचुरल जस्टिस' के अनुसार चाहता है।"

इसके उपरान्त इस विषय पर बहस होने लगी कि मज़हब तब्दील करने पर शादी टूटती है अथवा नहीं। नरगिस के वकील ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "शादी तो नहीं टूटती। मगर शादी में ताल्लुकात इन्सानियत हक-हकूक के मुताबिक रह जायेंगे। इस्लामी शरअ के हक-हकूक नहीं रहेंगे।"

यह कानूनी मसला था। इस कारण सब-जज ने यह केस हाईकोर्ट को भेज दिया।

हाईकोर्ट में बहस इस बात पर होने लगी कि जब एक पुरुष और स्त्री किसी मजहबी रस्मो-रिवाज से शादी-शुदा हों और उनमें से कोई मजहब तब्दील कर ले तो फिर उनके हक-हकूक किस मज़हब के मुताबिक हो जायेंगे?

हाईकोर्ट में पार्टी की तरफ से करीमबख्श को वकील मिला हुआ था। परन्तु जब इस मुकद्दमे पर पार्टी के पौलिट-ब्यूरो में चर्चा होने लगी तो करीमबख्श के व्यवहार पर पार्टी के पौलिट-ब्यूरो ने जांच कमेटी नियुक्त कर दी।

अभी हाईकोर्ट में बहस की तारीख निश्चित नहीं हुई थी कि एक बंगाली महाशय निर्मल चैटर्जी जन्तर-मन्तर रोड वाले बंगले में करीमबख्श से पूछगीछ करने आ पहुंचे।

करीमबख्श इस नयी स्थिति से परेशान था। उससे चैटर्जी ने पूछ लिया, "तुम अपनी पत्नी से सम्बन्ध इस्लामी शरअ के अनुसार मानते हो क्या?"

"इस्लामी शरअ के अनुसार मेरी शादी हुई है।"

"मगर तुम खुद किस मजहब में हो?"

"मैं अपने को कम्यूनिस्ट मानता हूं।"

"और कम्यूनिज्म में एक बीवी अपने खाविन्द को छोड़ सकती है।"

"मगर हिन्दुस्तान में अभी कम्यूनिज्म रायज नहीं हुआ।"

"हम हिन्दुस्तान की बात नहीं कर रहे। हम पार्टी की बात कर रहे हैं। पार्टी का मैम्बर होने के नाते तुम्हें अपनी बीवी को छोड़ जाने की इजाज़त देनी चाहिए।"

"मगर मुल्क के कानून की रूह से ही मैं अपना हक उस पर रखता हूं।"

168008
Gurukula ... ridwar
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हें पार्टी हुक्म देती है कि तुम अपना दावा अपनी बीवी पर से छोड़ दो। इस दावे से पार्टी में हिन्दू-मुसलमान मैम्बरों में मतभेद उत्पन्न हो जाएगा। इस कारण पार्टी इसमें तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती।"

"मगर पार्टी का यह असूल है कि हम मुखालिफों में फूट डलवाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। इस मुल्क के हिन्दू-मुसलमान दोनों हमारे मुखालिफ हैं और हमारे मैनिफैस्टो के मुताबिक जहां भी किसी जगह पर झगड़ा हो तो कमजोर पक्ष की मदद करनी चाहिए। जिससे विरोधी कैम्प में फूट और दुर्बलता उत्पन्न हो।"

"परन्तु इस मुल्क में होने वाले झगड़े में हम न तो हिन्दुओं का पक्ष लेना चाहते हैं, न मुसलमानों का। यहां स्वराज्य मिल रहा है और मुल्क का बंटवारा हो रहा है। हम किसी की भी हिमायत करना नहीं चाहते।"

"मगर हम चाहते हैं," करीमबख्श का कहना था, "कि देश के टुकड़े हों और दो नहीं बल्कि कई टुकड़े हों। इस कारण मेरा मुसलमानों का पक्ष लेना पार्टी की आधारभूत नीति के मुताबिक ही है।"

इस प्रकार करीमबख्श के बयान के लिए गये और पौलिट-ब्यूरो में बहस हुई और वहां से हुक्म आया—

"करीमबख्श की नीति को स्वीकार किया जाता है। परन्तु कम्यूनिस्ट पार्टी इस नीति से प्रत्यक्ष में सम्बन्ध नहीं रखना चाहती। इसलिए करीमबख्श पार्टी का सैक्रेटरी नहीं रह सकता है। इस पर भी पार्टी की तरफ से इसकी बीवी को हिन्दू होने से रोकने में सहायता दी जाए।"

इस फैसले से करीम की जिन्दगी में दो प्रकार के प्रभाव उत्पन्न हुए। एक तो वह पार्टी के सैक्रेटरीशिप से हटा दिया गया। वह एक सामान्य टिकट-होल्डर रह गया और उसे दिल्ली छोड़ देने के लिए कहा गया।

इस पर भी लाहौर हाईकोर्ट में मुकद्दमे में पार्टी की ओर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील भेजे गए। वे इस हिन्दू-मुसलमान झगड़े में अपनी टांगें अड़ाने के लिए जा पहुंचे।

एक बंगाली वकील सुरेशचन्द्र दास लाहौर हाईकोर्ट में आया। उसकी अर्जी यह थी कि क्योंकि शादी के वक्त नरगिस मुसलमान थी और उसने शरअ के मुताबिक खाविन्द के मातहत रहने का वचन दिया था, इस कारण उस समय के वचन के मुताबिक ही उसको अमल करने पर विवश करना चाहिए।

लाहौर के एक बैरिस्टर उष्णकराय नरगिस की तरफ से पेश हुए और उन्होंने यह कहा कि इससे औरत की कुदरती आजादी छिन जाएगी। उसका प्रश्न था कि क्या मुसलमान औरत इन्सान नहीं है?

तीन दिन तक बहस जारी रही और अन्त में हाईकोर्ट की फुल बैंच के ग्यारह जजों में से आठ का यह निर्णय हुआ कि मज़हब बदलने पर औरत खाविन्द को छोड़ना चाहे तो कानून उसे खाविन्द न छोड़ने पर मजबूर नहीं कर सकता। कानून औरत को मजबूर करने पर औरत की मज़हबी आजादी को छीनने वाला हो जायेगा।

औरत तलाक की अर्जी कर सकती है, जो मुसलमान रहते हुए उसे करने की इजाज़त नहीं। परन्तु तलाक की वज़ह बतानी पड़ेगी। कोई ऐसी वजह जो कानून से जायज़ हो।

हाईकोर्ट के इस फैसले से मुकद्दमा पुनः पहली अदालत में आ गया।

नरगिस के वकील ने अपने मुवक्किल की अर्जी पर ज़ोर दिया कि मुसम्मात नरगिस तलाक देना नहीं चाहती। वह केवल खाविन्द से पृथक् रहना चाहती है। उसमें कारण मज़हबी है। नरगिस ला-मजहब है और उसका खाविन्द कट्टर मुसलमान है और शरअ के जोर-ज़ुल्म उस पर चलाना चाहता है।

यह बात करीम की प्रथम अर्जी से साबित कर दी गयी जिसमें उसने शरअ के मुताबिक अपनी बीवी पर हक-हकूक की मांग की थी। इस कारण करीम का दावा न-मंजूर कर दिया गया।

करीम ने सेशन-कोर्ट में अपील कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेशन-कोर्ट में नरगिस के वकील ने करीम के बयान अदालत में दिए जाने की मांग की। परन्तु सैशन-जज का कहना था, "मौजूदा कानून के मुताबिक सरकार किसी भी शख्स को किसी भी मज़हब में रहने के लिए मजबूर नहीं कर सकती।"

: ४ :

नरगिस और करीमबख्श का मुकद्दमा आरम्भ हुआ था फरवरी १९४६ में। यह समाप्त हुआ दिसम्बर १९४६ में। इस बीच में १९४६ में हिन्दुस्तान की राजनीतिक अवस्था में भारी अन्तर पड़ चुका था।

सन् १९४६ में वायसराय ने ब्रिटिश सरकार के कहने पर यह घोषणा की थी कि वायसराय की कौंसिल में हिन्दुस्तान के राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि लिये जायेंगे। कौंसिल के दस सदस्य होंगे और ग्यारहवें वायसराय होंगे जो इस कौंसिल के अध्यक्ष होंगे। इनमें पांच हिन्दू कांग्रेस के प्रतिनिधि होंगे और पांच मुसलमान मुस्लिम लीग, पंजाब और सीमा प्रान्त के प्रतिनिधि होंगे।

इस घोषणा से हिन्दू-मुसलमानों को बराबर के प्रतिनिधि मिले। परन्तु गांधीजी ने पांच प्रतिनिधियों में चार हिन्दू और एक मुसलमान का नाम प्रस्तावित कर दिया। इससे मुसलमान छः हो गए और हिन्दू चार रह गए।

जिन्ना, जो मुस्लिम लीग का प्रधान था, चाहता था कि पांचों-के-पांचों मुसलमान सदस्य मुस्लिम लीग के हों और कांग्रेस को किसी मुसलमान को चुनने का अधिकार न दिया जाए।

जिन्ना का यह दावा था कि मुसलमान मुस्लिम लीग के पीछे हैं और गांधीजी का दावा था कि कांग्रेस हिन्दू-मुसलमान दोनों की प्रतिनिधि संस्था है।

अतः दोनों नेताओं के कथनों की परीक्षा के लिए लेजिस्लेटिव असेम्बली के चुनाव कराए गए। इन चुनावों में मुसलमान मत-दाताओं के ९४ प्रतिशत मत मुस्लिम लीग को पड़े और शेष छः प्रतिशत के लगभग मत मुस्लिम लीग के अतिरिक्त अन्य मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्याशियों को पड़े।

अतः गांधीजी का दावा रद्द हो गया कि कांग्रेस हिन्दू-मुसलमान, दोनों का प्रतिनिधित्व करती है। वायसराय मानने पर विवश हो गया कि मुसलमान मुस्लिम लीग के साथ हैं। उसने अन्तरिम सरकार बनाने में मुस्लिम लीग और कांग्रेस को निमंत्रण दे दिया।

मुस्लिम लीग ने एक शर्त पर अन्तरिम सरकार बनाना स्वीकार किया कि वे संविधान सभा में नहीं आयेंगे। वे अपना पृथक् देश चाहते हैं और उसकी पृथक् संविधान सभा बनायेंगे।

इसपर कांग्रेसियों ने अन्तरिम सरकार बनायी। उन्होंने मुसलमान भी सम्मिलित किए, परन्तु मुस्लिम लीग से बाहर के।

इससे चिढ़कर मुस्लिम लीग ने 'डायरेक्ट ऐक्शन' डे, मनाया।

डायरेक्ट-ऐक्शन डे लाहौर में तो सफल नहीं हुआ, परन्तु कलकत्ता में तीन दिन के बलवे में दो हजार से ऊपर हिन्दू-मुसलमान मारे गये, करोड़ों रुपयों की कीमत की सम्पत्ति फूँक डाली गयी।

कुछ दिन पीछे नोआखली में हिन्दुओं का कत्ले-आम किया गया। वहां कितने मारे गए, इसका हिसाब-किताब नहीं मिला।

इन झगड़ों की गूँज पंजाब और फिर चौधरी के गांव में भी पहुंची। लाहौर से निकलने वाले 'प्रताप' समाचार पत्र में कलकत्ता और नोआखली की खबरें छपती थीं और यह समाचार पत्र सायंकाल झुनझुन टीकड़ी में पहुंचता था। इस कारण गांव के सजग हिन्दू हवेली में अखबार सुनने के लिए एकत्रित हो जाते थे।

कर्मचन्द अभी लाहौर में ही था। अखबार आता तो परमानन्द बाबा को सुनाने पहुंच जाता। गांव के बीस-तीस युवक और राजनीति में रुचि लेने वाले भी अखबार सुनने आया करते थे। प्रायः समाचार पत्र पढ़ते-पढ़ते अंधेरा हो जाया करता था।

एक दिन समाचार छपा कि "डायरेक्ट ऐक्शन" की लाहौर में असफलता के प्रतिकार में मुस्लिम लीग ने वहां की सरकार को पदच्युत करने के लिए पूरे पंजाब भर में सरकार के विरुद्ध प्रदर्शन करने आरम्भ कर दिये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब में जमींदार पार्टी की सरकार थी। इस सरकार में हिन्दू-मुसलमान दोनों के प्रतिनिधि थे। मुस्लिम लीग की हुड़दंगबाजी का विरोध हिन्दू नहीं कर सके।

अतएव सरकार को हटाने का आन्दोलन चलने लगा। ऐसा प्रतीत होने लगा था कि पूरे पंजाब की मुसलमान जनता जमींदार पार्टी के खिलाफ है।

जो हिन्दू इस पार्टी में थे, उनको कांग्रेस सहायता नहीं देती थी। परिणाम यह हुआ कि जनवरी सन् १९४७ के अन्त में मिनिस्ट्री ने त्यागपत्र दे दिया और सूबे में "गवर्नर-रूल" हो गया।

गवर्नर कांग्रेस का विरोधी था और प्राय: हिन्दू कांग्रेस के पक्ष में थे। अत: सरकार के त्यागपत्र देते ही पंजाब में हिन्दुओं का कत्ले-आम शुरू हो गया।

जब इस प्रकार के समाचार प्रताप अखबार में आने लगे तो टीकड़ी गांव में भी हलचल के लक्षण दिखाई देने लगे।

एक दिन समाचार पत्र पढ़ा जा रहा था। पत्र पढ़ते-पढ़ते अंधेरा हो गया तो मिट्टी के तेल का लैम्प जला दिया गया।

इस समय एक लड़का मोटूराम के पास आकर उसके घुटने पर हाथ रखकर बोला, "बाबा! आज इस गांव में भी लूट मचेगी।"

इस कथन पर मोटूराम ने घूमकर लड़के की ओर देखा। यह करीम का लड़का मजीद था।

"मजीद! कैसे कहते हो?" मोटूराम ने पूछ लिया।

"मां ने कहकर भेजा है।"

मोटूराम इस बात की आंशका तब से ही कर रहा था, जब सन् १९४० में मुस्लिम लीग ने यह प्रस्ताव किया था कि मुसलमान अपने लिए एक पृथक् देश चाहते हैं और वे उस देश का नाम पाकिस्तान रखेंगे।

मोटूराम यह भी सुन चुका था कि पंजाब पाकिस्तान में जाएगा। इससे वह समझ रहा था कि उसको भी गांव से बाहर कर दिया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब पंजाब के भिन्न-भिन्न भागों में हिन्दुओं का कत्ल होने लगा तो उसे मजीद के समाचार का अर्थ समझ आ गया। वह समझ गया कि वहां रात के वक्त मुसलमान सोये-सोये हिन्दुओं का कत्ले-आम करेंगे। मजीद की मां को यह समाचार किसी प्रकार मिला होगा और उसने यह समाचार उसको भेजा है।

मोटूराम ने गांव की शिकारी-क्लब के सदस्यों को हवेली में बुलाकर एक योजना बना ली। उसका कहना था, "मुसलमानों के आक्रमण की प्रतीक्षा अपने घर में बैठकर करने के स्थान मैं उनके स्थान पर आक्रमण करना उचित समझता हूं। इसीसे हम अपनी रक्षा कर सकेंगे।

"मुझे यह भी पता चला है कि आज आखिरी बस में गांव के बाहर के तीस-चालीस मुसलमान आये हैं और वे सबके सब अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हैं। ये सब मुसलमान बस के अड्डे के पास की सराय में आराम कर रहे हैं।"

शिकारी-क्लब मोटूराम ने सन् १९४१ में बनायी थी। उसे तीन बन्दूकों का लायसेंस मिला हुआ था। इसके अतिरिक्त चौधरी ने पटियाला और नाभा से बिना लायसेंस के बंदूकें खरीद रख रखी थीं। पिछले छः वर्ष से मोटूराम निरन्तर कारतूस भारी मात्रा में खरीद रहा था। अतः उसने अपनी हवेली का शस्त्रागार शिकारी-क्लब के सदस्यों के लिए खोल दिया। सब बंदूक चलाना तो जानते थे, इस कारण वे लायसेंस वाली और बिना लायसैंस की बन्दूकें लेकर अन्धेरे में वहां जा पहुंचे जहां बाहर से आये लोगों का खाना-पीना हो रहा था।

इन्होंने उन सबको घेरकर चारों ओर से उनपर गोलियों की वर्षा आरम्भ कर दी।

केवल दस मिनट लगे सराय में शान्ति होने में। अब मोटूराम ने वहां से भाग जाना उचित समझा। जो बिना लायसेंस की बन्दूकें थीं, वे तुरन्त पड़ोस के गांव में भेज दी गयीं और हवेली में तीन बन्दूकें और एक सौ के करीब कारतूस रहने दिए गए।

रात के दस बजे के लगभग पुलिस हवेली पर आयी। थानेदार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सैय्यद अमीर अली था और साथ में पुलिस के दस-बारह सिपाही थे।

मोटूराम उनके आने की प्रतीक्षा में ही था। उनके आने की सूचना भीतर आते ही वह बाहर आया और थानेदार से पूछने लगा, "सैय्यद साहब ! कैसे आना हुआ है ?"

"आपने गोलियां चलने की आवाज सुनी है ?"

"हां, सुनी है।"

"तो रिपोर्ट क्यों नहीं की ?"

"सिर्फ इसलिए कि गोलियां हमारी हवेली पर नहीं चली थीं। दूर बस-स्टैण्ड की तरफ किसी किस्म का शोर था।"

"हम आपकी रिश्तेदार औरतों के घर पर गए थे। वहां कोई नहीं है। घर को ताला लगा है। वहां के संरक्षक सिपाही यहां हवेली की ड्योढ़ी में सो रहे हैं। उनसे पता किया है कि आप भीतर सो रहे हैं।"

"तो फिर ?"

"जितनी बन्दूकों के चलने की आवाज़ थी, उतनी बन्दूकें तो गांव में हैं नहीं ?"

"तो उनके पास होंगी जो आज सायंकाल बस में आये थे ?"

"मैं वहां गया था। पैंतालीस लोग थे। उनमें पन्द्रह तो मर चुके हैं। शेष सब घायल हुए हैं। उनको मैं अड्डे पर खड़ी बस में डालकर नगर के हस्पताल में भेज रहा हूं। हमें एक घायल ने बताया है कि उनको हुक्म था कि तीन मुसलमान औरतों और दो बच्चों को यहां कैद से छुड़ाने वे आये हैं।

"इस समाचार पर मैं उन मुसलमान औरतों के घर गया था। वहां मकान को ताला लगा देख ही मैं यहां आया हूं।"

"औरतें तो हमारे घर में हैं। वे पहले भी कभी-कभी यहां आया करती थीं। आज भी यहां हमारी औरतों के साथ सो रही हैं।"

थानेदार ने मोटूराम के बयान लिखकर जिलह नगर में भेज दिए। साथ ही लाशों तथा घायलों को भी भेजवा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणामस्वरूप अगले दिन दस बजे के लगभग डिप्टी-कलेक्टर जांच करने गांव में पहुंच गया। डिप्टी-क्लेक्टर मुसलमान था। उसने आते ही मोटूराम से बन्दूकें मांगीं। वह दे दी गयीं। उनपर सरकारी अधिकार हो गया।

मोटूराम के बयान हुए। उसने अपने रात के थानेदार को दिये बयान दुहरा दिये। मरने वालों और घायलों पए दो-सौ के लगभग गोलियों के लगने के निशान थे। केवल तीन बन्दूकों से इतने कम काल में इतनी गोलियां नहीं चल सकती थीं। मगर शेष बन्दूकें मिली नहीं।

थानेदार से भी डिप्टी कलेक्टर ने पूछा कि वे गोली की आवाज सुनकर मौका पर क्यों नहीं पहुंचा तो उसने मौखिक बयान दे दिया कि बड़े साहब (डिप्टी कमिश्नर) का हुक्म था कि मुझे गोलियों की आवाज सुन थाने से बाहर नहीं आना चाहिए। मैंने आवाज तो सुनी थी, मगर मैंने सब सिपाहियों को हुक्म दे दिया कि बाहर जा इस झगड़े में दखल देने की जरूरत नहीं है।

"मैं यह समझ गया था कि गांव से बाहर के लोग गांव वालों पर गोलियां चला रहे हैं। इस कारण मैं हुक्म बजाता हुआ थाने में बैठा गोली बंद होने की इन्तजार करता रहा।

"गोलियों की आवाज बंद होने के दस मिनट बाद मैंने एक सन्तरी को भेज पता करना चाहा कि क्या हो गया है। वह खबर लाया कि बस के पास ठहरे लोगों पर गोलियां चली हैं और उनमें से कई मर गए हैं और बहुत से घायल पड़े हैं।

"इस खबर पर मैं वहां पहुंचा और पीछे की बात मैंने अपने रोजनामचे में लिखकर भेज दी है।

"कैम्प के एक घायल से पता चला है कि उनका नेता एक करीमबख्स था। वह उनको लेकर गांव में आया था। मगर उसकी न तो लाश मिली है, न ही वह घायलों में है।"

चौधरी मोटूराम ने जिलह शहर में पहुंच अपनी बन्दूकों के वापस मिलने की अर्जी कर दी।

उसे अपनी एक बन्दूक और पिस्तौल मिल गयी, मगर शिकारी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लब की अन्य बन्दूकें वापस नहीं मिलीं।

इसपर भी क्लब तो बनी रही। उनके पास बिना लायसेंस के दस बन्दूकें थीं।

जिलह के गांव भुनभुन टीकड़ी का यह समाचार शहर में विख्यात हो गया और परिणामस्वरूप गांव-गांव और नगर के मुहल्ले-मुहल्ले में हिन्दू संगठित होने लगे।

यह घटना हुई थी सन् १९४७ की अप्रैल चौदह और पन्द्रह तारीख की मध्य रात्रि में। बन्दूकों का झगड़ा और उनके विषय में चाराजोई करते हुए हो गयी मई की पांच तारीख। डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर से अन्तिम आज्ञा कि शिकारी-क्लब की बन्दूकें नहीं मिलेंगी, लेकर चौधरी मोटूराम गांव को लौटने से पूर्व अपने श्वसुर रलाराम से मिलने गया तो कर्मचन्द भी वहां मिल गया।

"तो तुम आ गए हो ?" चौधरी ने पूछा।

"हां, पिताजी ! कॉलेज बन्द हो गया है। हमारी परीक्षा नहीं होगी। इसकी तारीख पीछे घोषित की जाएगी।"

"और तुम कैसे आये हो ?"

"लाहौर में तो दंगा हो रहा है। वहां एक हिन्दू मुहल्ले शाह-आलम दरवाजे को पिछली रात फूंक दिया गया है और हिन्दुओं में भगदड़ मच गयी है।"

"तुमने आकर अच्छा ही किया है।"

"नानाजी मुझे अपनी मोटर-गाड़ी में गांव भेज रहे थे कि आप तांगे में आते दिखाई दे गए हैं।"

"तो मोटर जा रही है ?"

"अब आपके आ जाने पर वह जाएगी अथवा नहीं, कह नहीं सकता। भीतर चलिए, पता करता हूं।"

रलाराम और कर्मचन्द की नानी बैठक में खड़े हो ड्राइवर को पैट्रोल के लिए दाम दे रहे थे कि मोटूराम कर्मचन्द के साथ वहां आ पहुंचा।

"ओह ! कसे आए हो चौधरी ?"

"बंदूकों की वापसी के लिए आया था। डिप्टी कमिश्नर ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जी नामंजूर कर दी है।"

"तब ?"

"कुछ नहीं। हमारे गांव में मोर्चा वैसा ही सुदृढ़ है। गांव के मुसलमान भाग रहे हैं।"

"मैं कर्मचन्द को अपनी मोटर में गांव भेज रहा था। तुम भी उसमें जा सकते हो। तांगा यहां ही छोड़ दो। यह कल प्रातः-काल भेज दिया जायेगा।"

इस प्रकार बात निश्चय होने पर, तांगे के कोचवान को घोड़े के लिए दाने और उसके अपने खाने-पीने के लिए दो रुपये देकर मोटूराम कर्मचन्द के साथ मोटर में जाने के लिए तैयार हो गया। मोटर ड्राइवर आया तो कर्मचन्द अपनी पुस्तकों और कपड़ों का संदूक मोटर में रख, पिताजी के मकान से बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगा। इस समय फटे-पुराने कपड़ों में एक भीख मांगने वाला कर्मचन्द के पास आ बोला, "बाबू ! मुझे भी गांव ले चलो।"

"कौन से गांव को ?" कर्मचन्द ने पूछा और प्रश्नकर्त्ता की ओर ध्यान से देखने लगा। भीख मांगने वाला मुस्करा रहा था। कर्मचन्द देखते ही उसे पहिचान गया। यह करीमबख्श था।

कर्मचन्द को गांव की घटना और उसमें करीमबख्श के भाग-कर बच जाने का ज्ञान नहीं था। इस कारण उसने पूछा, "दादा ! यह क्या सूरत बनायी है ?"

"कहो तो मोटर में बैठ जाऊं ? मार्ग में सब बात बता सकूंगा।"

"तो पिताजी को आने दो।"

पिता की बात सुन वह बोला, "तो चौधरी भी आए हुए हैं ?" इतना पूछ करीम वहां से टल जाने के लिए घूमा, परन्तु इस समय तक मोटूराम करीम के पीछे आ खड़ा हुआ था। मोटूराम ने जेब में कुछ देने के लिए हाथ डाला कि कर्मचन्द ने कह दिया, "पिताजी ! पहचाना नहीं। यह दादा करीमबख्श है।"

"ओह !" मोटूराम ने जेब में जाते-जाते हाथ को बाहर निकाल करीम को बांह से पकड़ लिया। करीम भाग नहीं सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहां घूम रहे हो करीम ! पुलिस में तुम्हारी खोज हो रही है ?"

करीम ने बात बदल कर कहा, "मैं कर्मचन्द से कह रहा हूं कि मुझे भी गांव में ले चले।"

"बैठो। ले चलेंगे।"

"शुक्रिया।" कह वह मोटर के आगे चौधरी की पकड़ से भागने का मार्ग देखने लगा। मोटूराम चाहता था इसे गांव के थाने में ले चले। इस कारण उसने उसे छोड़ा नहीं। उसकी बांह को और भी मज़बूती से पकड़ लिया।

चौधरी ने उसे अपने और कर्मचन्द के बीच में बैठा ड्राइवर को कहा, "चलो।"

"चौधरी !" करीमबख्श ने कहा, "मैं अम्मी से सुलह करने जा रहा हूं।"

"और मैं इसमें तुम्हारी मदद करने का विचार रखता हूं। मगर…।" मोटूराम कहता-कहता रुक गया।

"मगर क्या चौधरी ?" करीमबख्श ने पूछ लिया।

"यही कि पहले थाने में तुम्हें हाज़िर करना होगा। वहां तुम्हारी इन्तज़ार की जा रही है।"

"तब मुझे उतार दीजिए। मैं थाने में जाना नहीं चाहता। मुझे मालूम है कि वहां मेरे वारण्ट हैं।"

"तब भी तुम गांव में जाना चाहते हो ?"

"हां ! मैं अम्मी से मिलना चाहता हूं।"

"उससे क्या काम है ?"

"वह उसी को बताने का है।"

"तब मैं तुमसे इतनी रियायत कर सकता हूं कि तुमको पुलिस के हवाले न करूं। हां, यदि तुम्हारी अम्मी ने ही तुमको पुलिस के हवाले कर दिया तो मैं जिम्मेदार नहीं।"

"नहीं, वह नहीं करेगी। उस दिन भी, जिस दिन हमने गांव पर धावा बोला था, मैं उसे बचाने के लिए कैम्प से उसके घर को गया था। मेरे वहां पहुंचने से पहले ही आप लोगों ने कैम्प पर धावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल दिया।

"मैं मकान पर जाने की बजाय लौटा तो आप लोग ऐक्शद समाप्त कर हवेली को लौट रहे थे। मैं अपना पूर्ण प्लान फेल होते देख वहां से पैदल चलकर ही शहर को चला आया था।"

मोटूराम उसके उस रात वाली गोलीकाण्ड से बच कर निकल जाने की बात समझ चुप कर गया। बहुत देर तक वह चुपचाप करीम का मुख देखता रहा।

गाड़ी गांव के समीप पहुंच रही थी और निर्णय लेना आवश्यक था। चौधरी ने मन में निश्चय कर कहा, "करीम! तुमने अपराध तो बहुत बड़ा किया था, परन्तु मैं तुमसे अपने पुराने सम्बन्धों के कारण तुम्हें थानेदार के हवाले नहीं करूंगा। तुम्हारा अपनी अम्मी से मिलने का प्रबन्ध भी करा दूंगा। मगर तुमको रात को ही गांव से चले जाना चाहिए। यदि तुम दिन चढ़ने पर भी गांव में रहे और पकड़े गए तो मैं जिम्मेदार नहीं होऊंगा।"

"मैं रात ही अम्मी से मिलकर चला जाऊंगा।"

"तब ठीक है।"

: ५ :

मोटर हवेली में पहुंची तो करीम ने पूछा, "तो आजकल वह यहां ही रहती हैं?"

"हां! वह अपने सारे परिवार के साथ यहीं रहती हैं।"

"तो आपने उस पर चादर डाल ली है?"

मोटूराम मोटर से उतरते हुए बोला, "बेवकूफ हो तुम! वह मेरी समधिन है। समधिन बहन होती है। मैं तुम्हारी तरह पागल नहीं हूं।"

"मगर हमारी शरअ में इसकी इजाज़त है।"

"हां! अगर हम किसी बाजार चलती औरत को भी बहन कह देते हैं तो वह हमारे लिए हराम हो जाती है।"

"तो यह कोई अच्छी बात है?"

इस समय मोटूराम और करीमबख्श हवेली में जा पहुंचे। कर्मचन्द अपना सामान मोटर से उतार रहा था। ड्राइवर उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता कर रहा था।

भीतर मोटर के आने की आवाज़ पहुंची तो सबने यही समझा कि कर्मचन्द के नाना के घर से कोई आया है। इस कारण सौभाग्यवती और परमानन्द इत्यादि बच्चे हवेली के द्वार पर आ पहुंचे।

सौभाग्यवती पुत्र के साथ किसी अपरिचित व्यक्ति को देख ठिठक कर खड़ी हो गयी। बात मोटूराम ने ही की। उसने कहा, "यह करीमबख्श है। अपनी अम्मी से मिलने आया है।"

"तो इसे यहां ले आये हो? सोहनी बहन तो इससे थाने में ही मिलना पसन्द करेगी।"

"यही तो देखना है।" मोटूराम ने कहा और हवेली के बैठक घर में जाते हुए बोला, "करीम! बताओ यहां मिलना चाहते हो अथवा थाने में?"

"चौधरीजी! यह अम्मी से ही पता कर लें।"

सौभाग्यवती तो भीतर सोहनी के कमरों को समाचार देने चली गयी। रामी भी द्वार पर आयी थी। मोटूराम ने उसे कहा, "रामी बहन! चाय बना लाओ।"

रामी गयी तो बैठक में बैठ करीम ने हंसते हुए पूछ लिया, "तो यहां सब बहनें ही हैं। कोई भाई नहीं?"

मोटूराम हंस पड़ा और बोला, "वे भी हैं। वे अपने काम पर लगे हैं। अभी बाहर बाबाजी से मिलने आयेंगे और छाजन के नीचे मजलिस लग जाएगी।"

करीम इस बात का अभिप्राय समझ ही रहा था कि सोहनी, फातिमा और नरगिस तीनों ही चली आयीं।

नरगिस ने बैठक में प्रवेश करते हुए कहा, "आप यहां किस लिए आए हैं? बाबा को पता चला तो पुलिस को बुला लेंगे।"

करीम के उत्तर देने से पूर्व ही फातिमा ने कहा, "सूरत-शक्ल से तो भाईजान पश्चात्ताप करते प्रतीत होते हैं?"

सब बैठ गए। चौधरी के घर में अभी भी फर्श पर दरी तथा चादर बैठने के लिए बिछी थीं। बैठते हुए करीम ने कहा, "अम्मी! चौधरीजी ने चाय मंगवाई है। वह पीकर आपसे अलहदा बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने आया हूं।"

सोहनी ने मोटूराम की ओर देखा तो वह यह कहकर कि वह बाबा से मिलने जा रहा है, बाहर निकल गया।

"हां, अब बताओ! क्या बीवी से भी चोरी कुछ कहने आए हो ?"

"पर यह अभी भी बीवी है क्या ?"

"बीवी तो हूं," नरगिस ने कहा, "मगर रूठी हुई। कचहरी ने तो सिर्फ यह फैसला दिया है कि रूठी हुई बीवी से आप एक मुसलमान शौहर की तरह जबरदस्ती नहीं कर सकते। यह इसलिए कि मैं मुसलमान नहीं रही।"

"ठीक है," करीमबख्श ने कहा, "मैं भी कुछ ज़बरदस्ती करने नहीं आया। मैं तुमको एक खबर देने आया हूं। उसकी रौशनी में मैं एक राय देने आया हूं।"

इस समय रामी ट्रे में तीन आदमी के लिए चाय बना ले आयी। तीन प्याले लगे थे। इस पर सोहनी ने पूछ लिया, "यह किन-किन के लिए हैं ?"

"भाईजान के लिए, छोटे चौधरीजी के लिए और भैया कर्मचन्द के लिए।"

"तो वह भी आए हैं ?" फातिमा ने लपक कर उठते हुए पूछ लिया।

"बाबा के चरण स्पर्श करने गए थे। मैं समझी थी कि छोटे चौधरी और वह भी यहां ही आ गये होंगे।"

"नहीं !" सोहनी ने कहा, "उनके लिए बाहर ही ले जाओ।"

फातिमा विचार ही कर रही थी कि वह कर्मचन्द से मिलने बाहर जाए अथवा नहीं कि करीमबख्श ने कह दिया, "फातिमा ! बैठो। मेरी बात सुनती जाओ। इसका ताल्लुक तुमसे भी है।"

फातिमा अनिश्चित मन खड़ी थी। इसपर सोहनी ने कह दिया, "बैठो फातिमा ! इसकी बात सुन लो। कहीं पुलिस में खबर गयी तो यह पकड़ लिया जाएगा।"

फातिमा बैठ गयी तो करीम ने प्याला जो रामी उसके सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रख गयी थी, उठा सरूकी लेते हुए कहा, "वायसराय हिन्द बदल गए हैं। जो नये वायसराय आए हैं वह शाही खानदान से ताल्लुक रखते हैं। इसलिए हम सब मुसलमान यह उम्मीद लगाए हुए हैं कि वह हिन्दुस्तान की जड़ों में तेल देकर ही यहां से जायेंगे।

"इसलिए हम सब यह उम्मीद कर रहे हैं कि हिन्दुस्तान का बंटवारा होगा। उस बंटवारे में जो कुछ हम मुसलमान मांगते हैं, वह और शायद उससे भी ज्यादा हमें मिलेगा।

"पंजाब सारा का सारा यमुना तक का इलाका पाकिस्तान में जाएगा। हमारी मांग यह है कि सारा बंगाल भी पाकिस्तान में हो और पाकिस्तान के दोनों टुकड़ों को जोड़ने के लिए दोनों में एक सौ मील चौड़ी पट्टी भी हमें मिले। हम मौजूदा वायसराय से यह सब कुछ चाहते हैं?

"इसलिए जिला होशियारपुर पाकिस्तान में आएगा। इसमें शक नहीं। अब तुम बताओ कि यहां रहोगी या कटे-फटे हिन्दुस्तान में?

"अगर हिन्दुस्तान में रहना है तो यहां नहीं रह सकोगी। पाकिस्तान में एक भी हिन्दू नहीं रह सकेगा और यह इलाका पाकिस्तान में जाएगा। इस कारण वक्त रहते इसे छोड़ यमुना के पार चली जाओ।

"मेरी इस खबर को चौधरियों को बता सकती हो। उनको भी यह राय दे दो कि वक्त रहते-रहते इस गांव और सूबे को छोड़ यमुना पार चले जाएं, नहीं तो खैर नहीं। जो कत्ले-आम मुसलमानों का उस दिन यहां हुआ है, उसका बदला लेने के लिए मुसलमान नौजवान बेताब हो रहे हैं।"

नरगिस इस सूचना पर कुछ परेशान मालूम होती थी। जिन दिनों उसका मुकद्दमा दिल्ली की अदालत में चल रहा था, दिल्ली के सदर बाजार में दो ट्राम-गाड़ियों में हिन्दू सवारियों के कत्ले-आम किये जाने की खबर उसे मिली थी और एक भी कत्ल करने वाला पकड़ा नहीं गया था। इस कारण वह अपने खाविन्द के मुख से यह खबर सुनकर कि यहां भी हिन्दुओं का कत्ले-आम होगा, कुछ सहम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी थी।

फातिमा ने अम्मी के उत्तर देने से पहले ही कह दिया, "भाईजान! बस, यही या कुछ और भी है ?"

"हां, और यह है कि तुमने किसी मुसलमान की सरपरस्ती इख्तयार करनी है तो कल सुबह ही मेरे साथ चलना चाहिए। यह चौधरियों का परिवार उस फहरिस्त में है, जिसका खात्मा पहली ही पारी में होना है। मई महीने के खत्म होने से पहले ही यह हवेली छोड़ दो।"

सोहनी ने कहा, "इस तुम्हारी खबर पर हम गौर करेंगे और जल्दी ही कुछ फैसला कर लेंगे। तुम अपनी बात बताओ कि तुम थाने में जाना चाहते हो या वापस होशियारपुर जाना चाहते हो ?"

"अगर तो रात भर यहां इस हवेली में पनाह मिल सके तो ठीक, नहीं तो मैं होशियारपुर के लिए पैदल ही चल दूंगा। मैं थका हुआ तो बहुत हूं। मगर जान बचाने के लिए यहां से भागूंगा ही।"

"यह बात तो यहां के मालिकों से पूछ कर ही बता सकती हूं।"

"हां, पता कर लो और अपनी बाबत भी फैसला कर लो। वक्त बहुत कम है। आज बीस मई हो चुकी है। कुछ-न-कुछ फैसला जून की पहली तारीख तक होना जरूरी है। यही ब्रिटिश सरकार का हुक्म है।"

सोहनी उठ छोटे चौधरी से राय करने के लिए बैठक से बाहर निकल गयी। वह रामी को भेजकर उसे भीतर बुलाने वाली थी।

अम्मी के जाते ही फातिमा ने कह दिया, "भाईजान! आपको हमारी फिक्र है इसलिए हमको सचेत् करने आए हैं ?"

"वह तुम देख रही हो कि यह जानते हुए भी कि यहां मेरा पकड़ कर जेल में डाल देना मुमकिन है, मैं आप लोगों को बताने चला आया हूं। यहां से अभी कुछ दिन के लिए लाहौर, बेहतर तो यह है कि मुलतान या करांची चली चलो। अपना जो कुछ भी है, वहां ही ले चलो।"

"भाईजान! मैं तो यह कहती हूं कि फल खाये जिस पेड़ के, जलें उसी के साथ। इस कारण मैं अपना फैसला अभी अम्मी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रलहदा बता देती हूं। मैं कल सुबह ही चौधरीजी के लड़के से शादी करने का इसरार करूंगी ग्रौर फिर इस चौधरी परिवार के साथ ही जियूंगी या मरूंगी।"

"तुम्हारे दिमाग में जो इश्क सवार है, वह शादी के दो-चार दिन बाद ठण्डा हो जाएगा। तब तुम सही दिमाग से सोच सकोगी।''

"जैसे ग्राप भाभीजान के विषय में सोच रहे हैं।"

"मैं इस बेवफा ग्रौरत की बात नहीं सोच रहा। मैं तो ग्रम्मी ग्रौर ग्रम्मी की बनायी लड़की के लिए जान-जोखम में डालकर ग्राया हूं। यह तो फाकेट में ही इसका फायदा उठाने जा रही है।''

"ठीक है!" नरगिस ने बात रोक कर कह दिया, "मैं भी जिस पेड़ पर बैठी हूं, उसके साथ जियूंगी या मरूंगी। बकाया ग्रम्मी को ग्राने दो। मैं उनके सहारे हूं।''

बात समाप्त हो गयी। फातिमा भी बैठक से बाहर निकल गयी। वह कर्मचन्द की खोज में चल पड़ी थी।

कर्मचन्द बाबा के चरण स्पर्श करने गया तो वहां डाकिया, 'प्रताप' ग्रखबार दे गया था। झींगुर परमानन्द को बुलाने के लिए गया हुग्रा था।

कर्मचन्द ने चरण स्पर्श कर नमस्ते कही तो बाबा ने कह दिया, "बहुत ग्रच्छा किया है जो तुम ग्रा गए हो। लाहौर में तो खुले-ग्राम जंग हो रहा मालूम होता है। एक तरफ मुसलमान ग्रौर सरकार है, दूसरी तरफ सिर्फ हिन्दू हैं।

"दो दिन हुए एक खबर थी कि एक चीमा के नाम के पुलिस ग्रफसर पर किसी ने बम्ब फेंका है। फिर खबर ग्रायी कि पुलिस की मदद से मुसलमानों ने एक हिन्दू मुहल्ला फूंक डाला है। कल की खबर है कि एक मुसलमान गांव सादियां वाला हिन्दुग्रों ने लूट लिया है।"

"मगर बाबा! वहां यह समझा जा रहा है कि लाहौर हिन्दुग्रों को खाली करना पड़ेगा। लाहौर में हिन्दू-मुसलमान बराबर-बराबर हैं ग्रौर सरकार निष्पक्ष रहे तो हिन्दू मुसलमानों को भगा देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर लाहौर में पुलिस मुसलमानों का साथ दे रही है। इसलिए हिन्दुओं का जो कार्य है, वह सुरक्षित ढंग से युद्ध क्षेत्र से वापस लौटने का सा है। बाबा! इसे योजनानुसार पीछे हटना कहते हैं।"

इस समय परमानन्द आया और सामाचार पत्र सुनाने लगा। गांव के बीस-पच्चीस युवक भी वहां एकत्रित हो गए थे और समाचार पत्र सुनने लगे थे।

इस समय रामी आयी और छोटे चौधरी से कहने लगी, "फातिमा की अम्मी बुला रही हैं।"

कर्मचन्द ने भी रामी का संदेश सुना तो वह भी पिता के साथ हवेली में जा पहुंचा।

सोहनी द्वार पर खड़ी थी। कर्मचन्द ने अम्मी की कदमबोसी की तो उसने प्यार दिया और कहा, "तुम आ गए हो। बहुत अच्छा किया है।"

"हां, अम्मी! अब मेरा लाहौर वापस जाने का इरादा नहीं है।"

तीनों एक बग़ल के कमरे में चले गए। वहां बैठ कर सोहनी ने करीम की बात बताई तो मोटूराम ने कहा, "बहन जी! करीम की बात गौर-तलब है। मगर जो कुछ भी हम फैसला करेंगे, वह करीम को बतायेंगे नहीं। इसलिए उसकी बात सुन लो और उसे यहां से चल देने के लिए कह दो।"

"मगर वह कहता है कि इस वक्त वह बहुत थका हुआ है और अब कोई बस जाने का वक्त है नहीं।"

"इसका इन्तज़ाम मैं कर दूंगा। देखो बहन! उसे यहां बुला लाओ। मैं उसकी खबर के लिए उसका शुक्रिया अदा कर दूंगा और उसको होशियारपुर पहुंचाने का बन्दोबस्त कर दूंगा। ड्राइवर अभी खाना खा रहा है। मोटर वापस जाएगी। उसी में भेज दूंगा।"

सोहनी बात बता कमरे से निकलने वाली ही थी कि फातिमा आ गयी।

"क्यों?" अम्मी ने पूछा, "किधर जा रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अम्मी ! आपके दामाद के चरण स्पर्श करने।"

"वह वहीं कमरे में है।" इतना कह फातिमा को कमरे के द्वार पर छोड़ सोहनी बैठक घर में प्रवेश करती-करती रुक गयी। करीम और नरगिस परस्पर बग़लगीर हो रहे थे। सोहनी ने खांसा तो नरगिस करीम को दूर धकेल पीछे हट, भूमि की ओर देखती हुई चुप बैठ गयी।

सोहनी ने कहा, "तो तुमने करीम के साथ जाने का फैसला कर लिया है ?"

नरगिस ने उत्तर दिया, "नहीं अम्मी ! यह तो आपके साहबजादे ज़बरदस्ती कर रहे थे। मैं तो कह भी रही थी कि चौधरी किसी भी वक्त आ सकते हैं, मगर यह माने ही नहीं।"

सोहनी ने मुस्कराते हुए कहा, "करीम ! बाहर छोटे चौधरी तुम्हारी खबर के लिए तुम्हारा शुक्रिया अदा करना चाहते हैं।"

"यह होना ही चाहिए। कहां हैं वह ?"

सोहनी करीम को लेकर उस कमरे में चली गयी, जहां मोटूराम, कर्मचन्द इत्यादि बैठे थे।

नरगिस अपनी दुर्बलता पर बहुत लज्जा अनुभव करने लगी थी। वह समझ रही थी कि यदि वह चाहती तो करीम उसे छू भी नहीं सकता था। वह अपनी लज्जा को छुपाने के लिए वहां से उठकर चल दी।

मोटूराम ने कहा, "करीमबख्श ! यह माउण्टबेटन की बेईमानी की खबर कहां से लाये हो ?"

"भापा ! बेईमान तो सब अंग्रेज हैं। कोई ज्यादा, कोई कम। कई बेईमानों को ही हम ईमानदार मानने लगते हैं। यह शाही खानदान से सम्बन्ध रखने वाला वायसराय प्राईम मिनिस्टर ऐटली की भांति सोच नहीं सकता। यह यहां आने के पहले विन्सेण्ट चर्चिल से राय कर आया है। चर्चिल तो कयामत तक भी हिन्दुस्तान को आजाद न करने की बात कर रहा था।"

"आज तो तुम बहुत अक्लमन्दों की सी बातें कर रहे हो ?"

"मैं मुस्लिम लीग की इन्तज़ामिया कमेटी का मैम्बर हूं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें कुछ दिन हुए जिन्ना साहब यह बात बता रहे थे। साथ ही उन्होंने कहा था कि मुल्क का बंटवारा मज़हब की बिना पर हो रहा है। यह बंटवारा भाई-भाई में नहीं है। यह दुश्मनों में बंटवारा है। जो कुछ हमें मिल रहा है, वह हम मजबूरी में मंजूर कर रहे हैं। उस पर हम सब्र नहीं करेंगे। हम जो कुछ हासिल करेंगे, उसको बढ़ाने की कोशिश करेंगे और उसका एक ही तरीका है। वह यह कि घर में दुश्मन को बैठे नहीं रहने देंगे।"

"मगर करीमबख्श! यह मुहम्मद अली जिन्ना कहां का मुसलमान है?"

"चौधरी साहब! जहां का मैं हूं। मैं भी इस्लाम पर ऐतकाद नहीं रखता। इस पर भी मैं मुसलमान हूं। जिन्ना भी ऐसा ही मुसलमान है, जैसा मैं हूं।

"हम कम्यूनिस्टों की दुश्मनी हिन्दुओं से है। हिन्दुओं का दिमाग सीधा करने के लिए हम मुसलमानों के साथ मिल गए हैं। वैसे ही जिन्ना साहब की हिन्दुओं से अपनी दुश्मनी है और उस दुश्मनी को निकालने के लिए वह मुसलामनों के लीडर बन गए हैं।

"गांधी और पण्डित जवाहरलाल और उसके पहले मोतीलाल ने जिन्ना साहब को सियासत से धकेल कर बाहर कर दिया था। इसका बदला लेने के लिए वह मुस्लिम लीग के सदर बन गए हैं।

"गांधी वगैरह ने जिन्ना और उसके साथियों से बदसलूकी सन् १९२०-२२ में की थी। उनकी पौलिटिकल जिन्दगी को बरबाद कर दिया था। ये गांधी-जवाहर वगैरह हिन्दुओं के लीडर हैं। इसलिए उन्होंने हिन्दुओं को नीचा दिखाने की जबरदस्त ख्वाहिश होने से हिन्दुओं की मुखालिफत करनी शुरू कर दी है।"

: ६ :

मोटूराम ने कहा, "करीम! तुम्हारी अम्मी कह रही है कि तुम बहुत थके हुए हो और रात में वापस होशियारपुर नहीं जा सकते। इसलिए मैंने तुमको होशियारपुर वापस मोटर में ले जाने के लिए ड्राइवर को कह दिया है।

"ड्राइवर भोजन कर रहा है। तुम भी खाना ले लो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने के बाद तुम तरोताजा होकर वापस जा सकते हो।"

"पर चौधरी !" करीमबख्श ने कह दिया, "मेरे साथ एक ग्रौर शख्स भी जाने को तैयार हो गया है।"

"कौन ?"

"फातिमा की भाभी नरगिस है।"

"मगर," सोहनी ने कह दिया, "वह तो कह रही थी कि तुम उससे ज़बरदस्ती कर रहे थे ?"

"ग्रम्मी ! सिर्फ उतनी ही जितनी एक खाविन्द ग्रपनी बीवी से करने का हक रखता है।"

"यही तो वह कह रही थी कि इसमें ही तुम जबरदस्ती कर कर रहे थे।"

"सोहनी बहन !" मोटूराम की मोटी बुद्धि ने बात समाप्त कर दी, "इस विषय में नरगिस ही बतायेगी की वह खाविन्द के साथ जाना चाहती है या नहीं। हमें इसमें दखल नहीं देना चाहिए।"

"फातिमा !" वह ग्रौर कर्मचन्द दोनों ग्रभी तक वहां खड़े थे। सोहनी ने फातिमा को कहा "जाग्रो, ग्रपनी भाभी को बुला लाग्रो। ग्रगर वह भी जाना चाहती है तो हम उसे मना नहीं करेंगे।"

फातिमा उसे बुलाने के लिए चली गयी। ड्राइवर भोजन कर ग्राया था। मोटूराम ने उसे कह दिया, "कुछ सवारियां यहां से गाड़ी में जायेंगी। उनको भी लेते जाग्रो। पन्द्रह-बीस मिनट लगेंगे।"

इस समय फातिमा ग्रकेली ग्रायी। उसके बताया, "भाभी ग्रपने कमरे को भीतर से बंद किये हुए बैठी है। वह कह रही है वह भाईजान के साथ नहीं जा रही।"

मोटूराम ने प्रश्नभरी दृष्टि में करीम की तरफ देखा तो उसने कह दिया, "उसे यहां के लज़ीज खानों की याद ग्रा गयी है। वरना ग्रभी-ग्रभी वह मेरे साथ जाने को तैयार थी।"

"ठीक है ! ग्रब तुम खाना खा लो ग्रौर चल दो। यहां रहना ठीक नहीं। बाहर बाबा की मजलिस में यह बात हो रही थी कि तुम भीतर हवेली में हो। उनमें से कोई भी थाने में खबर दे सकता है ग्रौर फिर तुम्हें छुड़ाना मुश्किल हो जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात ने करीम को वहां से चले जाने पर मजबूर कर दिया। उसने भोजन किया और मोटर में बैठ चल दिया।

करीम की सूचना पर विचार प्रात: के अल्पाहार के समय हुआ। उस समय पूरा परिवार इकट्ठा चाय पानी लिया करता था।

प्रात: का अल्पाहार सात बजे होता था। अल्पाहार के बाद सब अपने-अपने काम पर चले जाया करते थे।

फातिमा पहले दिन का पाठ उस समय अपनी कापी पर लिखा करती थी। वह आजकल वेदान्त दर्शन पढ़ रही थी।

अल्पाहार लेते हुए बात मोटूराम ने आरम्भ की। उसने करीमबख्श की सूचना देकर कहा कि माउण्टबेटन इंग्लैण्ड की टोरी पार्टी का सदस्य है। यहां आने से पहले वह चर्चिल से मिलकर आया है। चर्चिल कांग्रेस और हिन्दुओं से सख्त नाराज है। वह भूल नहीं सकता कि जिस वक्त जंग बहुत ही नाजुक दौर पर था, उस समय गांधीजी, कांग्रेस और हिन्दुओं ने ब्रिटिश सरकार को सेंध लगा उड़ा देने का यत्न किया था। इसलिए, करीमबख्श का कहना है कि माउण्टबेटन हिन्दुओं को अधिक-से-अधिक हानि पहुंचाने का यत्न करेगा। माउण्टबेटन पूरा पंजाब, पूरा बंगाल, सीमा प्रान्त और सिन्ध मुसलमानों को देना चाहता है। साथ ही वह हिमालय के दक्षिण में एक सौ मील चौड़ी पट्टी जो दोनों पाकिस्तानों को मिलाये, पाकिस्तान को देना चाहता है। ऐसी हालत में पाकिस्तान में हिन्दुओं को रहने नहीं दिया जाएगा। इसलिए हमें कम-से-कम कुछ काल के लिए यह जगह छोड़ जबलपुर, लखनऊ, बम्बई अथवा किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाना चाहिए।"

"और तुम क्या समझते हो ?" छोटूराम का प्रश्न था।

"बाबा! मेरी मोटी बुद्धि में यह आता है कि सब स्त्रियों और बच्चों को यहां से निकाल दिया जाए और सब पुरुषों को यहां मोर्चा बांध लड़ना चाहिए।"

छोटूराम हंस पड़ा और पूछने लगा, "हम में पुरुष कौन-कौन हैं और स्त्रियां कौन-कौन हैं ?"

सबसे पहले परमानन्द ने कहा, "बाबा! मैं पुरुषों में हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमानन्द इस समय अठारह वर्ष का था। छोटूराम ने हंसते हुए कह दिया, "तुम अभी नाबालिग़ हो।"

"पर बाबा !" फातिमा बोल उठी, "बालिग के लक्षण क्या हैं ? अक्ल बड़ी या भैंस ?"

"तो तुम परमानन्द को बालिग़ समझती हो ?"

"हां, और अपने को भी।"

"ओह ! तब तो बात टेढ़ी है। तुम स्त्री नहीं हो क्या ?"

"तो बालिग़ से आपका अभिप्राय पुरुष स्त्री से था ? मैं तो सज्ञान और अज्ञान से समझी थी। बंदूक मैं भी चला सकती हूं। इस कारण इन अर्थों में मैं अपने को पुरुष समझती हूं।"

सब हंसने लगे। सौभाग्यवती ने कह दिया, "पुरुष हूं या स्त्री, मैं तो अपने बाल-बच्चों के साथ रहूंगी। मैं समझती हूं कि बाबा दस हजार रुपये और मंजूर करें तो किसी को नाभा भेजकर दस-बीस बंदूकें और मंगवा लें। फिर यह चित्तौड़ बन जाएगा।"

"अभिप्राय यह कि यहां से कोई नहीं भागेगा ?" बाबा का प्रश्न था।

परमानन्द ने कह दिया, "कुछ दिन हुए महात्मा गांधी जी ने भी यही कहा था कि पंजाब और बन रहे पाकिस्तान के रहने वाले हिन्दुओं को अपने-अपने स्थान पर डटे रहना चाहिए।"

छोटूराम ने कह दिया, "उस बूढ़े व्यक्ति की बात छोड़ो। वह तो सदा ऐसी बातें करता रहता है जिसे अक्ल नहीं मानती।"

"पर बाबा ! पूर्ण हिन्दुस्तान भर में लोग उसकी बात को मानते हैं।"

"कहां सब मानते हैं ? कोई भी मुसलमान नहीं मानता, ईसाई नहीं मानते। अभी पिछले वर्ष अमृतसर में हिन्दू महासभा का अधिवेशन हुआ था और उसमें एक लाख से ऊपर व्यक्ति एकत्रित हुए थे। उन्होंने गांधीजी की योजना को स्वीकार नहीं किया था।"

"मगर प्रायः समाचार पत्र गांधीजी की बात को प्रमुखता देते हैं।"

"यह इसलिए कि प्रायः समाचार पत्र अंग्रेजी भाषा पढ़े-लिखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग ही निकालते हैं। हिन्दुस्तानी भाषाओं में भी वे लोग पत्र निकालते हैं जो अंग्रेजी पढ़े-लिखे हैं तथा अंग्रेजों की-सी बुद्धि रखते हैं। महात्मा गांधी भी इंग्लैण्ड के पढ़े वही बुद्धि रखते हैं और अंग्रेज की बुद्धि यह है कि हिन्दुस्तान का भविष्य धूमिल हो जाये।

"ये अंग्रेजी बुद्धि रखने वाले समाचार पत्रों के सम्पादक जान-बूझ कर अथवा अनजाने में वही कर रहे हैं जो इनके गुरु अंग्रेज़ चाहते हैं।"

परमानन्द चुप कर गया। परन्तु कर्मचन्द जो अभी-अभी लाहौर के सरकारी कॉलेज में पढ़ता हुआ आया था। कहने लगा, "पर बाबा! विवशता भी तो है। हम सरकार के विरुद्ध कर भी कुछ नहीं सकते।"

"ठीक है कर्मचन्द!" मोटूराम ने अपनी मोटी बुद्धि की बात कह दी, "जो विवश हैं वे चुप क्यों नहीं रहते? उनको कौन विवश करता है कि वे अंग्रेजों की बीन के साथ अपना स्वर मिलाने लगें?"

"तो पिताजी!" पुनः परमानन्द ने कह दिया, "क्या गांधीजी भी अंग्रेजी बीन के साथ स्वर मिला रहे हैं?"

"न केवल स्वर मिला रहे हैं, वरन् उनकी ताल पर नाच भी रहे हैं। उनकी बात को मानने का स्वाभाविक परिणाम भी तो स्वीकार नहीं कर रहे। मुसलमानों का कथन कि पाकिस्तान केवल मुसलमानों का देश होगा, स्वीकार क्यों नहीं करते? उनको कह क्यों नहीं देते कि तुमने जब देश विभाजन के लिए मत दिया है तो बोरी-बिस्तरा बांधो और अपने मुल्क को चल दो, जो नहीं जाएगा, उसको धकेल कर बाहर कर दिया जाएगा। साथ ही हिन्दू जो प्रस्तावित पाकिस्तान में हैं, उनको हिन्दुस्तान में लाने के लिए उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध क्यों नहीं किया जाता?"

"पर पिताजी! मुसलमानों को यहां से निकालेंगे तो वही रक्त-पात यहां भी होगा जो रावलपिण्डी में हुआ है।"

"नहीं परमानन्द! मैं उनको मारने के लिए नहीं कह रहा। मैं तो उनको प्यार से, फूलों की माला पहिना कर रेलगाड़ियों में बैठा, रावी पार भेजने के लिए कह रहा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचन्द ने कहा, "होना तो यही चाहिए, परन्तु यह होगा नहीं। मुसलमान यहां से जायेंगे नहीं।"

"तो उन्होंने पाकिस्तान बनने के लिए मत किसलिए दिया है?"

"एक बात हो सकती है।" कर्मचन्द ने अपनी सूझ बता दी। उसने कहा, "मुसलमानों को यहां रहने दिया जाये, मगर उनको देश की नागरिकता के अधिकार न दिये जाएं।"

"तो वे कहां के नागरिक हों?" मोटूराम का प्रश्न था।

"जहां के वे नागरिक बनना चाहें। पिताजी! बात यह है कि उन्होंने हिन्दुस्तान के नागरिक होने से इनकार कर दिया है तो हम ज़बरदस्ती उनको कैसे यहां के नागरिक बनने के लिए कह सकते हैं?"

"यह बात मुझे समझ नहीं आयी। वे यहां के नागरिक न भी हों और फिर यहां रहें भी। इतनी बड़ी संख्या में देश के गैर नागरिकों को कैसे यहां रहने दिया जा सकता है?"

"उनके लिए नागरिकता का द्वार खुला रखा जाये।" फातिमा ने अपना सुझाव दे दिया, "इसपर भी अभी उनको नागरिक न माना जाये।"

छोटूराम के मुख से अनायास ही निकल गया, "यह बिटिया तो तुम्हारे बेटे से अधिक अकल की बात करने लगी है।"

"परन्तु फातिमा बेटी! कैसे द्वार खुला रखा जाये?"

फातिमा ने मुस्कराते हुए कहा, "एक दिन गुरुजी बता रहे थे कि किसी राष्ट्र का सदस्य बनने के लिए कुछ बातें माननी पड़ती हैं। राष्ट्र के घटक, नागरिक विचार से बराबर होते हैं। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि उनके हक-हकूक देश के अन्य नागरिकों के बराबर ही होंगे।"

"तो पहले नहीं हैं क्या?"

"नहीं; मुहम्मद साहब को खुदा का रसूल मानने वालों को न मानने वाले से वे ऊंचा समझते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि वे दूसरों को अपने से छोटा समझते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबा ! इतना ही नहीं, वरन् एक मुसलमान पुरुष के हक-हकूक एक मुसलमान औरत से अधिक हैं। वे बाप-बेटे और बाप-बेटी के रिश्तः में फरक समझते हैं। इसी तरह से जायदाद की बात है। मैं चाहती हूं कि यदि मुसलमान हिन्दू के समान नागरिक बनना चाहें तो उन्हें बनने दिया जाये।"

"मगर वह हिन्दू के समान बनना नहीं चाहेंगे।"

"तो बाबा ! वे यहां का नागरिक कैसे बन सकते हैं ? क्या यहां नागरिकता में भी दर्जे होंगे ? कोई कम अधिकार युक्त और कोई अधिक अधिकार युक्त ?"

बात मोटूराम ने समाप्त कर दी। प्रातः का अल्पाहार भी समाप्त हो चुका था और सब परिवार के लोग अपने-अपने काम पर जाना चाहते थे। मोटूराम ने कहा, "बाबा ! यह निर्णय तो देना ही होगा कि आपके एम० ए० पढ़ने वाले पोते से यह लड़की अधिक लायक हो गयी है।"

"तो फिर इसका विवाह कर दिया जाये ?"

सब हंसने लगे। फातिमा लाल मुख हो उठी और अपने कमरे को भाग गई।

सब उठ खड़े हुए। इसपर सोहनी ने कहा, "क्यों कर्मचन्द ! क्या कहते हो ?"

"इसमें मेरे कहने की बात कहां से आ गयी ? आरम्भ से ही यह फातिमा का प्रस्ताव है और अब वह ही भाग गयी मालूम होती है।"

"मैं समझती हूं," सोहनी ने कहा, "वह मंजूरी देकर यहां से गयी है।"

"हां ! यह तो मैं भी समझा हूं।" छोटूराम ने कह दिया।

"तो बाबा ! विवाह हो जाये। अब कर्मचन्द पढ़ने तो जायेगा नहीं और यहां पर उसे कुछ करने को काम मिल जाना चाहिए।"

"परन्तु पिताजी ! मामाजी प्रातःकाल आए थे और कह गए हैं कि मुझे ठीक बारह बजे उनके घर पर पढ़ने के लिए पहुंचना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम अपने मामा से पढ़ोगे ?"

"हां ! मेरे पढ़े से कुछ अधिक बतायेंगे तो पढ़ना ही होगा। यह वहां जाकर ही पता चलेगा।"

"परन्तु दो घंटे की पढ़ाई विवाह में बाधा नहीं डाल सकेगी ?" छोटूराम का फैसला था।

"यही मैं कह रही हूं।" सोहनी ने कहा, "मैंने रात फातिमा से सोते हुए यही कहा था। वह अब अपनी स्वीकृति दे गयी है।"

"तो ऐसा करो।" छोटूराम ने छोटे चौधरी को कह दिया, "पण्डित गौरीशंकर को बुलाकर मुहूर्त्त निकलवा लो और फिर हवेली, पर जालन्धर से शहनाई बजाने वाले बुलाकर बैठा दो। पूर्ण गांव में धूम मच जानी चाहिए कि छोटूराम के पोते का विवाह है।"

"पर बाबा ! गौरीशंकर फातिमा के विवाह का मुहूर्त्त नहीं निकालेगा।"

"क्यों ?"

"यह मुसलमान है।"

"तो उससे बड़ा मूर्ख कोई नहीं। उसे बुलाओ, मैं समझा देता हूं। इस विवाह में पांच सौ रुपये के लगभग उसको दक्षिणा मिलने वाली है।"

"पर बाबा ! वह एक दिन कहता था कि वह यह विवाह कभी नहीं करायेगा। यह अधर्म का काम अश्विनी से ही करा लीजिए।"

"ठीक है। अधर्म का काम अश्विनी जी कर देंगे, परन्तु पांच सौ रुपये दक्षिणा लेनी तो अधर्म नहीं। दक्षिणा तो वह ले सकता है। उसे बुलाओ, मैं उसको समझा दूंगा। जैसे हमारे प्रायश्चित्त के वक्त वह बैठा रहा था, वैसे अब भी बैठा रहेगा।"

तीसरे पहर गौरीशंकर आया और बाबा छोटूराम के दरबार में उपस्थित हो गया।

"इधर आइये पण्डितजी !" छोटूराम ने कहा, "देखो, तुम्हारे भाग्य उदय हो रहे दिखाई देते हैं।"

गौरीशंकर आशीर्वाद देकर बैठ गया। वह समझ नहीं सका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि किस दिशा से भाग्य उदय होने वाला है।

बात छोटूराम ने ही की। उसने कहा, "कर्मचन्द पढ़ाई समाप्त कर घर लौट आया है और हम सबकी राय है कि अब उसका विवाह कर देना चाहिए।"

गौरीशंकर अभी भी चुप रहा। बात छोटूराम ने जारी रखी, "इस कारण कोई बहुत जल्दी का मुहूर्त्त निकाल दो जिससे यहां उत्सव मनाया जाये।"

"बाबा! मुहूर्त्त के बिना भी तो उत्सव मनाया जा सकता है।"

"देखो पण्डित! तब तुम्हारी दक्षिणा कौन देगा? मुहूर्त्त निकलवाई के इक्कीस रुपये और सगाई में गणेश पूजा करने के इक्यावन रुपये तथा पण्डित-पण्डितायिन और पण्डित के सब बच्चों के लिये रेशमी वस्त्र। ये सब तो मुहूर्त्त पता बताने पर मिलेंगे।"

गौरीशंकर जैसे अनपढ़ ब्राह्मण को यह कुबेर का धनकोष प्रतीत हुआ। वह बोला, "बाबा! पहले बताया होता तो पत्रा लेकर ही आता।"

"तो अब भागकर ले आओ। कितने मील पर है तुम्हारा घर?"

गौरीशंकर गया और घर से उस वर्ष का पत्रा लेकर आ गया। उसने कुछ नीचे ऊपर देखकर एक कागज पर लिखते हुए कहा— "सत्रह ज्येष्ठ मास रात्रि के प्रथम प्रहर, दो घड़ी व्यतीत होने पर बहुत ही शुभ मुहूर्त्त है।"

"और अंग्रेजी तारीख देखो।"

गौरीशंकर ने पुनः पत्रा देखा और बता दिया "दो जून सन् १९४७।"

"बहुत अच्छा मुहूर्त्त है और तुम हिन्दू तरीके से विवाह करने के लिए सब सामग्री की सूची बनाकर ले आओ।"

इतना कह छोटूराम ने झींगुर को आवाज़ दी और कहा, "भीतर जाओ और चौधरायिन से कहो कि इक्कीस रुपये चांदी के चमचमाते ले आए। कहना कर्मचन्द के विवाह के मुहूर्त्त निकलवाई पण्डितजी महाराज को देने हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन हवेली की सबसे ऊंची छत पर शहनाई वाले बैठा दिये गए। दो घंटे प्रातः और दो घंटे सायं शहनाई बजने लगी और पूर्ण गांव में चौधरी के पोते के विवाह की धूम मचने लगी।

इसकी प्रतिक्रिया मुसलमानों में भी हुई। गांव में कुल डेढ़ सौ के करीब परिवार रहते थे। इनमें एक सौ से ऊपर हिन्दू थे और शेष मुसलमान थे।

कर्मचन्द के एक मुसलमान लड़की से विवाह पर मुसलमानों में गोष्ठियां होने लगीं।

परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों का एक नुमाइन्दा थाने में गया और थानेदार से कहने लगा, "यह शादी गैर कानूनी है।"

थानेदार का कहना था, "शादी के कानूनों की मुझे वाकफीयत नहीं है। तुम लोग जिला नगर में जाकर किसी वकील से राय करो।"

"मगर शेख साहब! आप थानेदार ही क्या हैं जो यह शादी रोक नहीं सकते?"

"रोक सकता हूं, मगर मेरे हुक्म को रद्द करा दिया जायेगा।"

"कौन रद्द करेंगे?"

"जिला हाकिम। लड़की की सरपरस्त उसकी मां जब मान जायेगी तो मेरा रोकना नाकामयाब हो जायेगा।"

"सैय्यद साहब! आप एक बार तो रोक दीजिए?"

"कैसे रोक दूं? कोई कानून नहीं है। एक बात तुम कर सकते हो।"

"क्या?"

"तुम हिन्दुओं से मिलो। उनके पुरोहितों को कहो। वे लोग इसमें टांग अड़ा सकते हैं।"

मुसलमानों का चौधरी एक नूरुद्दीन था। वह गांव में मरने वाली गौओं के हाड़-चाम का व्यापार करता था। प्रायः हिन्दुओं के गाय-बैल मरते थे तो मुफ्त में मिल जाते थे और एक-एक बैल के चमड़े के वह दो सौ से तीन सौ रुपया पैदा करता था। वह इस व्यापार से धनी हो रहा था। सब मुसलमान नूरुद्दीन के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचे और उसे दुहाई देकर शादी रुकवाने का आग्रह किया।

: ७ :

नूरुद्दीन को उस रात की घटना स्मरण थी, जब हवेली पर आक्रमण करने वालों पर गोली वर्षा हुई थी। वह बोला, "एक तजवीज़ है। थानेदार को कहो कि करीमबख्श के वारंट वापस जिला हाकिम के पास भेज दे और जब करीमबख्श यहां आये तो आंखें मूंदे चुप रहे।

"अगर वह इतना मान जाये तो करीम को यहां बुलाकर उसकी ओर से हुक्म इम्तनाई निकलवाया जा सकता है।"

"हम कुछ नहीं कर सकते क्या?" गांव वालों का प्रश्न था।

"कर सकते हैं। वह यह कि जिला हाकिम से करीमबख्श के खिलाफ़ वारंट वापस करवा सकते हैं।"

इसके लिए यत्न किया गया। डिप्टी-कमिश्नर शेखुपुरा का रहनेवाला एक मुसलमान था। जब गांव के थानेदार ने वारण्ट वापिस करते हुए लिखकर भेजा कि कानून की रूह से इस वारण्ट में कोई आधार नहीं; यह साबित नहीं हो सकता कि करीमबख्श किसी प्रकार से भी गांव पर हमला करने वालों का सरगना था, डिप्टी-कमिश्नर ने वारण्ट वापस ले लिए।

इस पर नूरुद्दीन करीमबख्श से मिला और उसकी तरफ से यह दरखास्त कराई गई कि फातिमा नाबालिग है और वह उसका सरपरस्त है। वह उसकी शादी की मंजूरी नहीं देता।

अतः शादी पर रोक हो गयी और चौधरी मोटूराम को तथा पण्डित गौरीशंकर को हुक्म हो गया कि वे शादी नहीं कर सकते।

गौरीशंकर मन ही मन प्रसन्न होता हुआ, परन्तु ऊपर से मुख लम्बा किये सरकारी आज्ञा लेकर हवेली में पहुंचा। वैसी ही आज्ञा मोटूराम को भी मिली थी।

अगले दिन मोटूराम, गौरीशंकर और सोहनी को साथ लेकर नगर में पहुंचा। नगर के एक वकील से राय कर यह अर्जी कर दी गई कि फातिमा बालिग़ है। उसकी आयु इस समय उन्नीस वर्ष है। साथ ही करीमबख्श उसका सरपरस्त नहीं है। उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरपरस्त उसकी सौतेली मां मुसम्मात सोहनी है। इस कारण यह हुक्म इम्तनाई हटा लिया जाये।

नूरुद्दीन के वकील ने आपत्ति की कि एक मुसलमान की लड़की कभी भी बालिग के हक-हकूक नहीं रखती। उसे हमेशा अपने सरपरस्त का कहना मानना चाहिए।

इसके उत्तर में फातिमा का कहना था कि वह मुसलमान नहीं है। इसलिए उस पर शरअ का कानून लागू नहीं हो सकता। वह हिन्दुस्तान की एक नागरिक है और हिन्दुस्तानी औरत के हक-हकूक उसके हक-हकूक हैं।

इसपर डिप्टी-कमिश्नर ने मुकद्दमे की तारीख दो महीने बाद की दे दी। उसका कहना था कि सूबे में अमनो-अमान का ख्याल रखकर यह मुकद्दमा जल्दी नहीं देखा जा सकता।

परिणामस्वरूप शादी रुक गयी। दो जून की तारीख बिना विवाह के निकल गयी। इस पर गांव के मुसलमानों ने बहुत खुशी मनायी। उस दिन देंगे चढ़ीं और एक बहुत बड़ी दावत की गयी।

तीन जून को समाचार पत्र सुनने के लिए गांव के युवक छोटू-राम की हवेली पर छाजन के नीचे एकत्रित थे और समाचार पत्र पढ़ रहे थे कि पंजाब और बंगाल का विभाजन इस आधार पर होगा कि कौन जिला हिन्दू बाहुल्य है अथवा कौन ज़िला मुस्लिम बाहुल्य। इस तरह यह निश्चय हो गया कि अमृतसर, जालन्धर, होशियारपुर, गुरदासपुर, पठानकोट इत्यादि जिला हिन्दुस्तान में ही रहेंगे।

जिन्ना और गांधी का एक सांझा ऐलान भी निकला था कि हिन्दू मुसलमान भाई-भाई हैं। हिन्दू मुसलमानों को भाई-भाई की भांति रहना चाहिए।

इस सांझे बयान को सुनकर बाबा छोटूराम हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "इसका परिणाम यह होगा कि मुसलमान जिन्होंने पाकिस्तान के लिए वोट दिया था अब हिन्दुस्तान में रह जाएंगे।"

कर्मचन्द का कहना था, "तब यहां की सरकार को नागरिकता में समान व्यवहार का निश्चय करना चाहिए। हमारे सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार समान होने चाहिएं। यदि यह न किया गया तो ये मुसलमान फिर एक सिर दर्द बन जायेंगे।"

"क्या-क्या व्यवहार समान होने चाहिएं?"

"मुसलमान कोड और हिन्दू कोड समाप्त कर देने चाहिएं। एक हिन्दुस्तानी कोड होना चाहिएं।"

मोटूराम ने हंसते हुए कहा, 'और तुम पर शादी न करने का इंजँक्शन हट जाना चाहिए।'

सब हंसने लगे।

"हां, पिताजी!" परमानन्द ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "मज़हब विवाह में बाधक नहीं होना चाहिए।"

"वह तो अब भी है।" मोटूराम का कहना था, "कर्मचन्द के विवाह में एक ही बाधा है कि फातिमा बालिग है अथवा नाबालिग।"

परमानन्द ने कह दिया, "पिताजी! मैं यह नहीं कह रहा कि बालिग होने पर हक-हकूक क्या हों। मैं तो यह कह रहा हूं कि नाबालिग होने पर भी माता-पिता का अधिकार तो हो, मगर मज-हब की बाधा न हो। शरअ और धर्मशास्त्र का सम्बन्ध सामाजिक व्यवहार से न हो।"

"सामाजिक व्यवहार मज़हब नहीं है क्या?"

"नहीं बाबा!" कर्मचन्द का कहना था, 'सामाजिक व्यवहार है खान-पान, विवाह-शादी, इकट्ठे सभा-जलसे मनाना, एक स्थान पर इकट्ठे रहना, वस्त्र भोजन को इच्छानुसार लेना, परस्पर इच्छानुसार मित्र और शत्रु स्वीकार करना, इन्हीं बातों को समाज कहते हैं।"

"और मजहब क्या होता है?" मोटूराम का प्रश्न था।

"मन्दिर-मस्जिद, देवी-देवता, पीर-पैगम्बर को मानना तथा पूजा-नमाज वगैरा पढ़ना। मतलब यह कि मनुष्य की वे मान्यताएं जो उसके अपने साथ ही सम्बन्ध रखती हैं, मजहब हैं।"

मोटूराम ने कहा, "इतनी बारीकी में कौन जाता है? वे सब सामाजिक व्यवहार ही माने जाते हैं जिनकी गणना तुमने की है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिताजी ! ठीक है। परन्तु ये गलत माने जाते हैं। यदि खान-पान, वस्त्र-भूषण इत्यादि में मजहब माना गया तो फिर मजहब और राज्य का सम्बन्ध भी मानना होगा। तब तो हिन्दू और मुसलमान एक ही राज्य में नहीं रह सकेंगे। उनके एक ही स्थान पर रहते हुए उनके परस्पर व्यवहार में समानता तो होनी ही चाहिए। यह व्यवहार में समानता अधिकारों का मूल है। यदि व्यवहार समान नहीं तो अधिकार भी समान नहीं रहेंगे। और फिर नागरिकता भी समान नहीं रहेगी।"

"मगर यह तो हिन्दुओं में भी परस्पर समान नहीं हैं ? हम छोटी जाति वालों से विवाह नहीं करते। हम उनके हाथ का खाना नहीं खाते।"

"मगर कानून से यह वर्जित तो नहीं। पिताजी ! यह सामाजिक भेद-भाव पहले हिन्दुओं ने ही आरम्भ किये थे। परन्तु हिन्दुओं ने इसमें कानून की सहायता नहीं मानी। यही मैं मुसलमानों में चाहता हूं।"

मोटूराम ने बात बदल दी। उसने कहा, "तो कोई मुसलमान मुल्ला और हिन्दू पण्डित विवाह न कराये ?"

"विवाह में पण्डित और मुल्ला गौण हों। विवाह कराने वाले की और उनके नाबालिग होने पर उनके सरपरस्त की राय मुख्य हो।

"साथ ही मुसलमान तथा हिन्दू सबके लिए विवाह की शर्तों के कानून एक समान हों। समाज एक हो। भले ही मजहब भिन्न-भिन्न हों। यह अब हिन्दुओं में तो हो ही रहा है।"

"मगर मुसलमान समाज इसको स्वीकार नहीं करेगा ?"

कर्मचन्द का कहना था, "बाबा ! यही तो कह रहा हूं कि यहां एक समाज हो। वह हिन्दुस्तानी समाज हो। उसके नियम-उपनियम एक हों। मज़हब, पूजा-पाठ, खुदा की अबादत के तरीकों को व्यक्ति तक सीमित कर दिया जाये।"

यह बात वहां बैठे हुओं को पसन्द तो आयी, परन्तु इसको करना तो सरकार का काम था। सरकार की हालत यह थी कि जून दो को यह घोषणा की गयी कि हिन्दुस्तान के दो भाग होंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर उसके विभाजन का ग्राधार यह होगा कि सन् १९४१ की जनगणना के ग्रनुसार ज़िलावार बंटवारा होगा।

इस घोषणा से होशियारपुर में तो शान्ति हो गयी। मुसलमान समझ गये कि यह ज़िला पाकिस्तान में नहीं जाएगा ग्रौर यदि वे किसी प्रकार गड़बड़ करेंगे तो पहले जैसी गोलाबारी हो सकेगी। परंतु ज़िला हाकिम मुसलमान था ग्रौर निश्चित तारीख को जब करीम की ग्रर्ज़ी पर पेशी हुई तो हाकिम ने फिर दो महीने की तारीख दे दी।

वह ग्रपने हाथ से एक मुसलमान लड़की को एक हिन्दू युवक से विवाह करने की स्वीकृति नहीं देना चाहता था।

पहली लम्बी तारीख दी गयी थी चार जून को ग्रौर चार ग्रगस्त को तारीख दी गयी बीस ग्रक्तूबर की, मतलब यह कि स्वराज्य स्थापित होने के उपरान्त की।

ज़िला मैजिस्ट्रेट ने पाकिस्तान सरकार की सेवा में जाना स्वीकार किया था। उसने तारीख देते हुए कहा, "इस किस्म के काम को मैं किसी ग्रन्य के ग्रधीन दिये जा रहा हूं। इसका ग्रसर एक बेगुनाह पर होगा। मैं यह गुनाह नहीं कर सकता।"

पन्द्रह ग्रगस्त से पहले ही मुसलमान पंजाब के उन ज़िलों को जिनमें पाकिस्तान नहीं बन रहा था, छोड़-छोड़ कर जाने लगे थे। इस जाने में बहुत-सी ग्रनियमित बातें हुईं। जाने वालों की ग्रोर से भी ग्रौर वहां रहने वालों की ग्रोर से भी। इस कारण पूर्ण ज़िला के हाकिम शान्ति-व्यवस्था रखने में लगे रहे।

जबसे कर्मचन्द कॉलेज छोड़कर घर ग्राया था, वह ग्रश्विनी कुमार से पढ़ने लगा था।

ग्रश्विनीकुमार ने उससे कहा था—"तुम विज्ञान पढ़ते हुए ग्राए हो। मैं समझता हूं कि तुमको ग्रधूरा ज्ञान पढ़ाया जा रहा था। उसमें बहुत कमियां हैं। मैं उन कमियों की पूर्त्ति करना चाहता हूं।"

"क्या कमी है मामाजी!" कर्मचन्द ने पूछ लिया।

"देखो कर्मचन्द! यदि तुम मुझसे पढ़ना चाहते हो तो मुझे 'मामा जी' नहीं गुरुजी समझो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "क्षमा करें। परन्तु आप मामा का पद अधिक सम्मान का समझते हैं अथवा गुरु का पद ?"

"निश्चय ही गुरुपद अधिक सम्मान का है।"

इसपर कर्मचन्द ने बताया, "हमारे सीनियर प्रोफेसर थे मिस्टर डन्क्लिफ। हम क्लास में उनका आदर करते थे और उनका लैक्चर ध्यान से सुना करते थे, परन्तु ज्यों ही क्लास से बाहर निकलते थे, हम उन्हें महामूर्ख कहकर स्मरण किया करते थे।

"गुरु तो केवल पढ़ने के समय थे और मामा का पद जीवनभर के लिए है। यह तो इस कमरे से बाहर भी प्रतिष्ठा का है।"

अश्विनीकुमार ने डांट के भाव में कहा, "यह तुमने गुरु पद और मामा के पद की तुलना नहीं की। यह तो तुमने एक गवर्नमैण्ट कॉलेज लाहौर के विद्यार्थियों की मूर्खता की तुलना एक सभ्य विद्यार्थी से की है। वे विद्यार्थी पढ़ाने वाले को अपना नौकर समझते थे और हम गुरुकुल में पढ़ाने वालों को परमात्मा का अवतार मानते हैं।"

"भले ही वह मूर्ख हो ?"

"तब उसे अध्यापक नियुक्त करने वाला मूर्ख होगा। वह अध्यापक नहीं। यहां मुझे तुम्हारे बाबा ने तुम्हें पढ़ाने के लिए नियुक्त किया है और मैं उसे मूर्ख नहीं समझता। कल यह बात हुई थी। बाबा ने यह कहा था कि कर्मचन्द के कॉलेज बंद होने से गांव में आ गया है।

"मैंने कहा था उसकी पढ़ाई अधूरी है। उसे कुछ दिन मुझसे पढ़ना चाहिए। मैंने उनको बताया कि तुम्हारी पढ़ाई में क्या त्रुटि है। इसपर वह मान गए और यह कहने लगे कि उसे कम-से-कम दो घंटे नित्य पढ़ाया करूं।"

कर्मचन्द ने पूछा, "परन्तु गुरु जी ! क्या कमी देखी है आपने मेरी पढ़ाई में ?"

"वही तो बताने लगा था। देखो, मैं कम-से-कम इन दो घंटों में तुम्हारा गुरु हूं। वैसे गुरु चौबीस घंटे समझो तो और भी उचित होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं जो विषय पढ़ाना चाहता हूं, वह है तो विज्ञान ही, परन्तु तुम्हारे कॉलेज वालों ने वह नहीं पढ़ाया।"

कर्मचन्द गम्भीर हो गया और अश्विनीकुमार के आगे कहने की प्रतीक्षा करने लगा।

अश्विनीकुमार ने आगे कहा, "विज्ञान को हमारी भाषा में पदार्थ ज्ञान कहते हैं। तुम पदार्थ का अर्थ जानते हो?"

"जी, पदार्थ अर्थात् यह मेज, कुर्सी, अन्न, जल, कपड़े इत्यादि।"

"नहीं, पदार्थ का अर्थ है— वे सब वस्तुएं जिनका वर्णन हम भाषा में कर सकते हैं। जिस पद का अर्थ है, वह पदार्थ है। अच्छा बताओ, परमात्मा शब्द का क्या अर्थ है?"

"परन्तु गुरुजी! परमात्मा नाम का कोई पदार्थ है क्या?"

"यह तो पीछे देखेंगे। पहले यह बताओ जब मैंने परमात्मा शब्द का उच्चारण किया तो कुछ समझे हो अथवा नहीं?"

"जी! आप उसकी बात कर रहे हैं जिसे कुछ लोग सबसे बड़ा, सबसे अधिक बलवान्, सबसे अधिक बुद्धिमान्, सर्वव्यापक मानते हैं।"

"बस, इतना ही पर्याप्त है। परमात्मा भी किसी का नाम है। इस कारण परमात्मा एक पदार्थ है और तुम्हारे विज्ञान पढ़ाने वालों ने तुम्हें इस विषय में कुछ नहीं बताया?"

"वह इसलिए कि यह दिखाई नहीं देता?"

"परन्तु दिखाई तो दिन के समय तारे भी नहीं देते। तो क्या दिन के समय आकाश में तारे नहीं होते?"

"परन्तु उनकी उपस्थिति तो जब हम बैलून में बैठकर बहुत ऊंचे जायें, विदित हो जाती है।"

"हां! मैं तुम्हें एक बैलून में बैठाकर उड़ाना चाहता हूं। तब तुमको परमात्मा दिखाई देने लगेगा।"

"सत्य?"

"हां! परन्तु उससे पहले उस बैलून पर बैठने का ढंग बताना चाहता हूं। ऐसा न हो कि तुम बैलून पर चढ़कर उड़ो और वह ठीक ऊंचाई पर पहुंचे बिना ही भूमि पर आ गिरे और तुमको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन के समय तारे दिखाई दें।

"अच्छा, यह बताओ कि दिन के समय तारे दिखाई क्यों नहीं देते ?"

"सूर्य की रोशनी हमारी आंखों में चकाचौंध उत्पन्न कर देती है। उसके प्रकाश में तारों का प्रकाश विलुप्त हो जाता है।"

"यही बात परमात्मा की है। हमारे आसपास के पदार्थों के प्रकाश में परमात्मा का प्रकाश विलीन हो जाता है।

"पृथिवी और आकाश में निर्मित्त पदार्थों के प्रकाश को माया कहते हैं। माया है—संसार के पदार्थों की चकाचौंध। इससे ऊपर उठने के लिए बैलून चाहिए।

"जैसे सूर्य के प्रकाश, जो पृथिवी पर टकराकर लौटता है तो आकाश के तारे देखने नहीं देता, वैसे ही जगत् के पदार्थों की चकाचौंध से परमात्मा दिखाई नहीं देता।"

"गुरुजी ! माया का अर्थ मिथ्या ज्ञान नहीं है क्या ?" कर्मचन्द ने पूछा।

"माया का यह अर्थ कुछ लोग करते हैं। परन्तु वैदिक भाषा में माया है—प्रकृति की निर्माण शक्ति। यह जगत् बनने के पहले सुषप्ति अवस्था में था। उसे जाग्रत किया गया। प्रकृति की शक्ति जब जाग्रत हुई तो यह चलायमान जगत् बन गया और इसकी चकाचौंध में इसकी शक्ति को जाग्रत करने वाला ही छुप गया।"

"परन्तु प्रकृति में यह शक्ति है क्या ?"

"बताओ ! हाईड्रोजन के 'ऐटम' में ऑक्सिजन के ऐटम के मिलने की शक्ति मानते हो अथवा नहीं ?"

"वह तो प्रत्यक्ष दिखाई देती है। हाईड्रोजन गैस का तापमान ऊंचा कर दें तो यह हवा में जलने लगती है और जल बनता दिखाई देता है।"

"यही मैं कह रहा हूं कि हाईड्रोजन और ऑक्सिजन में मिलने की शक्ति है। जब उनका वातावरण मिलने के अनुकूल हुआ तो दोनों मिल गये और जल बन गया।

"मेरा कहना यह है कि किसी ने अनुकूल वातावरण उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। तभी तो इतना जल पृथिवी पर बना है कि दो-तिहाई से भी अधिक पृथिवी पर जल-थल हो गया है।

"वह कौन है, जिसने औक्सिजन और हाईड्रोजन के संयोग के लिए अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न की है ?"

"परन्तु गुरुजी ! उसने क्यों की है ?"

"यह आज के पाठ का विषय नहीं। इसके विषय में किसी अन्य दिन बताऊंगा। मैं यह पूछ रहा हूं कि कोई समय था जब जल नहीं था। किसी ने हाईड्रोजन और औक्सिजन के मिक्सचर में आग लगा दी और जल बना।"

कर्मचन्द ने अपने विज्ञान का पाठ सुना दिया, "अपने आप स्थिति अनुकूल हुई थी। जैसे एक "डोलक" एक ओर से दूसरी ओर स्वयं डोलता रहता है। जब यह डोलक पराकाष्ठा की सीमा में पहुंचता है तो फिर लौट पड़ता है। इसी प्रकार प्रकृति की "डौर्मेंट स्टेट" अर्थात् सुषुप्ति अवस्था जब पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है तो वह कार्यरत हो जाती है। जब कर्यरत होने की स्थिति पराकाष्ठा पर पहुंच जाएगी तो यह लौट पड़ेगी।"

अश्विनीकुमार हंस पड़ा और बोला, "तुम मुझे मूर्ख बना रहे हो अथवा स्वयं पढ़ा-लिखा भूल रहे हो। क्या "डोलक" किसी बाहरी शक्ति से दिशा नहीं बदलता। क्या भू-आकर्षण उसकी गति को नहीं बदलता ? वह शक्ति डोलक से कोई बाहर की वस्तु नहीं है क्या ?"

"वह प्रकृति के भीतर ही होती है।"

"परन्तु जगत् के बनने से पहले जिसे "बिग बैंग" (बड़ा धमाका) कहते हैं, उससे पहले वह कहां थी ?"

"छुपी हुई थी।"

"यही तो मैंने कहा है। प्रकृति की निर्माण शक्ति जो छुपी हुई अर्थात् "डौरमेण्ट" अवस्था में थी, किसी ने उसे सजग किया होगा। अब तुम भी यही कह रहे हो कि वह प्रकट हुई है।"

कर्मचन्द विचारमग्न हो गया। इसपर अश्विनी ने कहा—"देखो ! मैंने आज केवल यह बताया है कि प्रकृति सुषुप्ति अवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में थी। उसे किसी ने जगाया था। जागने पर प्रकृति की निर्माण शक्ति कार्य करने लगी। यह तो तुम वैज्ञानिक मानते हो ?"

"परन्तु वह परमात्मा था क्या ? प्रश्न तो यह है ?"

"तो वह कौन था जिसने सोयी हुई प्रकृति को जगाया, जिससे वह कार्यरत हुई ?"

"उसे हम 'नेचर' कहते हैं।"

अश्विनी हंस पड़ा। हंसकर उसने कहा—"मैं उसे ही परमात्मा का नाम देता हूं। अभिप्राय यह हुआ कि तुम्हारी नेचर और मेरा परमात्मा एक हो गए।

"देखो कर्मचन्द ! अब दो बजने वाले हैं। अब फातिमा के आने का समय हो गया है और तुमको यहां से जाना चाहिए, क्योंकि बाबा का कहना है कि तुम दोनों को एक साथ नहीं पढ़ाना चाहिए।"

"तो वह प्लेग की बीमारी है क्या ?"

"उससे भी भयंकर। तुम में अभी उस बीमारी का विरोध करने की शक्ति है, अथवा नहीं, पता करना है ? उसी का पता करने के लिए आज मैंने एक बात की चर्चा की है।

"मैं चाहता हूं कि तुम इस वार्तालाप के नोट्स एक कापी पर लिखकर कल लाना। पहले पांच मिनट में वह सुनूंगा और फिर आगे बात करूंगा।

"तुम 'नेचर' नाम की कोई शक्ति मानते हो जिसने प्रकृति की सुषुप्ति अवस्था भंग की और वह कार्यरत हो गयी। और जो कुछ तुम उस नेचर के विषय में आज तक पढ़े हो उसे भी लिख लाना।"

अभी बात समाप्त नहीं हुई थी कि घड़ी में दो का घंटा खड़का और फातिमा आ पहुंची। कर्मचन्द उठ जाने लगा तो फातिमा ने पूछा, "भागे कहां जा रहे हैं ?"

"भागा नहीं जा रहा फातिमा ! भगाया जा रहा हूं।"

"हां !" अश्विनी ने कहा, "मैं भगा रहा हूं, जिससे तुम्हारी पढ़ाई में यह विघ्न न बन जाए।"

: ८ :

"तो यह भी आपसे पढ़ने आये हैं ?" फातिमा ने गुरुजी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा।

"हां!" अश्विनी ने कहा।

"एम० एम-सी० की पढ़ाई करने के बाद भी कुछ है जो पढ़ना शेष है?"

"हां! मैं उसे वेदान्त दर्शन का प्रथम सूत्र पढ़ा रहा था, जब तुम आ गयी थीं।"

"वही जो मैं पढ़ रही हूं।"

"हां, तुम तो इसका तीसरा अध्याय पढ़ रही हो और उसे मैंने आज पहले अध्याय के प्रथम पाद के प्रथम सूत्र का पाठ आरम्भ कराया है।"

"तो मैं आपकी पढ़ाई में इनसे आगे हूं?"

"हां! जहां तक ज्ञान-विज्ञान का सम्बन्ध है, तुम उससे अधिक जानती हो। जो कुछ वह जानता है, उसके तजरबे अधिक संख्या में करता रहा है। परन्तु विज्ञान के नियम तुम अधिक जानती हो।

"देखो! तुमने अपने ग्रन्थ में पढ़ा है कि इस संसार में एक सृष्टि रचने वाला, उसका पालन करने वाला और फिर उसको समाप्त करने वाला है। यह बात कर्मचन्द नहीं जानता था।

"आज मैंने उसे यही समझाने का यत्न किया है। अभी वह भली भांति समझा नहीं। पुनः कल उसे समझाऊंगा। हां, तुम अपना पाठ याद करो।

"इस वेदान्त दर्शन में एक बात तो यह कही है कि विना निर्माणकर्त्ता के कुछ भी बन नहीं सकता।

"दूसरी बात यह कही है कि जगत् का निर्माता ज्ञानवान्, योग्य, कुशल और महान् शक्तिशाली है।"

"जी! यह मैं समझ चुकी हूं। परन्तु गुरुजी! समझने और तजरुबे करने में अन्तर नहीं है क्या?"

"है! तजरुबे बच्चों को करके बताए जाते हैं। कारण यह कि जो इस विशाल संसार में तजरुबा हो रहा है, उसको बच्चे देख नहीं सकते। एक सज्ञान बुद्धिशील व्यक्ति इस महान् संसार में हो रहे तजरुबों को देखकर समझ जाता है। इस कारण परीक्षण नली में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजरुबा दिखाने की न तुमको ग्रावश्यकता पड़ी है, न ही कर्मचन्द को दिखाने की ग्रावश्यक्ता होगी।

"देखो, मैंने तुम्हें बताया था कि इस जगत् में दो प्रकार के पदार्थ दिखाई देते हैं। एक जो चल रहे हैं ग्रौर दूसरे जो स्थिर हैं। फिर चलने ग्रौर स्थिर के ग्रर्थ भी मैंने तुमको बताये थे। गति तुलना से ही इसका ज्ञान होता है।

"यह कुर्सी, जिसपर तुम बैठी हो, स्थिर है। इसकी स्थिरता इस कमरे, इस मकान इत्यादि की तुलना में है। ग्रौर यदि इसकी ग्रवस्था की तुलना, सूर्य चन्द्र तथा ग्रन्य तारों से की जाए तो वे बहुत तेज गति से भाग रहे हैं।

"इससे यह ज्ञात हुग्रा कि गति उत्पन्न करने वाला कोई है। इस तुलनात्मक ग्रवस्था में भी कुर्सी हिल सकती है। मैं इसे उठाकर कमरे के बाहर ग्रथवा मकान के बाहर ले जा सकता हूं।

"इसी प्रकार पृथिवी, चन्द्र, तारागण इत्यादि को घुमाने वाला कोई होना चाहिए। प्रकृति का कोई भी टुकड़ा स्वयमेव ग्रपनी ग्रवस्था ग्रौर स्थान को बदल नहीं सकता।

"बस, यही मैं ग्राज कर्मचन्द को समझा रहा था। इस दिशा में तुम उससे ग्रधिक ज्ञान रखती हो। परन्तु ज्ञान की ग्रनेक दिशायें हैं। किसी दिशा में वह तुमसे ग्रधिक ज्ञानवान् भी हो सकता है।

"ग्राज तुम्हारा पाठ यह है कि प्राणी, मेरा मतलब है जन्तु में गति उत्पन्न करने वाला भी कोई है। वह परमात्मा नहीं है। परमात्मा से ग्रतिरिक्त कोई है।

"परमात्मा द्वारा दी गयी गति के नियमों को 'नैचुरल लौज़' कहते हैं। संस्कृत भाषा में उनको ऋत कहते हैं। परन्तु तुममें गति उत्पन्न करने वाला परमात्मा के "ऋतों" के विपरीत भी गति उत्पन्न कर सकता है।"

इस प्रकार शिक्षा चल रही थी।

कर्मचन्द को ग्रश्विनीकुमार के पास पढ़ने ग्राते दो मास हो चुके थे ग्रौर कोर्ट से उसके विवाह पर इन्जंक्शन लग चुका था कि एक दिन फातिमा ने ग्रश्विनीकुमार से कहा, "गुरु जी ! मैं ग्रब ग्रनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगी हूं कि 'नैचुरल लॉज़', मेरा अभिप्राय है ऋतों के कुछ विपरीत होने लगा है।"

"क्या ऋतों के विपरीत होने लगा है ?"

"मेरी आपके भाञ्जे से विवाह करने की इच्छा प्रवल हो रही है। परन्तु समाज का नियम है कि शादी की रस्म का पालन कर ही हमें पति-पत्नी बनना चाहिए और रस्मों पर कानूनी प्रतिवन्ध लग रहा है। यह सब "ऋत" के विपरीत प्रतीत होता है।"

"हां ! तुम अब उन्नीस वर्ष की हो। कर्मचन्द इक्कीस वर्ष का है। तुम दोनों में यह इच्छा स्वाभाविक है और इसका विरोध ऋतों का विरोध ही है। परन्तु समाज का नियम है कि कुछ रसम पालन किये जाएं। इसी की प्रतीक्षा की जा रही है।"

"गुरु जी ! यह ऋतों का उल्लंघन नहीं है क्या ?"

"है तो ऋतों का उल्लंघन ही। परन्तु जब तुम समाज के नियम का उल्लंघन करोगी तो अधिक कठिनाई का सामना करना होगा। समाज का विरोध करने पर झगड़ा भी हो सकता है। उसके सहन करने की सामर्थ्य हो तभी वह विरोध कर सकती हो।"

"मैं तो समाज का विरोध कर सकती हूं।"

"परन्तु फातिमा बेटी ! यह कर्म तुम अकेली का नहीं है। इसमें तुमको एक साथी चाहिए। साथी भी तुम्हारी भांति समाज को अंगूठा दिखा सकता है अथवा नहीं, यह भी तो जानना होगा।

"हां, तुम साथी बदल सकती हो। किसी मुसलमान से विवाह कर सकती हो। तब कोर्ट का इंजँक्शन व्यर्थ हो जाएगा।"

"मैं किसी अन्य से विवाह करना नहीं चाहती।"

"क्यों ?"

"मैं बचपन से आपके भाञ्जे से प्रेम करती हूं। मैं उनकी ही पत्नी बनना चाहती हूं।"

अश्विनी गम्भीर विचार में मग्न हो गया। कुछ विचारकर उसने कहा, "तुम दोनों राय करो तो मैं फिर एक मार्ग बता सकता हूं।"

उस दिन की इस बात का एक परिणाम यह हुआ कि अश्विनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल कर्मचन्द के बाबा से मिलने जा पहुंचा।

वह जानता था कि मोटूराम को समझाने की अपेक्षा बाबा को समझाना सुगम है।

इसका एक दूसरा परिणाम भी हुआ। वह यह कि फातिमा ने निश्चय कर लिया कि वह कर्मचन्द से बात करेगी। वे दोनों स्वयं अपने विवाह का निश्चय कर सकते हैं तो फिर वे समाज द्वारा बनाये रीति-रिवाज को भंग क्यों नहीं कर सकते ?

अश्विनी कुमार बाबा के सामने छाजन के नीचे बैठा तो बाबा छोटूराम ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "आज किसी विशेष प्रयोजन से आए प्रतीत होते हो ?"

अश्विनी कुमार की हंसी निकल गयी। उसने हंसते हुए कहा, "बाबा ! आपकी इस सूझ-बूझ के कारण ही तो आया हूं। आपके साहबजादे के पास नहीं गया।"

"तो मेरा अनुमान ठीक है। अच्छा, बताओ क्या बात है ?"

"बाबा ! कर्मचन्द का विवाह होना चाहिए।"

"परन्तु कोर्ट के हुक्म इम्तनाई की मौजूदगी में कैसे हो सकता है ?"

"मेरे मन में एक योजना है।"

"बताओ।"

"सिविल मैरिज़ ऐक्ट के अधीन मजिस्ट्रेट के पास कर्मचन्द और फातिमा शादी करने की घोषणा कर दें। वहां से पन्द्रह दिन का नोटिस जारी होगा कि यदि किसी को आपत्ति हो तो वह मजिस्ट्रेट के सामने आकर आपत्ति उपस्थित करे। वह नोटिस डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को भी जारी कराया जाए कि वह आकर बताए कि क्यों न इनकी शादी सिविल ऐक्ट के मुताबिक मंजूर की जाए ?

"इससे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट सिविल कोर्ट में आकर बताएगा कि क्यों उसने इस मामले को पिछले दो महीने से रोका हुआ है।"

"तो अश्विनी ! तुम ऐसा करो कि कल दोनों को ले जाकर शादी की घोषणा करा दो।"

अश्विनीकुमार यही आशा करता था। वह बाबा के पास से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठकर अपनी बहन सौभाग्यवती से मिलने हवेली में चला गया। वहां उसने देखा कि बैठक घर में कर्मचन्द, सोहनी और फातिमा बैठे बातें कर रहे हैं। कर्मचन्द की मां वहां नहीं थी। अश्विनी-कुमार ने रामी को भीतर चौधरायिन को सूचित करने भेज दिया कि कहे कि वह उससे मिलने आया है। सोहनी ने उसे देखा तो कह दिया, "पण्डितजी! ये बच्चे बगावत करने की बात कर रहे हैं?"

"अम्मी! किससे?" सोहनी हवेली में अम्मी कह कर सम्बोधित की जाती थी। इसी कारण अश्विनी ने भी उसे अम्मी कहकर सम्बोधित किया।

"मुझसे, चौधरी से, चौधरायिन से और फिर सरकार से।" सोहनी ने कहा।

अश्विनीकुमार समझ गया। उसने कहा, "आज मैं इस बगावत का एक नुस्खा सोचकर लाया हूं।"

"अगर तो नुस्खा वैद्यों की गोलियों में होगा तो मैं ले लूंगी।" फातिमा ने कहा, "और यदि यह हकीमों की भांति के काढ़े हुए, तब मैं उसे नहीं पियूंगी।"

"फातिमा! मैं डॉक्टरी गोलियां ही तजवीज़ कर रहा हूं।

"देखो! बाबा ने स्वीकृति दे दी है कि तुम दोनों कल ज़िला कोर्ट में जाकर मजिस्ट्रेट के समक्ष यह घोषणा करो कि तुम बालिग हो और सिविल मैरिज़ ऐक्ट के अनुसार शादी करना चाहते हो। तब वहां से पन्द्रह दिन का नोटिस जारी हो जाएगा कि यदि किसी को आपत्ति है तो वह पन्द्रह दिन के भीतर आकर बताये कि क्यों इनकी शादी स्वीकार न की जाए।

"तुम वह नोटिस करीमबख्श और ज़िला मजिस्ट्रेट को भी भेजवा देना। यदि किसी को आपत्ति होगी तो वह उसे सिविल मैरिज कोर्ट में पेश करेगा। मैं समझता हूं, तब तुम्हारी शादी वहीं कोर्ट में हो जाएगी।"

"परन्तु डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट सिविल मैरिंज कोर्ट को शादी करने से रोक सकता है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूं कि वह रोक नहीं सकेगा। वह बतायेगा कि पिछले चार मास में उसने क्या जांच की है ?"

"उसने तो कुछ जांच नहीं की।"

"तब दो में से एक बात होगी। या तो डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अपनी जांच बंद कर देगा, नहीं तो वह बतायेगा कि उसने इतनी लम्बी तारीख क्यों दी है ? कुछ भी हो। तुम विवाह करने की ओर चल पड़ोगी।"

"पर गुरुजी ! इसकी क्या आवश्यकता है ? हम पति-पत्नी के रूप में आज से ही रहने लगेंगे। अधिक से अधिक कोई यही कह सकता है कि हमने समाज का नियम भंग किया है, परन्तु वह अपराध नहीं है।"

"तुम कर तो सकते हो। आज तो अनेकों युवक बिना शादी की रसम का पालन किये रह रहे हैं। यह अनियमित है और तुम इस अनियम का पालन कर समाज का विरोध करोगे।"

"कुछ भी हो। गुरुजी ! मैं बालिग हूं। मैं आज अपना विवाह करूंगी। कोई न्यायसंगत व्यक्ति हमें रोक नहीं सकता।"

"हां, तुम यह कर सकती हो। मैं समझता हूं कि कर्मचन्द तुम्हारा कहा मान जायेगा। इस पर भी तुम्हें अपनी अम्मी का कहा मानना चाहिए। उनका कुछ तो अधिकार तुमपर है। यदि उनकी आज्ञा युक्तियुक्त हो, तभी माननी चाहिए। वह अम्मी जो हैं।"

"इसी कारण तो हम अम्मी से पूछने आये हैं।" फातिमा का सतर्क उत्तर था।

"और अम्मी क्या कह रही हैं ?"

उत्तर सोहनी ने दिया, "मैं अकेली कैसे राय दे सकती हूं ? बहन चौधरायिन की भी तो मंजूरी होनी चाहिए।"

"तो बिना पण्डित अथवा मुल्ला के शादी मान जाओगी ?"

"उनसे ऊपर मैं चौधरी और चौधरायिन को मानती हूं।"

"हां अम्मी !" फातिमा ने कहा, "मेरा इरादा उनसे बता दो और देखो वे क्या कहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों कर्मचन्द ! तुम क्या कहते हो ?" अश्विनी ने पूछ लिया।

"गुरुजी ! इसने सगाई भी जबरदस्ती की थी। अपनी अम्मी और भाभी के सामने ही मेरा मुख चूम कर कह दिया था कि हमारी सगाई हो गयी है।

"और अब यह कहती है कि रात वह मुझसे अपनी शादी कर लेगी।"

"बहुत भयंकर लड़की है यह !"

"जी नहीं।" फातिमा ने बात काटकर कह दिया, "सर्वथा प्रकृति की पुत्री हूं। आपने ही तो बताया है कि शादी करना हमारा नैचुरल राईट है। इस कारण मैंने नैचुरल जस्टिस की यह मांग की है और उसको प्राप्त करने का ही यत्न कर रही हूं।"

इस समय सौभाग्यवती भी वहां आ गयी। पूर्व इसके कि अश्विनीकुमार कुछ कहे, कर्मचन्द ने कहा, "माताजी ! आज फातिमा गुरुजी से पढ़कर आते ही मुझे मेरे पढ़ाई के कमरे में पहुंच बोली कि इसने फैसला कर लिया है कि यह आज रात मुझसे विवाह करेगी।"

सौभाग्यवती अवाक् फातिमा का मुख देखती रह गयी। फातिमा ने समझा कि वह कर्मचन्द की बात का समर्थन उससे चाहती है। इस कारण वह बोल उठी, "गुरु जी ने पढ़ाया है कि ऋतों का पालन करना धर्म होता है। ऋत कहते हैं प्राकृतिक नियमों को और प्रकृति का नियम है कि सज्ञान लड़के और लड़की चाहें तो विवाह कर लें। इसलिए मैं अपना प्राकृतिक अधिकार ही प्राप्त करना चाहती हूं।"

इस पर सौभाग्यवती को अपने विवाह की बात स्मरण आ गयी। उसने कहा, "बात तो तुम ठीक कहती हो। परन्तु इसकी शुरूआत उलटे ढंग से हो रही है। देखो बेटी फातिमा ! मैं तुम्हें अपनी सगाई की बात बताती हूं।

"आज से चौबीस वर्ष पूर्व एक दिन कर्मचन्द के बाबा और उनकी धर्मपत्नी हमारे घर पर आये थे। घर की बैठक में मेरे माता-पिता से वे कुछ बातें करते रहे और फिर चाय-पानी लेकर वे चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिये । इस घटना के दूसरे दिन मेरी मां ने मुझसे पूछा, 'सौभाग्यवती ! विवाह करोगी ?'

"मैं इस प्रश्न का अर्थ समझने के लिए मां का मुख देखने लगी। उस समय मैं पन्द्रह वर्ष की थी। इस पर मेरी मां ने कहा, तुम पन्द्रह वर्ष की हो गयी हो। शास्त्र के विधि-विधान से तुम्हारा विवाह हो सकता है। बताओ, करोगी ?

"मैं अभी भी मां का मुख देख रही थी। विवाह की इच्छा तो मेरे मन में थी और मेरा चुनाव भी था। परन्तु मैं मुख से बात निकालने में लज्जा अनुभव करती थी। इस कारण मैं मां का मुख देखती रह गई।

"इस पर मां ने व्याख्या से बात कह दी—कल अश्विनी के मित्र के माता-पिता आये थे। वे तुमको अश्विनी के मित्र के लिये मांग गए हैं और तुम्हारे पिताजी ने मुझे कहा है कि मैं तुमसे पता करूं।

"यह मेरे मन की बात ही थी। परन्तु मैंने उत्तर नहीं दिया। विवाह के विचार से मेरा मुख लाल हो गया। मैं उठी और अपने कमरे में चली गयी। मेरी मां ने इसे मेरी स्वीकृति मानी और फिर हमारा विवाह हो गया।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि मेरे विवाह की बात थी तो मेरे मन की ही। परन्तु इस चर्चा का आरम्भ मेरी माता जी से हुआ था, न कि मुझसे।"

फातिमा तो दर्शनशास्त्र पढ़ी थी और युक्ति करने में अधिक कुशल थी। उसने कहा, "माताजी ! उस समय आप पन्द्रह वर्ष की वयस् की थीं और 'नैचुरल जस्टिस' से भी आपको विवाह करने का अधिकार नहीं था। परन्तु मैं तो अब उन्नीस वर्ष की हो गयी हूं। इस कारण प्रकृति ने मुझे अपने विवाह की बात करने का अधिकार दे रखा है। चाहिए तो था कि आप मेरा विवाह अब तक कर देतीं, परन्तु अब आप रोक नहीं सकतीं। यही मेरे गुरुजी कह रहे हैं।"

"तो भैया !" सौभाग्यवती ने अपने भाई की ओर देखकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा, "यह आग तुम्हारी लगाई हुई है ?"

"नहीं बहन ! आग मैंने नहीं लगाई। आग तो प्रकृति ने लगाई है। मैंने तो इसे बुझाने की बात की है। बात यह हो रही है कि आग बुझाने का मेरा उपाय तो मंजूर है, परन्तु प्रतीक्षा न करने की बात फातिमा कह रही है।"

सौभाग्यवती ने समझ लिया कि इस युवती के भीतर कामाग्नि जल रही है और उसको मार्ग मिलना ही चाहिये, अन्यथा यह कुछ अनर्थ भी कर सकती है। इस कारण उसने सोहनी से पूछा, "बहन ! कहो तो घर के पुरुखों से भी राय कर लें ?"

सोहनी ने कहा, "मैं भी इसको ही ठीक समझती हूं।"

बस फिर क्या था। घर की कौंसिल बैठ गयी। उसमें बाबा छोटूराम, चौधरी मोटूराम, सौभाग्यवती, नरगिस, सोहनी, अश्विनी कुमार थे। सब बच्चों को फातिमा और कर्मचन्द के साथ वहां से उठा दिया गया और राय होने लगी।

सोहनी ने वह सब बात बतायी जो उसकी फातिमा से हुई थीं। तदनन्तर मोटूराम ने अपनी सम्मति बाबा के सम्मुख रख दी। उसने कहा, "मैं समझता हूं कि अश्विनीकुमार इसे गन्धर्व विवाह कहेगा और वह शास्त्र के अनुसार ही है। समाज की स्वीकृति रीति-रिवाज के पालन से हो सकेगी।"

"परन्तु कोर्ट का इंजँक्शन ?" सौभाग्यवती ने पूछ लिया।

अश्विनीकुमार ने कहा, "मैंने एक योजना बताई है। वह कानून और समाज का पेट भरने के लिये कार्य में लाई जा सकती है।"

बाबा छोटूराम ने आशीर्वाद दे दिया और अश्विनी ने यह सूचना कर्मचन्द को दे दी, "विवाह स्वीकार हो गया है। दोनों परिवारों के बड़ों का आशीर्वाद है। शेष कार्यवाही कल कोर्ट में चलकर आरम्भ करेंगे और पूर्ण आशा है कि पन्द्रह बीस दिन में विधि पूर्ण हो जायेगी।"

बात समाप्त हो गयी। उसी रात से फातिमा को कर्मचन्द के कमरे में सोने को स्थान मिल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ९ :

फातिमा ने रात सोने से पूर्व कहा, "मैं तो आपको कई दिन से कह रही थी, परन्तु आप मानते ही नहीं थे।"

कर्मचन्द ने मुस्कराकर कहा, "कई दिन से नहीं कई वर्षों से। मुझे तो यह समझ आया था कि जिस दिन तुमने लपककर मुझसे गले मिलते हुए मेरी गाल को चूमा था, उसी दिन तुमने समाज के नियम को भंग करने का नोटिस दे दिया था।

"परन्तु मैं समाज के नियमों का पालन करना आवश्यक समझता था। इसी कारण तुम्हारा मौन निमंत्रण तब से ही अस्वीकार कर रहा था, जबसे मैं लाहौर से वापिस गांव में रहने आया हूं। गुरुजी ने भी बताया था कि समाज के नियमों को भंग करने से समाज में अव्यवस्था फैलती है और इसका दुष्परिणाम अपने पर भी होता है।"

"परन्तु समाज ने अपनी तानाशाही में सीमोल्लंघन कर दिया था। यह बात नहीं है कि जो कुछ संयम मैं पिछले तीन मास से कर रही थी, वह असह्य होता जा रहा था। मेरे मन ने कहा कि इस मूर्ख समाज की तानाशाही का विरोध करना चाहिए। मैंने गुरुजी से बात की। उन्होंने एक उपाय बताया, परन्तु मेरा विद्रोह इनसे भिन्न था। गुरुजी का उपाय समाज का पेट भरने के लिए था। मैं तो समाज से विद्रोह की पताका फहराना चाहती थी।"

"और वह पताका तुमने फहरा दी है।" कर्मचन्द ने फातिमा को अपने अंग-संग लगाते हुए कहा, "तुम मुझसे अधिक साहसी हो।"

अगले दिन प्रातःकाल अश्विनीकुमार और मोटूराम फातिमा तथा कर्मचन्द को नगर में एक वकील के पास ले गए। उससे राय की गयी। उसने एक 'डैक्लेरेशन' तैयार करवा दिया और उस मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित कर दिया।

इसपर यह समस्या उत्पन्न हुई कि क्या वह डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को हुक्म जारी कर सकता है कि उसके कोर्ट में आकर इस शादी में अपनी आपत्ति उपस्थित करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील इस आपत्ति का उत्तर ढूंढ़ कर ही कोर्ट में आया था। उसने कह दिया, "श्रीमान्! आप अपने कार्य के लिए सैशन-जज के समक्ष उत्तरदायी हैं। इस कारण आप इस डैक्लेरेशन को सैशन-जज की अदालत में भेज सकते हैं। वहां डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट इस विषय में चार महीने की देरी का कारण बतायेगा।"

कर्मचन्द और फातिमा के डैक्लेरेशन में यह कहा गया था कि उनके प्राकृतिक अधिकारों पर अकारण प्रतिबन्ध लगाया जा रहा है।

यह डैक्लेरेशन उपस्थित किया गया था बीस अगस्त १९४७ को। तब तक भारत को स्वराज्य मिल चुका था और भारत सरकार, विशेष रूप में पंजाब सरकार के समक्ष स्वेच्छा अथवा विवशता से दोनों नये निर्मित देशों में जनता के स्थानान्तरण की समस्या उपस्थित हो रही थी। इस कारण कर्मचन्द और फातिमा की अर्जी को सैशन कोर्ट में भेजने पर भी मुआमला शीघ्र नहीं लिया जा सका।

सैशन जज ने डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को नोटिस जारी किया था कि वह कोर्ट में उपस्थित होकर इस मुआमले में इतनी देरी का कारण वर्णन करे। इस पर निश्चित तिथि को सैशन कोर्ट में डिस्ट्रिक्ट होशियारपुर की नकल भेज दी गयी। उसे आज्ञा हुई थी कि ज़िला के बार्डर पर हिन्दू-मुसलमान झगड़े की जांच करने जाये, इस कारण वह सैशन कोर्ट में उपस्थित नहीं हो सकता। इस पर भी उसने मुकद्दमे की फाईल भेज दी।

इसपर वह फाईल देखी गयी। वह खाली थी। कुछ भी कार्यवाही नहीं हुई थी।

सैशन जज ने करीमबख्श को सम्मन जारी कर दिया कि वह उस कोर्ट में हाजिर होकर बताये कि क्यों न फातिमा और कर्मचन्द को विवाह करने की स्वीकृति दी जाये।

करीमबख्श को दिल्ली में सम्मन मिला तो वह हाजिर हो गया। उसका बयान था कि लड़की मुसलमान है, इस कारण बड़ा भाई होने से वह उसका सरपरस्त है और वह इस शादी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसन्द नहीं करता।

करीमबख्श की इस घोषणा पर गांव के पैदा-शुदा बच्चों के रजिस्टर की नकल उपस्थित की गयी। इसमें दर्ज था कि रहीम बख्श, करीमबक्श के बाप के घर एक लड़की अमुक तारीख को पैदा हुई।

इसपर करीमबख्श को इस रजिस्टर पर आपति करने का अवसर दिया गया। तब तक करीमबख्श पार्टी के काम से पाकिस्तान चला गया था।

यह समझा गया कि करीमबख्श ने अपना देश बदल लिया है। इससे उसकी आपत्ति को अस्वीकार कर सोहनी के बयान को मंजूर कर लिया गया और होशियारपुर के सिविल मजिस्ट्रेट को शादी रजिस्टर करने की स्वीकृति दे दी गयी।

शादी रजिस्टर्ड की गयी तीस जनवरी सन् १६४८ को और उसी दिन सांयकाल मोटूराम चौधरी की ओर से गांव वालों के लिये एक बहुत बड़े भोज का प्रबन्ध किया गया।

कोर्ट में तो हस्ताक्षर करने के समय फातिमा सामान्य वस्त्र ही पहने हुए थी, परन्तु हवेली में पहुंच सौभाग्यवती ने फातिमा के सामने भूषण और ज़रीदार वस्त्र पहनने के लिए रख दिये।

फातिमा उनको देख हंस पड़ी और बोली, "माताजी! अब तो शादी पुरानी हो चुकी है। अब इनकी क्या आवश्यकता है?"

"तो बस पांच महीने में ही विवाह पुराना हो गया?"

"माताजी! उसे पुराना हुए दो मास हो चुके हैं। पिछले मास भी मैं रजस्वला नहीं हुई थी और अब दूसरे मास रजस्वला होने के दिन भी आने वाले हैं।"

"तो यह बात है? परन्तु तुमने बताया नहीं।"

"हां, मुझे पिछले मास ही बताना चाहिए था। मैं समझी थी कि चांद निकलेगा तो अपने आप सबको दिखाई दे जाएगा।"

"कुछ भी हो। समाज की दृष्टि में तुम्हारा विवाह आज हुआ है और ये भूषण तथा वस्त्र तो समाज को दिखाने के लिए हैं। इस कारण इनको आज पहनना ही चाहिए और जब सायंकाल गांव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग एकत्रित हों तो तुमको उनमें पूर्णिमा के चांद की भांति चमकती दिखाई देना चाहिए।

"देखो बेटी! यह हमारे परिवार की शोभा के लिए है।"

फातिमा ने भूषणों की संदूकची और वस्त्र उठाए और अपने कमरे में चली गयी। वहां उसकी मां सोहनी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

"तो अम्मी! तुम यहां हो?" फातिमा ने मां को वहां बैठे देखा।

"हां! मैं तुम्हें शादी के लिए उपयुक्त वस्त्र देने लायी थी। वैसे तो उन वस्त्रों को पहिन कर ही कचहरी जाना चाहिए था। परन्तु मैंने इसे उचित नहीं समझा। वहां कचहरी में मैं तुम्हारा तमाशा बनाना नहीं चाहती थी।"

"पर उसकी मां ने मुझे ये वस्त्र दिए हैं।" फातिमा ने वस्त्र और भूषण मां के सम्मुख रख दिए।

सोहनी ने संदूकची खोल भूषण देखे तो चकाचौंध रह गयी। उसने कहा, "तो तुम यह सुसराल वाले ही पहनो। ये बहुत बढ़िया हैं। मेरे दिये कल पहनना।"

इस प्रकार बात निश्चय कर उसने अपने बैंक के नाम एक पत्र जो वह अपने वकील से लिखवा कर लायी थी, देकर कह दिया, "इसमें बैंक से उस जायदाद को तुम्हारे नाम करने की स्वीकृति है, जो तुम्हारे अब्बा ने तुम्हारी मां के नाम वसीयत में लिखी थी। वह पच्चीस हजार नौ सौ थे। उनमें चार प्रतिशत के हिसाब से सूद जमा होता रहा है। यह तुम बैंक में जाकर अपने नाम बदलवा लेना।"

इस प्रकार सायंकाल के भोज की तैयारी होने लगी। परन्तु वहां भी एक नयी परिस्थिति उत्पन्न हो चुकी थी। पिछले चार महीने की भाग-दौड़ में गांव वालों के विचारों में परिवर्तन उत्पन्न हो चुका था। इन महीनों में गौरीशंकर ने पुनः अपना रंग जमा लिया था। उसने लोगों में इस विवाह को शास्त्र-विरुद्ध घोषित करना आरम्भ कर दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब गांव वालों को तीस जनवरी के सायं सात बजे कर्मचन्द के विवाह की खुशी में दावत का निमंत्रण मिला तो गौरीशंकर गांव में घर-घर में घूम-घूम कर बता रहा था कि यह शादी कचहरी में ईसाइयों के तरीके हुई है। यह इस कारण कि उसने वेद मंत्रों को इस मुसलमान लड़की के सामने बोलने से इनकार कर दिया था। यह चौधरी का परिवार ईसाई हो गया है। इस कारण जो भी इनके घर खाना खाने जाएगा, वह भी पतित हो जाएगा।

पिछले आठ वर्ष में लोगों के विचारों में बहुत कुछ परिवर्तन हुआ था, परन्तु सब विस्मय करते थे कि लड़की तो चौधरी के घर में पिछले कई वर्ष से रहती थी और विवाह अब होने लगा है। इस कारण यह विवाह तो एक धोखा है। हकीकत में विवाह पहले ही हो चुका है।

इसपर गौरीशंकर ने यह मुलम्मा चढ़ा दिया कि मां बाप के काम आती है और लड़की लड़के के काम आती है।

रामनिवास गांव का सबसे बड़ा दुकानदार गौरीशंकर के प्रभाव में आया तो लोगों ने यह निश्चय कर लिया कि वे दावत पर नहीं जायेंगे।

इसपर भी भोजन के वक्त कुछ गरीब और छोटी जाति के लोग आए।

अभी गौरीशंकर और रामनिवास की बात पर चौधरी छोटूराम विस्मय ही कर रहा था कि मोटूराम भीतर से भागता हुआ आया और बोला, "बाबा! एक भयंकर बात हो गयी है!"

"क्या?" बाबा ने पूछा। वहां सब बैठे छोटे चौधरी का मुख देखने लगे।

मोटूराम ने बताया, "अभी-अभी रेडियो पर घोषणा हुई है कि किसी ने गांधीजी की हत्या कर दी है।"

बाबा अवाक् मुख रह गया। सब लोग जो वहां खड़े थे, उत्सुकता से शेष बात को सुनने लगे।

"बाबा!" मोटूराम ने कहा, "किसी ने गांधी जी पर तीन गोलियां चलाई हैं और वह मर गए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मारने वाला पकड़ा गया है क्या ?"

"हां ! उसने भागने का यत्न नहीं किया। पुलिस उसे पकड़ कर ले गयी है।"

"और वह कोई पंजाबी शरणार्थी है ?"

"यह नहीं बताया गया कि वह कहां का रहने वाला है।"

"तो क्या बताया है ?"

"बस, यही कि दिल्ली की पूर्ण जनता गांधी जी के निवास स्थान 'बिरला हाउस' को जा रही है।

"जरूर किसी दुखियारे पंजाबी ने यह किया है ?"

इसपर बाबा ने आये हुए लोगों को कहा, "आप लोग बैठो और भोजन करो। जब दूसरे आयेंगे तो उनको भी खिला दिया जायेगा।"

इसपर मोटूराम ने कहा, "नहीं बाबा ! अब दावत नहीं होगी। हम भी कुछ नहीं खायेंगे। हम व्रत रखेंगे।"

"ओह ! गांधी जी पर बहुत भक्ति और श्रद्धा जाग पड़ी है ?"

मोटूराम ने सब आए हुओं के सामने हाथ जोड़कर कहा, "मैं हलवाईयों को भट्टी ठण्डी करने के लिए कह रहा हूं। यह दावत आज नहीं होगी। आप सब क्षमा करें।"

लोग निराश हो लौट रहे थे कि अश्विनीकुमार अपने बच्चों के साथ वहां आ पहुंचा। वह दिनभर तो अपनी बहन के परिवार के साथ रहा था। परन्तु एक घंटा पूर्व दावत में सम्मिलित होने के लिए वस्त्र बदलने घर गया था। वह लोगों को शोक मुद्रा में वापस देख विस्मय करता हुआ वहां आया, जहां दोनों चौधरी हाथ जोड़ आने वालों से क्षमा मांग रहे थे।

अश्विनी की पत्नी सरस्वती भीतर चली गयी। अश्विनी ने पूछ लिया, "क्या हुआ है ?"

"गांधीजी की हत्या कर दी गयी है ?"

"तो इससे हमें क्या ?"

"मैं इस घटना को दुर्भाग्यपूर्ण मानता हूं। इस कारण दावत बंद कर रहा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब लोग चले गए तो हवेली का फाटक बंद कर दिया गया। सब गैस के हण्डे बुझा दिये गए। केवल एक गैस का हण्डा जलता रहा जिससे हलवाई सामान बटोर लें।

अश्विनी और दोनों चौधरी भीतर गए तो पूर्ण परिवार बैठक घर में एकत्रित हो चुका था। रेडियो वहां रखा था और उसमें बार-बार गांधीजी की हत्या की घोषणा की जा रही थी। बीच-बीच में रामधुन गायी जा रही थी।

अश्विनी ने बैठक में प्रवेश करते ही कहा, "कर्मचन्द ! बंद करो इसे।"

कर्मचन्द ने रेडियो का 'स्विच ऑफ' किया तो सब अश्विनी का मुख देखने लगे।

अश्विनी ने बैठते हुए कहा, "देखो बाबा ! हमें विचार करना है कि यहां जो मिठाई इत्यादि बनी है, उसका क्या करें ?"

उत्तर मोटूराम ने दिया, "प्रात: काल नदी के किनारे ले जाकर उसमें बहा दूंगा, जिससे इसका कुछ तो उपयोग हो जाये।"

"क्या उपयोग होगा ?"

"मछलियां खायेंगी और प्रसन्न होंगी।"

इसपर परमानन्द बोल उठा, "परन्तु पिताजी ! हमें तो भूख लगी है। सुबह से दावत की प्रतीक्षा में भूखे बैठे हैं।"

इसपर बाबा छोटूराम ने कह दिया, "परमानन्द ठीक कहता है। मोटू ! वहां सेवकों को कहो कि सब जो कुछ बना है, घरवालों के खाने भर के लिए भीतर ले आयें और दरवाजा बंद कर सब खाओ।

"असल बात यह थी कि," बाबा ने आगे कहा, "हमें यह दावत आज से दो महीने पहले ही करनी चाहिए थी। असल शादी तो उस दिन हुई थी।

"हम मूर्ख गौरीशंकर से मुहूर्त्त निकलवाने के झमेले में रहे। उसका पहला मुहूर्त्त भी गलत रहा। उसपर न्यायालय ने रोक लगा दी थी और अब हमने मुहूर्त्त निकलवा कर शादी रजिस्टर आज करवाई है तो आज भी दावत नहीं हो सकी।

"वह धूर्त्त और अनपढ़ मूर्ख मुहूर्त्त निकालने की हमसे दक्षिणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेता रहा है और गांव वालों में प्रचार करता रहा है कि हम पतित हो रहे हैं। इस कारण हमारे घर का जो भी खाएगा, उसे हरिद्वार में जाकर प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।"

अश्विनीकुमार हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "मैं तो उसे पहले ही एक छलना समझता था।"

"कर्मचन्द!" मोटूराम ने पूछ लिया, "हत्यारे का नाम बताया है?"

"पिताजी! अभी तक नहीं बताया गया। बस, एक ही घोषणा हो रही है कि हत्यारे ने बूढ़े बापू पर तीन गोलियों से वार किया है।"

छोटूराम के मुख से निकल गया, "जिस किसी ने यह कर्म किया है, मुझे तो उसपर दया आती है। उस मूर्ख ने उस छलना रूपी महात्मा को अमर कर दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय-परिच्छेद

करीमबख्श पाकिस्तान से पासपोर्ट लेकर एक वर्ष उपरान्त दिल्ली लौटा। वह लाहौर, रावलपिण्डी और करांची में कम्यूनिस्ट पार्टी का नवनिर्माण करने का यत्न करता रहा था। पाकिस्तान में उसका प्रयास किसी प्रकार का विशेष प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सका था। यद्यपि पार्टी के तीन केन्द्र वहां खुल चुके थे, परन्तु वे पाकिस्तान में रह गए थोड़े से हिन्दुओं को लूटने-मारने का ही कार्य कर सके थे। कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों को वह मुसलमानों को समझा नहीं सका।

जब करीमबख्श ने देखा कि उसके आगे-पीछे खुफिया पुलिस लग रही है तो वह भारत में अपनी सम्पत्ति बटोरने का बहाना बना पासपोर्ट ले दिल्ली आ पहुंचा। दिल्ली से वह होशियारपुर आ गया।

वहां पहुंच वह पूर्ण स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर पुनः जालन्धर गया और सैजन जज की आज्ञा पर नज़र-सानी करने की अर्जी कर बैठा।

सैशन कोर्ट के रजिस्ट्रार ने अर्जी पढ़ी तो करीमबख्श को सिर से पांव तक देख कहा, "तुम तो पाकिस्तान चले गए थे?"

"जी! मैं वहां का नागरिक बन गया हूं।"

कोर्ट का रजिस्ट्रार एक मुसलमान था। उसने भारत में रहने का निश्चय किया हुआ था। वास्तव में, वह उन मुसलमानों में एक था जो यह विचार रखते थे कि पूर्ण भारत पर इस्लामी पताका फहरानी चाहिए।

रजिस्ट्रार ने बताया, "इस कोर्ट में कुछ नहीं हो सकेगा। तुम्हें दिल्ली में 'पाकिस्तानी विमेन रिकवरी विभाग' में सूचना देनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए कि इस गांव में एक मुसलमान लड़की को एक बारसूख हिन्दू परिवार ने रोक रखा है।"

करीमबख्श ने इस सुझाव के लिए शुक्रिया अदा किया और कोर्ट रूम से बाहर चल पड़ा।

रजिस्ट्रार की करीमबख्श से हुई बात को कोर्ट का चपरासी सुन रहा था। उसने बात को समझा और फिर जब करीमबख्श कोर्टरूम से बाहर जाने लगा तो उसने भी करीमबख्श को सलाम कर दी।

करीमबख्श ने ध्यानपूर्वक चपरासी की ओर देख पूछा, "क्या चाहते हो?"

"हुजूर! अपनी दस्तूरी के लिए अर्ज कर रहा हूं।"

कर्मचन्द ने समझा और जेब में हाथ डाल एक रुपये का नोट निकाल उसके हाथ में रखा और कचहरी से निकल विचार करने लगा कि वह फातिमा को देखने गांव में जाए और वहां से दिल्ली 'विमेन रिकवरी विभाग' के पास पहुंचे।

इस निमित्त वह होशियारपुर लौटा तो उसे नरगिस के पिता सरदार खान की याद आ गयी। वह होशियारपुर पहुंचते ही सरदार खान की दुकान पर पहुंच गया। वहां अब एक हिन्दू बसाती की दुकान करता था। करीमबख्श अपने को छुपाने के लिए खद्दर के कपड़े पहने हुए था। वह अपने को मुसलमान प्रकट नहीं करना चाहता था।

उसने दुकानदार से पूछा, "पार्टीशन से पहले जो शख्स यहां था, वह कहां है?"

दुकानदार ने जवाब दिया, "मैं नहीं जानता। मैंने तो यह दुकान पुनर्वास विभाग से किराए पर ली है। उस समय दुकान खाली और खुली पड़ी थी।"

करीमबख्श समझ गया कि या तो वह मारा गया है अथवा भागकर पाकिस्तान चला गया है। इस कारण वहां से किसी प्रकार की सूचना मिलने की आशा करनी व्यर्थ समझ वह निराश हो टीकड़ी गांव में जा पहुंचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने देखा कि उसकी मां का मकान ग्रब पूर्णत: नया बना हुग्रा है। वह द्वार पर जाकर खड़ा हुग्रा तो विचार करने लगा कि द्वार खटखटा कर पता करे ग्रथवा सीधा चौधरी के घर जाए। इतने में मजीद, उसका बड़ा लड़का, हाथ में पुस्तकें लिए उधर को ही ग्राता दिखाई दिया। वह देखने लगा कि लड़का उसी मकान में ग्राता है ग्रथवा नहीं। मजीद ने पहले तो बाप को पहचाना नहीं, परन्तु जब बाप ने उसका नाम लेकर पुकारा तो वह बोल उठा, "ग्रब्बाजान!"

"हां!"

"तो ग्राप ग्रा गए हैं?"

"तुम्हारी ग्रम्मी कहां है?"

"छोटी-बड़ी दोनों ग्रम्मियां भीतर हैं।"

"तब ठीक है। ग्रौर भी कोई है?" उसका ग्रभिप्राय फातिमा-कर्मचन्द से था।

"नहीं! बस हम चार ही हैं। हमीद, मैं ग्रौर दोनों ग्रम्मियां।"

मजीद ने फाटक का कुण्डा खटखटाया तो ग्रांगन में बने मकान की छत में से नरगिस ने देखा। वह ग्रपने पति को मजीद के पास खड़ा देख नीचे भागी ग्रौर ग्रम्मी से राय करने लगी कि द्वार खोले ग्रथवा न?

सोहनी ने कहा, "नहीं खोलोगी तो मजीद भीतर कैसे ग्राएगा?"

इसपर नरगिस ने नीचे ग्रा द्वार खोल दिया। परन्तु इसमें तीन-चार मिनट लग गए थे। ग्रतः जब ग्रांगन का फाटक खुला तो करीमबख्श ने पूछा, "इतनी देर तक क्या विचार करती रही थीं?"

"यही कि ग्रापके लिए दरवाजा खोलूं या न?"

"ग्रौर खोल दिया है क्योंकि मजीद भी बाहर था?"

"जी! ग्रम्मी से पूछ रही थी ग्रौर ग्रम्मी ने कहा है कि खोल दूं इसलिए खोल दिया है।"

"इस मजीद के लिए नहीं।"

"यह बाप का ही तो बेटा है। बड़ा होकर यह मां को पीटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगा जैसे इसका बाप बीवी को पीटता था।"

इस समय तीनों भीतर बैठक में पहुंच गए। सोहनी बैठक के बीचों-बीच पुत्र की प्रतीक्षा में खड़ी थी।

"अम्मी ! आदाब अर्ज़ है।" करीम ने कहा।

"कैसे आए हो ?"

"अम्मी का नया मकान देखने के लिए।"

"यह तो फातिमा ने बनवाया है।"

"और वह कहां है ?"

"अपनी ससुराल में।"

"खुश है अपने घरवाले से ?"

"हां ! अब वह एक बच्चे की मां है। मियां-बीवी दोनों राजी हैं।"

"और उसका घरवाला क्या करता है ?"

"अभी पढ़ाई करता है। कहता है कि अभी तक सरकारी कॉलेज में वह गलत-मलत पढ़ता रहा था। उसको दिमाग से निकाल रहा है। तब जो ठीक है, उसे पढ़ेगा। इसमें कम-से-कम दो साल और लगेंगे और तब वह जिन्दगी का काम शुरू करेगा।"

"और उसका बाप व बाबा उसके लिए मशक्कत करते हैं ?"

"अब उसके दोनों भाई रामचन्द और परमानन्द भी गांव में आ गए हैं। रामचन्द ने गांव में आटा पीसने और धान छड़ने की मशीन लगा ली है और परमानन्द ने रामनिवास के मुकाबले में दुकान खोल ली है। रामनिवास गांव छोड़ने की बात कर रहा है।"

"क्यों ?"

"उसका काम मन्दा पड़ रहा है। जो साबुन की टिकिया वह आठ आने में दिया करता था, वह परमानन्द छः आने में देने लगा है। इस कारण उसकी दुकान पर मक्खियां भन-भनाती हैं।

"बाबा ने भी एक नया धंधा शुरू कर दिया है। वह रुपया उधार देता है।"

"तो वह भी सूदखोर हराम की कमाई करने लगा है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह सूद चार रुपये सैंकड़ा साल का लेता है और कभी-कभी रुपया जल्दी लौटाने पर उसमें भी कुछ कमी कर देता है।"

"यह वह कैसे कर देता है ?"

"वह ज़मानत पर रुपया देता है और सूद कम लेता है। बाबा कहता है कि बैंक वाले भी यही करते हैं। मगर वह सूद इससे बहुत ज्यादा लेते हैं।"

"अम्मी ! कुछ खिलाओ-पिलाओगी नहीं ? सुबह का जालन्धर से चला हुआ हूं। बारह बजे होशियारपुर पहुंचा था। वहां नरगिस के वालिद की दुकान देखने गया था। मगर वहां तो कोई हिन्दू बसाती की दुकान करता है। अब चार बजने वाले हैं और सख्त भूख लगी है।"

इसपर नरगिस ने कह दिया, "गांव में अब एक बहुत बढ़िया टी-स्टाल खुल गया है। वहां चाय-कॉफी, केक-पेस्ट्री और साथ ही कबाब मछली मिलती हैं।"

"किसका है वह ?"

"एक लाहौरी हिन्दू है।"

"मगर वह अम्मी की भांति मुफ्त में तो खिलाएगा नहीं।"

"तो दाम देकर खा सकते हो।"

"दाम तो है। मगर वापिस दिल्ली भी तो जाना है ?"

सोहनी ने बात रोककर नरगिस को कहा, "मजीद-हमीद के लिए भी तो बनाओगी। अम्मी के इस बेटे के लिए भी तैयार कर दो।"

"अम्मी ! मैं यही उम्मीद कर यहां आया था।"

नरगिस उठी और रसोई घर में चली गयी। इस समय कर्मचन्द, फातिमा और करीम का छोटा लड़का हमीद आ गए।

कर्मचन्द अपने खेत से गाजर-मूलियां और टमाटर ले आया था और आते हुए हलवाई की दुकान से मिठाई तथा नमकीन खरीद लाया था।

वे दोनों करीमबख्श को वहां बैठे देख एक क्षण के लिए भीतर आने से झिझके। फिर फातिमा ने अम्मी से पूछा, "अम्मी ! यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाईजान यहां किसलिए आए हैं ?"

"पूछ रही हूं। यह बताता कुछ नहीं। यह तो मैं जानती हूं कि यह पाकिस्तान को चला गया था। मगर वहां से लौटा कैसे और क्यों लौट आया है, बता नहीं रहा।"

इस समय तक दोनों वहां रखी कुर्सियों पर बैठ गए। सैण्टर टेलब पर कर्मचन्द ने वह सब सामान रख दिया जो वह साथ ले कर आया था।

"कर्मचन्द !" करीम ने बात टालने के लिए पूछ लिया, "यह गांव से खरीद कर लाए हो अथवा घर से लाए हो ?"

"कही से भी हों, खाने में लज़ीज हैं। हम अम्मी के यहां चाय पीने आए हैं और यह उसके साथ खाने के लिए लाए हैं।"

"मगर यह तो दो के खाने से ज्यादा हैं।"

"मगर खाने वाले दो नहीं छः थे और अब सात हैं।"

करीम ने समझते हुए कहा, "हां ! यह ठीक है। भूख तो मुझे बहुत तेज लग रही है ?"

"तो अम्मी तुमको ज्यादा दे देंगी। मगर तुम पाकिस्तान से भूखे लौटे हो क्या ?"

"वहां कोई मुफ्त बांटने वाली हलवाई की दुकान नहीं खुली।"

"तो वहां गए ही क्यों थे ? बहुत से मुसलमान तो लाहौर, गुजरांवाला, मुल्तान, करांची में इस कारण गए थे कि वहां के धनी-मानी हिन्दुओं को लूट कर जिन्दगी चलायेंगे।"

"हां ! मगर मेरे वहां पहुंचने से पहले वहां सब कुछ लुट-पिट चुका था।"

इस समय नरगिस चाय की बड़ी-सी केतली और दूसरे बर्तन लेकर आ गयी।

जब तक खाना-पीना चलता रहा, कर्मचन्द की पढ़ाई के विषय में करीम ने बात आरम्भ कर दी। उसने पूछा, "अम्मी कह रही है कि तुम अपना पढ़ा-लिखा भुला रहे हो जिससे नयी पढ़ाई कर सको।"

कर्मचन्द हंस पड़ा। "नहीं, ऐसा नहीं है। भुला नहीं रहा। उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ कुछ नया पढ़ रहा हूं। गुरुजी कहते हैं कि आगे चलकर दोनों का ताल्लुक बन जाएगा।"

"और फातिमा, तुम ?"

"भाईजान ! आपका एक भांजा आया है। उसने मुझे तीन महीने तक पढ़ाई नहीं करने दी। इस कारण मुझमें और आपके जीजाजी में अन्तर कम रह गया है। पहले मैं उनसे बहुत आगे थी।"

"क्या नाम रखा है बच्चे का ?"

"कमल।"

"यह तो हिन्दुआना नाम है ?"

"मैं भी तो मुसलमान नहीं रही। इसलिए वैसा नाम रखा नहीं। बाबा कहते थे गुलशन नाम बहुत अच्छा है। मगर मैंने ही कमल पसन्द किया है।"

"यह तुम्हारे गुरुजी ने बताया होगा ?"

"जी नहीं ! उन्होंने इन्द्र नाम का सुझाव दिया था। वह बाबा नहीं माने।"

"क्यों ?"

"वह कहते थे कि इन्द्र बहुत शरारती माना जाता है और यह लड़का तो सौम्य स्वभाव है।"

इस प्रकार इधर-उधर की बातें होती रहीं।

: २ :

शाम होने से पहले कर्मचन्द और फातिमा वहां से हवेली में चले गए। उनके जाने के उपरान्त अम्मी ने पूछा, "तुम बिस्तर इत्यादि कुछ भी नहीं लाए। यहां कितनी देर के लिए आए हो ?"

"आज रात रहूंगा और कल प्रातःकाल चल दूंगा।"

"कहां जा रहे हो ?"

"अभी यहां से दिल्ली जा रहा हूं। वहां कुछ दिन रह कर करांची जाऊंगा।"

"वहां जाने का खर्च कहां से मिलेगा ?"

"अम्मी ! तुम जानती हो कि मैं एक राजनीतिक पार्टी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करता हूं। वहां से खर्च मिलता है, परन्तु वह इतना नहीं होता कि मिठाई, फल खा सकूं।"

बच्चे चाय पी खेलने मकान के बाहर चले गए थे। अम्मी अपने कमरे में गयी तो करीम नरगिस से बोला, "मैं सोना चाहता हूं।"

"तो चलिए। मेरे कमरे में आपको जगह मिल सकती है।"

करीमबख्श सोया तो फिर रात के खाने के वक्त जागा। रात खाना खाकर पुनः सोया तो फिर दिन चढ़ने पर ही सोने के कमरे से निकला। उसने गुसल वगैरह किया, सुबह का नाश्ता लिया तो नरगिस ने अम्मी से कह दिया, "अम्मी! मैं इनके साथ कुछ दिन के लिए दिल्ली सैर के लिए जा रही हूं। यह कहते हैं कि एक सप्ताह तक लौट आएंगे। तब यह मुझे यहां छोड़ फिर पाकिस्तान जाएंगे।"

"देख लो! मैं तुमको मना नहीं करूंगी। इस पर भी मेरी राय नहीं है।"

"अम्मी! मैं जा रही हूं। दो सप्ताह की छुट्टी मांग रही हूँ।"

"मगर तुम यहां किसी किस्म की नौकरी करती हो क्या, जो छुट्टी मांग रही हो?"

"नहीं अम्मी! नौकरी नहीं। इस पर भी तुम घर की बड़ी हो। इसलिए छुट्टी मांग रही हूं। ये मजीद-हमीद यहीं रहेंगे।"

अम्मी समझ गयी कि खाविन्द की सोहबत के लालच में जा रही है। इसलिए वह चुप रही।

जाने से पहले दोनों फातिमा और कर्मचन्द से मिलने हवेली पर जा पहुंचे। कर्मचन्द हवेली में नहीं था। बाबा ने अपने लिए छाजन के स्थान पर एक पक्की बारहदरी बनवा ली थी। वहां बैठ वह हुक्का गुड़-गुड़ा रहा था।

करीम बाबा के पास गया तो नरगिस भीतर फातिमा से मिलने चली गयी।

"तो तुम अभी भी यहां हो?" बाबा ने करीम से पूछ लिया।

"बाबा! मैं आया तो एक हफ्ता भर रहने के लिए था। मगर कुछ काम याद आ गया है और आज ही दिल्ली जा रहा हूं। मैं कर्मचन्द से मिलने आया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो होशियारपुर गया है।"

"किसलिए ?"

"बता कर नहीं गया। कुछ बीवी के काम पर गया मालूम होता है।"

"छोटे चौधरी कहां हैं ?"

"वह थाने में किसी काम से गया है।"

थाने का नाम सुन करीम के कान खड़े हो गए। उसने पूछ लिया, "आजकल थानेदार कौन है ?"

"एक सरदार गुरबचन सिंह है। अब सब पुलिस हिन्दू है। मुसलमान गांव में सिवाय तुम्हारी बीवी और अम्मी के और कोई नहीं रहा। सब मुसलमान यहां से चले गए हैं।"

"चले गए हैं या निकाल दिए गए हैं ?"

बाबा ने मुस्कराते हुए कहा, "मार-पीट कर तो नहीं। मगर एक दिन किसी ने गांव में यह शोर मचा दिया कि पटियाला से एक सिक्खों का जत्था आ रहा है। बस, खबर सुनते ही सब मुसलमान बोरिया-बिस्तर बांध चल दिए। उनके मकानों पर रावी पार के हिन्दू रहने लगे हैं। उन्होंने मुसलमानों के गंदे मकान गिरा कर नए मकान बनवा लिए हैं।"

"बाबा ! अम्मी ने भी तो नया मकान बना लिया है ?"

"यह तो फातिमा ने अपनी अम्मी को उसकी खिदमात के एवज़ में बनवा दिया है। उसे तुम्हारी अम्मी ने तीस हजार रुपये उसकी मां के हिस्से का दिया तो उसने उसमें से दस हजार खर्च कर अपनी अम्मी को पक्का सीमेण्ट का मकान बनवा दिया।

"उसकी अम्मी ने भी वह मकान अपने मरने पर फातिमा के के नाम कर दिया है।"

"बहुत होशियार हो गयी है फातिमा !"

"हां ! वह आजकल न्यायदर्शन पढ़ती है। उस किताब में दलील करने का ही तरीका बताया हुआ है।"

अभी बातें चल ही रही थीं कि नरगिस फातिमा के लड़के को लेकर आ गयी। करीमबख्श ने लड़के को गोदी में लेकर एक रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके हाथ में पकड़ा दिया।

छोटूराम हंस पड़ा और बोला, "यह तो अपने मुंह में डाल फाड़ डालेगा। मत दो इसे। रखो और मार्ग में खाने के काम में आएगा।"

परन्तु नरगिस उसे रुपये सहित भीतर ले गयी।

वहां से ही वे बस स्टैण्ड की तरफ चल पड़े। मार्ग में मजीद अपनी मां का छोटा-सा अटैचीकेस लिए खड़ा था।

बस में जाते हुए करीम ने पूछा, "कर्मचन्द किस काम से होशियारपुर गया है?"

"पता नहीं। फातिमा ने इतना बताया है कि उसके ही किसी काम पर गए हैं। काम उसने बताया नहीं। मैंने पूछा नहीं और पूछना मुनासिब भी नहीं समझा।"

होशियारपुर स्टेशन पर वे वेटिंग रूम में जा बैठे। वहां से रात गाड़ी मिली तो जालन्धर और वहां से वे दिल्ली जा पहुंचे।

दिल्ली में करीमबख्श अपनी रिपोर्ट लिखाने 'पाकिस्तान विमेन रिकवरी डिपार्टमेण्ट' के कार्यालय में जाना चाहता था। वह जन्तर-मन्तर रोड वाले कम्यूनिस्ट ऑफिस में ठहरा हुआ था। ऑफिस का सेक्रेटरी एक सिक्ख युवक था। करीम ने ऑफिस से 'विमेन रिकवरी डिपार्टमेण्ट' का फोन नम्बर पूछा तो सेक्रेटरी ने पूछ लिया, "क्या काम है?"

करीमबख्श ने कह दिया, "कुछ अपना काम है।"

इसपर सेक्रेटरी हंस पड़ा। करीम ने पूछा, "सरदारजी! हंसे क्यों हो?"

"यह मेरी अपनी बात है। बताऊंगा नहीं।" इसपर करीमबख्श भी हंसने लगा।

अभी वे हंस ही रहे थे कि उस रिकवरी विभाग से टेलीफोन का सम्बन्ध बन गया और करीमबख्श उस कार्यालय का पता पूछने लगा। पता मिला तो टेलीफोन बन्द कर करीमबख्श वहां जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। आफिस सैक्रेटरी गुरवचनसिंह ने कहा, "तुम मुझसे पूछते तो यह पता मैं भी बता सकता था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आपको वहां की जानकारी है ?"

"अब आओगे तो बताऊंगा।"

करीमबख्श कम्यूनिस्ट कार्यालय से निकला और निर्दिष्ट पते पर चल पड़ा। वहां पहुंच उसने एक स्लिप पर अपना नाम लिखकर भीतर भेज दिया। उसे तुरन्त बुला लिया गया। वहां एक प्रौढ़ावस्था की मोटे नक्श वाली स्त्री बैठी थी।

उसके करीम को सिर से पांव तक देख पूछा, "क्या काम है ?"

"मैं एक रिपोर्ट लिखाने पाकिस्तान से यहां आया हूं।"

"लिखाओ।"

"मेरी एक बहन है। वह यहां भारत में एक गांव में रोक रखी गयी है। मैं उसे पाकिस्तान ले जाना चाहता हूं।"

इस समाचार से वह औरत सजग हो मेज पर रखी घंटी बजाने लगी। एक अन्य लड़की आयी तो प्रौढ़ावस्था की स्त्री ने उसको कहा, "लक्ष्मी ! इसकी रिपोर्ट लिख लो।"

लक्ष्मी एक रजिस्टर ले आयी और उसका एक खाली पन्ना निकाल लिखने लगी। करीमबख्श लिखाने लगा—

"मैं करीमबख्श पाकिस्तान का एक बाशिन्दा हूं। छब्बीस अगस्त १९४७ को मैं भारत छोड़ पाकिस्तान जाने लगा तो मेरी बहन मुसम्मात फातिमा को, जो उस वक्त नाबालिग थी, झुनझुन टिकड़ी जिला होशियारपुर के जमींदार चौधरी मोटूराम ने पकड़-कर अपनी हवेली में बंद कर लिया था। मैं तो जान बचा कर भागा और वह लड़की फातिमा मेरे साथ नहीं जा सकी। अब उसकी शादी चौधरी मोटूराम ने अपने लड़के कर्मचन्द से कर दी है। यह शादी नाजायज़ है। उसे उनके पंजे से निकाल कर पाकिस्तान भेजा जाना चाहिए।"

रिपोर्ट लिखाने के उपरान्त करीमबख्श से हस्ताक्षर करवाये गये और उसका पता लिखवाया गया। उसे बताया गया कि कल तक उसे सूचित कर दिया जाएगा कि क्या कार्यवाही की जा सकती है।

फातिमा के वारण्ट निकलवाये गये और झुनझुन टीकड़ी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थानेदार को भेज दिए गए। वारण्ट लेकर 'रिकवरी विभाग' के दो कर्मचारी गए। यह आज्ञा थी कि मुसम्मात फातिमा को पकड़ कर दिल्ली विमेन रिकवरी डिपार्टमेण्ट में तुरन्त भेज दिया जाये।

वारण्ट बिना जमानत थे। करीमबख्श वारण्टों को देखकर पूछने लगा, "फातिमा ! मेरे हवाले कब की जाएगी ?"

रिकवरी विभाग की इन्चार्ज ने कहा, "आपके हवाले नहीं की जाएगी। उससे पूछ-गीछ यहां आने पर की जाएगी और फिर आपकी रिपोर्ट ठीक पायी गयी तो उसे बार्डर पर ले जाकर छोड़ दिया जाएगा। आपको पाकिस्तान सरकार से उसका चार्ज लेना चाहिए। हम उसे पाकिस्तान सरकार के हवाले कर देंगे।"

"मगर मुझे उसको बार्डर पर भेजने की खबर कब मिलेगी ?"

"कल सायंकाल आकर पता करना।"

करीमबख्श अपनी कारगुजारी से सन्तुष्ट घर लौट गया। उसने नरगिस को अपनी इस रिपोर्ट के विषय में कुछ नहीं बताया।

अगले दिन सायं चार बजे वह पुनः 'विमेन रिकवरी विभाग' में पहुंचा तो वही प्रौढ़ावस्था की स्त्री कार्यालय से कहीं बाहर जाने के लिए तैयार खड़ी थी। वह करीम को देख भड़क उठी। उस औरत ने कहा, "तुम दो टांग वाले गधे हो, जो यह रिपोर्ट लिखाने से पहले ही वहां शोर मचा आये थे कि तुम उस औरत को इस विभाग के मातहत करने जा रहे हो।"

करीम अपने को गधा कहा जाता सुन भौंचक्क मुख देखता रह गया।

उस औरत ने ही आगे सूचना दी—"उस लड़की को वहां कैद कर रखने वाले ने शिमला हाईकोर्ट में अर्जी कर रखी है कि हमारे हुक्म पर नज़रसानी की जाये।"

"आपका हुक्म क्या था ?" करीम का प्रश्न था।

"हमें अधिकार मिल चुके हैं कि हम पुलिस को आज्ञा दे सकें। मैं सहस्रों औरतों को पाकिस्तान भेज चुकी हूं। हाईकोर्ट से नीचे का कोर्ट मेरी आज्ञा को रद्द नहीं कर सकता। यदि औरत एक बार पाकिस्तान चली जाए तो हाईकोर्ट भी कुछ कर नहीं सकता। तुमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांव में धूम मचा दी थी कि तुम यहां रिपोर्ट लिखवाने आ रहे हो और शिमला हाईकोर्ट का हुक्म हमारी आज्ञा पर गौर करने का हो गया है।"

"तो अब ?" करीमबख्श का प्रश्न था।

"अब हम तुम्हारी अर्जी हाईकोर्ट में भेजेंगे और हाईकोर्ट के जज इसकी जांच करेंगे। अगर तुम्हारी रिपोर्ट झूठी हुई तो तुम पर झूठी रिपोर्ट करने के अपराध में मुकद्दमा चलाया जाएगा।"

करीमबख्श का सिर चकराने लगा। इसपर भी अपने भय को प्रकट न कर उसने कहा, "मेरा पता आपके पास है। हाईकोर्ट का सम्मन आने पर मुझे खबर कर दीजिएगा।"

"ठीक है।"

करीमबख्श परेशानी अनुभव करता हुआ अपने निवास स्थान पर पहुंचा। नरगिस को वह कह आया था कि वह उसे सायंकाल सिनेमा दिखाने ले चलेगा। अब वह भयभीत समझ नहीं सका कि क्या करे।

वह विचार करने लगा कि शायद नरगिस को उसकी योजना का ज्ञान हो गया होगा और उसने फातिमा की ससुराल वालों को खबर कर दी होगी। इसपर उसकी निराशा नरगिस के प्रति क्रोध में बदल गई।

: ३ :

नरगिस वस्त्र पहन सिनेमा जाने के लिए तैयार हो पति की प्रतीक्षा कर रही थी। करीम कमरे में दाखिल हुआ तो क्रोध में नरगिस की पिटाई करने लगा। नरगिस को तो इस क्रोध का कारण ही समझ नहीं आया और जब पति की लातें और मुक्के असह्य हुए तो वह चीखें मारती हुई कमरे से बाहर को भागी। कमरे से बाहर निकली तो बाहर आफिस सेक्रेटरी गुरवचनसिंह खड़ा था।

नरगिस को पीटता हुआ करीमबख्श उसके पीछे-पीछे कमरे से निकला तो गुरवचनसिंह ने नरगिस को अपनी भुजाओं में दबोच लिया। करीम को उसे पीटने से रोकते हुए उसने कहा, "करीम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब ! क्या हुआ है ? इस बेचारी को क्यों पीट रहे हैं ?"

"इस बदकार औरत में मेरा एक 'टॉप सीक्रेट' मेरे दुश्मनों को बता दिया है। मैं मार-मार कर इसका भुर्ता बना दूंगा।"

"वह मैं यहां इस इमारत में नहीं बनाने दूंगा।"

"तो इसे इस इमारत से निकाल दें।"

"किसलिए ?"

"इसने मुझे 'बिट्रे' किया है।"

"इसका मुझसे और पार्टी से क्या सम्बन्ध है ? बता दें तो मैं आपकी मदद कर सकता हूं।"

"मगर वह मेरा 'टॉप सीक्रेट' है।"

"तो मैं इसकी हत्या यहां नहीं होने दूंगा। मैं अभी इसे अपने कमरे में रखूंगा।"

"ओह !" करीमबख्श को समझ आया कि वह उसकी बीवी पर अधिकार जमाना चाहता है। इस कारण उसने कहा, "यह मेरी शादी-शुदा बीवी है।"

"शादी की रस्म सरमायादारी की बातें हैं। मगर आप पार्टी के सदस्य हैं। इस कारण मैं इससे प्राइवेट में पता करूंगा कि इसने क्या जुर्म किया है। यदि इसके बयानों से पता चला कि इसने कुछ खराबी की है जो पार्टी के हितों के विरुद्ध है तो मैं इसे इस इमारत से निकाल दूंगा।"

"नहीं तो ?" करीम का प्रश्न था।

"यह इससे बातचीत कर बताऊंगा।"

करीम हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "यह अपने को पाक-साफ औरत मानती है। आप अपनी किस्मत आजमाई कर सकते हैं।"

गुरुबचनसिंह हंसा और प्रश्नभरी दृष्टि में नरगिस की ओर देखने लगा।

नरगिस की कमर में लातें लगने से पीड़ा हो रही थी। उसके मुख पर मुक्का लगा था और दांत से रक्त निकल रहा था। इस कारण उसने कहा, "भाईजान ! इस ज़ालिम से बचाइये। यह मुझे मार डालेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरवचनसिंह नरगिस को कार्यालय में ले गया और उससे इस पिटाई का कारण पूछने लगा।

नरगिस इस पिटाई का कारण नहीं जानती थी। उसने अपना पूर्ण इतिहास गुरुवचनसिंह को बताया। उसका कहना था, "मैं एक गरीब दुकानदार की एक ही लड़की हूं। हमारी शादी को हुए दस साल हो चुके हैं। मेरे दो लड़के हैं जो इनकी मां के पास हैं। मुझे एक बार यह पहले भी इस मकान पर लाकर रख चुके हैं। तब यहां इनको मिलने वाले बहुत से लोग आया करते थे और मैं भी उनसे मिलती रहती थी। इसपर यह मुझे पीटा करते थे।

"इसलिए मैंने होशियारपुर एक सब-जज की अदालत में इनसे अलहदा रहने का हुक्म ले लिया। यह हुक्म हो गया कि क्योंकि मैं मुसलमान नहीं रही, इसलिए मैं खाविन्द को तलाक दे सकती हूं और यह मुसलमान होने की वजह से मेरे इनकी बीवी रहते भी तीन विवाह और कर सकते हैं। इसलिए मुझे अलहदा रहने की इज़ाजत मिल गयी। मैं इनकी मां के साथ रहने लगी थी। ये बीच में पाकिस्तान चले गए थे और कहते हैं कि वहां के शहरी बन गए हैं। वहां से पासपोर्ट लेकर आये हैं। मुझे न पीटने का वायदा कर ये अब अपने साथ यहां लाये हैं। मगर मैं नहीं जानती कि क्यों आज ये इस बुरी तरह मुझे पीटने लगे हैं।"

गुरवचनसिंह ने पूछा, "तुमने इसकी कोई राज़ की बात किसी को बताई है?"

"मुझे कुछ पता नहीं। इसलिए बताने की बात पैदा ही नहीं हो सकती।"

गुरवचनसिंह को बात समझ नहीं आयी। इस कारण उसने कहा, "अच्छा! आज तो इस दफ्तर के कमरे में रहो। वह ज़रा शान्त हो ले तब इससे पता करूंगा कि वह तुम को क्यों पीट रहा था और फिर तुम्हारी सुलह कराने का यत्न करूंगा।"

नरगिस उस रात कार्यालय के कमरे में रही। कार्यालय के चपरासी से उसने होटल से खाना मंगवा कर खाया और फिर सो गयी।

अगले दिन बहुत प्रातःकाल ही गुरवचनसिंह ने नरगिस को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताया, "तुम्हारा खाविन्द तो उसी वक्त कार्यालय से चला गया था जब मैंने तुम्हें उससे पीटी जाने से बचाया था। वह रात यहां नहीं आया और अब भी उसका पता नहीं है। अब तुम बताओ, क्या चाहती हो ?"

"मेरे पास कुछ रुपये हैं। मैं वापस अपने गांव लौट जाना चाहती हूं।"

"कहां रहती हो ? वहां तुम्हारा कौन है और वहां गुजर कैसे होता है ?"

"जिला होशियारपुर में झुनझुन टीकड़ी में इनकी मां रहती है। मैं उसके पास चली जाऊंगी।"

"तुम जा सकती हो। चाहो तो यहां भी रह सकती हो। मगर यहां रहते हुए कुछ काम करना होगा। जिस काम के तुम लायक समझी जाओगी, वह काम तुमको मिल जाएगा। खाना, कपड़े और रिहायश मिल जाएगी।"

"जी ! इसके लिए शुक्रिया। वहां गांव में मेरे दो लड़के हैं। मैं उनके पास जाऊंगी।"

इस प्रकार उसी दिन, रात की गाड़ी से नरगिस दिल्ली से चल अगले दिन टीकड़ी गांव में जा पहुंची।

मध्याह्न के ग्यारह बजे वह बस स्टैण्ड से घर पर पहुंची तो मकान को ताला लगा देख समझ गयी कि बच्चे पढ़ने गए होंगे और अम्मी चौधरी की हवेली को गयी होगी। इस कारण वह अपना छोटा-सा सूटकेस हाथ में लटकाए हुए चौधरी की हवेली में जा पहुंची।

वहां आंगन में बारह दरी पर बाबा बैठा हुक्का पी रहा था। वह नरगिस को हवेली के भीतर जाते देख मुस्कराया। इस पर भी उसने रोका नहीं। न ही कुछ पूछा।

नरगिस भीतर गयी तो कर्मचन्द की छोटी बहन मां के पास बैठी घर का काम कर रही थी और शेष बच्चे काम पर गए हुए थे।

सौभाग्यवती नरगिस को अपना सूटकेस लटकाए बैठक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते देख हंस पड़ी। हंसते हुए पूछने लगी, "क्यों? कहां छोड़ आयी हो अपने खाविन्द को?"

"माताजी! मैं उसे छोड़ नहीं आयी। वह मुझे छोड़ कहीं भाग गया है।"

"यह तो होना ही था। एक बात तुमने ठीक की है कि तुम यहां चली आयी हो। तुम्हारी अम्मी, फातिमा और कर्मचन्द छोटे चौधरी के साथ शिमला गए हुए हैं। वहां तुम्हारे खाविन्द ने एक नया अडंगा लगाया हुआ है।"

"क्या अडंगा लगाया है?"

"तुमको उसने बताया नहीं?"

"मुझे तो सिर्फ इतना पता है कि दो दिन हुए वे कहीं काम पर गए थे। वहां से लौटे तो कमरे में आते ही लातों और मुक्कों से मेरी मरम्मत करने लगे। वहां एक अन्य व्यक्ति था। उसने मुझे बचाया और फिर रात-भर उनसे पृथक् रखा। उस नौजवान का ख्याल था कि मजीद के वालिद का गुस्सा कम होगा तो मेरी उनसे सुलह करा देगा। मगर वह उसी समय वहां से कहीं चले गए थे और कल शाम तक लौटे नहीं। तब मैं रेल पर सवार हो इधर चली आयी हूं।"

"तो तुमको कुछ मालूम नहीं?"

"माताजी! क्या हुआ है। मुझे कुछ मालूम नहीं।"

नरगिस सौभाग्यवती के पास बैठ गयी थी। सौभाग्यवती ने बताया कि जिस दिन करीमबख्श गांव में आया था, जालन्धर के सैशन कोर्ट का चपरासी आया था। वह गांव का ही रहने वाला है। उसने बताया कि तुम्हारा घर वाला पाकिस्तानी औरतों को पकड़-पकड़ कर पाकिस्तान भेजने के महकमे में यह रिपोर्ट करने जा रहा है कि कर्मचन्द की बीवी एक मुसलमान की लड़की है और उसको हमने ज़बरदस्ती पकड़ कर यहां रखा हुआ है।

"उसी चपरासी ने बताया था कि अगर वहां से पुलिस को हुक्म आया तो पुलिस फातिमा को ज़बरदस्ती पकड़कर ले जाएगी। उसके विषय में कोई अदालत दखल नहीं दे सकती। एक बार लड़की पाकिस्तान में गयी तो वह जबरदस्ती किसी से विवाह दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगी।

"इसमें सिर्फ हाईकोर्ट रुकावट डाल सकता है। इस कारण कर्मचन्द और कर्मचन्द के पिता उसी सायंकाल तांगे में सवार हो होशियारपुर और वहां से टैक्सी कर शिमला चले गए थे। वे औरतों की निकासी के महकमा के नाम और पुलिस के नाम हुक्म ले आए थे कि यदि मुसम्मात फातिमा के खिलाफ कोई शिकायत हो तो वह हाईकोर्ट में जांच के लिए भेज दी जाए।

"तुम्हारे जाने के तीसरे दिन दिल्ली से दो व्यक्ति फातिमा को पकड़ ले जाने के लिए आये। वे यहां से पुलिस के नाम आज्ञा लाये थे। जब उनको हाईकोर्ट का हुक्म दिखाया गया तो वे लौट गये।

"कल हाईकोर्ट का तार द्वारा सम्मन आया था कि फातिमा हाजिर होकर अपने बयान और अपने विषय में काग़जात उपस्थित करे। इस कारण फातिमा, कर्मचन्द और उसके पिता आज प्रातः-काल पुनः हाईकोर्ट में हाजिर होने के लिए गए हुए हैं। कर्मचन्द के नाना उन्हें अपनी मोटर में ले गए हैं।

"ठीक-ठीक पता तो उनके लौटने पर चलेगा। मगर मेरे पिताजी और शिमला के वकील यह कहते थे कि सैशन कोर्ट के मुकद्दमे के काग़जात तथा शादी के काग़ज हाईकोर्ट में उपस्थित करने पड़ेंगे और मुआमला रफा-दफा हो जाएगा। पिताजी का तो यह विचार है कि औरतों के निकासी के महकमे में झूठी रिपोर्ट देने के लिए करीम पर मुकद्दमा चलेगा और फिर उसे दण्ड भी मिल सकता है।"

नरगिस यह सब कहानी सुन हैरान रह गयी। उसने पूछा, "अम्मी कहां हैं?"

"वह भी फातिमा के साथ ही गयी हैं।"

"और मेरे बच्चे?"

"वह हमारे घर में रहते हैं। इस वक्त पढ़ने गए हुए हैं।"

: ४ :

नरगिस भी, अम्मी के शिमला से लौटने तक वहीं हवेली में ही रह गयी। वह समझ रही थी कि उसके पति के व्यवहार का क्या कारण था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति का पत्नी को पीटने का हक हासिल है। प्रायः उन सब लोगों में यह प्रथा है जिनमें पति की पत्नी पर मलकीयत समझी जाती है। प्रकृति ने ही औरत को शरीर से दुर्बल बनाया है। इस कारण पति उसे पीटने का अपना अधिकार समझता है।

यही बात माता-पिता बच्चे के विषय में समझते हैं। धनी-मानी, निर्धन के लिए, मालिक सेवकों के लिए, शरीर से बलवान शरीर से दुर्बलों के लिए समझते हैं।

यह बात जिस दिन नरगिस गांव में पहुंची थी, अश्विनीकुमार उसे समझा रहा था। अश्विनीकुमार बहन से मिलकर पता करने आया था कि चौधरी इत्यादि का कोई समाचार शिमला से आया है अथवा नहीं। वह आया तो नरगिस को बैठक में बैठ अपने बच्चों का कुशल समाचार पूछते देख, हैरान रह गया।

नरगिस ने वह पूर्ण कहानी सुना दी जो उसके साथ दिल्ली में घटी थी। इसके साथ ही उसने कहा था, "मामाजी ! मैंने कोर्ट में तो यह लिखाया था कि मैं मुसलमान नहीं रही। वह तो सिर्फ अपने को मजीद के वालिद के जुल्म से बचाने के लिए था। मगर मैं अब देखती हूं कि मज़हब के जनून से उसे पीटने की तरकीब मिलती है तो उस मज़हब को ही छोड़ने का मुकम्मल इरादा कर रही हूं।"

इसपर अश्विनीकुमार ने अपनी बात बताकर कह दिया, "यह पीटना मज़हबी बात नहीं है। इसका सम्बन्ध दुर्बलता और बल से है।"

अश्विनी ने यह भी कहा कि अपने मुल्क में सात सौ वर्ष तक मुसलमान बादशाह हुकूमत करते रहे थे। यह मज़हब के कारण नहीं था। इसमें एक ही कारण रहा है कि उस वक्त हिन्दू दुर्बल थे। वे संगठित नहीं थे। उनमें राष्ट्रीय भावना शून्य समान रह गयी थी।

नरगिस के मन में उसकी अपनी समस्या ही सर्वोपरि महत्त्व की थी। इस कारण उसने कहा, "मामाजी ! मुझे आप हिन्दू कब बनायेंगे ?"

"मैं समझता हूं कि तुम हिन्दू तो हो ही। आज जितने भी लोग अपने देश में रहते हैं, वे हिन्दू हैं। मैं भारतीय और हिन्दू में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरक नहीं देखता। ये मुल्की नाम हैं। इनका ताल्लुक किसी मजहब से नहीं बल्कि मुल्क से है। मुसलमान अपनी लाइल्मी की वजह से मजहब और मुल्कीयत को एक समझ रहे हैं। तुम अपने को हिन्दू मानना आरम्भ कर दो।"

"मैं अब मजीद के बाप को तलाक भी देना चाहती हूं।"

"यह तुम्हारी ज़ाती मामला है। इसका मजहब या मुल्कीयत से ताल्लुक नहीं।"

नरगिस को अश्विनीकुमार की बात समझ नहीं आयी। न ही वह उसके कथन का युक्तियुक्त उत्तर दे सकी। इस कारण चुप कर रही।

दो दिन उपरान्त कर्मचन्द इत्यादि शिमला से लौट आए। मोटूराम ने बाबा को बताया कि "विमेन रिक्वरी विभाग' का दावा खारिज हो गया है। हाईकोर्ट ने फातिमा को कानूनी रूप से कर्मचन्द की पत्नी मान, उसे भारत का नागरिक स्वीकार कर लिया है।

करीमबख्श के विषय में यह खबर है कि वह उस मकान में नहीं है जो पता उसने रिकवरी विभाग में लिखाया था। इस कारण उसके खिलाफ कोई आज्ञा नहीं हो सकती।

इसपर छोटूराम के मुख से अनायास ही निकल गया, "औरतों की निकासी विभाग बिना न्यायिक जांच-पड़ताल के कैसे निर्णय दे सकता है कि कोई औरत पाकिस्तानी है अथवा भारतीय ?"

"बाबा !" मोटूराम ने कहा, "कठिनाई यह है कि देश का प्रधानमन्त्री आप जैसी बुद्धि नहीं रखता। सामान्य जनता के दुःख-दर्द से दूर पला व्यक्ति इतने बड़े देश के राज्य का स्वामी बन गया है। इन औरतों के निकासी विभाग को इतने अधिकार देना तो बुद्धि का दिवाला निकालना है।"

"बाबा !" अश्विनी का कहना था, "प्रजातंत्र में उन्नति की सीढ़ी बुद्धि नहीं है।

शोर मचाने की योग्यता से ही कोई नेता बन सकता है।"

"तो तुम समझते हो कि हमारे प्रधानमंत्री की आवाज बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंची है ?"

"यह महापुरुष बड़े बाप का बटा होने से अपने हाथ में बहुत बड़ा भोंपू पा गया है जिससे उनकी आवाज पूर्ण देश में पहुंच रही है।"

करीमबख्श की इस अन्तिम करतूत से सोहनी बहुत शर्मिन्दा थी। वह गांव में अपने घर में पहुंची तो दिन-रात खुदा की अबादत में लीन रहने लगी।

लगभग दो वर्ष तक चौधरियों के सम्पर्क में रहते हुए वह एक बात सीख गयी थी कि परमात्मा की भक्ति मनुष्य को संसार के दुःखों से पार कर देती है। इससे वह प्रातः, दोपहर, तीसरे प्रहर, सायं-काल और रात के वक्त दिन में पांच बार नमाज पढ़ने लगी। नरगिस भी खाविन्द की सोहबत की भूखी उसके किंचित्-मात्र संकेत पर उसके साथ चल पड़ने का परिणाम देख अपने पशुपन पर लज्जा अनुभव करती हुई अपनी अम्मी की नकल करने लगी।

कर्मचन्द और फातिमा, इन दोनों औरतों को इस प्रकार जीवन व्यतीत करते देख हैरान थे। एक दिन दोनों इनसे मिलने आये तो फातिमा ने कहा, "अम्मी! यह तुम घर की सफाई वगैरह भी भूल रही हो। जो वस्त्र तुम दूसरे दिन बदला करती थीं, अब सप्ताह में एक बार ही बदलती हो। अब क्या हो गया है?"

"देखो फातिमा! यह सब जिस्म को आराम देने वाली बातें हैं। रूह का ताल्लुक तो सिर्फ खुदा से है। मैं उसी की खिदमत में दिन के पांच-छः घंटे रहना चाहती हूं।"

कर्मचन्द हंस पड़ा। हंसते हुए पूछने लगा, "अम्मी! कैसे उसकी खिदमत करती हो?"

" 'ला इलाह इल्लिल्लाह' इल्फाज मन में बोलती रहती हूं। पहले मुहम्मद रसूल इल्लिल्लाह भी कहा करती थी। अब फातिमा के गुरु के समझाने पर कि खुदा से सीधा रिश्ता बनाना चाहिए, बीच में किसी को लाने की जरूरत नहीं, इस वजह से मैं मुहम्मद को बीच में नहीं लाती।"

"अम्मी! मैं यह नहीं पूछ रहा। मेरा मतलब यह है कि खुदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की खिदमत का मतलब है उसको सुख पहुंचाना। इसलिए यह पूछ रहा हूं कि तुम खुदा को किस तरह सुख पहुंचा रही हो ?"

"तो उसे याद करने से उसको सुख नहीं मिलता ?"

"तो क्या उसे याद न करने से उसे किसी किस्म का दुःख होता है ?"

"तो फिर उसकी अबादत का क्या मतलब है ?"

"देखो अम्मी ! खुदा के कुछ उसूल हैं। उनके मुताबिक अम्ल करने से खुदा प्रसन्न होता है और इन्सान को सुख मिलता है। सब मजहबों में उनको खुदाई हुकम के नाम से याद किया जाता है। वे उसूल किए पर अफसोस करे और फिर वैसा कसूर न करने का वायदा करे तो उसे मुआफ कर देना, अपने मन पर काबू रखना, झूठ नहीं बोलना, जिस्म, मन और रूह को साफ पाकीजा रखना। अपनी इन्द्रियां—आंख, नाक, कान, और छूने की ताकत को काबू में रखना, इनके पीछे न चल पड़ना अक्ल का प्रयोग करना और फिर इल्म हासिल करने में लगे रहना। आखिरी बात है कि गुस्सा न करना।

"तो बस ?" सोहनी ने पूछ लिया।

"यह क्या कम है ? ये खुदाई-एहकाम हैं। इनके मुताबिक अमल करना ही खुदा की अबादत करना है और गलती से इनमें से किसी का पालन न हो तो फिर परमात्मा से दुआ करना कि वह हमें ताकत दे कि हम वैसी गलती फिर न कर सकें।"

"मगर हम तो," नरगिस ने कह दिया, "किसी से मिलती-जुलती नहीं। इससे हम इन उसूलों पर अमल करने की जरूरत नहीं महसूस करतीं।"

"तो भाभी ! तुम दूसरों से मिला-जुला करो। हम यही तुमको कहने आये हैं। तुम दोनों ने अपने बच्चों तक से मिलना-जुलना तथा उनसे बात करना छोड़ दिया है। इससे वे बिगड़ते जा रहे हैं ?"

इस पर नरगिस ने पूछ लिया, "फातिमा ! कुछ खराबी देखी है मजीद-हमीद में ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मजीद गांव में जुआ खेलने लगा है।"

"ओह! तो गांव में जुआ होने लगा है?"

"हां! रावी पार के लोगों के यहां आने से नयी-नयी बातें यहां होने लगी हैं। पेशावर का एक राम कृष्ण है। वह हर रोज स्कूल के फाटक पर आधी छुट्टी के वक्त एक मशीन लगा देता है। एक तख्ती है जिसमें कई सुराख हैं। वह तख्ती को गरारी से जोर से घुमाता है तो वे सुराख भी घूमने लगते हैं। घूमती मेज पर जब-जब गोली फेंकी जाती है तो वह किसी सुराख में चली जाती है। एक सुराख का नम्बर एक है। अगर गोली उस सुराख में जाए तो वह एक आने का एक रुपया दे देता है। अगर सुराख नम्बर दो में गोली जाए तो आठ आने देता है और सुराख तीन में आए तो चार आने देता है। बाकी के सुराखों में आने पर वह कुछ नहीं देता।

"और एक-एक आने की गोलियां बेचता है। तख्ती पर बीस-पच्चीस सुराख हैं।

"जब तीस-चालीस गोलियां बिक जाती हैं तो वह तख्ती घुमाकर गोलियां खरीदने वालों को गोलियां फेंकने को कहता है। मजीद घर से एक आना रोज ले जाता है और उसको दांव पर लगा देता है। वह हारता है। उसे कभी ही कुछ मिलता है।

"मैंने आज उससे पूछा था। वह कहता था कि एक दिन उसे एक रुपया मिला था और उससे उसने टी-स्टाल पर केक-पेस्ट्री खायी थी। एक बार उसे चार आने भी मिले थे। शेष तीन महीने से वह जीतने की उम्मीद में एक आना रोज दाव पर लगा देता है।"

सोहनी यह बात सुन चकित रह गयी।

"देखो भाभी!" फातिमा ने कहा, "खुदा ने इन बच्चों को आपके हवाले किया है और अगर आप इनके बचपन की हालत में इनकी रहबरी नहीं करती तो आप अपना फर्ज अदा नहीं करतीं। फर्ज को भूलकर खुदा की पुकार का कुछ भी फायदा नहीं।"

इस बात ने सोहनी की बुद्धि में क्रान्ति पैदा कर दी। उसी दिन जब मजीद और हमीद स्कूल से लौटे तो मां ने पूछा, "स्कूल में क्या पढ़ाई होती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"छोटी अम्मी ! अंग्रेजी, हिन्दी, हिसाब, भूगोल, इतिहास।"

"और मास्टर से पीटे जाते हो ? तुम घर पर तो कभी पढ़ते नहीं ?"

"मैं हर रोज घर का मिला काम कर के ले जाता हूं। इसलिए मुझे कभी मार नहीं पड़ी।"

"पर तुम दिन-ब-दिन कमजोर होते जाते हो ?"

इस पर मजीद चुप कर गया। मगर हमीद बोल उठा, "अम्मी ! यह दोपहर के वक्त कुछ नहीं खाता और भूखा रहता है।"

"क्यों ? एक आना हर रोज तो मिलता है ?"

इसपर मजीद ने उत्तर नहीं दिया। उत्तर हमीद ने ही दिया, "आधे वक्त की छुट्टी में यह बाजार में जाता है और...।"

"और क्या ?"

हमीद बड़े भाई का मुख देखने लगा। मजीद चुप रहा। बात हमीद ने ही की।

"वह पाकेट खर्च का एक आना हर रोज एक जूए की मेज पर लगा देता है।"

"मगर जूआ खेलना तो हराम है।"

"वह क्या होता है ?" मजीद का प्रश्न था।

"भारी गुनाह होता है। उस गुनाह का ही नतीजा है कि तुम दुबले होते जाते हो।"

मजीद अम्मी का मुख देखता रह गया। सोहनी ने आगे कहा, "देखो, मैंने फैसला किया है कि मैं हर रोज आधे वक्त की छुट्टी पर तुमसे मिलने आया करूँ और तुम्हारे लिए घर से कुछ बनाकर मीठा चटपटा ले जाया करूं।"

"पर अम्मी ! तुम्हारे आने पर मुझे शर्म आया करेगी।"

"किस बात की शर्म ?"

"जब लड़के हलवाई और खोमचे वाले से खरीद रहे होंगे, तुम वहां मेरी खिदमतगार बनकर आया करोगी।"

"वह तो खुदा ने मुझे बनाया ही है। उसका हुक्म भी तो बजा लाना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर ग्रम्मी ! हम मुसलमान हैं ग्रौर तुम वहां बिना बुर्के के ग्राया करोगी तो स्कूल में बहुत बातें होंगी।"

"यह तुमको किसने कहा है कि हम मुसलमान हैं ?"

"वह तो हमारा नाम ही बताता है। स्कूल में हम दस लड़के मुसलमान हैं। सब के नाम दूसरों से मुखतलिफ हैं।"

"तो नाम से मज़हब होता है ?"

"एक दिन मास्टर बताता था कि नाम ऐसे ही हैं जैसे दवाई की बोतल पर लेबल लगा रहता है। लेबल पढ़ने से बोतल की दवाई का पता चलता है। इसी तरह बच्चों के नाम से बच्चों के मज़हब का पता चलता है।"

यह बात सोहनी की समझ में ग्रा गयी। कर्मचन्द ग्रौर ग्रश्विनी ने तो मज़हब ग्रौर नाम की बात में ताल्लुक नहीं बताया था। वह बात उसकी समझ से ऊपर की थी। मगर यह बोतल पर लेबल की बात वह समझ गयी। इसलिए वह ग्रपने पोतों के नाम सोचने लगी। बहुत दिमाग पर जोर देने से उसे दो नाम याद ग्राये। एक था सोमनाथ ग्रौर दूसरा था रामनाथ।

उसने पोतों को बताया, "तो कल से तुम्हारा नाम मैं स्कूल में बदल दूंगी। तब तुम मुसलमान नहीं माने जाग्रोगे ग्रौर तुम्हारी मां तुमको नाश्ता खिलाने स्कूल ग्रा सकेगी।"

दोनों लड़के टुकुर-टुकुर मुख देखते रह गए।

: ५ :

ग्रगले दिन सोहनी स्कूल में जा पहुंची। स्कूल दसवीं श्रेणी तक था ग्रौर मजीद चौथी श्रेणी में पढ़ता था। हमीद ग्रभी पहली जमायत में था।

सोहनी हैडमास्टर के कमरे के बाहर जा पूछने लगी, "मैं भीतर ग्रा सकती हूं क्या ?"

"हां, ग्राइये। ग्राज्ञा करिए। क्या बात है ?"

देश-विभाजन से पहले का हैडमास्टर एक मुसलमान था। देश-विभाजन के समय वह पाकिस्तान चला गया था ग्रौर मास्टर रामलोक, बी० ए०, बी० टी० हैडमास्टर बन गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे करीमबख्श के घर की औरतों को बुर्का उतारने की बात स्मरण थी। इसपर भी उसने उसके घर की औरतों को कभी देखा नहीं था।

सोहनी चौधरी के घर में रहते हुए हिन्दुआना पोशाक पहनने लगी थी। इस कारण रामलोक समझ नहीं सका कि यह कौन औरत है।

जब सोहनी भीतर आयी तो मास्टर ने उसे कुर्सी पर बैठने के लिए कह पूछा, "फरमाइये ! किस काम से आयी हैं ?"

"मेरे दो पोते इस स्कूल में पढ़ते हैं। मजीद चौथी कक्षा में है और हमीद पहली कक्षा में। मैं इनके नाम बदलना चाहती हूं।"

"क्यों ?"

"वजह बताने की जरूरत नहीं समझती। आप मेहरबानी कर उनके नये नाम सोमनाथ और रामनाथ रजिस्टर पर लिखवा दीजिए।"

हैडमास्टर उस औरत का नाम पूछने लगा, "और आपका क्या नाम है ?"

"मैं सोहनी हूं।"

"तो आप हिन्दू हो गयी हैं ?"

"नहीं मास्टर जी ! मैं मुसलमान नहीं रही। न ही मैं हिन्दू बनी हूं, मैं इन्सान बन गयी हूं। मैं चाहती हूं कि मजीद का नाम सोमनाथ और हमीद का रामनाथ कर दिया जाये।"

"पर ये तो हिन्दुआना नाम हैं।"

"मैं मुसलमान नहीं रही। इसलिए मुसलमानी नाम बदल रही हूं।"

हैडमास्टर ने मेज पर रखी घंटी बजाई। चपरासी भीतर आया तो कहा, "चौथी जमायत के मजीद को और पहली जमायत के हमीद को बुला लाओ।"

मजीद और हमीद आये तो दादी को वहां कुर्सी पर बैठे देख हैरान रह गए।

"यह तुम्हारी क्या लगती हैं ?" हैडमास्टर ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजीद ने उत्तर दिया, "हमारी दादी हैं।"

"तुम्हारा बाप कहां है ?"

"पता नहीं। एक दिन उसने अम्मी को बहुत पीटा और फिर घर से भाग गए।"

"यह तुम दोनों का नाम बदलने आयी हैं ?"

"जी ! कहती थीं कि हम मुसलमान नहीं रहे। तब मैंने कहा था कि नाम बदलना पड़ेगा। इसलिए यह आयी हैं।"

हैडमास्टर ने स्कूल-क्लर्क को बुलाकर कह दिया, "इनसे एक अर्जी लिखवा लो कि ये अपने बच्चों के नाम बदलना चाहती हैं और उनके नए नाम रजिस्टर पर लिख लो।"

क्लर्क सोहनी, मजीद तथा हमीद को स्कूल के कार्यालय में ले गया।

उसी दिन सायंकाल अश्विनी, फातिमा तथा कर्मचन्द के साथ आया। सोहनी ने उनका स्वागत करते हुए कहा, "आइये, गुरुजी ! कैसे आये हैं ? चाय बनवाऊं ?"

"हां, अम्मी !" कर्मचन्द ने कहा, "यह वक्त चाय पीने का तो है ही।"

"अभी तो तुम्हारी कल की मिठाई रखी है।"

"अम्मी ! वह भी ले आओ। हम एक बात करने आये हैं, जो चाय पीकर ही करेंगे।"

सोहनी ने नरगिस को आवाज दे दी। वह आयी तो उसे चाय और पिछले दिन वाली मिठाई लाने को कह दिया। मजीद-हमीद भी वहां आ गए।

अश्विनी ने कहा, "हमने इन दोनों बच्चों कीप ढ़ाई का पृथक् प्रबन्ध कर दिया है। उसकी मंजूरी लेने आये हैं।"

मजीद ने कह दिया, "अम्मी ने भी हमारा कुछ किया है।"

"क्या ?" फातिमा ने पूछा।

"अम्मी ने स्कूल में हमारे नाम बदल दिये हैं।"

"सत्य ?"

"हां ! मेरा नाम रखा है···।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भूल गया था। जब याद नहीं कर सका तो अम्मी का मुख देख पूछने लगा, "अम्मी ! क्या नाम लिखवाया है ?"

तीनों बड़े हंसने लगे। छोटा बोल उठा, "मुझे अपना नाम याद है। मेरा नाम अम्मी ने रामनाथ रखा है।"

"और तुम्हारा ?" फातिमा ने बड़े का मुख देखते हुए पूछ लिया।

उत्तर सोहनी ने दिया, "इस गधे का नाम सोमनाथ है।"

"हां ! हां !" मजीद बोल उठा, "याद आ गया है। मैं याद करता रहा हूं, मगर भूल जाता हूं।"

नरगिस चाय लायी तो सब बच्चे भी पीने वहां आ बैठे। फातिमा ने उस समय वहां आने का कारण बता दिया। उसने कहा, "कल हम यहां से गये तो बाबा को जूए की बात बताने लगे।

"बाबा बोले, 'इस जूए की रिपोर्ट थाने में करनी चाहिए।"

"इन्होंने कहा कि उस जूए खाने की स्वीकृति थाने से मिली हुई है। यह कानून है कि जूआ सीमित बाजी की रकम के साथ खेला जा सकता है।

"बाबा का दिमाग तो हवाई जहाज की तेजी से दौड़ता है। उन्होंने कह दिया, 'मजीद वगैरह को इस स्कूल से उठा लेना चाहिये और उनके लिए पृथक् स्कूल खोलना चाहिए।'

"हम सब हंस पड़े। पृथक् स्कूल खोलना कोई आसान काम नहीं है। परन्तु पिताजी के दिमाग ने एक योजना बनाई है। वह यह कि एक पृथक् स्कूल उन बच्चों के लिए खोला जाये तो अच्छी शिक्षा पाना चाहते हैं और जुए की प्रवृत्ति से बचना चाहते हैं।

"इसपर बाबा ने मामाजी को बुलाकर कहा कि वह अपनी अध्यक्षता में एक स्कूल खोलें। उसमें अपने सब बच्चे तो पढ़ेंगे ही, साथ ही जो कोई दूसरा पढ़ना चाहे तो वह भी पढ़ सकेगा।

" 'बताओ !' बाबा ने मामाजी से पूछा, 'करोगे, यह काम ?'

"मामाजी का कहना था, यह एक आदमी का काम नहीं है। न ही यह फोकट में चल सकेगा। बहुत-सा रुपया चाहिए। हमारा और फिर अन्य उस्तादों का वेतन भी देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबा ने कह दिया, 'योजना बनाकर बताओ कि तीस लड़कों के लिए कितना खर्च वार्षिक बैठेगा।'

"गुरुजी ने एक योजना बनाई और उसे मध्याह्न के समय बाबा के पास ले गये। बाबा ने योजना स्वीकार कर ली है। पिताजी ने कहा है कि वह अकेले ही बीस हजार रुपये वार्षिक खर्च दे सकते हैं। मकान के लिए भूमि और इमारत पहले बनवा देंगे।

"छोटे चौधरी भूमि और मकान का इन्तजाम करने में लग गए हैं और हम गुरुजी के साथ पढ़ाई की योजना बनाने लगे हैं।

"हमने फैसला किया है कि अभी वहां तीन ही अध्यापक होंगे और मजीद हमीद के अलावा सुरजनदास के दो लड़के और श्याम-लाल की लड़की भी, इस प्रकार पांच विद्यार्थी होंगे।"

"और ये लड़के पढ़कर क्या करेंगे?" अम्मी ने पूछा।

"खेती-बारी का काम करेंगे। देहात में होने योग्य दूसरे कामों के विषय में भी विचार किया जा रहा है।"

"हम," फातिमा ने आगे बताया, "अभी सुरजनदास और श्यामलाल से मिलकर आये हैं। वे अपने बच्चों को दाखिल कराने के लिए तैयार हैं। इस तरह पांच विद्यार्थियों और तीन अध्यापकों से कल स्कूल आरम्भ होगा। छोटे चौधरी कह रहे थे कि नदी किनारे अन्न के गोदाम को खाली करा दिया जायेगा। बड़े हाल में पर्दे लगाकर तीन कमरे अभी बन जाएंगे। छः मास में उपयुक्त इमारत बन जायेगी।"

सोहनी ने कहा, "आपके चले जाने के उपरान्त मैंने कल ही मजीद से पूछा था। वह कहता था कि सब लड़के जूआ खेलने लगे हैं, इसलिए वह भी खेलता था।"

"बस, कल से ये दोनों सरकारी स्कूल में नहीं जायेंगे।"

इसपर नरगिस ने बात बदल दी। उसने पूछा, "गुरुजी! मुझे भी बताइये कि मैं अपना नाम क्या रखूं?"

"पहले यह बताओ," अश्विनी ने पूछ लिया, "कि तुम दिल से इस्लाम छोड़ रही हो क्या?"

"मैं जानती ही नहीं कि इस्लाम क्या होता है। एक दिन आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताया था कि अपने और खुदा के बीच में अगर हजरत को मददगार माना जाये तो हम मुसलमान हैं और जब राम-कृष्ण वगैरह को बीच-बिचौला मानें तो हिन्दू हैं। इन्सान बनने के लिए खुदा से सीधा ताल्लुक बनाना चाहिए।

"रसूल साहब तो कहीं दिखाई दिये नहीं। जब मैं पीटी जाती थी तो मैं उन्हें याद किया करती थी। मगर वह कभी भी मेरी मदद के लिए नहीं आये। इस कारण मैंने उन्हें छोड़ दिया है।

"मगर अम्मी कह रही हैं कि जब तक नाम मुसलमानी हैं, कोई नहीं मानेगा कि हमने रसूल साहब को छुट्टी दे दी है। इसलिए नाम बदलना चाहिए। बोतल पर से लेबल बदलना चाहिए।"

अश्विनीकुमार इसे मनोवैज्ञानिक मसला समझता था। आज से पहले वह नाम बदलने को व्यर्थ समझा करता था, मगर उसे अब समझ आया कि नाम न बदलने से ही नरगिस दूसरी बार खाविन्द के साथ चल पड़ी थी। दोनों में ताल्लुक इस्लाम का है। यह इनके नामों से ज़ाहिर होता है। इसलिए वह नाम बदलने पर तैयार हो गया।

उसने फातिमा की ओर देखकर पूछा, "और फातिमा बेटी! तुम भी ऐसा ही समझती हो?"

"गुरुजी! यह मेरे समझने की बात नहीं। बोतल पर लेबल बोतल में पड़ी दवाई के लिए नहीं लगाया जाता। यह तो दवाई का प्रयोग करनेवाले के लिए लगाया जाता है। जो मेरा प्रयोग करते हैं, यह उनको बताना चाहिए कि फातिमा लेबल वाली बोतल का नाम उसमें की दवाई के मुताबिक है अथवा उससे कुछ गलती हो रही है?"

"तब ठीक है। हम उनसे पता करेंगे जो रूप को देखकर तुमसे वास्ता रखते हैं।"

"हां! यह ठीक है।" सोहनी ने कहा उसका मतलब था कि चौधरी के घरव लों से पता करना चाहिए कि नाम बदलने की आवश्यकता है अथवा नहीं?

: ६ :

उसी रात भोजन करते समय फातिमा ने घर में इस विषय पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्चा आरम्भ कर दी। उसने अपनी सास से पूछ लिया, "माताजी! क्या आप भी मेरा नाम बदलना पसन्द करेंगी?"

इस असंगत बात के किये जाने पर सौभाग्यवती पतोहू का मुख देखने लगी। बात फ़ातिमा ने ही की। उसने बताया, "इस विषय पर चर्चा अम्मी के घर पर हुई है और उन्होंने कहा है कि जब बोतल में औषधि बदल दी जाये तो बोतल का लेबल भी बदल देना चाहिए।

"माताजी! अभी तक तो आपके सुपुत्र और आप भी यही कहते रहे हैं कि इसकी जरूरत नहीं। आपके कथन का मैं यह अभि-प्राय समझ रही थी कि मेरे मुसलमान से हिन्दू हो जानेप र फातिमा नाम से एक मुसलमान लड़की के स्थान एक हिन्दू लड़की का मतलब हो गया है।

"यह ऐसे ही है जैसे किसी बोतल में शर्बत अनार हो और उस पर इसी नाम का लेबल लगा हो। पीछे बोतल में शर्बत अनानास भर दिया जाए, मगर लेबल न बदला जाए तो लेबल पर अनार के अर्थ अनानास हो जायेंगे। इसी प्रकार फातिमा के लेबल से एक हिन्दू लड़की मानी जाने लगी हूं।

"मगर आज गुरुजी कह रहे थे कि लेबल का अर्थ पढ़ने वाले की इच्छा और ज्ञान के अनुसार होता है। इस कारण लोगों का ज्ञान बदलने के स्थान लेबल बदल देना ठीक रहेगा।"

सौभाग्यवती अभी भी इस सब वार्तालाप का अर्थ समझने का यत्न कर रही थी। कर्मचन्द मुस्कराता हुआ भोजन करने में लीन था।

कर्मचन्द के पिता मोटूराम ने कह दिया, "अश्विनी भैया ठीक ही कहता है। अम्मी उसका अर्थ समझ गयी है। देखो बेटी! मैं समझाता हूं।

"हमारी फातिमा ने जब इस घर की ओर मुख किया था तो उसके कुछ गुण थे। हम सब इन गुणों को जानते और समझते थे। पीछे फातिमा भैया से पढ़ने लगी और इसके गुणों में चमत्कारिक परिवर्तन हुए। एक परिवर्तन तो यह हुआ कि उसको अब परमात्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक पहुंचने में किसी बीच-बिचौले रसूल की आवश्यकता नहीं रही। बेटी फातिमा में यह सब परिवर्तन होने पर भी हमने इस का लेबल नहीं बदला। मेरा मतलब है नाम नहीं बदला। यह इस कारण कि हमें ज्ञान तो था कि फातिमा में से क्या निकल गया है और अब उसमें क्या भर दिया गया है। इससे हमारे लिए फातिमा के अर्थ ही हो गए हैं जो ज्ञान-विज्ञान की ज्ञाता है। परन्तु लोगों के मस्तिष्क में तो फातिमा का अर्थ वही है जो सब फातिमा लेबल वाली लड़कियों में होता है।

'फातिमा नाम मुसलमानी है और कोई भी बाहरी व्यक्ति जो फातिमा में हुए परिवर्तनों को नहीं जानता, वह उसे अभी भी रसूल हजरत मुहम्मद साहब के विचारों वाला समझेगा।

"जब तक फातिमा चौधरी परिवार की एक प्राईवेट बात थी तब तक तो नाम के चाहे कुछ अर्थ हों, हम इसके गुण-दोषों को जानते हैं।

"परन्तु बेटी फातिमा अब एक स्कूल की अध्यापिका बनने वाली है। इससे उस स्कूल में विद्यार्थी भेजनेवालों को पता होना चाहिए कि फातिमा नाम की अध्यापिका में कोई ऐसा आत्मा है जो बिना रसूल के सीधे परमात्मा से सम्पर्क बनाने की सामर्थ्य रखता है।

"इस कारण फातिमा रूपी बोतल पर लेबल बदलने की आवश्यकता अश्विनी भैया ने बताई है और अम्मी ने स्वीकार कर ली है।"

"तो फिर मेरा क्या नाम उचित समझते हैं आप ?" फातिमा ने अपने श्वसुर से पूछ लिया।

"बताओ कर्मचन्द ! क्या नाम ठीक समझते हो ?"

"पिताजी ! मेरे लिए तो पत्नी पर कुछ भी लेबल लगा दीजिए। मेरे भावों में अन्तर नहीं पड़ेगा।"

"तो मैं बताऊं ?" बाबा छोटूराम बोल उठा।

"हां ! आप ही बता दीजिए।"

"मैं समझता हूं कि इस लड़की का नाम गार्गी ठीक रहेगा।"

"और कर्मचन्द याज्ञवल्क्य हो गया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब हंसने लगे।

कर्मचन्द ने एक घूंट जल पी मुख का ग्रास नीचे करते हुए कहा, "मैं तो कर्म प्रधान ही रहूंगा। मेरी रुचि याज्ञवल्क्य बनने में नहीं हो रही।"

अगले दिन कर्मचन्द और फातिमा, अश्विनी से पढ़ने गए तो कर्मचन्द ने ही बताया, "गुरुजी! बाबा ने आपकी इस शिष्या का नाम गार्गी रख दिया है।"

अश्विनी ने कहा, "ओह! मैं तो इसका नाम रोहिणी विचार कर रहा था। परन्तु मैं समझता हूं कि रोहिणी से गार्गी अधिक उपयुक्त है।"

"यह कैसे?" फातिमा ने पूछ लिया, "रोहिणी नाम मुझे अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ है।"

"होगा! तुम अपने में कुछ भी बनो। यह तुम्हारे विचार करने की बात है। परन्तु रोहिणी एक नक्षत्र है। बहुत दूर होने से वह कभी दिखाई देता है तो सुन्दर और ओजपूर्ण समझ आता है। परंतु समीप आने पर वह क्या अनर्थ कर देगा, हम जानते नहीं। और गार्गी तो एक विदूषी स्त्री थी। वह अब तुम हो।

"देखो गार्गी! मैं तुम्हें गार्गी की कथा सुनाता हूं।

"जब गार्गी का पति संन्यास लेने लगा तो उसने गार्गी और उसकी सौकन से कहा कि अब वह जा रहा है। वे उससे कुछ मांग सकती हैं।

"उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य की दो पत्नियां थीं। दूसरी ने ऋषि से सब सम्पत्ति मांग ली और गार्गी ने पति से ज्ञान का अन्तिम पद मांगा।

"याज्ञवल्क्य ने उसे ज्ञान धन का दान दिया। उसने उसे समझाया कि यह शरीर नश्वर पदार्थों का बना है। ये मांस, हाड़, चाम इत्यादि सब नष्ट होने वाले हैं। पत्नी का पति उसके शरीर के लिए उससे प्रेम करता है परन्तु वह पत्नी यह शरीर नहीं है। इस शरीर में दो आत्म तत्त्व हैं। वे हृदय की गुहा में रहते हैं, परन्तु पृथक्-पृथक् हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब शरीर का अभिमानी आत्म-तत्त्व सर्वव्यापक-तत्त्व से मिल जाता है तो वह उस परमात्मा तवत्त में ऐसे घुल जाता है जैसे नमक जल में घुल जाता है।

"गार्गी समझ गयी और उसने संन्यास लेने वाले पति के चरण-स्पर्श किए और कहा, महाराज! मैंने आपका ज्ञान पाया है। यह आपके धन-वैभव से अधिक है। मैं अपनी बहन से अपने को अधिक सौभाग्यवान् समझती हूं। मैंने आपकी सम्पत्ति का उससे अधिक भाग पाया है।

"तुम भी गार्गी! समझ गयी हो कि परमात्म-तत्त्व से सीधा सम्बन्ध बन सकता है। जैसे नमक और जल का है। इससे तुम्हारा लेबल, मेरा अभिप्राय है कि तुम्हारा नाम गार्गी उपयुक्त है।"

"परन्तु क्या बाबा को यह सब ज्ञात रहा होगा?"

"जरूर रहा होगा। अन्यथा इतना पवित्र नाम वह तुम्हारे लिए विचार न करते।"

इस समय मोटूराम वहां आ पहुंचा। आते ही उसने कहा, "भैया! चलो। स्कूल के लिए स्थान देख लो। पक्का स्थान तो किसी योग्य आर्किटेक्ट से नक्शा बनवाऊंगा तो बनेगा।"

अश्विनी ने उठते हुए कर्मचन्द को कहा, "आज पढ़ाई नहीं होगी। चलो स्थान देख लो। वहां क्या-क्या प्रबन्ध करना चाहिए, वहां चलकर इसका विचार करेंगे।"

चारों उठे और नदी तट से उन खेतों को चल पड़े जहां चौधरी ने अपने गोदाम बनवाये हुए थे।

रात-रात में ही वहां गोदाम में रखा अनाज गाड़ियों पर लाद कर हवेली में पहुंचा दिया गया था और खाली हुए बड़े कमरे में सफेदी हो रही थी।

सुरजनदास के लड़के राधेलाल और मोहनलाल द्वार पर खड़े भीतर वेग से हो रहे काम को देख रहे थे।

अश्विनी से राधेलाल तो पहले भी पढ़ा करता था। अब उसका छोटा भाई मोहनलाल भी उससे पढ़ने के लिए आया था—"तो तुम आ गए हो?" अश्विनी ने दोनों लड़कों से पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी ! पिताजी ने कह दिया है कि आप यहां पढ़ाया करेंगे। इस कारण हम यहां आ गए हैं।"

"ठीक है। आज तो पढ़ाई नहीं होगी। पढ़ाई कल से आरम्भ होगी। कल तक यहां बैठने और पर्दों का प्रबन्ध हो जाएगा।

"पहले तुम मुझसे केवल संस्कृत पढ़ा करते थे। परन्तु अब तीन विषय पढ़ाये जायेंगे। भाषा, गणित और पदार्थ विज्ञान। यह तुम्हारा भाई क्या पढ़ा है ?"

राधेलाल ने कहा, "यह अभी पहली श्रेणी में भरती हुआ था। परन्तु पिताजी ने इसे भी मेरे साथ यहां भेज दिया है।"

"और गुरुजी किताबें ?" राधेलाल ने आगे पूछ लिया।

"वे हम तुम्हारे लिए लाया करेंगे। तुमको यहां पर कुछ भी लेकर नहीं आना होगा। पुस्तकें, कापियां, कलम, दवात और खाना-पीना सब यहीं होगा। खाली हाथ घर से आया करोगे और खाली हाथ ही घर को लौटा करोगे।"

"और गुरु जी !" राधेलाल के भाई मोहनलाल ने पूछ लिया, "और घर पर क्या किया करेंगे ?"

"अपने माता-पिता के काम में सहायता करोगे।

"देखो मोहन ! तुम्हारे पिता भूमिपति हैं। तुम यहां से अवकाश पाते ही पिता की भूमि पर काम करने चले जाया करो।"

"तो पिताजी हमसे काम लेंगे ?"

"मैं उनसे कह दूंगा कि तुमसे वह इतना काम लिया करें, जिससे तुम थककर सो जाया करो।"

इस समय नरगिस अपने बच्चों को लेकर आ गयी। वह तो बच्चों के स्कूल की पुस्तकें भी साथ लायी थी।

नरगिस ने देखा कि अभी स्कूल में बच्चों के बैठने के लिए स्थान नहीं है तो वह परेशानी में मुख देखने लगी।

"क्यों भाभी ! क्या बात है ?" कर्मचन्द ने पूछ लिया।

"अम्मी कह रही थी कि उसे इनको खिलाते-पिलाते देर हो गयी है। इससे मैं भागी, परन्तु यहां तो अभी कुछ भी नहीं है।"

"कल तक यहां हम बैठने का सामान लगा लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्विनी ने कहा, "कल से इनको खिलाने-पिलाने में देरी करने की आवश्यकता नहीं है। मैंने छोटे चौधरी से कह दिया है कि प्रातः का नाश्ते का प्रबन्ध यहां ही होगा।"

"अम्मी," नरगिस ने बात बदल दी, "कह रही थी कि मैं भी आपसे अपना कुछ इन्सानी नाम पूछ आऊं और लिख लाऊं जिससे मेरी भी नजात हो सके।"

कर्मचन्द हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "तो भाभी! तुम अभी किसी तकलीफ में हो, जिससे नजात चाहती हो?"

"तकलीफ तो नहीं। हां, तकलीफ हो सकती है। नरगिस मुसलमानी नाम है। हम अपने नाम का नामपट्ट मकान के बाहर लगवाना चाहती हैं जिससे मकान का लेबल भी बदल जाए।"

"तब ठीक है। देखो भाभी!" अश्विनी ने कहा, "मैं आपका नाम 'कमलिनी' ठीक समझता हूं।"

"एक कागज़ पर उर्दू हरुफ में लिख दीजिए जिससे भूल न जाऊं।"

फातिमा ने बताया, "भाभी! मेरा नाम गार्गी रखा गया है। यह भी लिखवा लीजिए।"

"और अम्मी का नाम नहीं रखा जाएगा?" अश्विनी ने पूछ लिया।

"अम्मी ने अपना नाम स्वयं रख लिया है।"

"क्या?" गार्गी ने पूछ लिया।

"रानी!"

"यह ठीक है।"

मोटूराम ने नदी के तट पर एक दरी बिछा दी। उसपर सबके लिए नाश्तों का सामान लगवा वह इनको बुलाने आ गया। उसने भी सोहनी का नाम सुना तो हंसने लगा।

सब उसकी ओर देखने लगे। मोटूराम ने कहा, "देखो कर्मचन्द! इसमें हंसने की क्या बात है। वह रानी तो है ही। जो कुछ हो रहा है, इस सब में वह सब के आगे है।"

"मगर मामाजी!" नरगिस ने कहा, "वह रानी के मायनों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना नाम नहीं रख रहीं। कहती थीं कि वह बिना राजा के रानी हैं। उन्होंने उस नावल में से जिसमें सोमनाथ और रामनाथ नाम चुने थे, उनकी मां रानी का नाम स्वीकार कर लिया है।"

सब वहां आये जहां नमकीन, मिठाई तथा एक-एक प्याला दूध सबके लिए लगा हुआ था। गांव का हलवाई वहां उन सबलोगों की प्रतीक्षा कर रहा था।

ये लोग अभी बैठे ही थे कि श्यामलाल अपनी लड़की सुभद्रा को लेकर आ गया।

उसे भी बैठा लिया गया और उन बाप-बेटी के सम्मुख भी दूध और नमकीन-मिठाई लगा दी गयी।

जब सब खा-पी रहे थे तो मोटूराम ने कह दिया, "कल इस स्कूल के बाहर स्कूल के नाम का बोर्ड लग जाएगा। नाम का मैंने निश्चय किया है चौधरी छोटूराम गैर-सरकारी स्कूल।

"बोर्ड के नीचे मुख्यध्यापक का नाम होगा—पण्डित अश्विनी-कुमार, सिद्धान्तालंकार।

"वैसे मैंने अभी इसी हलवाई से यह प्रबन्ध किया है कि ठीक साढ़े दस बजे प्रातः यह अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए अल्पाहार का प्रबन्ध कर दिया करे। पुस्तकें और कापियों का प्रबन्ध गांव की अपनी दुकान परमानन्द स्टोर से कर लेंगे। और फिर जिस भी वस्तु की आवश्यकता पड़ेगी, उसके द्वारा नगर से मंगवा लिया करेंगे।

"हां कर्मचन्द ! और कुछ बताओ ?"

"पिताजी ! एक घड़ियाल और एक टाईम पीस भी आना चाहिए।"

"ठीक है। यह भी हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसंहार

स्कूल चलते हुए दस वर्ष हो चुके थे। कर्मचन्द तथा गार्गी के घर दो लड़के और उत्पन्न हो चुके थे। सोमनाथ अपनी पढ़ाई समाप्त कर ठेकेदारी करने लगा था और रामनाथ अपनी बूआ से शास्त्र की पढ़ाई कर रहा था। वह उस समय निरुक्त शास्त्र पढ़ रहा था। स्कूल में इस समय पैंतीस से ऊपर विद्यार्थी थे। उनमें लड़के-लड़कियां दोनों थे। स्कूल की नई इमारत बन चुकी थी और इसमें पन्द्रह कमरे थे। दस अध्यापक थे। एक क्लर्क और एक चपरासी था। दो चौकीदार और सफाई करने वाले भी थे।

स्कूल का खर्चा तीस हजार रुपए प्रति वर्ष के लगभग था और यह खर्चा मुख्य रूप में चौधरी परिवार देता था। चौधरी परिवार के अतिरिक्त गांव की पंचायत ने पांच एकड़ के लगभग भूमि स्कूल को दे रखी थी जिसपर काश्त का खर्चा देकर कुछ ऊपर आय हो जाती थी।

चौधरी छोटूराम का देहान्त हो चुका था और रामचन्द तथा परमानन्द का गांव में ही विवाह हो चुका था। रामचन्द के घर में दो बच्चे थे। एक लड़का और एक लड़की। परमानन्द के घर एक लड़का था।

परिवार के प्रशान्त वातावरण में एक हलचल मची सन् १९६० में। एक दिन एक व्यक्ति झुकी कमर, घनी दाढ़ी और मूंछों से ढके मुख वाला, हाथ में पकड़ी छड़ी के आश्रय, गार्गी भवन के सामने आ खड़ा हुआ था।

"गार्गी भवन" सोहनी के मकान का नया नाम था। भवन का नाम तो मकान के फाटक पर ईंट-चूने में ही लिखा था और फाटक के एक तरफ एक नामपट्ट पर घर में रहने वालों के नाम लिखे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम थे—रानी, कमलिनी, सोमनाथ, सुभद्रा और अन्त में रामनाथ।

द्वार पर खड़ा व्यक्ति नाम पढ़, समझ नहीं रहा था। वह हिन्दी अक्षरों में लिखे नाम तो पढ़ गया था। मकान भी कुछ-कुछ पहिचानता था। बाहर का फाटक वही पुराना, दस वर्ष पहले वाला था, केवल फाटक की महराब पर गार्गी भवन पहले नहीं लिखा था। यह अभी-अभी लिखवाया गया प्रतीत होता था।

एक पड़ोसी वहां से गुजरा तो एक अपरिचित व्यक्ति को वहां खड़े, नाम पट्ट पर लिखे नामों को पढ़ते देख वह भी खड़ा हो पूछने लगा, "भाई! किसके मकान को ढूंढ़ रहे हैं?"

"मकान तो मैं समझता हूं, ढूंढ़ लिया है। मगर मकान की सूरत-शक्ल को पहचानने की कोशिश कर रहा हूं। इमारत तो बिल्कुल नयी बनी है परन्तु फाटक की शक्ल पुरानी है। मैं यह लिखा हुआ समझने का यत्न कर रहा हूं।"

"तुम कौन हो?" पड़ोसी ने पूछा।

"मैं कान्ति नारायण हूं। कभी पटियाला में रहता था। पीछे पाकिस्तान चला गया था। वहां मुसलमान बना लिया गया। अब भारत आने पर वहां से दिल्ली में आकर यहां की शहरीयत इख्तियार कर ली है।"

"यह ठीक है, परन्तु इस मकान को क्यों देख रहे हैं।"

"यहां एक मियां रहीम खां रहते थे?"

"नहीं, वह इस मकान में नहीं रहते थे।" पड़ोसी ने कहा और कुछ डांट के भाव में बोला, "यहां से चल दो। नहीं तो पकड़कर थाने ले जाऊंगा।"

दाढ़ी मूंछ वाला कान्ति नारायण घबराया नहीं। मगर उसके बाद का परिचय देने लगा—

"देखो भाई! नाराज होने की बात नहीं। शायद तुम इस गांव में पार्टीशन के बाद आए हो। रहीमबख्श तो सन् १९३९ में यहां रहता था। उसकी बीवी मुसम्मात सोहनी और उनका लड़का कामरेड करीमबख्श यहां रहते थे। मैं करीमबख्श का दोस्त हूं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी को ढूंढता हुआ यहां आया हूं।"

"वह तो यहां से फरार है। उसके वारण्ट थे। सुना था पाकिस्तान को भाग गया था।"

"मगर उसकी अम्मी और उसकी बीवी नरगिस थीं। वे कहां गयी हैं?"

"हां! इस घर के रहने वाले सब हिन्दू हो गये हैं और यह रानी ही सोहनी है। यह कमलिनी नरगिस थी और यह सोमनाथ मजीद था।"

"तब ठीक है। शुक्रिया। अब मैं घर का द्वार खटखटा सकता हूं। औरतों में करीम की अम्मी मुझे पहिचान सकेंगी।"

वह व्यक्ति द्वार खटखटाने ही लगा था कि सोमनाथ की पत्नी सुभद्रा बाजार से कुछ खरीद कर आई थी। वह दोनों को घर के द्वार पर बातें करते देख खड़ी हो प्रश्नभरी दृष्टि में इनकी ओर देखने लगी।

पड़ोसी ने बताया, "यह शख्स कहता है कि यह करीमबख्श का दोस्त है और अम्मी सोहनी से मिलने आया है।"

"तब ठहरो।" सुभद्रा ने उस छड़ी का आश्रय लिये व्यक्ति की ओर देख कर कहा, "माता जी को बुलाती हूं। वह ही आपसे बात करेंगी।"

सुभद्रा ने द्वार खटखटाया तो भीतर से कमलिनी आयी और द्वार पर खड़े दुर्बल व्यक्ति को खड़े देख, उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगी।

बात सुभद्रा ने ही की। उसने कहा, "यह सज्जन माताजी से मिलने आए हैं। कहते हैं कि करीमबख्श के दोस्त हैं।"

करीमबख्श का नाम सुनते ही वह उस दाढ़ी मूंछ वाले व्यक्ति को पहिचान गयी। उसके माथे पर त्यौरी चढ़ गयी। उसने कहा, "जी तो चाहता है कि आपको पुलिस के हवाले कर दूं। मगर आज माता जी के लड़के हैं। यह पुण्य का काम उनसे पूछे बिना नहीं कर सकती।

"जाओ सुभद्रा! भीतर से अम्मी को बुला लाओ और कहो कि उनके लड़के करीमबख्श आए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुभद्रा परिवार का इतिहास कुछ-कुछ जानती थी। इस कारण वह भीतर को भागी और अपनी दादी सास को बुलाने चली गयी।

उसके जाने के बाद भी कमलिनी फाटक बंद कर उसके सामने खड़ी हो मार्ग रोक रही थी।

यह करीमबख्श ही था। वह कुछ इसी प्रकार के स्वागत की कल्पना कर रहा था। इसपर भी वह आशा करता था कि एक बार अपनी अम्मी से साक्षात्कार हो जाए तो वह मां में अपने प्रति वात्सल्यता उत्पन्न कर सकेगा। इस आशा में वह कमलिनी के पुलिस के हवाले करने की धमकी से भयभीत नहीं हुआ। वह मुस्कराते हुए कमलिनी से बोला, "नरगिस! तुम तो पहले से ज्यादा खूबसूरत हो गयी हो।"

"बकवास बंद करो।" कमलिनी ने कहा, "मैं नरगिस नहीं रही। मेरा नाम कमलिनी है। यह देखो, बोर्ड पर दूसरे नम्बर पर लिखा है।"

"और फातिमा कहां है?"

इस समय रानी आ गयी। उसने लड़के को पहिचाना। नाम तो सुभद्रा ने ही बताया था। अम्मी के पीछे-पीछे ही रामनाथ, सुभद्रा का देवर भी चला आया। इस वक्त वह सत्रह वर्ष का युवक था और अपने बाप की करतूतों को स्मरण कर लड़ने के लिए हाथ में लाठी लिये हुए आया था।

रानी ने रामनाथ को लाठी लिए आते देखा तो बोली, "करीम! भीतर आ जाओ। और कमलिनी बेटी! द्वार बंद कर लो। पड़ोस के लोग आने आरम्भ हो गए हैं।"

कमलिनी ने फाटक खोल, एक ओर हो पति को भीतर आने का मार्ग छोड़ दिया।

उसके भीतर आते ही सुभद्रा ने फाटक को भीतर से कुण्डा चढ़ा दिया।

रानी ने पुत्र की ओर देख कहा, "भीतर आ जाओ।"

सब बैठक घर में जा पहुंचे। बैठक घर पहले से बहुत भली प्रकार सुसज्जित और व्यवस्थित था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुभद्रा ! कॉफी बना लाओ। और देखो, कुछ खाने के लिए भी लेती आना।"

सुभद्रा गयी तो रामनाथ ने बात आरम्भ कर दी, "अब्बाजान ! यहां किसलिए आए हैं ? गांव वालों को पता चला तो वह आपको पत्थर मार-मार कर यमलोक भेज देंगे।"

"हमीद ! बैठो ! बताता हूं। बताओ अम्मी ! फातिमा कहां है ?"

"वह अब हमेशा जेब में पिस्तौल रखती है और तुम्हें पहिचान गयी तो गोली मार देगी। वह तुम्हारी करतूत को याद कर क्रोध से लाल हो जाया करती है।

"तुमने उसे पाकिस्तान भेजने का इन्तज़ाम किया था। वहां से एक औरत पिछले वर्ष भाग कर आयी थी। वह बता रही थी कि उसे भी 'विमन रिकवरी विभाग' ने पाकिस्तान भेजा था। वहां से वह एक रण्डीखाने में भरती करा दी गयी थी। छः वर्ष में बूढ़ी हो वह लाहौर की सड़कों पर पेट भरने के लिए भीख मांगने लगी थी।

"किसी भले व्यक्ति ने उसे पठानकोट की सरहद से भागने का मार्ग बताया तो वह हिन्दुस्तान चली आई। अब वह यहां खेतों पर काम कर निर्वाह करती है।

"फातिमा उस औरत की कहानी जानती है और अपने लिए भी वैसी ही जिन्दगी की कल्पना कर वह कांप उठा करती है।"

आगे बात कमलिनी ने कही, "अम्मी ! पहले इनसे पता करो कि ये किस नीयत से यहां आए हैं। यहां इनके साथ किसी के भी मन में हमदर्दी नहीं हो सकती।"

"हमदर्दी तो है। मगर उसे हासिल करने के लिए यह वचन देगा क्या ? यही जानने के लिए मैं इसके लिए कॉफी की प्रतीक्षा कर रही हूं।"

कॉफी आयी और साथ में घर की बनी बर्फी थी।

एकाएक रामनाथ उठा और बोला, "अम्मी ! मैं गुरुजी के घर जा रहा हूं। मेरी पढ़ाई का समय हो गया है। मैं पूछना चाहता हूं कि अब्बाजान की खबर वहां बताऊं या नहीं ?"

"देखो," रानी ने कहा, "उनको कहना कि छोटे चौधरी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर आ जाएं। मैं उनकी राय से ही इस नालायक लड़के से व्यवहार करूंगी।"

रामनाथ गया और उसके जाने के दो मिनट बाद ही मोटूराम आ गया। उसे रामनाथ परमानन्द की दुकान पर ही मिल गया था।

मोटूराम ने करीम की सूरत शक्ल देखी तो पूछने लगा, "बहुत बुरी हालत बनायी है। और तुम्हारे तो दाढ़ी में सफेद बाल आने लगे हैं। मैं तो तुम से दस वर्ष बड़ा हूं और मेरे सिर में अभी एक भी सफेद बाल नहीं आया।"

"चौधरी जी ! बैठिए, बताता हूं। मैं आप और खासतौर पर फातिमा से मिलने ही आया हूं। अम्मी की बाबत तो मुझे यकीन ही था कि यह मुझे मुआफ कर चुकी होंगी।"

रानी ने कहा, "खा-पीकर पेट भर लो और तब बताओ कि किसलिए आए हो। कदाचित् तब तक गुरु जी और गार्गी भी आ जाएंगे ?"

"और वह कौन है ?"

"तुम्हारी बहन फातिमा का नया नाम है।"

मोटूराम ने रानी को बताया, "बहन जी ! रामनाथ गुरुजी के घर जाते हुए मुझे परमानन्द की दुकान पर बैठे देख इसके आने का समाचार दे गया था। मैं तो पहले पुलिस में खबर देने जा रहा था। मेरी मोटी बुद्धि में यही आया था, मगर रामनाथ ने ही कहा है कि अम्मी उसे कॉफी पिला रही है तो विचार बदल यहां चला आया हूं।"

कमलिनी और सुभद्रा भी वहां आ गयी थीं।

अभी करीमबख्श पेट भर मिठाई खा कॉफी पीकर कुरते की बांह से दाढ़ी पोंछ रहा था कि अश्विनी और गार्गी भी आ गए।

अश्विनी ने इधर आने से पहले खबर हवेली में भेज दी थी और वहां से कर्मचन्द और सौभाग्यवती भी आ पहुंचे थे।

परिवार के सब घटक एकत्रित हो गए थे। जब करीमबख्श ने आप-बीती बतायी। उसने कहा, "मेरा नाम अब करीमबख्श नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। मैं अब्दुल ग़नी हूं। मैं भारत का एक नागरिक बन यहां रह रहा हूं।

"१९४९ में जो कुछ मैंने किया, वह स्वभाविक ही था। मैं पाकिस्तान में अकेला रहता हुआ ऊब गया था और अम्मी, नरगिस तथा फातिमा को वहां ले जाकर घर बनाने का विचार बना बैठा था। मेरी बुद्धि मुझे जालन्धर सैशन कोर्ट में ले गयी। वहां मैंने अर्जी करनी चाही कि फातिमा के केस पर नज़रसानी की जाए। वहां एक मुसलमान रीडर था। उसने मुझे 'विमेन रिकवरी विभाग' का पता बताया और कहा कि मेरी ख्वाहिश वहां पूरी होगी।

"मैं वहां जा पहुंचा और वहां अर्जी कर दी। उस दिन तो वहां की सुपरिन्टेडेण्ट ने मुझे बहुत उम्मीद दिलायी थी और उसी वक्त भुनभुन टीकड़ी के थानेदार को हुक्म ज़ारी कर दिया कि फातिमा नाम की लड़की को पकड़कर दिल्ली भेज दिया जाए। वहां से ही एक 'स्टेशन वैगन' गांव में भेज दी गई थी। मैं उम्मीद से भरा हुआ अगले दिन सायंकाल उस दफ्तर में पहुंचा। वही औरत जो पहले दिन बहुत ही हमदर्दी से बात कर रही थी, मुझे डांटने लगी। उसकी शिकायत थी कि मैंने किसी के सम्मुख अपनी बात बक दी है और लड़की को रखने वालों ने शिमला हाईकोर्ट से 'स्टे आर्डर' ले लिया है। महकमा को हुकम आया है कि हम अपने दावे को वहां पेश करें।

"उस औरत ने मुझे बेवकूफ, गधा कहा। साथ ही मुझे धमकी दी कि यदि मेरी अर्जी झूठी साबित हुई तो मुझे दो साल तक की कैद सख्त हो सकेगी।

"मुझे शक हो गया कि नरगिस किसी तरह मेरी बात जान गयी है और इसने चौधरी को खबरदार कर दिया है।

"इस ख्याल के आते ही मैंने इसे खूब पीटा। इसकी किस्मत थी कि वहां एक सिक्ख नौजवान था, जो मैं समझता था कि इसपर आशिक हो गया था, उसने इसे बचाया और अपने कमरे में ले गया। मैं वहां से भागा और पाकिस्तान जा पहुंचा।

"पाकिस्तान में मेरे पीछे खुफिया पुलिस लग गयी। वह दो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन साल तक मेरी हरकतों का पता करती रही। जब अयूब खां पाकिस्तान का डिक्टेटर बना तो मुझे पकड़ कर मुलतान जेल में डाल दिया गया। मैं चार साल तक जेल में रहा। आखिर मैंने कोशिश की और जेल के एक अफसर से मिल मिलाकर भाग निकला। वहां से पैदल चलता हुआ जैसलमेर की सरहद से भारत में आ गया हूं। यहां आकर अब मैं अब्दुल गनी के नाम से रहता हूं। मैंने अपना नाम दिल्ली में १९६१ की मर्दम शुमारी में यही लिखाया है।

"तीन साल जेल में और दो साल तक यहां गरीबी और मेहनत-मुशक्कत की जिन्दगी बसर कर मैं अपने पहले कामों पर अफसोस जाहिर करता हूं। अब मैं मज़दूरी भी नहीं कर सकता। दिमाग कमजोर हो गया है। इसलिए दिमागी काम भी नहीं कर सकता। मैं अपनी कम्यूनिस्ट पार्टी में नहीं जा सकता। उनसे मेरी इख्तलाफ़ राय हो गयी है। इसलिए अब चारों ओर से लाचार होकर मां की याद आयी है। और यहां आ पहुंचा हूं। आज सुबह से कुछ खाया नहीं था और मेरी पहली उम्मीद ठीक निकली है। अम्मी ने पेट भर खाना खिलाया है।

"अब यहां भी तो इन्कलाब हो गया है। मगर इसकी शुरुआत तो तब ही हो चुकी थी, जब मैं यहां पहले रहता था।

"अम्मी! अब मुझे अगर कहीं सोने की जगह बता दो तो मैं सोना चाहता हूं। मैं तीन रात से सोया नहीं।"

रानी उठी और अपने ही कमरे में उसके लिए बिस्तर लगा आयी। उसे कमरे में भेज वह अपने और चौधरी के घर के सब सज्ञान प्राणियों से राय करने लगी कि वह इस नालायक बेटे का क्या करे?

: ८ :

"हां भाईसाहब! बताइए! मैं क्या करूं?" रानी ने चौधरी मोटूराम से पूछ लिया।

मोटूराम तो करीम की मां के मनोभावों को समझने का यत्न कर रहा था। वह मन में विचार कर रहा था कि एक मां क्या करना चाहेगी? उस स्वाभाविक मनःस्थिति का वर्तमान वस्तुस्थिति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग करना चाहिए। उसका युक्ति करने का ढंग तो ठीक था, परन्तु युक्ति की गति बहुत धीमी थी। इस कारण वह किसी परिणाम पर नहीं पहुंच रहा था।

अश्विनीकुमार के लिए तो समस्या शास्त्रीय थी। और शास्त्र में समाधान था। इस कारण उसने सबसे पहले वर्तमान परिस्थिति में शास्त्र का समाधान उपस्थित कर दिया। उसका कहना था, "रानी बहन! शास्त्र कहता है कि पश्चात्ताप करने वाले को क्षमा कर दिया जाए।"

"परन्तु क्या वह सत्य हृदय से पश्चात्ताप कर रहा है?" गार्गी का प्रश्न था।

कमलिनी ने कह दिया, "किसी के दिल की बात जानने का हमारे पास साधन क्या है?"

कर्मचन्द ने कह दिया, "शास्त्र का विधान है कि जो बात आंखों से अथवा किसी इन्द्रिय से पता न चले उसके लिए अनुमान-प्रमाण की सहायता ली जाती है।

"और अनुमान है घटी दो बातों में से एक के होने से दूसरे का ज्ञान करना।

"पिताजी!" कर्मचन्द ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "पूर्व में यह पाकिस्तान से आया था। अपनी पत्नी कमलिनी से यह पूर्व के कुकर्मों के लिए क्षमा मांग अपने साथ ले गया था।

"कमलिनी देवी ने पूर्व के व्यवहार के लिए उसे क्षमा कर दिया और उसके साथ चल पड़ी थी। परन्तु तीसरे ही दिन बिना किसी प्रकार का दोष देखे, वह पत्नी को पीटने लगा। उसके अपने कथन से यह प्रतीत होता है कि वह पत्नी की हत्या कर देने वाला था। यदि एक सिक्ख युवक इसकी रक्षा न करता तो कमलिनी इस समय इस संसार में न होती।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि पूर्व बीती दो बातों के सम्बन्ध में एक बात अब उपस्थित हो गयी है और निश्चय ही दूसरी होगी। अनुमान यह कहता है कि वह फिर वैसी मूर्खता करेगा जैसी अपनी पत्नी से पहले कर चुका है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचन्द की युक्ति अकाट्य नहीं थी और उसका खण्डन गार्गी ने कर दिया, "अनुमान-प्रमाण प्राकृतिक घटनाओं के विषय में सत्य होता है। यह मानव मन और बुद्धि वालों के विषय में सिद्ध नहीं होता।

"देखिए !" गार्गी ने अपने पति की युक्ति का खण्डन करते हुए कहा, "मानव मन अति चंचल यंत्र है। यह नई-नई कल्पनाएं करता रहता है और नियमों को भंग करता रहता है। इस कारण इसने जो पूर्व किसी परिस्थिति में किया था, पुनः वैसी ही स्थिति में वैसा ही करेगा जैसा पहले किया था, आवश्यक नहीं है।

"इस कारण भैया करीमबख्श के मन की वही प्रतिक्रिया होगी जो दस वर्ष पूर्व ऐसी ही स्थिति में हुई थी, निश्चय से नहीं कहा जा सकता।

"उसके वर्तमान मन की परीक्षा का कोई उपाय होना चाहिए।"

इसपर मोटूराम बोल उठा, "तब तो यह कहना कि मुसलमान सुधरेंगे नहीं, वे वही करेंगे जो वे अपना पूर्व चौदह सौ वर्ष के इतिहास में करते रहे हैं, गलत भी हो सकता है।"

उत्तर गार्गी ने ही दिया, "पिताजी! मैं किसी समाज के विषय में नहीं कह रही। समाज तो कायदे कानूनों से बंधी हुई एक जड़ वस्तु ही होती है।

"इस्लामी समाज एक जड़ वस्तु है। जैसे सूर्य, चन्द्र, तारागणादि अपने नियम में बंधे हुए जड़ हैं।

"यही बात हिन्दू समाज की है। जब तक हिन्दू समाज अपने उन्हीं नियमों पर आरूढ़ है जिनपर तब था, जब स्वामी शंकराचार्य आरूढ़ थे, तब तक यह शूद्रों से भला व्यवहार नहीं कर सकता।

"यही कारण है कि स्वामी दयानन्द ने समाज का नाम ही बदलना चाहा था जिससे समाज के वे नियम न रहें जो पूर्व के काल में थे।

"मेरे कहने का अभिप्राय है कि इस्लाम जब तक समाज के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय में अपने रसूल की बात मानने वाला है, जब तक यह वही कुछ करेगा जो कुछ पिछले चौहद सौ वर्ष में करता रहा है।

"हां! एक व्यक्ति की बात दूसरी है। वह इस्लाम छोड़ भी सकता है। इस्लाम छोड़ने पर उसके व्यवहार में अन्तर आना सम्भव भी है।"

इसपर रानी बोल उठी, "गार्गी ठीक कहती है। इसीलिए मैंने इस्लाम को छोड़ा था तो मैंने हिन्दू बनना स्वीकार नहीं किया था। मैंने इन्सान बनना स्वीकार किया था। इन्सान एक अकेला व्यक्ति है। वह अपनी बुद्धि का प्रयोग समाज के नियमों से अलहदा रहकर कर सकता है।

"गार्गी ठीक कहती है कि इन्सान का मन सूर्य, चांद, तारा-गणों की भांति नियमों से काम नहीं करता। इसके विषय में कोई दूसरा पैमाना बताइए।"

रानी का प्रश्न अश्विनी के लिए था।

मोटूराम बोल उठा, "इसका मतलब यह हुआ कि प्रत्येक इन्सान की पृथक्-पृथक् परीक्षा होनी चाहिए। एक ही प्रश्न कासब एक ही उत्तर नहीं दे सकते।"

सब हंसने लगे। अश्विनी ने बातों का विश्लेषण कर दिया।

उसने कहा, "जो कुछ गार्गी ने कहा है, वह भी तो अनुमान सिद्ध ही है। मानवों के विषय में अनुमान यह कहता है कि प्रश्न एक ही है, मगर सब विद्यार्थियों के उत्तर पृथक्-पृथक हो सकते हैं। इस कारण सब के उत्तर पृथक्-पृथक् पढ़ने चाहियें। एक का उत्तर पढ़ कर हम किसी दूसरे के उत्तर का अनुमान नहीं लगा सकते।

"प्रश्न यह है कि करीम पश्चात्ताप सत्य हृदय से कर रहा है अथवा कुछ धोखा-धड़ी कर रहा है? इस प्रश्न का उत्तर हम किसी दूसरे के उत्तर से नहीं जान सकते। करीम का अपना ही उत्तर-पत्र पढ़ना होगा।

"इससे रानी बहन से मेरी यह राय है कि करीम को पहले तो इस सम्प्रदाय से पृथक् करने का यत्न करना चाहिए जिसकी मंजूरी से वह पत्नी को पीटा करता था अथवा जिसकी मंजूरी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बार-बार भारत में आकर यहां बदअमनी फैलाने की कोशिश करता रहा है।

"मेरा मतलब इस्लाम मत से है जो औरतों को किसी प्रकार के अधिकार नहीं देता और साथ ही कम्यूनिस्टों से है जो दूसरे देशों में बदअमनी फैला खुद वहां चौधरी बनने का विचार रखते हैं।"

"हां! यह तो होना ही चाहिए।" मोटूराम ने कह दिया, "मतलब यह है कि वह मुसलमान न रहे, न कम्यूनिस्ट।"

"हां!" अश्विनीकुमार का कहना था, "मगर इसका विश्वास कि उसने इन दोनों सम्प्रदायों को मन से निकाल दिया है, कहीं समीप रखकर उसकी गतिविधियों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कर ही पता चल सकता है। उसका अपने कथन उसके अन्तरात्मा की आवाज नहीं भी हो सकता।"

अब रानी ने अन्तिम इच्छा व्यक्त कर दी, "भैया! मैं यह समझी हूं कि हमें इसे अपनी देखरेख में यहां रखना चाहिए। इसके अमालों को गौर से देखना चाहिए और कुछ वर्ष बाद इस विषय पर फिर विचार करना चाहिए कि उसको अपना समझें अथवा पराया?"

"हां!" अश्विनी का कहना था, "मेरा सुझाव है कि आज-कल स्कूल का चपरासी नौकरी छोड़ गया है। करीम स्कूल के चपरासी का काम किया करे, हिन्दू के नाम से रहे। चपरासी को बीस रुपये महीना, रोटी, कपड़ा, मकान मिलता था। यह भी उतने में रहता हुआ वहां काम करेगा और यह आज की गोष्ठी कुछ काल उपरान्त पुनः बैठे और उसके विषय में विचार करे।"

यह निश्चय अगले दिन अब्दुल गनी को बता दिया गया। रानी ने उसे कहा, "गांव के लोगों में यह विख्यात करने के लिए कि तुम अब्दुल गनी से गोपीनाथ हो गए हो, तुम्हारी यहां आर्य समाज में शुद्धि की जाएगी।

"देखो करीमबख्श! हम शुद्धि में कुछ तथ्य नहीं मानते। परन्तु तुम्हें गांव में रहने के योग्य बनाने के लिए कुछ करना पड़ेगा। इस कारण आर्य समाज मन्दिर में यह रस्म धूमधाम से मनाई जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम स्कूल के चपरासी के क्वार्टर में रहोगे। बीस रुपये महीना, रोटी, कपड़ा तुम्हारा वेतन होगा। तुम करीमबख्श का नाम, इस्लाम और पाकिस्तान भूलने का यत्न करो। जब घर वालों को विश्वास हो जाएगा कि तुम अपना भूत काल का व्यवहार भूल चुके हो और उसमें दिलचस्पी छोड़ चुके हो तो फिर घर के प्राणी तुम को अपने साथ रखने पर विचार करेंगे।"

"बड़ा मुश्किल इम्तिहान बताया है अम्मी!"

"मैं इसमें कुछ नहीं कर सकती। तुम्हारी बीवी कमलिनी तो कहती थी कि तुम्हें सहज ही छोड़ा जा रहा है। इसपर भी यह एक मां की राय है।

"अगर नहीं मानना चाहते तो आज ही गांव से चल दो, वरना तुम्हें सायंकाल पुलिस थाने में पहुंचा देंगे।"

करीमबख्श प्रातः का अल्पाहार लेकर घर से गायब हो गया।

□ □ □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

की प्रबुद्ध पाठकों के लिये कुछ अनुपम रचनाएँ

१. जमाना बदल गया (६ भाग)	४२.००
२. दो लहरों की टक्कर (२ खण्ड)	६६.००
३. अवतरण, सम्भवामि युगे युगे, विनाशाय च दुष्कृताम् (महाभारत के आधार पर तीन उपन्यास)	३१.००
४. खण्डहर बोल रहे हैं (३ भाग) ऐतिहासिक उपन्यास	७४.००
५. गंगा की धारा ,, ,,	१८.००
६. पत्रलता ,, ,,	६.००
७. दिग्विजय ,, ,,	[illegible]
८. भाव और भावना (संस्मरण)	४.००
९. भाग्य चक्र (,,)	४.००
१०. मैं हिन्दू हूँ (,,)	१०.००
११. सृष्टि रचना (सायंस तथा दर्शन)	१०.००
१२. विश्व देवा : ,, ,,	१०.००
१३. न्याय दर्शन (सरल सुबोध भाषा भाष्य)	४५.००
१४. सांख्य दर्शन (,, ,, ,, ,,)	४०.००
१५. यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म	१०.००
१६. राष्ट्र राज्य और संविधान (राजनीति)	१०.००
१७. वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान (हिन्दू राष्ट्र)	१०.००
१८. मुण्डक-माण्डूक्य उपनिषद् (भाष्य)	१०.००

Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar
168008
081
168008

प्राप्ति स्थान

भारती साहित्य सदन सेल्स

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली

तथा सभी अच्छे पुस्तक विक्रेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A		
Recc...		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143

वर्ग संख्या... GUR-S आगत संख्या 16.8.0.08.

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar